हिंदी

(कक्षा–9)

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ0प्र0, प्रयागराज

द्वारा प्रकाशित

Royalty Paid Book

प्रथम संस्करण : 2023-24
द्वितीय संस्करण : 2025-26

© माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

प्रकाशक : माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश
प्रयागराज–211001

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रानिकी मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक किसी अन्य प्रकार से व्यापार, पुनर्विक्रय या किराये पर न दी जायेगी और न बेची जायेगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

मूल्य ₹ 47.00

पाठ्य-पुस्तकों के निर्माण में 80 जी.एस.एम. मैपलीथो पेपर IS मार्क नवीनतम् संशोधित BIS Specification 1848/2007 Updated Revised पेपर (सेतिया पेपर मिल्स लि., के. आर. पल्प एण्ड पेपर्स लिमिटेड, बिन्दल पेपर मिल्स लि., मोहित पेपर मिल्स लि., ट्राइडेन्ट लि.) के मानक का प्रयुक्त किया गया है।

मुद्रक एवं वितरक :

राजीव प्रकाशन

48/13A रामबाग, प्रयागराज

दूरभाष : 2402474, 2404980

प्राक्कथन

शिक्षा का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को परिवेश के प्रति संवेदनशील बनाना एवं समकालीन परिवर्तनों के बारे में समझ और दृष्टि का विकास करना है। इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य की सफलता के लिए समयानुसार पाठ्य–पुस्तकों का अद्यतन होना परमावश्यक है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा–प्रणाली को तैयार करना है, जो भारत के सभी विद्यार्थियों में ज्ञान और कौशल का विकास करते हुए भारत को एक 'वैश्विक ज्ञान–महाशक्ति' के रूप में स्थापित करे। 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति' इस बात पर बल देती है कि भारत को 'ज्ञान–महाशक्ति' बनाने में भाषा की भूमिका अहम होगी इसलिए भारतीय भाषाओं की जीवंतता बरकरार रखते हुए सृजनात्मक लेखन की पहुँच व्यापक बनायी जाए। साहित्य की पहुँच व्यापक समाज तक बनाने में पुस्तकें सेतु का कार्य करती हैं। माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज द्वारा इस दिशा में कार्य करते हुए 'आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष' में हाईस्कूल और इण्टरमीडिएट की पाठ्यपुस्तकों का नवीन परिवर्तित संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है।

हिंदी साहित्य का संसार बहुत व्यापक है। साहित्य की सार्थकता इस बात में निहित है कि वह मनुष्य को एक संवेदनशील इंसान बनाने में या बनाये रखने में अपनी स्पष्ट भूमिका का निर्वहन करे। हिंदी–साहित्य ने सदैव इस चुनौतीपूर्ण दायित्व को स्वीकारा है और उसका निर्वाह किया है। हिंदी 'भाषा' और 'साहित्य' दोनों स्तरों पर एक समृद्ध परंपरा का ध्यान रखते हुए हमारा उद्देश्य विद्यार्थियों में भाषायी योग्यता का विकास करना, उनमें साहित्य की विभिन्न विधाओं के प्रति अनुराग उत्पन्न करना, उन्हें साहित्यिक नवीनता एवं उपलब्धियों से परिचित कराते हुए सफल इंसान बनाना है। हमारा प्रयास है कि पुस्तक में संकलित 'पाठ्य–सामग्री' विद्यार्थियों में मौलिक चिन्तन, समीक्षात्मक दृष्टिकोण एवं सृजनात्मक प्रतिभा के विकास के साथ–साथ उनमें मानवीय मूल्यों के प्रति गहरी आस्था उत्पन्न करने वाली, भारतीय सांस्कृतिक चेतना जाग्रत करने वाली तथा उन सब में राष्ट्रीय भावना भरने वाली हो। हिंदी साहित्य का उद्देश्य रहा है कि प्रतिबद्ध नागरिकों का निर्माण किया जाए ताकि समाज और देश की बौद्धिक उन्नति की पताका वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठापित हो सके। इस पुस्तक के माध्यम से हमारी हर संभव कोशिश है कि हम विद्यार्थियों को ऐसी पाठ्यसामग्री उपलब्ध करायें जो उनकी अभिरुचियों का परिमार्जन करते हुए उनमें यथोचित अभिवृत्तियों, भावात्मक एकता, आत्मीय संवेदनशीलता तथा वैचारिक प्रखरता का विकास कर सके। अतः हिंदी की इस पाठ्यपुस्तक का अध्ययन एवं वाचन अत्यंत उपयोगी और ज्ञानवर्द्धक है। संस्कृत भाषा की एक सामान्य समझ विकसित हो सके, इसका भी पुस्तक में ध्यान में रखा गया हैं।

माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तर प्रदेश, प्रयागराज ने पाठ्यक्रम और परीक्षा प्रणाली के सभी पक्षों को दृष्टि में रखते हुए विद्वान परामर्शदाताओं, सुयोग्य एवं अनुभवी विषय–विशेषज्ञों तथा विभागीय सदस्यों के अथक परिश्रम से कक्षा 9–10 एवं 11–12 के लिए हिंदी की सुंदर एवं उत्कृष्ट पुस्तकें तैयार करायी हैं। आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि ये पुस्तकें शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए अत्यंत बोधगम्य और उपयोगी साबित होंगी। सुझावों का स्वागत रहेगा।

डॉ. महेन्द्र देव
निदेशक (मा0) / सभापति
माध्यमिक शिक्षा परिषद्
उत्तर प्रदेश, प्रयागराज

पाठ्यपुस्तक–निर्माण–समिति

संरक्षक :

श्री दीपक कुमार, अपर मुख्य सचिव, माध्यमिक शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश शासन।

निर्देशक :

डॉ0 महेन्द्र देव, शिक्षा निदेशक (माध्यमिक), उत्तर प्रदेश लखनऊ।

संयोजक :

श्री दिब्यकान्त शुक्ल, सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

सह–संयोजक :

श्री अशोक कुमार गुप्ता, अपर सचिव (पा0पु0रा0), माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।
श्रीमती श्रद्धा शुक्ला, उपसचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।
श्रीमती मनीषा कुशवाहा, सहायक सचिव, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उत्तर प्रदेश, प्रयागराज।

परामर्शदाता मण्डल

1. प्रो0 उमाकांत यादव, संस्कृत विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
2. डॉ0 कुमार वीरेंद्र, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
3. डॉ0 आशुतोष पार्थेश्वर, एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
4. डॉ0 सुनील कुमार सुधांशु, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
5. डॉ0 अमृता, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
6. डॉ0 लक्ष्मण प्रसाद गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज।

विषय–विशेषज्ञ

1. डॉ0 ज्योति यादव, असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हमीरपुर, भदोही।
2. डॉ0 विजयराज यादव, प्रवक्ता (संस्कृत), अग्रसेन इण्टर कालेज, प्रयागराज।
3. रेनू घिल्डियाल, प्रवक्ता, क्रॉस्थवेट गर्ल्स इण्टर कालेज, प्रयागराज।
4. जयशंकर मिश्रा, प्रवक्ता, अग्रसेन इण्टर कालेज, प्रयागराज।
5. अरुणा यादव, प्रवक्ता, राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, फूलपुर, प्रयागराज।
6. डॉ0 अनीता, प्रवक्ता, राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज, मुंगारी, करछना, प्रयागराज।
7. शिखा वर्मा, प्रवक्ता, राजकीय इण्टर कॉलेज, प्रयागराज।
8. कमल सिंह, सहायक अध्यापक, राजकीय इण्टर कॉलेज, प्रयागराज।

समन्वयक

इंदु यादव, शोध सहायक, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ0 प्र0 प्रयागराज।
सरोज यादव, साहित्यिक सहायक, माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ0 प्र0 प्रयागराज।

चित्रांकन

आशीष नारायन।

●

भूमिका

ज़िंदगी का सच यह है कि यह कोई क्रम नहीं बनाती है, लेकिन क्रम, अवस्था और काल के अनुसार जीवन का इतिहास लिखा जा सकता है, लिखा जाता रहा है। यह साहित्य का भी सच है। साहित्य ज्ञान और संवेदना की अनवरत प्रवाहमान धारा है, जिसमें एकरेखीय दिशागत क्रमबद्धता से ज्यादा बहुरेखीय वक्रता का सौंदर्य है। फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिए साहित्य की धारा को काल की सीमा में बाँधा जाता है, उसे 'काल–विभाजन' भी कहा जाता है। खंडों में विभाजित किए गए काल को विशेष नामों से जाना जाता है, जिसके लिए एक शब्द 'नामकरण' प्रचलित है, जैसे–आदिकाल, पूर्व मध्य काल (भक्ति काल) उत्तर मध्य काल (रीति काल) तथा आधुनिक काल। इन विभिन्न काल खंडों की अपनी कुछ प्रवृत्तियाँ हैं, कुछ वैशिष्ट्य हैं, कुछ शाखाएँ हैं, कुछ उपखंड हैं। इनमें भी कुछ प्रवृत्तिमूलक हैं, कुछ युगबोधक हैं, कुछ वादमूलक हैं और कुछ विमर्शमूलक हैं, जैसे–रासो काव्य,, ज्ञानाश्रयी, प्रेमाश्रयी, निर्गुण, सगुण, रीति सिद्ध, रीतिबद्ध, रीतिमुक्त भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, समकालीन कविता, स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, ट्रांसजेंडर विमर्श आदि। इन सभी को ध्यान में रखते हुए कक्षा 9 के विद्याथियों के लिए निर्धारित हिंदी–पाठ्य–पुस्तक के प्रारंभ में ही हिंदी पद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया गया है और इसके तहत दो काल खंडों–आदिकाल तथा भक्तिकाल पर विशेष पाठ्य सामग्री दी गई है। साथ ही, हिंदी गद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय कराते हुए भारतेन्दु युग और द्विवेदी युग पर विशेष ध्यान केंद्रित किया गया है।

हिंदी की पाठ्य –पुस्तक का यह संस्करण परिशोधित है। परिशोधन–परिवर्द्धन की आवश्यकता दो कारणों से महसूस की गई। पहला कारण तो यह है कि पूर्व में प्रकाशित कुछ रचनाओं के मूल पाठ में या तो विकृतियाँ थीं या पाठांतर था। इसलिए विषय–विशेषज्ञों और परामर्शदाताओं द्वारा संबंधित रचना के मूल पाठ और मूल स्रोत का गहन अध्ययन कर बारीकी से मिलान किया गया। तत्पश्चात् रचनाएँ पुस्तक में संगृहीत की गईं और कोशिश की गई कि शिक्षकों–विद्यार्थियों तक रचना मूल रुप में पहुँचे। हाँ, रचनाओं को नवीं कक्षा के विद्यार्थियों के बौद्धिक स्तर के अनुरुप बनाने के लिए यथास्थान उनका आवश्यक संपादन किया गया है, लेकिन ऐसा करते समय यह ध्यान रखा गया है कि रचना की मौलिकता अप्रभावित रहे और उसके साहित्यिक सौष्ठव को कोई क्षति न पहुँचे।

पुस्तक में परिशोधन का दूसरा कारण यह है कि परीक्षा–प्रणाली में अद्यतन संशोधन किए गए हैं, जिसके अनुसार प्रश्नों की प्रकृति में परिवर्तन हुए हैं। इसको ध्यान में रखते हुए अभ्यास के प्रश्नों को नए स्वरूप में प्रस्तुत किया गया है और इनमें बहुविकल्पीय वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को भी सम्मिलित किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में पाँच खंड हैं– पद्य खंड, गद्य खंड, एकांकी खंड, संस्कृत खंड और संस्कृत–हिंदी व्याकरण खंड।

पद्य–खंड में हिंदी के मध्यकालीन एवं आधुनिक काल के प्रमुख तेरह कवियों की चयनित रचनाएँ पुस्तक में रखी गईं हैं। इन रचनाओं के निर्धारण के पीछे यह लक्ष्य रहा है कि इन रचनाओं के द्वारा विद्यार्थियों के काव्य– बोध और सौंदर्य बोध का परिष्कार हो, साथ ही समझ,संवदेना और विचार के स्तरों का अपेक्षित उन्नयन हो तथा साहित्य की आस्वादकता में स्तरीय वृद्धि हो। इस लक्ष्य की प्राप्ति तब ही संभव है, जब हम–कबीर, रैदास, मीरा, रहीम, भारतेंदु, मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, निराला, सोहनलाल द्विवेदी, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, शिवमंगल सिंह 'सुमन', हरिवंशराय बच्चन आदि की कविताओं को रुचि लेकर इत्मीनान भाव से पढ़ेंगे।

गद्यखंड में प्रसिद्ध कथाकार प्रेमचंद की कहानी 'मंत्र' रखी गई है, जिसके केंद्र में मानवीय संवेदना है। गुरुनानक देव का जीवन और संदेश पीढ़ियों से प्रेरणा देता आ रहा है। निबंध के प्रमुख हस्ताक्षर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का बहुपठित निबंध 'गुरुनानक देव' वर्तमान पीढ़ी में प्रेरणा का संचार करेगा। छायावाद की कवयित्री महादेवी वर्मा केवल अपनी कविताओं के कारण ही नहीं जानी गईं, उन्होंने रेखाचित्र, संस्मरण और वैचारिक गद्य भी लिखे हैं। महादेवी वर्मा के लिए 'परिवार' का मतलब केवल मनुष्य या रक्त–संबंधी नहीं था, उनके 'परिवार' में अन्य जीव–जंतुओं की भी सशक्त उपस्थिति थी। पुस्तक में संकलित 'गिल्लू' में आप इसका बखूबी अनुभव कर सकते हैं। धर्मवीर भारती ने उपन्यास, नाटक के अतिरक्त जिन उल्लेखनीय निबंधों की रचना की है, उनमें से एक 'ठेले पर हिमालय' है, जिसमें संस्मरण यात्रा सहित अन्य विधाएँ सहज सुमेलित हो गई हैं। प्रारंभिक निबंधकारों में से एक प्रतापनारायण मिश्र थे, विद्यार्थियों को उनकी लेखन शैली से परिचित कराने के उद्देश्य से 'बात' को रखा गया है। स्वतंत्रता–संग्राम के दौरान जिन महिलाओं ने अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया, उनमें से एक महत्त्वपूर्ण नाम कस्तूरबा गाँधी का है। काका कालेलकर ने अत्यंत आत्मीयता के साथ कस्तूरबा पर लिखा है– 'निष्ठामूर्ति कस्तूरबा'। तोता को सभी ने बागों में फलों को कुतरते देखा है, महान साहित्यकार रवींद्रनाथ टैगोर की सिहित्यिक नज़र से 'तोता' को देखा–समझा जाए। श्रीराम शर्मा की 'स्मृति' को पढ़कर विद्यार्थी जीवन के विविध पक्षों पर अपनी राय बना सकेंगे। चलने के कुछ नियम होते हैं, विशेष रूप से सड़क पर चलने के। इसके पीछे दो भावनायें काम करती हैं, खुद सुरक्षित रहना तथा दूसरों को भी सुरक्षित रखना या देखना। इसकी समझदारी बचपन से ही आ जाए इसलिए 'सडक सुरक्षा एवं यातायात के नियम' का पाठ पुस्तक में रखा गया है।

एकांकी नाट्य कला की आधुनिक विधा है और यह जीवन की एकसूत्रता को एक अंक में प्रदर्शित करने की क्षमता रखती है। हिंदी साहित्य में एकांकी को विधागत प्रमुखता प्रदान करने में जिन एकांकीकारों ने अपनी सकारात्क और सार्थक भूमिकाएँ निभायी हैं, उनकी चर्चित एकांकियों में से एक–एक को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया गया है। साथ ही, एकांकी की परिभाषा, विशेषता और विकास

यात्रा से विद्यार्थियों को भलीभांति परिचित कराने के उद्‌देश्य से पर्याप्त साहित्यिक सामग्री संयोजित की गई है।

संस्कृत प्राचीन भाषा है और उसके तमाम शब्द विभिन्न भाषाओं में घुले–मिले हैं। उन शब्दों के रूप की पहचान विद्यार्थियों को हो सके, इस उद्देश्य से 'धातुरूप' और 'अनुवाद' के अंश पुस्तक में रखे गए हैं। संस्कृत साहित्य की समृद्ध परंपरा का ज्ञान विद्यार्थी प्राप्त कर सकें, इसको ध्यान में रखते हुए संस्कृत के सात पाठ पुस्तक में रखे गए हैं।

काव्य का सौंदर्य संदर्भित करने के इरादे से उसके प्रमुख तत्त्वों–रस, छंद, अलंकार पर प्रचुर सामग्री इस पुस्तक में संगृहीत है। जीवन में भाषा का अहम रोल है। भाषा, सीखने की एक अनवरत प्रक्रिया से आती है। बोलने और लिखने के दौरान कुछ सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं, तभी भाषा का प्रवाह शुद्ध और संप्रेषणीय बनता है। हिंदी व्याकरण तथा शब्द रचना उपखंड के तहत वह सब कुछ रखा गया है, जिससे विद्यार्थियों की भाषा में अपेक्षित निखार और प्रांजलता आए।

तकनीक की बदलती दुनिया या कहा जाए कि डिजिटल युग में पत्र लेखन के तौर–तरीके बदल गए हैं और पत्रों की आवाजाही प्रभावित हुई है, लेकिन पत्रों का महत्त्व आज भी बरकरार है। अनौपचारिक और औपचारिक पत्रों की शैली में भिन्नता होती है और कार्यालयी पत्रों की साहित्यिक भाषा–शैली में भिन्नता होती है और कार्यालयी पत्रों को साहित्यिक भाषा–शैली में नही लिख जा सकता है और न ही व्यक्तिगत पत्रों को कार्यालयी भाषा में। पुस्तक में हम विद्यार्थियों को 'पत्र–लेखन' की भाषा और शैली से परिचित करा रहे हैं।

कक्षा 9 विद्यार्थियों के जीवन में अहम पड़ाव की तरह है, जिसमें सोच–विचार और अभिव्यक्ति के विभिन्न आयाम आकार लेते हैं। इसलिए पुस्तक में पाठ और पाठ आधारित सामग्री का चुनाव विद्यार्थियों की बौद्धिक और भाषिक क्षमताओं, उनकी रुचियों तथा उपयोगिता को दृष्टि में रखकर किया गया है। लेखकों रचनाकारों का परिचय देने की शैली तथ्यपरक, सहज एवं रुचिकर रखी गई है ताकि विद्यार्थियों को किसी रचनाकार से जुड़ने में अतिरिक्त बोझ या दबाव का अनुभव न हो। पुस्तक में रचनाकारों के जो चित्र हैं, वे माध्यमिक शिक्षा परिषद, उत्तर प्रदेश प्रयागराज के चित्र–निर्माण शिविर के दौरान तैयार कराए गए हैं।

यह सच है कि भाषा शब्दों से निर्मित होती है, लेकिन ज्यादा सच है कि भाषा शब्दों पर ही समाप्त नहीं हो जाती है। इसके लिए उसका विभिन्न कोणों से विश्लेषण अपेक्षित होता है। पाठ के अंत में शब्द, उनके अर्थ, केंद्रीय भाव, अनुभूति तथा अभिव्यक्ति, भाषा के रंग तथा अभ्यास के प्रश्न रखने के पीछे यही उद्देश्य रहा है।

पुस्तक–संपादन के पीछे के महत् उद्देश्यों की पूर्ति संभव हो सके, इसके लिए यह अति आवश्यक है कि विद्यार्थी पाठों को घर पर पहले बोलकर पढ़ने का अभ्यास करें, फिर मौन रहकर पाठों में व्यक्त विचार और संवेदना पर चिंतन–मनन करें। इससे लाभ ये होंगे कि उच्चारण में शुद्धता आएगी, पाठ में

निहित विचारों को समझने का विवेक उत्पन्न होगा और समझ के साथ दृष्टि का विकास होगा। हमें आशा ही नहीं, बल्कि पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक के अध्ययन, मनन, चिंतन, वाचन और प्रयोग से विद्यार्थियों की भाषिक क्षमता, उनकी मानसिक क्षितिज, जीवन–जगत् के संबंध में उनकी जानकारी संबंधित होगी, उनका नैतिक विकास होगा तथा साहित्य की विभिन्न विधाओं के प्रति उनका औत्सुक्य और आकर्षण बढ़ेगा।

पुस्तक में संकलित पाठों के चयन में और संपादन में विवेकसंगत परंपरा, वस्तुरक निष्पक्षता, सामाजिक– सांस्कृतिक सद्भाव राष्ट्रीयता की भावना, आधुनिकता–बोध, संवैधानिक और मानवीय मूल्यों को हरसंभव ध्यान में रखा गया है।

हम उन सभी रचनाकारों–लेखकों के प्रति नतमस्तक हैं, जिनकी रचनाएँ, जिनकी कृतियाँ प्रस्तुत पुस्तक में संकलित हैं और जिनके होने से हिंदी भाषा और साहित्य का संसार विस्तृत और समृद्ध हुआ है। इस पुस्तक को नए कलेवर में प्रस्तुत करने में अत्यंत गंभीरता एवं तल्लीनता के साथ संलग्न रहे सभी विद्वत्जनों के प्रति हार्दिक आभार।

आशा है कि यह पुस्तक विद्यार्थी और अध्यापक के बीच एक संवादात्मक संबंध बनाने में सेतु का काम करेगी। सुझावों का सदैव स्वागत रहेगा।

■

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन iii

भूमिका v

भाग – I

पद्य खंड

	कवि / लेखक	पाठ का नाम	
1.	**हिंदी पद्य साहित्य का इतिहास***		3-10
(1)	रैदास	– प्रभुजी तुम चंदन हम पानी	11-14
(2)	कबीरदास	– साखी*	15-20
(3)	मीराबाई	– पदावली*	21-26
(4)	रहीम	– दोहा*	27-33
(5)	भारतेंदु हरिश्चंद्र	– प्रेम माधुरी*	34-40
(6)	मैथिलीशरणगुप्त	– पंचवटी*	41-45
(7)	जयशंकर प्रसाद	– पुनर्मिलन	46-53
(8)	सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'	– दान	54-60
(9)	सोहनलाल द्विवेदी	– उन्हें प्रणाम	61-66
(10)	हरिवंशराय 'बच्चन'	– पथ की पहचान	67-73
(11)	नागार्जुन	– बादल को घिरते देखा है	74-79
(12)	शिवमंगल सिंह 'सुमन'	– युगवाणी	80-85
(13)	केदारनाथ अग्रवाल	– अच्छा होता	86-88

गद्य खंड

2.	**हिंदी गद्य साहित्य का इतिहास***		91-102
(1)	प्रतापनारायण मिश्र	– बात*	103-110
(2)	रवींद्रनाथ टैगोर	– तोता*	111-118
(3)	प्रेमचंद	– मंत्र*	119-134
(4)	काका कालेलकर	– निष्ठामूर्ति कस्तूरबा*	135-143
(5)	श्रीराम शर्मा	– स्मृति	144-153
(6)	महादेवी वर्मा	– गिल्लू*	154-161
(7)	हजारीप्रसाद द्विवेदी	– गुरुनानक*	162-170
(8)	धर्मवीर भारती	– ठेले पर हिमालय	171-180
(9)	....	– सड़क सुरक्षा एवं यातायात नियम*	181-186

एकांकी

3.	**एकांकी का अर्थ और स्वरूप**		189-200
(1)	सेठ गोविंद दास	– व्यवहार*	201-219
(2)	उदयशंकर भट्ट	– नये मेहमान*	220-235
(3)	डॉ॰ रामकुमार वर्मा	– दीपदान*	236-259
(4)	उपेंद्रनाथ अश्क	– लक्ष्मी का स्वागत*	260-275
(5)	विष्णु प्रभाकर	– सीमा रेखा*	276-294

भाग – II

संस्कृत खंड

(1)	वंदना*	297-299
(2)	सदाचार*	300-303
(3)	पुरुषोत्तमः रामः*	304-307
(4)	सिद्धिमंत्रः*	308-311
(5)	सुभाषितानि*	312-315
(6)	परमहंसः रामकृष्णः*	316-319
(7)	कृष्णः गोपालनंदनः*	320-322

संस्कृत–हिंदी व्याकरण खंड

संस्कृत व्याकरण–संधि*, शब्दरूप*, धातुरूप*, संस्कृत अनुवाद*	325-342
काव्य सौंदर्य के तत्त्व– रस*, छंद*, अलंकार*	343-353
हिंदी व्याकरण तथा शब्द रचना– वर्तनी तथा विराम चिह्न*	354-363
शब्द रचना*	364-373
समास*	374-376
मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ*	377-385
पत्र–लेखन*	386-390

●

नोट : * प्रारंभिक हिंदी हेतु निर्धारित पाठ्य वस्तु।

पद्य–खंड

हिंदी पद्य के विकास का संक्षिप्त परिचय

हिंदी पद्य साहित्य के आरंभ को विद्वानों ने सरहपा, स्वयंभू, पुष्प या पुष्य आदि कवियों से जोड़ा है। इन कवियों का समय 7वीं तथा 8वीं शताब्दी के मध्य स्वीकार किया गया है। इस आधार पर हिंदी पद्य साहित्य का उद्भव 7वीं शताब्दी के आस-पास माना जाता है। हिंदी पद्य साहित्य के इतिहास को चार काल खंडों में विभाजित किया जा सकता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल द्वारा किया गया काल विभाजन सर्वाधिक प्रचलित है, जो उन्होंने संवत् के आधार पर किया है। यहाँ काल विभाजन का ईस्वी सन् भी दिया जा रहा है। जो इस प्रकार है–

(i) आदिकाल – संवत् 1050 – 1375 वि. (सन् 993 – 1318 ई.)
(ii) भक्तिकाल – संवत् 1375 – 1700 वि. (सन् 1318 – 1643 ई.)
(iii) रीतिकाल – संवत् 1700 – 1900 वि. (सन् 1643 – 1843 ई.)
(iv) आधुनिककाल – संवत् 1900 – अद्यतन (सन् 1843 ई. – अद्यतन)

आदिकाल : हिंदी साहित्य के आरंभिक काल को आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने **आदिकाल**, आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने **वीरगाथाकाल**, राहुल सांकृत्यायन ने **सिद्ध–सामंत काल** आदि नामों से संबोधित किया है। आदिकाल के समय का निर्धारण भी विद्वानों ने अपने-अपने अनुसार किया है, कुछ विद्वान 7वीं शताब्दी कुछ 8वीं शताब्दी से मानते हैं, परंतु आचार्य शुक्ल ने सन् 993 ई. से हिंदी पद्य साहित्य का आरंभ स्वीकार किया है।

आदिकालीन काव्य में सिद्ध, नाथ, जैन साहित्य के साथ-साथ रासो साहित्य का अपना विशिष्ट स्थान है। सिद्धसाहित्य में सिद्ध कवियों का संबंध बौद्ध धर्म से जोड़ा जाता है। इनका आविर्भाव बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा से माना गया है। इनकी संख्या 84 है। इनमें प्रथम सिद्ध सरहपा तथा अन्य प्रमुख सिद्धों में शबरपा, कण्हपा, डोंभिपा आदि प्रसिद्ध हैं। इनकी रचनाओं में **दोहाकोश**–सरहपा, **योगचर्या**–डोंभिपा **चर्यापद** –शबरपा आदि प्रमुख हैं।

हिंदी पद्य के विकास में नाथ साहित्य का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। नाथ संप्रदाय की स्थापना गोरखनाथ ने की थी। नाथों की संख्या 09 मानी गई है, जिनमें नागार्जुन, जड़भरत, हरिश्चंद्र, सत्यनाथ, भीमनाथ, गोरक्षनाथ, चर्पट, जलंधर और मलयार्जुन हैं।

जैन धर्म से संबंध रखने वाले कवियों को आदिकाल में जैन साहित्य के अंतर्गत रखा गया है। इन कवियों ने जैनाचार्यों के जीवन चरित, प्रबंधकाव्य, रासकाव्य से संबंधित रचनाएँ की। जिनमें स्वयंभू का **पउमचरिउ**, पुष्पदंत का **महापुराण**, राम सिंह का

पाहुड़ दोहा, आसगु का **चंदनबाला रास**, शालिभद्र सूरि का **भरतेश्वरबाहु बलि रास** आदि प्रमुख हैं।

आदिकाल में वीरगाथा काव्य लिखे गए। जिनमें राजाओं के शौर्य एवं पराक्रम का ओजपूर्ण शैली में वर्णन किया गया है। ये रचनाएँ वीर एवं श्रृंगार रस प्रधान रहीं इन्हीं वीरगाथाओं को रासो काव्य कहा गया है तथा आचार्य शुक्ल ने इन्हीं के आधार पर आदिकाल को वीरगाथा काल कहा है।

आदिकाल के अन्य प्रमुख कवियों में विद्यापति, अमीर खुसरो और अब्दुर्रहमान का नाम भी विशेष उल्लेखनीय है। अमीर खुसरो ने बोलचाल के मुहावरों–लोकोक्तियों का प्रयोग कर लोक में अपना स्थान बनाया। इन्होंने खड़ीबोली में भी रचनाएँ की, जिसके कारण इन्हें हिंदी खड़ी बोली का प्रथम कवि स्वीकार किया जाता है। विद्यापति हिंदी साहित्य में मैथिल कोकिल के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनकी रचनाओं में **कीर्तिलता, कीर्ति पताका, पदावली** आदि प्रसिद्ध है। अब्दुर्रहमान नामक कवि ने **संदेश रासक** नामक धर्मेतर काव्य ग्रंथ लिखा।

आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ : आदिकालीन साहित्य विविधता से भरा हुआ है। आरंभिक काल होने के कारण अपभ्रंश, अवहट्ट के साथ-साथ डिंगल, पिंगल के साथ खड़ीबोली के कुछ रूप भी मिलते हैं। जहाँ एक तरफ नाथों एवं सिद्धों के काव्य में रहस्यात्मक भावना की प्रधानता के साथ-साथ बाह्याचारों का खंडन है वही दूसरी तरफ विद्यापति के काव्य में भक्ति एवं श्रृंगार की भावना भी प्रस्फुटित हुई है। इस काल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नवत् हैं –

1. आश्रयदाताओं की अतिशयोक्तिपूर्ण प्रशंसा
2. युद्धों का सजीव वर्णन
3. वीर एवं श्रृंगार रस की प्रधानता
4. सामूहिक एकता की भावना का अभाव

प्रमुख रासो कवि एवं उनके ग्रंथ :

कवि	**ग्रंथ**
1. दलपतविजय	खुमाणरासो
2. चंदबरदाई	पृथ्वीराजरासो
3. शारंगधर	हम्मीररासो
4. नल्लसिंह	विजयपालरासो
5. जगनिक	परमालरासो/आल्हखंड
6. नरपति नाल्ह	बीसलदेवरासो
7. भट्टकेदार	जयचंद्रप्रकाश
8. मधुकर	जयमयंकजसचंद्रिका

वीरगीतात्मक काव्य में 'आल्हखंड' सर्वाधिक लोकप्रिय काव्य है। महोबा के दो प्रसिद्ध वीरों–आल्हा और ऊदल (उदय सिंह) के वीर चरित पर आधारित यह वीरगीतात्मक काव्य हिंदी भाषा–भाषी प्रांतों के गाँव–गाँव में मेघगर्जन के बीच आज भी ढोल के गंभीर थाप के साथ वीर हुंकार के रूप में सुनाई पड़ता है।

वीरगाथाकाल में कुछ शृंगार तथा भक्ति पर केंद्रित रचनाएँ भी हुईं लेकिन प्रधानता वीरगाथाओं पर केंद्रित काव्य की ही रही। वीरगाथाकाल के ग्रंथों को 'रासो' कहा जाता है। 'रासो' शब्द के संबंध में भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न मत दिए हैं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार बीसलदेव रासो में प्रयुक्त 'रसायण' शब्द ही कालांतर में 'रासो' बना है। वहीं विश्वनाथ प्रसाद मिश्र के अनुसार 'रासो' की व्युत्पत्ति का आधार 'रासक' शब्द है।

भाषायी दृष्टि से रासो ग्रंथ में संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, ब्रज आदि भाषाओं का पर्याप्त प्रयोग हुआ है। इन ग्रंथों में दोहा, सोरठा, त्रोटक, तोमर, चौपाई, गाथा, आर्या, सट्टक, रोला, छप्पय, कुंडलियाँ आदि विविध छंदों का कलात्मक प्रयोग हुआ है। यही कारण है कि इन रचनाओं में रसोत्कर्ष की अपूर्व शक्ति है जो सहज ही हृदय को छू लेती है।

भक्तिकाल

भक्तिकाल को हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग कहा गया है। इसका समय सन् 1318 – 1643 ई. तक माना गया है। इस समय की राजनैतिक, सामाजिक एवं धार्मिक परिस्थितियाँ परिवर्तित हो चुकी थीं। आदिकाल में जहाँ राजाओं के आपसी युद्धों का वर्णन और उनकी प्रशंसा मिलती है, वहीं भक्तिकाल में राजाओं की प्रशस्ति की जगह सामाजिक समस्याओं एवं भगवत् भक्ति ने ले ली। छोटे–छोटे स्वतंत्र राज्यों के समाप्त हो जाने तथा भारी राजनैतिक उलटफेर के कारण जन समुदाय हताश एवं निराश हो चुका था। ऐसी स्थिति में ईश्वर की भक्ति और करुणा एक मात्र आशा की किरण के रूप में दिखाई दी। इसी भक्ति भावना ने हिंदी पद्य साहित्य को विशेष रूप से प्रभावित किया और भक्ति की कई शाखाओं का उदय हुआ। भक्तिकाल तथा उसकी शाखाओं/उपशाखाओं का विद्वानों ने जो विभाजन किया है, वह इस प्रकार है–

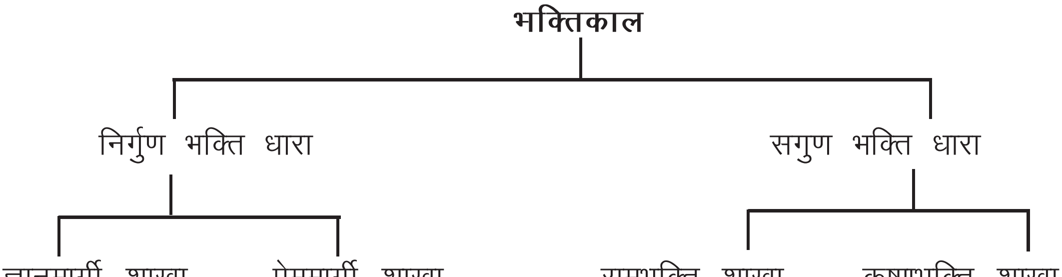

निर्गुण भक्ति धारा : जैसा कि नाम से ही विदित है निर्गुण भक्ति काव्य धारा में ईश्वर कें निर्गुण एवं निराकार रूप की उपासना को प्रमुखता दी गई। निर्गुण भक्ति धारा की दो प्रमुख उपशाखाएँ हैं –

(i) ज्ञानमार्गी शाखा **(ii)** प्रेममार्गी शाखा।

(i) ज्ञानमार्गी शाखा : ज्ञानमार्गी या ज्ञानाश्रयी शाखा के संतकवि 'एकेश्वरवाद' को मान्यता देते हैं। उनके ईश्वर निर्गुण व निराकार हैं। इस युग के कवियों में उपदेश (ज्ञान) देने तथा बाह्याडंबरों का विरोध करने की प्रवृत्ति प्रमुख रही है।

इस शाखा के प्रमुख कवि कबीरदास हैं। इनकी वाणी का संग्रह **बीजक** नाम से प्रसिद्ध है, जो तीन भागों में विभक्त है– साखी, सबद और रमैनी। इस शाखा के अन्य कवियों में संत रविदास(रैदास), नानक, दादू, मलूकदास, धर्मदास, सुंदरदास आदि प्रमुख हैं।

(ii) प्रेममार्गी शाखा : प्रेममार्गी या प्रेमाश्रयी शाखा के कवियों ने ईश्वर की प्राप्ति के लिए प्रेम को माध्यम बनाया। प्रेममार्गी शाखा के अधिकांश कवि सूफी साधक थे। इसलिए इस शाखा के अंतर्गत रचे गए साहित्य को सूफी साहित्य भी कहा जाता है। इस काल के कवियों ने लोक प्रचलित प्रेमाख्यानक चुनकर उन्हें इस प्रकार से काव्य का रूप दिया कि लोग प्रेम के महत्त्व को पहचानकर ईश्वर–प्रेम में लीन हों तथा प्रेम को ईश्वर प्राप्ति का माध्यम बनाएँ। फारसी की मसनवी शैली में दोहा तथा चौपाई छंदों में रची गई इन रचनाओं में प्रेम की पीर, विरह–वेदना की तीव्रता, कथा की रोचकता के साथ कल्पना और इतिहास का सुंदर सम्मिश्रण इस काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

प्रेममार्गी शाखा के कवि मलिक मोहम्मद जायसी हैं। इनके द्वारा रचित सबसे प्रसिद्ध **पद्मावत** है। अवधी भाषा में रचित इस प्रेमाख्यानक में 'लौकिक' आख्यान द्वारा 'पारलौकिक' प्रेम की अद्भुत व्यंजना है।

इस शाखा के प्रमुख कवि एवं उनके काव्य निम्नवत् हैं :

(कवि)	**(काव्य)**
कुतुबन	मृगावती
मंझन	मधुमालती
उस्मान	चित्रावली
शेखनबी	ज्ञानदीप
कासिमशाह	हंस जवाहिर
नूर मुहम्मद	इंद्रावती, अनुराग बाँसुरी

सगुण भक्ति धारा : निर्गुण भक्ति धारा में ईश्वर के निराकार स्वरूप की उपासना को प्रमुखता दी गई थी और इसी स्वरूप को काव्य का माध्यम बनाया गया। इसके विपरीत सगुण भक्ति धारा में ईश्वर के सगुण व साकार स्वरूप को महत्ता देते हुए काव्य सृजन किया गया। इस काव्य धारा की दो प्रमुख उप-शाखाएँ हैं – **(i)** रामभक्ति शाखा **(ii)** कृष्णभक्ति शाखा।

(i) रामभक्ति शाखा : ग्यारहवीं शताब्दी में स्वामी रामानुजाचार्य ने ईश्वर भक्ति के क्षेत्र में अवतार-भावना को प्रतिष्ठित कर सगुण भक्ति धारा का आरंभ किया। इन्हीं की शिष्य परंपरा को आगे बढ़ाते हुए पंद्रहवीं शताब्दी में स्वामी रामानंद ने समाज की चित्तवृत्तियों को समझते हुए जनता के बीच रामभक्ति का प्रचार-प्रसार किया। गोस्वामी तुलसीदास ने रामभक्ति परंपरा को आगे बढ़ाते हुए **रामचरितमानस** की रचना की। इसमें मर्यादा पुरुषोत्तम राम के 'शक्ति-शील और सौंदर्य' से समन्वित रूप का चित्रण कर न केवल भारत वरन् विश्व को 'लोक-आदर्श' एवं रामराज्य की महान् कल्पना की अनुपम सौगात दी।

अवधी भाषा में रचित 'रामचरितमानस' की कथा का मूल स्रोत 'वाल्मीकि रामायण' है। 'रामचरितमानस' में दोहा-चौपाई शैली का प्रयोग है। रचना-कौशल, प्रबंध-पटुता, भाव-प्रवणता, रस, रीति, छंद, अलंकार आदि सभी दृष्टियों से उत्कृष्ट इस महाकाव्य में लोक-मंगल की अद्‌भुत भावना विद्यमान है।

तुलसीदास की अन्य रचनाओं में **विनयपत्रिका, दोहावली, गीतावली, कृष्णगीतावली, कवितावली, बरवै रामायण, पार्वतीमंगल, जानकीमंगल** आदि प्रमुख हैं। अन्य रचनाकारों में नाभादास, अग्रदास, प्राणचंद चौहान, हृदयराम आदि हैं।

(ii) कृष्णभक्ति शाखा : सगुण भक्ति शाखा की दूसरी प्रमुख उप-शाखा कृष्णभक्ति शाखा है। इस काव्य धारा के रचनाकारों ने कृष्ण को पूर्ण ब्रह्म मानते हुए इनकी भक्ति पर आधारित साहित्य का सृजन किया। कृष्ण भक्ति शाखा को आरंभ करने का श्रेय श्री वल्लभाचार्य को जाता है।

इस शाखा के प्रमुख कवि सूरदास हैं। सूरदास के कृष्ण-लीला पर केंद्रित मधुर पदों ने जन-मानस को आनंद मग्न करते हुए भक्ति, प्रेम और संगीत की अद्‌भुत धारा बहाई। उनके **सूरसागर** में श्रीकृष्ण के जीवन से जुड़े बाल-लीला, गोचारण, गोपी-प्रेम, भ्रमर-गीत आदि से संबंधित अत्यंत मनोरम पद हैं। **सूरसारावली** और **साहित्य लहरी** उनकी अन्य प्रमुख रचनाएँ हैं।

कृष्णभक्ति शाखा के कवियों में सूरदास के अतिरिक्त कुंभनदास, परमानंददास, कृष्णदास, छीतस्वामी, गोविंदस्वामी, चतुर्भुजदास, नंददास प्रमुख हैं। आठ कवियों के इस

समुदाय को ही **अष्टछाप** कहा जाता है। इसके अतिरिक्त कृष्णभक्ति शाखा में मीराबाई, रसखान आदि का भी नाम उल्लेखनीय है।

भक्तिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ : ईश्वर में सहज आस्था और विश्वास, ईश्वर का भक्त वत्सल स्वरूप, ईश्वर के नाम-स्मरण तथा जप, कीर्तन, भजन की महत्ता, लोक मंगल की भावना, सामाजिक कुरीतियों का विरोध, गुरु का सम्मान, अहंकार की भावना का त्याग जैसे आदर्शों का होना इस युग की सामान्य प्रवृत्तियाँ थी। इन प्रवृत्तियों को कबीर, सूर, जायसी, तुलसी जैसे संत महात्माओं की वाणी ने काव्यात्मक रूप से जनमानस तक पहुँचाया। इन सब कारणों तथा भावपक्ष व कला-पक्ष के उत्कृष्टतम स्वरूप के कारण इस युग को हिन्दी साहित्य का 'स्वर्ण युग' कहा जाता है।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. आदिकाल को और किस नाम से जाना जाता है ?
   (क) चारणकाल (ख) भक्तिकाल (ग) रीतिकाल (घ) स्वर्णकाल
2. आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्ति है :
   (क) मुहावरों की अधिकता (ख) भक्ति भावना
   (ग) आश्रयदाताओं की प्रशंसा (घ) उपदेश देने की प्रवृत्ति
3. 'पउमचरिउ' किसकी रचना है ?
   (क) स्वयंभू (ख) पुष्पदंत (ग) सरहपा (घ) चंदबरदाई
4. 'परमाल रासो' के रचयिता हैं :
   (क) चंदबरदाई (ख) जगनिक (ग) दलपतविजय (घ) शारंगधर
5. वीरगाथाकाल के ग्रंथों को कहा जाता है :
   (क) रासो (ख) वीरहुंकार (ग) साखी (घ) सबद
6. निम्न में से कौन आदिकाल का कवि नहीं है ?
   (क) दलपतविजय (ख) चंदबरदाई (ग) नरपति नाल्ह (घ) रसखान
7. वीरगाथाकाल के कवि हैं :
   (क) केशव (ख) सूरदास (ग) चंदबरदाई (घ) भूषण
8. काव्य साहित्य में कौन–सा काल स्वर्णयुग कहलाता है ?
   (क) आदिकाल (ख) भक्तिकाल (ग) रीतिकाल (घ) आधुनिककाल
9. नरपति नाल्ह की रचना है :
   (क) खुमाणरासो (ख) संदेश रासक (ग) बीसलदेव रासो (घ) पदावली

10. 'पृथ्वीराजरासो' के रचनाकार हैं :
(क) जायसी (ख) भूषण (ग) चंदबरदाई (घ) शारंगधर
11. निम्न में से कौन–सा कवि आदिकाल से संबंधित नहीं है ?
(क) दलपतविजय (ख) जगनिक (ग) कुंभनदास (घ) भट्‌टकेदार
12. निम्न में से कौन–सा कवि आदिकाल से संबंधित है ?
(क) शारंगधर (ख) भूषण (ग) नाभादास (घ) केदारनाथ सिंह
13. 'जयमयंकजसचंद्रिका' के रचनाकार कौन हैं ?
(क) जगनिक (ख) मधुकर (ग) नल्लसिंह (घ) भट्‌टकेदार
14. 'खुमाणरासो' के रचनाकार हैं :
(क) चंदबरदाई (ख) जगनिक (ग) दलपतविजय (घ) भूषण
15 अष्टछाप के कवि नहीं हैं :
(क) सूरदास (ख) नंददास (ग) छीतस्वामी (घ) तुलसीदास
16. भक्तिकाल का महाकाव्य है :
(क) कामायनी (ख) रामचरितमानस (ग) साकेत (घ) पृथ्वीराजरासो
17. मृगावती रचना है :
(क) कुतुबन की (ख) मंझन की (ग) उस्मान की (घ) कासिमशाह की
18. 'हंस जवाहिर' रचना है :
(क) नूर मुहम्मद (ख) कासिमशाह (ग) शेखनबी (घ) मंझन
19. वीरगाथा काव्य की विशेषता है :
(क) मुक्तक काव्य रचना (ख) प्रकृति चित्रण
(ग) युद्धों का सजीव वर्णन (घ) नारी सौंदर्य और प्रेम चित्रण
20. चारणकाल की कौन–सी विशेषता नहीं है ?
(क) रहस्यवाद (ख) आश्रयदाताओं की प्रशंसा
(ग) युद्धों का सजीव वर्णन (घ) वीररस की प्रधानता
21. ज्ञानमार्गी शाखा के प्रमुख कवि हैं ?
(क) सूरदास (ख) तुलसीदास (ग) कबीरदास (घ) जायसी
22. प्रेममार्गी शाखा के प्रमुख कवि हैं :
(क) तुलसी (ख) सूर (ग) जायसी (घ) कबीर
23. 'रामचरितमानस' के रचनाकार हैं :
(क) तुलसीदास (ख) वाल्मीकि (ग) केशवदास (घ) नरोत्तमदास
24. ज्ञानमार्गी शाखा के कवियों में कौन शामिल नहीं है ?
(क) रैदास (ख) दादू (ग) मलूकदास (घ) मंझन

25. 'अनुराग बाँसुरी' के रचनाकार हैं :
(क) नूर मुहम्मद (ख) कासिमशाह (ग) उस्मान (घ) शेखनबी
26. रासो शब्द की व्युत्पत्ति 'रसायण' शब्द से किसने माना है ?
(क) विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (ख) आचार्य रामचंद्र शुक्ल
(ग) हजारी प्रसाद द्विवेदी (घ) महावीर प्रसाद द्विवेदी
27. सुमेल है :
(क) बीसलदेवरासो – नरपति नाल्ह
(ख) खुमाणरासो – जगनिक
(ग) विजयपालरासो – चंदबरदाई
(घ) परमालरासो – दलपतविजय
28. 'इंद्रावती' के रचनाकार हैं :
(क) कासिमशाह (ख) उस्मान (ग) नूर मुहम्मद (घ) कुतुबन
29. रामभक्ति शाखा के प्रमुख कवि हैं ?
(क) तुलसीदास (ख) सूरदास (ग) कबीरदास (घ) कुंभनदास
30. निम्न में से कौन–सा कवि अष्टछाप के अंतर्गत नहीं आता है ?
(क) कुंभनदास (ख) नंददास (ग) सुंदरदास (घ) सूरदास
31. निम्न में से कौन–सा कवि अष्टछाप के अंतर्गत आता है ?
(क) छीतस्वामी (ख) रसखान (ग) मीराबाई (घ) उस्मान
32. 'रामचरितमानस' किस भाषा में रचित ग्रंथ है ?
(क) अवधी (ख) बघेली (ग) खड़ी बोली (घ) ब्रजभाषा
33. मीराबाई किस काल से संबंधित हैं ?
(क) आदिकाल (ख) भक्तिकाल (ग) रीतिकाल (घ) आधुनिककाल
34. निम्न में से कौन कवि भक्तिकाल से संबंधित नहीं है ?
(क) सूर (ख) तुलसी (ग) मधुकर (घ) मंझन
35. पद्मावत के रचनाकार हैं :
(क) जायसी (ख) मंझन (ग) उस्मान (घ) नूरमुहम्मद
36. आल्हखंड किस रचना का लोकप्रिय नाम है ?
(क) खुमाणरासो (ख) हम्मीररासो (ग) बीसलदेव रासो (घ) परमालरासो
37. 'बीजक' किसकी रचनाओं का संग्रह है ?
(क) कबीर (ख) तुलसी (ग) जायसी (घ) सूर

■

रैदास

(सन् 1388 – 1518 ई.)

भक्तिकाल के प्रसिद्ध निर्गुण कवि रैदास का जन्म **सन् 1388 ई.** में और निधन **सन् 1518 ई.** में **बनारस** में माना जाता है। उनके माता–पिता और शिक्षा–दीक्षा के संबंध में कुछ विशेष ज्ञात नहीं है। वे अपने समय के प्रसिद्ध संत थे। कबीर ने 'संतनि में रविदास संत' कहकर उनका महत्त्व बताया है। यह भी ख्यात है कि कृष्ण की अनन्य भक्त मीरा ने रैदास का शिष्यत्व ग्रहण किया था।

रैदास साक्षर नहीं थे; किंतु उनका ज्ञान और अनुभव बहुत विस्तृत और व्यापक है। मध्ययुगीन संतों में वे अपनी विनम्रता, ईश्वर के समक्ष संपूर्ण समर्पण, अभिमान रहित व्यक्तित्व और अपने कर्म के प्रति पूरी निष्ठा के कारण विशिष्ट हैं।

रैदास जाति–प्रथा, धार्मिक आडंबर, छुआछूत और ऐसी अनेक सामाजिक बुराइयों के प्रति हमें सचेत करते हैं। वे झूठी मर्यादा और झूठी श्रेष्ठता के दंभ से बचने की सीख देते हैं। वे 'सहज मार्ग' अपनाने पर बल देते हैं। मान–अपमान, आशा–निराशा, सुख–दुख आदि से परे होकर ईश्वर को अंतिम सत्य और स्वयं को एक माध्यम मात्र मानना सहज मार्ग है।

रैदास के ईश्वर निराकार हैं। वे अपने पदों में उस अविनाशी ईश्वर से नेह जोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। वे उस ईश्वर की प्रशंसा करते हैं जो अंतिम सत्य है और जीवात्मा के रूप में प्रत्येक जीव में अवस्थित है। वह लौकिक विशेषताओं से परे सर्वगुणसंपन्न और सर्वश्रेष्ठ है।

रैदास के चालीस पद 'गुरुग्रंथ साहब' में संकलित हैं। वे सरल, प्रवाहमयी और व्यंजक ब्रजभाषा का प्रयोग करते हैं जिसमें यथास्थान अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और अरबी–फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है। उनका व्यक्तित्व जिस रूप में विनम्र और सादगी से पूर्ण है उनकी भाषा भी उसी अनुरूप स्पष्ट और आडंबरहीन है। दैन्य भाव, आत्म निवेदन और सहजता एक तरह से उनके काव्य की केंद्रीय विशेषता है।

रैदास ईश्वर का अस्तित्व कहीं बाहर नहीं स्वीकारते हैं। वह सहज सुलभ है किंतु उसकी प्राप्ति की कसौटी आसान नहीं है। वह भक्त की सहजता, निर्मलता और अहंहीनता जाँचता है। अभिमानी मन ईश्वर को पसंद नहीं है। मध्ययुगीन भक्तों ने इसी से दास्य भाव की भक्ति करते हुए ईश्वर के समक्ष अपना सर्वस्व समर्पण किया।

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी पद में रैदास विभिन्न उपमाओं का सहारा लेते हुए अपने प्रभुजी की श्रेष्ठता का उल्लेख करते हैं। वे अपने प्रभुजी के साथ विभिन्न रूपों में जुड़े हुए हैं। प्रभु चंदन तो वे पानी, प्रभु घन तो वे मोर, प्रभु चंद तो वे चकोर। भक्ति का यह रूप कोमल है और अत्यंत विमल भी। भक्त यह मानता है कि ईश्वर का सामीप्य ही सबसे बड़ी निधि है। ईश्वर का सामीप्य उसे पूर्ण करता है, फिर उसे किसी अन्य वस्तु की इच्छा नहीं होती। भाषिक दृष्टि से भी यह पद अत्यंत संप्रेष्य और सहज है। इसमें कवि विभिन्न उपमाओं से अपना समर्पण व्यंजित करता है। ये उपमाएँ विभिन्न प्रकार से ईश्वर का सायुज्य पाने की उसकी ललक और एकनिष्ठता को व्यक्त करती हैं।

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी। जाकी अँग अँग बास समानी।
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा। जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती। जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभुजी तुम मोती हम धागा। जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा। ऐसी भक्ति करै रैदासा।

अभ्यास

I. **निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए—**

1. रैदास का जन्म कहाँ हुआ था ?
   (क) पटना (ख) लखनऊ (ग) बनारस (घ) दिल्ली
2. रैदास का जन्म कब हुआ था ?
   (क) 1380 (ख) 1388 (ग) 1398 (घ) 1408
3. रैदास का निधन कब हुआ था ?
   (क) 1408 (ख) 1508 (ग) 1518 (घ) 1520
4. 'संतन में रविदास संत' किसने कहा है?
   (क) गुरु नानक (ख) कबीर (ग) मीरा (घ) तुलसी
5. रैदास को अपना गुरु किसने माना :
   (क) तुलसी (ख) सूर (ग) मीरा (घ) इनमें से कोई नहीं
6. गुरुग्रंथ साहब में रैदास के ....पद संकलित हैं।
   (क) 40 (ख) 50 (ग) 42 (घ) 52
7. असत्य कथन है :
   (क) रैदास निर्गुण भक्त हैं
   (ख) रैदास के ईश्वर अविनाशी हैं
   (ग) रैदास ने निरभिमानी होने का संदेश दिया
   (घ) रैदास सगुण भक्त हैं

8 रैदास ने ईश्वर को सोना और स्वयं को .... कहा है।
   (क) चाँदी (ख) मिट्टी (ग) सोहागा (घ) इनमें से कोई नहीं

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. रैदास प्रभु को चंदन और स्वयं को पानी क्यों कहते हैं?
2. बादल और मोर में क्या संबंध है? रैदास ने इनमें से कौन सी उपमा चुनी है और क्यों?
3. सोने में सोहागा क्यों मिलाया जाता है? रैदास ने अपनी तुलना सोहागा से क्यों की है?
4. रैदास ईश्वर के प्रति अपनी भक्ति व्यंजित करने के लिए विभिन्न उपमाओं का उपयोग क्यों करते हैं? लिखिए।
5. रैदास की भक्ति–भावना की क्या विशेषताएँ हैं? पाठ के आधार पर लिखिए।

III. दिए गए पद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा । जैसे चितवत चंद चकोरा ।
   प्रभुजी तुम दीपक हम वाती । जाकी जोति बरै दिन राती ।
   (क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) 'चितवत चंद चकोरा' में कौन–सा अलंकार है? उक्त अलंकार का एक अन्य उदाहरण दीजिए।

IV. भाषा के रंग :

1. पर्यायवाची शब्द लिखिए :
   पानी, मोर, घन, चाँद, दिन, रात
2. पाठ से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण चुनिए।
3. वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग निर्णय कीजिए :
   दीपक, चकोर, बाती, भक्ति, सोना, चंदन, अंग
4. 'सोहागा' का तत्सम रूप क्या है?
5. रैदास की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. रैदास ने प्रभु को मोती और स्वयं को धागा कहा है। क्या धागा के बिना माला बन सकता है? यहाँ विचार करें कि क्या धागा कहकर रैदास अपना भी महत्त्व बता रहे हैं? जबकि वे निरभिमानी थे। फिर स्वयं को धागा कहने का क्या अभिप्राय है? सोचिए और लिखिए।
2. गुरुग्रंथ साहब में रैदास के 40 पद संकलित हैं। आप उनमें से कम–से–कम 5 पदों को संकलित कीजिए।

शब्दार्थ

बास–गंध, सुगंध। **समानी**–समायी हुई, व्याप्त। **घन**–बादल। **मोरा**–मोर; **चितवत**–देखता है। **चंद**–चाँद। **चकोरा**–चकोर, एक पक्षी। **बाती**–बत्ती। **जोति**–ज्योति, रोशनी। **सोनहिं**–सोना। **सोहागा**–एक प्रकार का क्षार जो सोने में मिलाया जाता है।

■

कबीरदास

(सन् 1398–1518 ई.)

भक्तिकाल की निर्गुण धारा के प्रतिनिधि कवि कबीर के जन्म और मृत्यु के बारे में अनेक किंवदंतियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि **सन् 1398 ई.** में **काशी** में उनका जन्म हुआ और **सन् 1518 ई.** के आसपास मगहर में देहांत। उनका पालन-पोषण नीमा और नीरू नामक जुलाहा दंपत्ति ने किया था। उन्होंने अपनी रचनाओं में स्वयं को जुलाहा और काशी निवासी बताया है। कबीर ने अपना गुरु रामानंद को माना है।

कबीर ने विधिवत शिक्षा नहीं पाई थी। उन्होंने कहा भी है कि **मसि कागद छुयो नहीं, कलम गह्यो नहिं हाथ**। उनके काव्य में धर्म के बाह्याडंबरों का विरोध है और राम-रहीम की एकता की स्थापना का प्रयत्न भी। उन्होंने ईश्वर के नाम पर चलने वाले हर तरह के पाखंड, भेदभाव और कर्मकांड का खंडन किया है और संप्रदाय भेद के स्थान पर प्रेम, सद्भाव और समानता का समर्थन किया है। वे अपनी बात को साफ एवं दो टूक शब्दों में प्रभावी ढंग से कह देने के हिमायती थे। इसी से हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कबीर को **वाणी का डिक्टेटर** कहा है।

कबीर के काव्य में सत्संग, ज्ञान तथा वैराग्य, ईश्वर-प्रेम, गुरु-भक्ति, आत्म-बोध और जगत्-बोध की अभिव्यक्ति है। उनकी कविता अनुभव के ठोस धरातल पर टिकी होने के कारण प्रामाणिक और विश्वसनीय है। जिसमें गहरी सामाजिक चेतना प्रकट होती है। जनभाषा के समीप होने के कारण उनकी काव्यभाषा में दार्शनिक चिंतन को सरल ढंग से व्यक्त करने की शक्ति है।

कबीर के शिष्य धर्मदास ने उनकी रचनाओं का **बीजक** नाम से संग्रह किया। जिसके तीन भाग हैं–**साखी, सबद और रमैनी**। उनकी भाषा में ब्रज, अवधी, भोजपुरी, बुंदेली, राजस्थानी, पंजाबी, अरबी और फारसी के शब्दों का प्रयोग मिलता है।

साखी शब्द साक्षी शब्द का तद्भव रूप है। साक्षी, 'साक्ष्य' शब्द से बना है। जिसका अर्थ होता है–प्रत्यक्ष ज्ञान। 'साखी' वस्तुतः दोहा छंद है। इस पाठ में संकलित साखियों में प्रेम का महत्त्व, ज्ञान की महिमा, संत के लक्षण और बाह्याडंबरों का विरोध आदि भावों का उल्लेख हुआ है।

साखी

सतगुरु हम सूँ रीझि करि, एक कह्या प्रसंग।
बरस्या बादल प्रेम का, भीजि गया सब अंग।।1।।
राम नाम के पटतरे, देबे कौं कछु नाहिं।
क्या ले गुर संतोषिए, हौंस रही मन माँहिं।।2।।
ग्यान प्रकास्या गुर मिल्या, सो जिनि बीसरि जाइ।
जब गोविन्द कृपा करी, तब गुरु मिलिया आइ।।3।।
माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवैं पड़ंत।
कहै कबीर गुर ग्यान थैं, एक आध उबरंत।।4।।
भगति भजन हरि नावँ है, दूजा दुक्ख अपार।
मनसा बाचा कर्मनां, कबीर सुमिरण सार।।5।।
कबीर चित्त चमंकिया, चहुँ दिसि लागी लाइ।
हरि सुमिरण हाथूँ घड़ा, बेगे लेहु बुझाइ।।6।।
अंषड़ियाँ झाईं पड़ी, पंथ निहारि-निहारि।
जीभड़ियाँ छाला पड्या, राम पुकारि-पुकारि।।7।।
झूठे सुख को सुख कहै, मानत हैं मन मोद।
जगत चबैना काल का, कछु मुख में कछु गोद।।8।।
कबीर कहा गरबियौ, ऊँचे देखि अवास।
काल्हि पर्‌यूँ भ्वैं लोटणाँ, ऊपरि जामै घास।।9।।
यहु ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल।
दिन दस के ब्यौहार कौं, झूठै रंग न भूलि।।10।।
इहि औसरि चेत्या नहीं, पसु ज्यूँ पाली देह।
राम नाम जाण्या नहीं, अंति पड़ी मुख षेह।।11।।

यह तन काचा कुंभ है, लियाँ फिरै था साथि।
ढबका लागा फूटि गया, कछू न आया हाथि।।12।।
कबीर कहा गरबियौ, देही देखि सुरंग।
बीछड़ियाँ मिलिबौ नहीं, ज्यूँ काँचली भुवंग।।13।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. कबीर किस भक्ति धारा के प्रमुख कवि हैं ?
(क) निर्गुण भक्ति (ख) सगुण भक्ति
(ग) (क) और (ख) दोनों (घ) इनमें से कोई नहीं।

2. भक्तिकाल के कवि हैं :
(क) देव (ख) प्रसाद (ग) बच्चन (घ) कबीर

3. कबीर ने अपना गुरु किसे माना है ?
(क) रामानंद (ख) शंकराचार्य (ग) वल्लभाचार्य (घ) मध्वाचार्य

4. कबीर का जन्म कब हुआ था ?
(क) सन् 1518 ई. (ख) सन् 1398 ई. (ग) सन् 1405 ई. (घ) सन् 1389 ई.

5. कबीर का जन्म .... में हुआ था।
(क) काशी (ख) प्रयाग (ग) गाजीपुर (घ) मगहर

6. कबीर को 'वाणी का डिक्टेटर' किसने कहा है :
(क) रामचंद्र शुक्ल (ख) भारतेंदु (ग) सूरदास (घ) हजारी प्रसाद द्विवेदी

7. कबीर के शिष्य .... ने इनकी रचनाओं का 'बीजक' नाम से संग्रह किया है।
(क) धर्मदास (ख) नाभादास (ग) कर्मदास (घ) रहीम

8. कबीर की मृत्यु कहाँ हुई थी :
(क) मगहर (ख) काशी (ग) गोरखपुर (घ) बलिया

9. कबीर की मृत्यु कब हुई थी :
(क) सन् 1518 ई. (ख) सन् 1398 ई. (ग) सन् 1815 ई. (घ) सन् 1389 ई.

10. साखी शब्द .... का तद्भव है :
(क) सखी (ख) साक्षी (ग) साक्षि (घ) सखि

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कबीर का 'सब अंग' किससे भींग गया ? यह कैसे संभव हुआ ?
2. गुरू से मिलन कब संभव है ?
3. कबीर ने 'नाव' किसे कहा है ?
4. कबीर ने किस प्रकार की 'लौ' जलने की बात कही है ? उस 'लौ' से क्या हुआ ?
5. झूठे सुख को 'सुख' मानने का परिणाम क्या होता है ?
6. कबीर ने संसार को सेमल का फूल क्यों कहा है ?
7. संसार की क्षणभंगुरता का वर्णन कबीर ने किस प्रकार किया है ? पठित दोहों के आधार पर लिखिए।
8. कबीर ने गुरु की महत्ता का वर्णन किस रूप में किया है ? पाठ के आधार पर लिखिए।
9. कबीर के व्यक्तित्व एवं विचारों का परिचय अपने शब्दों में दें।

   अथवा

   कबीर का जीवन-परिचय लिखें तथा उनकी काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

   अथवा

   कबीर का जीवन-परिचय देते हुए उनकी साहित्यिक सेवाओं पर प्रकाश डालिए।
10. कबीर तर्क के साथ अपनी बात कहते हैं – क्या यह कथन सही है। यदि हाँ, तो पाठ से उदाहरण देकर इसकी पुष्टि करें।

III. दिए गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. सतगुरु हम सूँ रीझि करि, एक कह्या प्रसंग।
   बरस्या बादल प्रेम का, भीजि गया सब अंग।।
   (क) प्रस्तुत दोहे का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) बादल के दो समानार्थी शब्द लिखिए।
2. माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवैं पड़ंत।
   कहै कबीर गुर ग्यान थैं, एक आध उबरंत।।
   (क) प्रस्तुत दोहे का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या करें।
   (ग) 'गुर' तथा 'ग्यान' का तत्सम रूप लिखिए।
3. अंषड़ियाँ झाईं पड़ी, पंथ निहारि-निहारि।
   जीभड़ियाँ छाला पड़्या, राम पुकारि-पुकारि।।

(क) प्रस्तुत दोहे का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) निहारि–निहारि में कौन–सा अलंकार है ? उक्त अलंकार का एक अन्य उदाहरण दीजिए।

4. झूठे सुख को सुख कहै, मानत हैं मन मोद।
जगत चबैना काल का, कछु मुख में कछु गोद।।

(क) प्रस्तुत दोहे का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) काल के दो सामानार्थी शब्द लिखिए

5. यह तन काचा कुंभ है, लियाँ फिरै था साथि।
ढबका लागा फूटि गया, कछू न आया हाथि।।

(क) प्रस्तुत दोहे का संदर्भ लिखिए

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) 'तन' के दो सामानार्थी शब्द लिखिए।

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम-रूप लिखिए :
ग्यान, सैंबल, भगति, दुक्ख, ब्यौहार, औसरि।

2. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार और छंद लिखिए।
(क) सतगुरु हम सूँ रीझि करि, एक कह्या प्रसंग।
(ख) माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवै पड़ंत।
(ग) यहुं ऐसा संसार है, जैसा सैंबल फूल।

3. 'भगति भजन हरि नाँव है, दूजा दुक्ख अपार' पंक्ति का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिएं।

4. वाक्य प्रयोग द्वारा लिंग निर्णय कीजिए– घास, प्राण, काल, हाथ, चित्र, संसार, त्योहार, नर, पतंग, कृपा, मन, गोद।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. संकलित दोहों में से किन्ही पाँच का कक्षा में सस्वर पाठ कीजिए।

2. कबीरदास ने पद भी लिखा है। उनके किन्हीं दो पदों का संकलन कीजिए।

शब्दार्थ

रीझि करि – प्रसन्न होकर। **पटतरे** – समतुल्य। **हौंस** – अभिलाषा। **जिनि बीसरि जाई** – भूल न जाए। **भ्रमि–भ्रमि** – अनेक योनियों में भटकता हुआ। **इवै पड़ंत** – इसमें गिर.गिर पड़ता है। **गुर ग्यान थै** – गुरु के ज्ञान से। **उबरंत** – बच जाता है, उद्धार होता है। **दूजा दुक्ख अपार** – इसके अतिरिक्त सब अपार दुः,ख के कारण हैं। **चित्त चमंकिया** – चित्त चमत्कृत हो गया, कबीर के हृदय में ज्ञान ज्योति जग गयी है। **लाइ (लौ)** – आग। **झाँई पड़ी** – अंधकार छाने लगा। **झूठे सुख** . सांसारिक सुख, मिथ्या हर्ष। **मोद** . प्रसन्नता आनंद। **जगत चबैना काल का** – सारा विश्व मरणशील हैं। **काल्हि पर्‌यूँ** – कल–परसों, निकट भविष्य में। **भ्वैं** – पृथ्वी पर। **सैंबल** – सेमल। **व्यौहार** – व्यवहार। **रंग** – लगाव, अनुरक्ति। **इहि औसरि** – इस अवसर पर। **अंति पड़ी मुख षेह** – अंत में मुख पर धूल खेह पड़ती है। **काचा** – कच्चा। **कुंभ** – घड़ा। **ढबका** – धक्का। **सुरंग** – सुंदर रंग। **बीछड़ियाँ** – बिछड़ जाने पर (मृत्यु हो जाने पर)। **काँचली** – केंचुली। **भुजंग** – साँप।

■

मीराबाई

(सन् 1498–1546 ई.)

भक्तिकाल की कवयित्री मीरा का जन्म **सन् 1498 ई.** के लगभग राजस्थान के **मेड़ता** में हुआ था। वे राठौर रत्नसिंह की पुत्री थीं। **सन् 1516 ई.** के आसपास उनका विवाह मेवाड़ के राणा सांगा के पुत्र भोजराज से हुआ। भोजराज विवाह के कुछ वर्षों के बाद ही दिवंगत हो गए। पति की मृत्यु पर मीरा ने सती होने से इंकार कर दिया। उसके बाद मीरा का विधवा जीवन दुखमय होता गया। उनके देवर रत्नसिंह और विक्रमादित्य ने उन्हें अनेक कष्ट दिए। उन्हें मारने के भी यत्न किए गए। वे अकेली हो चुकी थीं। उन्हें वैष्णव भक्ति का संस्कार परिवार में मिला था। अकेलेपन और दुख की घड़ी में तब मीरा भक्ति की धारा में और भी लीन हो गईं। वे तीर्थ यात्राओं पर निकल गईं। वे वृंदावन गईं और अंत में द्वारिका। द्वारिका में उन्होंने मंदिर भी बनवाया।

मीरा का निधन कब हुआ, इस संबंध में प्रामाणिक तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता। लोकश्रुति के अनुसार सन् 1546 ई. के आसपास द्वारिका में वे रणछोड़ की मूर्ति में समा गईं। एक मान्यता यह भी है कि मीरा, दरअसल, दक्षिण की यात्रा पर निकल गई थीं। जहाँ से तीर्थाटन करते हुए वे उत्तर की ओर गईं। वहाँ वे तानसेन, बीरबल, तुलसीदास, मानसिंह, अकबर आदि के संपर्क में आईं।

मीरा विद्रोही थीं। वे स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर थीं। उन्होंने अंतःपुर, जाति, वंश, वैभव आदि के बंधन काटकर कृष्ण–प्रेम का चोला पहना था। स्त्री अनुभवों की निजता और बेधकता से उनके काव्य में विशेष कसावट उपस्थित है। उसमें आद्यांत लगभग एक ही भाव और रस की उपस्थिति है; और वह है कृष्ण के प्रति उनका प्रेम। किंतु वह प्रेम कहीं भी अपना मोहक आकर्षण नहीं खोता। मीरा लांछित और अपमानित हुईं, किंतु कृष्ण के प्रति उनका एकनिष्ठ और अटूट समर्पण प्रेम कभी भी नहीं घटा। इसी से उनकी कविता, भक्ति और प्रेम का विलक्षण उदाहरण है।

मीरा की कविता में गेयता, संप्रेषणीयता, माधुर्य और भाषा का देशज ठेठपन उपस्थित है। उनकी भाषा मूलतः राजस्थानी है, किंतु यथास्थान उसमें ब्रज, खड़ीबोली और उर्दू के शब्द भी मिलते हैं।

मीरा की रचनाएँ : गीत गोविंद की टीका, नरसीजी रो माहेरो, राग गोविंद, राग सोरठा, पदावली।

पदावली के पदों में कृष्ण के प्रति मीरा का अटूट प्रेम व्यक्त है। कृष्ण मनोहर और भक्त वत्सल हैं। अपने इष्ट से उनका प्रेम ऐसी अमूल्य वस्तु है, जिसे किसी पहरे की जरूरत नहीं। कोई उसे चुरा नहीं सकता। मीरा को विश्वास है कि उसके सहारे वह भवसागर पार कर जाएँगी। उनके कृष्ण अमूल्य हैं। मीरा ढोल बजाकर, सबको बताकर उनसे प्रेम का इजहार करती हैं। कृष्ण के बिना मीरा के लिए यह लोक व्यर्थ है। क्योंकि, पूरे लोक में कृष्ण के सिवा मीरा का दूसरा कौन है! उन्हें पाने के लिए मीरा ने अनेक कष्ट झेले हैं। और, उन्हें पाकर अब वह सभी प्रकार की चिंता से मुक्त हैं।

इन पदों में मीरा का व्यक्तित्व, संघर्ष और कृष्ण से उनका प्रेम बहुत उत्कट रूप में व्यंजित है।

पदावली

बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोहनि मूरति साँवरि सूरति, नैना बने विशाल।।
अधर सुधा रस मुरली राजति, उर वैजंती माल।।
क्षुद्र घंटिका कटितट सोभित, नूपुर शब्द रसाल।
मीराँ के प्रभु संतन सुखदाई, भक्तवछल गोपाल।।1।।

पायो जी मैं तो राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुर, किरपा कर अपनायो।।
जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोइ चोर न लेवे, दिन दिन बढ़त सवायो।।
सत की नाव खेवटिया सतगुर, भवसागर तर आयो।
मीराँ के प्रभु गिरधरनागर, हरष–हरष जस गायो।।2।।

माई मैं तो लियो साँवरियो मोल।
कोई कहै सोंघो कोई कहै महँगो, लियो है हीरा सूं तोल।।
कोई कहै हलको कोई कहै भारी, लियो री ताखड़ियाँ तोल।।
कोई कहै छाने कोई कहै चोड़े, लियो री बाजताँ ढोल।।
कोई कहे घटतो कोई कहै बढ़तो, लियो है बराबर तोल।।
कोई कहे कालो कोई कहै गोरो, देख्यो है घूँघट पट खोल।।
मीराँ कहै प्रभु गिरधरनागर, पूरब जनम रो कोल।।3।।

माई साँवरे रंग राची।
साज सिंगार बाँध पग घूँघर, लोक लाज तजि नाची।
गई कुमत लई साधाँ संगत, स्याम प्रीत जग साँची।
गायाँ गायाँ हरि गुण निसदिन, काल व्याल सूँ बाँची ।।
स्याम बिना जग खारो लागै, जग री बाताँ काँची।
मीराँ सिरी गिरधर नट नागर भगति रसीली जाँची।।4।।

म्हाराँ री गिरधर गोपाल दूसराँ णाँ कूयाँ।
दूसराँ णाँ कूयाँ साधाँ सकल लोक जूयाँ।
भाया छाँड्याँ, बंधा छाँड्याँ सगाँ सूयाँ।।
साधाँ ढिंग बैठ बैठ, लोक लाज खूयाँ।
भगत देख्याँ राजी ह्ययाँ, जगत देख्याँ रूयाँ।।
अँसुवाँ जल सींच सींच प्रेम बेल बूयाँ।
दध मथ घृत काढ़ लयाँ डार दया छूयाँ।।
राणा विषरो प्यालो भेज्याँ पीय मगण हूयाँ।
मीराँ री लगण लग्याँ होणा हो जो हूयाँ।।5।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. मीरा का जन्म कब हुआ था ?
   (क) 1498 ई. के लगभग (ख) 1446 ई. के लगभग
   (ग) 1506 ई. के लगभग (घ) इनमें से कोई नहीं।
2. मीरा का जन्म स्थल है :
   (क) दिल्ली (ख) द्वारिका (ग) वृंदावन (घ) मेड़ता
3. नरसीजी रो मायरो किसकी रचना है ?
   (क) मीरा (ख) तुलसी (ग) सूरदास (घ) कबीर
4. मीरा का काल है :
   (क) आदिकाल (ख) भक्तिकाल (ग) रीतिकाल (घ) आधुनिककाल
5. 'गीत गोविंद की टीका' किसकी रचना है ?
   (क) तुलसी (ख) सूर (ग) मीरा (घ) रहीम
6. मीरा की भक्ति है :
   (क) माधुर्य भक्ति (ख) दास्य भाव की
   (ग) दोनों भाव की (घ) इनमें से कोई नहीं
7. सत्य कथन है :
   (क) मीरा की भक्ति में कृष्ण के प्रति समर्पण है
   (ख) मीरा के पद संगीतबद्ध है
   (ग) मीरा के पदों में उर्दू के भी शब्द मिलते हैं
   (घ) उपर्युक्त सभी

8. **असत्य कथन है–**

(क) मीरा के निधन के संबंध में मतैक्य नहीं है

(ख) मीरा के पिता रत्न सिंह थे

(ग) मीरा का जन्म गुजरात में हुआ था

(घ) मीरा के पदों में ब्रजभाषा के भी शब्द मिलते हैं

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. मीरा कृष्ण के किस रूप को अपनी आँखों में बसाना चाहती हैं?
2. मीरा को कौन–सा धन प्राप्त हो गया है और उसकी क्या विशेषताएँ हैं?
3. मीरा ने ढोल बजाकर किसे अपनाया? ढोल बजाकर अपनाने का क्या अर्थ है?
4. 'देख्यो है घूँघट पट खोल'–मीरा ने ऐसा क्यों कहा है?
5. कृष्ण के बिना मीरा को जग खारा क्यों लगता है?
6. मीरा जगत देखकर रोती हैं। क्यों?
7. विष का प्याला पीकर भी मीरा मगन हैं। कैसे?
8. पठित पदों के आधार पर मीरा की भक्ति की विशेषताएँ लिखिए।
9. मीरा का जीवन–परिचय संक्षेप में लिखिए।

III. दिए गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. बसो मेरे नैनन में नंदलाल।
मोहनि मूरति साँवरि सूरति, नैना बने विशाल।
अधर सुधा रस मुरली राजति, उर वैजंती माल।।
क्षुद्र घंटिका कटितट सोभित, नूपुर शब्द रसाल।
मीरा के प्रभु संतन सुखदाई, भक्तवछल गोपाल।।
(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) 'सुधा' के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

2. माई मैं तो लियो साँवरियो मोल।
कोई कहै सोंघो कोई कहै महँगो, लियो है हीरा सूं तोल।।
कोई कहै हलको कोई कहै भारी, लियो री ताखड़ियाँ तोल।।
कोई कहै छाने कोई कहै चोड़े, लियो री बाजताँ ढोल।।
कोई कहे घटतो कोई कहै बढ़तो, लियो है बराबर तोल।।
कोई कहे कालो कोई कहै गोरो, देख्यो है घूँघट पट खोल।।
मीरा कहै प्रभु गिरधरनागर, पूरब जनम रो कोल।।
(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) 'पट' के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

3. म्हाराँ री गिरधर गोपाल दूसराँ णाँ कूयाँ ।
दूसराँ णाँ कूयाँ साधाँ सकल लोक जूयाँ ।
भाया छाँड्याँ, बन्धा छाँड्याँ सगाँ सूयाँ ।
साधाँ ढिंग बैठ बैठ, लोक लाज खूयाँ।
भगत देख्याँ राजी ह्ययाँ, जगत देख्याँ रूयाँ।
अँसुवाँ जल सींच सींच प्रेम बेल बूयाँ।
दध मथ घृत काढ़ लयाँ डार दया छूयाँ ।
राणा विषरो प्यालो भेज्याँ पीय मगण हूयाँ।
मीरा री लगण लग्याँ होणा हो जो हूयाँ।
(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखें।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या करें।
(ग) विष के दो पर्यायवाची शब्द लिखें।

IV. भाषा के रंग :

1. पठित पदों से अनुप्रास अलंकार के उदाहरण चुनें।
2. 'काल व्याल सूँ बाँची'–इसमें कौन–सा अलंकार है?
3. 'अँसुवाँ जल सींच सींच प्रेम बेल बूयाँ।'–इसमें कौन–सा अलंकार है?
4. तत्सम रूप लिखें :
   किरपा, सोभित, वछल, हरष, पूरब
5. मीरा की भाषा की दो विशेषताएँ लिखें।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. मीरा के भजनों को कई गायकों–गायिकाओं ने गाया है। आप उन्हें उपलब्ध कर सुनें। किस कलाकार का गायन आपको सबसे प्रिय लगा और क्यों, वह भी लिखें।

शब्दार्थ

राजति–सुशोभित होती है। **क्षुद्र घंटिका**–छोटी घंटी। **उर**–हृदय। **कटितट**–कमर। **नूपुर**–घूँघरू। **रसाल**–रसपूर्ण, आनंददायक। **भक्तवछल**–भक्त वत्सल, भक्तों को स्नेह देनेवाले। **अमोलक**–अमूल्य। **किरपा**–कृपा। **खोवायो**–खो दिया। **सवायो**–सवा गुना। **सत**–सत्य। **खेवटिया**–खेनेवाला। **हरष**–हर्ष। **सोंघो**–सस्ता। **ताखड़ियाँ**–तराजू। **छाने**–चुपके। **चोड़े**–सबके सामने। **बाजताँ**–बजाकर। **कोल**–प्रण, प्रतिज्ञा। **कुमत**–कुमति। **साधाँ**–साधु। **साँची**–सच्चा। **व्याल**–साँप। **खारो**–खारा। **काची**–कच्ची। **सिरी**–श्री। **रसीली**–रसपूर्ण, आनंददायक। **दूसरा णाँ कूयाँ**–दूसरा कोई नहीं। **जूयाँ**–देख लिया है। **सूयाँ**–समस्त। **ढिंग**–पास। **खूयाँ**–खो दिया। **राजी ह्याँ**–प्रसन्न होती हूँ। **बूयाँ**–बो ली है। **दध**–दही। **घृत**–घी। **डार दया**–छोड़ दिया। **छूयाँ**–छाछ। **लगण**–बंधन, प्रेम, रिश्ता।

■

रहीम

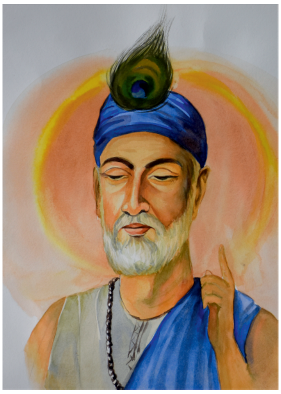

(सन् 1556 – 1626 ई.)

रहीम का पूरा नाम अब्दुर्रहीम खाँ 'खानखाना' है। वे अकबर के संरक्षक बैरम खाँ के पुत्र थे। उनका जन्म **सन् 1556 ई.** में लाहौर में हुआ था। पाँच वर्ष की अवस्था में पिता की मृत्यु हो जाने के बाद अकबर की देख–रेख में उनका पालन पोषण हुआ। बाद में वे अकबर–दरबार में प्रतिष्ठित स्थान भी पाए। अकबर ने उन्हें 'खानखाना' की उपाधि दी। उनके जीवन का आरंभिक समय जितने सम्मानपूर्ण ढंग से बीता, अंतिम पहर ठीक उसके विपरीत अभाव, अकेलेपन और असम्मानजनक स्थितियों में गुजरा। वे दुखों और संकटों से घिरे रहे। उनके काव्य में जीवनानुभवों और सांसारिक यथार्थ का जो खरा–पका संसार है, उसमें उनके उन अनुभवों का ताप समाया हुआ है। उनके दोहे हमें जीवन जीने की 'सीख' देते हैं। किंतु कोरे उपदेश के रूप में नहीं बल्कि बहुत सादगी से जीवन को शब्दों में पिरोकर–उतारकर।

उनके काव्य का मुख्य विषय नीति, श्रृंगार और भक्ति है। उन पर वैष्णव भक्ति आंदोलन का भी प्रभाव पड़ा था। उनकी गंगा और विष्णु की भक्ति संबंधी रचनाएँ उसी प्रभाव में हैं। रामभक्त कवि तुलसीदास से उनकी मित्रता इतिहास प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि तुलसी को 'बरवै रामायण' लिखने की प्रेरणा रहीम से ही मिली थी।

रहीम के काव्य में शाब्दिक चमत्कार और बनावटीपन नहीं है। अरबी, तुर्की, फारसी और संस्कृत के साथ–साथ अवधी, ब्रज और खड़ी बोली पर उनका समान अधिकार था। इस भाषायी बहुज्ञता ने विभिन्न जीवनानुभवों को व्यक्त करने में उन्हें मदद पहुँचाई। उनके नीतिपरक दोहों पर संस्कृत की सूक्ति परंपरा का प्रभाव स्वीकारा गया है। वे उस परंपरा का भक्तिकाल में एक तरह से पुनराविष्कार करते हैं और अपने लेखन से परवर्ती कवियों को प्रभावित भी करते हैं।

रहीम का निधन **सन् 1626 ई.** में हुआ।

रहीम की रचनाएँ : दोहावली, नगर शोभा, बरवै नायिका भेद, मदनाष्टक आदि। 'दोहावली' में लगभग तीन सौ दोहे संकलित हैं। 'नगर शोभा' भी दोहा छंद में ही है। यह एक श्रृंगारिक रचना है। वे हिंदी में बरवै छंद के लिए भी प्रसिद्ध हैं।

रहीम के **दोहे** हमारे मार्गदर्शक हैं। वे सही–गलत, अच्छे–बुरे और अपने–पराए की पहचान के लिए अचूक कसौटी देते हैं। वे दोहे बताते हैं कि जीवन की ऊँच–नीच, सुख–दुख या विजय–पराजय में मनुष्य को धैर्य और चरित्र नहीं छोड़ना चाहिए। पाठ में संकलित दोहे अलग–अलग भाव के हैं। व्यक्ति की परख, संबंधों का निर्वाह, पर–दुखकातरता, सामाजिकता आदि विषय इन दोहों में व्यंजित हैं। यह ध्यान रहे कि रहीम इन सभी दोहों में अपनी बात केवल सिद्धांत रूप में नहीं रखते; वे उदाहरणों के द्वारा अपने कहे हुए को पुष्ट करते हैं। इसी से वे सहज संप्रेषणीय भी बन पाए हैं।

दोहा

जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।।1।।
रहिमन प्रीति सराहिए मिले होत रंग दून।
ज्यों जरदी हरदी तजै, तजै सफेदी चून।।2।।
टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार।
रहिमन फिरि-फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार।।3।।
रहिमन अँसुआ नैन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ।।4।।
कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीति।
बिपति-कसौटी जे कसे, तेही साँचे मीत।।5।।
जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़त छोह।।6।।
दीन सबन को लखत हैं, दीनहि लखै न कोय।
जो रहीम दीनहिं लखै, दीनबन्धु सम होय।।7।।
प्रीतम छबि नैननि बसी, पर छबि कहाँ समाय।
भरी सराय रहीम लखि, पथिक आपु फिरि जाय।।8।।
रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरेउ चटकाय।
टूटे से फिरि ना जुरै, जुरै गाँठ परि जाय।।9।।
कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वांति एक गुन तीन।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन।।10।।
तरुवर फल नहीं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति संचहिं सुजान।।11।।

रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिये डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि।।12।।
यों रहीम सुख होत है, बढ़त देख निज गोत।
ज्यों बड़री आँखियाँ निरखि, आँखिन को सुख होत।।13।।
रहिमन ओछे नरन ते, तजौ बैर अरु प्रीति।
काटे-चाटे स्वान के, दुँहूँ भाँति विपरीति।।14।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. रहीम का जन्म कहाँ हुआ था ?
   (क) आगरा (ख) लाहौर (ग) बनारस (घ) दिल्ली
2. रहीम का जन्म कब हुआ था ?
   (क) 1588 (ख) 1556 (ग) 1563 (घ) 1550
3. रहीम को 'खानखाना' की उपाधि किसने दी ?
   (क) बैरम खाँ (ख) हुमायूँ (ग) अकबर (घ) जहाँगीर
4. इनमें से किससे रहीम की मित्रता प्रसिद्ध है ?
   (क) गुरु नानक (ख) कबीर (ग) मीरा (घ) तुलसी
5. 'बरवै रामायण' किसकी रचना है ?
   (क) तुलसी (ख) सूर (ग) मीरा (घ) रहीम
6. 'नगर शोभा' किस छंद में है ?
   (क) सोरठा (ख) दोहा (ग) बरवै (घ) इनमें से कोई नहीं
7. रहीम किस काल के रचनाकार हैं ?
   (क) आदिकाल (ख) भक्तिकाल (ग) रीतिकाल (घ) आधुनिक काल
8. असत्य कथन है :
   (क) रहीम ने गंगा और विष्णु की भक्ति में कविताएँ लिखीं।
   (ख) तुलसीदास रहीम के मित्र थे।
   (ग) रहीम संस्कृत के जानकार थे
   (घ) इनमें से कोई नहीं

9. पाठ के आधार पर सही युग्म नहीं है :
   (क) चंदन–साँप
   (ख) जाल–मीन
   (ग) धागा–मोती
   (घ) सुई–तलवार

10. दीनबंधु कौन हो सकता है :
   (क) जो राजा हो
   (ख) जो सहोदर हो
   (ग) जो दीन की मदद करे
   (घ) इनमें से कोई नहीं

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. उत्तम प्रकृति का व्यक्ति किसे कहेंगे ?
2. हल्दी और चूने के मिलने से क्या होता है? रहीम ने इस उदाहरण के द्वारा क्या संदेश देना चाहा है?
3. 'सुजन' शब्द का क्या अर्थ है ?
4. सच्चे मित्र की पहचान कब होती है ?
5. रहीम के अनुसार आँसू क्या करते हैं ?
6. मछली को किससे मोह होता है? क्या यह उचित है? तर्क सहित अपना उत्तर लिखिए।
7. प्रेम का धागा क्यों नहीं तोड़ना चाहिए? 'गाँठ परि जाय' से कवि का क्या आशय है?
8. 'ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि, आँखिन का सुख होत'–बड़ी आँखों को देखकर आँखों को किस प्रकार का सुख हो सकता है? रहीम ने यह तुलना क्यों की है?
9. रहीम 'ओछे नरन' से बचने के लिए क्यों कहते हैं? उनकी पहचान किस प्रकार की जा सकती है?
10. पठित पाठ के आधार पर रहीम की 'सीख' को बिंदुवार लिखिए।
11. पाठ के आधार पर रहीम का जीवन–परिचय संक्षेप में लिखिए।

III. दिए गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. टूटे सुजन मनाइए, जौ टूटे सौ बार।
   रहिमन फिरि-फिरि पोइए, टूटे मुक्ताहार।।
   (क) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) 'मुक्ताहार' में कौन–सा समास है? उक्त समास का एक अन्य उदाहरण दीजिए।

2. प्रीतम छबि नैननि बसी, पर छबि कहाँ समाय।
   भरी सराय रहीम लखि, पथिक आपु फिरि जाय।।
   (क) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) 'पथिक' के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।
3. तरुवर फल नहीं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
   कहि रहीम पर काज हित, संपति संचहिं सुजान।।
   (क) उपर्युक्त पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) 'तरुवर' में कौन सा प्रत्यय है ? उक्त प्रत्यय से एक अन्य शब्द बनाएँ।

IV. भाषा के रंग :

1. पर्यायवाची शब्द लिखिए :
   पानी, मोर, घन, चाँद, दिन, रात
2. पाठ से अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण चुनिए।
3. पाठ से उत्प्रेक्षा अलंकार के दो उदाहरण चुनिए।
4. काव्य–सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :
   (क) प्रीतम छबि नैननि बसी, पर छबि कहाँ समाय।
   भरी सराय रहीम लखि, पथिक आपु फिरि जाय।।
   (ख) तरुवर फल नहीं खात हैं, सरवर पियहिं न पान।
   कही रहीम पर काज हित, संपति संचहिं सुजान।।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. रहीम पहले दोहे में कहते हैं कि उत्तम प्रकृति के व्यक्ति पर कुसंगति का प्रभाव नहीं पड़ता। जबकि दसवें दोहे में वे कहते हैं कि स्वाति नक्षत्र में वर्षा की बूँदें अलग–अलग संगति से भिन्न रूप धारण कर लेती हैं। क्या इन दोनों दोहों में विरोधाभासी बातें हैं। तर्क सहित अपना उत्तर दीजिए।
2. रहीम ने तीसरे दोहे में 'सुजन' और ग्याहरवें दोहे में 'सुजान' का उल्लेख किया है। ये दोनों 'सज्जन' का अर्थ देते हैं। आपके अनुसार 'सज्जन' किन्हें कहा जा सकता है? उसमें क्या गुण होने चाहिए? लिखिए।

शब्दार्थ

प्रकृति – स्वभाव। **व्याप्त** – प्रभावित। **भुजंग** – साँप। **सराहिए** – प्रशंसा। **दून** – दो गुना। **जरदी** – पीलापन। **हरदी** – हल्दी। **चून** – चूना। **टूटे सुजन** – सज्जन व्यक्ति के नाराज होने पर। **पोइए** – पिरोइए, पिरोना आदि। **मुक्ताहार** – मोतियों का हार। **अँसुआ** – आँसू। **ढरि** – ढुलक कर। **गेह** – घर। **भेद** – रहस्य। **संग** – संबंधी। **बिपति कसौटी** – विपत्ति रूपी कसौटी। **कसौटी** – स्वर्ण को परखने का काला पत्थर। **मीत** – मित्र। **मीनन कौ** – मछलियों का। **मछरी** – मछली। **छोह** – प्रेम। **दीनहिं** – दरिद्र को। **लखै** – देखे। **कोय** – कोई। **दीबंधु** – भगवान्। **पर छवि** – पराया सौंदर्य। **पथिक** – सही। **आपु** – स्वयं। **फिरि जाय** – लौट जाता है। **धागा** – डोर। **मत तोरेउ चटकाय** – तोड़कर मत चटकाओ। **ना जुरै** – जुड़ता नहीं है। **जुरै** – जुड़ने पर। **कदली** – केले पर। **भुजंग** – साँप। **सरवर** – श्रेष्ठ, तालाब, सरोवर। **पान** – जल। **सँचहिं** – संचय करता है। **लघु** – छोटा। **डारि** – डालना, फेंकना। **तरवारि** – तलवार। **गोत** – गोत्र (कुल)। **बड़री** – बड़ी। **निरखि** – देखकर। **ओछे** – नीच, बुरी आदत वाले। **स्वान** – कुत्ता। **विपरीत** – विरुद्ध।

■

भारतेंदु हरिश्चंद्र

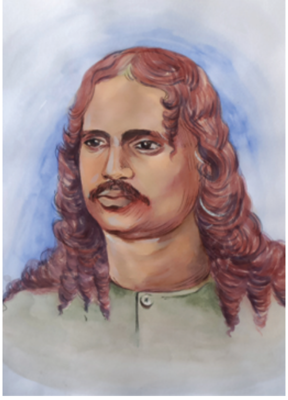

(सन् 1850–1885 ई.)

भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म **काशी** में **सन् 1850 ई.** में हुआ था। उनके पिता गोपालचंद्र जी 'गिरिधरदास' उपनाम से काव्य रचना करते थे। पाँच वर्ष की अवस्था में माता पार्वतीदेवी एवं दस वर्ष की अवस्था में उनके पिता का देहांत हो गया था। पिता की असामयिक मृत्यु हो जाने के कारण उनकी शिक्षा–दीक्षा का समुचित प्रबंध न हो सका। उनकी आरंभिक शिक्षा घर पर ही हुई, जहाँ उन्होंने हिंदी, उर्दू, बाँग्ला एवं अंग्रेजी का अध्ययन किया। उसके पश्चात् क्वींस कालेज, वाराणसी में प्रवेश लिया, किंतु काव्य–रचना में रुचि होने के कारण उनका मन अध्ययन में नहीं लगा और शीघ्र ही उन्होंने कालेज छोड़ दिया। तेरह वर्ष की अवस्था में उनका विवाह काशी के रईस लाला गुलाबराय की पुत्री मन्नादेवी के साथ हो गया था। **सन् 1885 ई.** में उनका देहांत हो गया था।

भारतेंदु हरिश्चंद्र पुनर्जागरण की चेतना के अप्रतिम नायक थे। बंगाल के प्रख्यात मनीषी और पुनर्जागरण के विशिष्ट नायक ईश्वरचंद्र विद्यासागर से इनका घनिष्ठ संबंध था। बंधन से मुक्ति की चेतना और आधुनिकता की रोशनी से हिंदी क्षेत्र को आलोकित करने के लिए उनका मन हमेशा व्याकुल रहता था। अपनी अभीप्सा को मूर्त करने के लिए उन्होंने समानधर्मा रचनाकारों को प्रेरित–प्रोत्साहित किया, **तदीय समाज** की स्थापना की, पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित की विविध विधाओं में साहित्य.रचना की। उन्होंने **कविवचनसुधा** नामक पत्रिका निकाली तथा **हरिश्चंद्र मैगजीन** का संपादन किया। बाद में यही पत्रिका **हरिश्चंद्र चंद्रिका** के नाम से प्रकाशित हुई।

स्त्री शिक्षा के लिए उन्होंने **बालाबोधिनी** पत्रिका का प्रकाशन किया। उन्होंने काव्य–रचना के साथ–साथ हिंदी की अन्य विधाओं में भी रचना की है। इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ–**भक्त सर्वस्व, प्रेम–मालिका, प्रेम माधुरी, प्रेमतरंग, होली, प्रेम–प्रलाप, वर्षा विनोद, फूलों का गुच्छा, प्रेम फुलवारी, कृष्ण चरित्र, बकरी विलाप** आदि हैं। हिंदी नाटक और निबंध की परंपरा का आरंभ भारतेंदु से ही माना जाता है। उन्होंने बांग्ला एवं संस्कृत के नाटकों का अनुवाद भी किया, जिनमें **धनंजय–विजय, विद्यासुंदर, पाखंड**

विडंबन तथा मुद्राराक्षस आदि प्रमुख हैं। उनके मौलिक नाटकों में–**अंधेर नगरी, नीलदेवी** आदि शामिल हैं।

भारतेंदु हरिश्चंद्र का प्रभाव उनके समकालीन लेखकों पर स्पष्ट देखा जा सकता है। उन्होंने अपने समकालीन लेखकों का नेतृत्व किया साथ ही परवर्ती लेखकों के लिए पथ–प्रदर्शक का भी कार्य किया। उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर काशी के विद्वानों ने सन् 1880 ई. में उन्हें **भारतेंदु** की उपाधि से सम्मानित किया।

भारतेंदु ने कविता ब्रजभाषा में लिखी और गद्य खड़ीबोली में। उन्होंने 'रसा' उपनाम से उर्दू में भी कविताएँ लिखीं। उनकी काव्य भाषा में मुहावरों और लोकोक्तियों की छटा विशेष रूप से दर्शनीय है। ब्रजभाषा का माधुर्य और प्रवाह उनके काव्य में सर्वत्र है। तद्भव और देशज शब्दों के प्रयोग से उनकी काव्य भाषा और भी व्यंजक हो उठती है।

प्रेममाधुरी में कुल सात छंद संकलित हैं। पहले छंद में वर्षा ऋतु के आगमन से प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों का उल्लेख है। वर्षा ऋतु संयोगी जनों को सुख देती है तो वियोगियों को दुःख। दूसरे छंद में वसंत ऋतु का चित्रण है। ऋतुराज के आगमन से प्रकृति नई हो रही है किंतु गोपियाँ दुखी हैं, कारण कि कृष्ण उनके पास नहीं हैं। इन दोनों छंदों में प्रकृति उद्दीपक रूप में है। शेष छंदों में वियोग शृंगार की अत्यंत प्रांजल एवं मनोहर उपस्थिति है। कवि की वाग्मिता एवं भाव प्रवणता को ये छंद सुंदर तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

प्रेम माधुरी

(1)

कूकै लगीं कोइलैं कदंबन पै बैठि फेरि
धोए-धोए पात हिलि-हिलि सरसै लगे।
बोलै लगे दादुर मयूर लगे नाचै फेरि
देखि के सँजोगी-जन हिय हरसै लगे।।
हरी भई भूमि सीरी पवन चलन लागी
लखि 'हरिचंद' फेरि प्रान तरसै लगे।
फेरि झूमि-झूमि बरषा की रितु आई फेरि
बादर निगोरे झुकि झुकि बरसै लगे।।

(2)

सखि आयो बसंत रितून को कंत, चहूँ दिसि फूलि रही सरसों।
बर सीतल मंद सुगंध समीर सतावन हार भयो गर सों।।
अब सुंदर साँवरो नंद किसोर कहै 'हरिचंद' गयो घर सों।
परसों को बिताय दियो बरसों तरसों कब पाँय पिया परसों।।

(3)

जिय पै जु होई अधिकार तो बिचार कीजै
लोक-लाज, भलो-बुरो, भले निरधारिए।
नैन, श्रौन, कर, पग, सबै पर-बस भए
उतै चलि जात इन्हैं कैसे कै सम्हारिए।
'हरिचंद' भई सब भाँति सों पराई हम
इन्हें ज्ञान कहि कहो कैसे कै निबारिए।
मन में रहै जो ताहि दीजिए बिसारि, मन
आपै बसै जामैं ताहि कैसे कै बिसारिए।।

(4)

यह संग में लागियै डोलैं सदा, बिन देखे न धीरज आनती हैं।
छिनहू जो वियोग परै 'हरिचंद', तो चाल प्रलै की सु ठानती हैं।
बरुनी में थिरैं न झपैं उझपैं, पल मैं न समाइबो जानती है।
पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना, अँखियाँ, दुखियाँ नहिं मानती हैं।।

(5)

पहिले बहु भाँति भरोसो दयो, अब ही हम लाइ मिलावती हैं।
'हरिचंद' भरोसे रही उनके सखियाँ जो हमारी कहावती हैं।।
अब वेई जुदा ह्वै रहीं हम सों, उलटो मिलि कै समुझावती हैं।
पहिले तो लगाइ कै आग अरी! जल को अब आपुहिं धावती हैं।।

(6)

ऊधौ जू सूधो गहो वह मारग, ज्ञान की तेरे जहाँ गुदरी है।
कोऊ नहीं सिख मानिहै ह्याँ, इक स्याम की प्रीति प्रतीति खरी है।।
ये ब्रजबाला सबै इक सी, हरिचंद जू मण्डली ही बिगरी है।
एक जौ होय तो ज्ञान सिखाइए कूप ही में यहाँ भाँग परी है।।

(7)

इन दुखियान को न चैन सपनेहुँ मिल्यो,
तासों सदा व्याकुल बिकल अकुलायँगी।
प्यारे हरिचंदजू की बीती जानि औधि, प्रान,
चाहत चले पै ये तो संग ना समायँगी।।
देखौ एक बारहू न नैन भरि तोहिं यातें
जौन-जौन लोक जैहैं तहाँ पछतायँगी।
बिना प्रान-प्यारे भये दरस तुम्हारे हाय
मरेहू पै आँखें ये खुली ही रहि जायँगी।।7।।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. भारतेंदु युग के प्रवर्तक कौन हैं ?
   (क) भारतेंदु (ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी
   (ग) जयशंकर प्रसाद (घ) अज्ञेय
2. भारतेंदु हरिश्चंद्र का जन्म कब हुआ था ?
   (क) 1880 ई0 (ख) 1850 ई0 (ग) 1885 ई0 (घ) 1882 ई0
3. भारतेंदु का जन्म स्थान कहाँ है?
   (क) प्रयाग (ख) मथुरा (ग) काशी (घ) कानपुर
4. भारतेंदु का निधन कब हुआ था ?
   (क) 1885 ई0 (ख) 1890 ई0 (ग) 1809 ई0 (घ) 1895 ई0
5. भारतेंदु ने किस पत्रिका का संपादन नहीं किया है ?
   (क) कविवचन सुधा (ख) हंस (ग) बालाबोधिनी (घ) हरिश्चंद्र चंद्रिका
6. भारतेंदु ने स्त्री शिक्षा पर आधारित किस पत्रिका का संपादन किया।
   (क) मर्यादा (ख) बालाबोधिनी (ग) मतवाला (घ) सरस्वती
7. निम्न में से कौन-सी रचना भारतेंदु की नहीं है ?
   (क) भक्त सर्वस्व (ख) प्रेम-मालिका (ग) प्रेमतरंग (घ) झरना
8. निम्न में से कौन-सी रचना भारतेंदु की है ?
   (क) भारत दुर्दशा (ख) उर्वशी (ग) लोकायतन (घ) मधुबाला
9. 'प्रेम माधुरी' के रचनाकार कौन हैं ?
   (क) बच्चन (ख) नागार्जुन (ग) भारतेंदु (घ) यशपाल
10. काशी के विद्वानों द्वारा हरिश्चंद्र को भारतेंदु की उपाधि कब दी गई ?
    (क) 1880 ई0 (ख) 1881 ई0 (ग) 1882 ई0 (घ) 1885 ई0

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. वर्षा ऋतु के आगमन पर किस प्रकार के नए दृश्य दिखाई देने लगते हैं ?
2. वर्षा ऋतु में किनका हृदय हर्ष से भर जाता है ?
3. वर्षा ऋतु में किनका प्राण तरसने लगता है ? और क्यों ?
4. कवि ने बादलों को 'निगोरे' क्यों कहा है ?
5. गोपियों का अपनी इंद्रियों पर वश क्यों नहीं है ?
6. कृष्ण को मन से भुलाना गोपियों के लिए क्यों असंभव है ? पद के आधार पर उत्तर दें।
7. 'प्रलय की चाल' कौन अपना लेती हैं ? और क्यों ?
8. गोपियाँ उद्धव की सीख मानने के लिए क्यों तैयार नहीं हैं ?

9. बसंत की शीतल हवा गोपियों को सताने वाली क्यों लग रही है ?
10. गोपियाँ किस कारण से तरस रही हैं ?
11. मरने पर भी गोपियों की आँखें क्यों खुली रह जाएंगी ?
12. भारतेंदु के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

III. दिए गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कूकै लगीं कोइलैं कदंबन पै बैठि फेरि
धोए-धोए पात हिलि-हिलि सरसै लगे।
बोलै लगे दादुर मयूर लगे नाचै फेरि
देखि के सँजोगी-जन हिय हरसै लगे।।
हरी भई भूमि सीरी पवन चलन लागी
लखि 'हरिचंद' फेरि प्रान तरसै लगे।
फेरि झूमि-झूमि बरषा की रितु आई फेरि
बादर निगोरे झुकि झुकि बरसै लगे।।

(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) प्रस्तुत पद्यांश में वर्षा ऋतु के आगमन पर कौन–कौन जीव अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर रहे हैं ?
(ग) प्रस्तुत पद्यांश से अनुप्रास अलंकार का एक उदाहरण दीजिए।

2. जिय पै जु होई अधिकार तो बिचार कीजै
लोक-लाज, भलो-बुरो, भले निरधारिए।
नैन, श्रौन, कर, पग, सबै पर-बस भए
उतै चलि जात इन्हैं कैसे कै सम्हारिए।
'हरिचंद' भई सब भाँति सों पराई हम
इन्हें ज्ञान कहि कहो कैसे कै निबारिए।
मन में रहै जा ताहि दीजिए बिसारि, मन
आपै बसै जामैं ताहि कैसे कै बिसारिए।।

(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) 'बिसारि' का मूल तत्सम रूप क्या है ?

3. पहिले बहु भाँति भरोसो दयो, अब ही हम लाइ मिलावती हैं।
'हरिचंद' भरोसे रही उनके सखियाँ जो हमारी कहावती हैं।।
अब वेई जुदा ह्वै रहीं हम सों, उलटो मिलि कै समुझावती हैं।
पहिले तो लगाइ कै आग अरी! जल को अब आपुहिं धावती हैं।।

(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) 'धावती' शब्द में कौन–सी धातु है ?

IV. भाषा के रंग :

1. 'कूकै लगीं कोइलै कदंबन पै बैठि फेरि' में कौन-सा अलंकार है ?

2. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य–प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट कीजिए :
प्रलय ढाना, पलकों में न समाना, कुएँ में भाँग पड़ी होना

3. 'पिय प्यारे तिहारे निहारे बिना आँखियाँ दुखियाँ नहिं मानती हैं' पंक्ति का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

4. पर्यायवाची शब्द लिखिए – भूमि, वर्षा, बादल, नमन।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. पाठ में दो ऋतुओं –वर्षा एवं वसंत का उल्लेख है। इन दोनों ऋतुओं में प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों और कृषि कार्य पर इनके प्रभाव के विषय में टिप्पणी लिखिए।

शब्दार्थ

धोए– धोए – धुले हुए। **सरसै** – सरस, गीलें। **सँजोगी** – संयोगी, जो मिलन की अवस्था में हैं। **सीरी** – शीतल। **बादर** – बादल। **निगोरे**–निगोड़े, अभागा, दुष्ट। **जिय**–हृदय। **निरधारिए**–निश्चय कीजिए। **श्रौन**–कान। **सम्हारिए**–सँभालना। **निबारिए**–रोका जाए। **बिसारि**– बिसारना, भूलना। **जामैं**–जिसमें। **ताहि**–उसे। **डोलैं**–घूमती है। **न धीरज आनती हैं** – धैर्य नहीं रखती है, अधीर रहती है। **छिनहू** – क्षण भर। चाल प्रलै की सु ठानती हैं – प्रलय की चाल (गति) अपना लेती हैं, और प्रलयकाल के समान आँखों से आँसु निकलने लगते हैं। **बरुनी** – बरौनी, पलक उगे बाल। **थिरैं** – स्थिर होना। **झयैं** – झपकना, बंद होना। **उझपैं** – खुलना। **पल** – पलक, क्षण। **न समाइ जानती हैं** – समाना नहीं जानती हैं। **निहारे बिना** – देखे बिना। **बहु भाँति** – अनेक प्रकार से। **लाइ मिलायती हैं** – लाकर मिलती हैं। **कहावती हैं** – कहलाती हैं। **वेई** – वही। **जुदा हवै रहीं** – अलग हो गई हैं। पूर्व से भिन्न हो गई हैं, पहले की तरह कृष्ण को लेकर मिलाने की बात नहीं कहती। **अरी** – सखी। **आयुहिं** – स्वयं। **धायती है** – दौड़ती हैं। **सूधो** – सीधा। **राहो** – पकड़ो। **मारग** – मार्ग, रास्ता। **गुदरी** – गुदड़ी, तुच्छ स्थान। **इयाँ** – यहाँ। **प्रतीति** – विश्वास। **खरी** – पक्की। **बिगरी** – बिगड़ी। **कूप** – कुएँ। **रितून को कंत** – ऋतुओं का कंत(स्वामी, राजा)। **चहूँ दिसि** – चारों दिशाओं में। **बर** – वर, श्रेष्ठ। **बर सीतल** – अति शीतल। **सतापहार** – सताने वाला। **गर सों** – भारी, पूरी तरह। **तरसों** – तरसना। **परसों** – स्पर्श। **दुखियान** – दुखियारी। **सपनेहूँ** – सपने में। **तासों** – इसलिए। **बिकल** – बेचैन। **अकुलायँगी** – व्याकुल। **औधि ा** – अवधि। **बारहू** – बार। **यातें** – अतः, इसलिए। **हरस** – दर्शन।

■

मैथिलीशरण गुप्त

(सन् 1886–1964 ई.)

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म **सन् 1886 ई.** में **चिरगाँव जिला झाँसी**, उ0 प्र0 में हुआ था। उनके पिता सेठ रामचरण दास भी काव्यप्रेमी थे। उन्हीं से मैथिलीशरण गुप्त को काव्य–संस्कार प्राप्त हुआ। उनकी शिक्षा–दीक्षा घर पर ही हुई। संस्कृत, बांग्ला, मराठी और अंग्रेजी पर उनका समान अधिकार था। वे बड़े सरल और मिलनसार थे।

महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपर्क में आने के बाद वे उनको अपना काव्य–गुरु मानने लगे। द्विवेदी जी की सलाह पर उन्होंने भारत–भारती नामक काव्य–ग्रंथ की रचना करके युवाओं में देश–प्रेम की सरिता बहा दी। उन्होंने देश–प्रेम, समाज–सुधार, धर्म, राजनीति, भक्ति आदि सभी विषयों पर रचनाएँ कीं। उनका देहावसान **सन् 1964 ई.** में हुआ था।

उनकी प्रारंभिक रचनाएँ कलकत्ता से निकलने वाले **वैश्योपकारक** पत्रिका में प्रकाशित हुआ करती थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी के संपर्क में आने के बाद उनकी रचनाएँ 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित होने लगी। उनकी पहली पुस्तक **रंग में भंग** का प्रकाशन सन् 1910 ई. में हुआ। उन्होंने अनेक कृतियों का सृजन कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। खड़ी बोली के विकास में उन्होंने अपना अमूल्य योगदान दिया। उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं– **साकेत, यशोधरा, जयद्रथ वध, भारत भारती, पंचवटी, झंकार, अनघ, तिलोत्तमा, किसान, द्वापर, जयभारत, विष्णुप्रिया** आदि। 'साकेत' महाकाव्य पर उन्हें 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' सम्मान मिला।

उन्होने अपने काव्य की कथावस्तु भारतीय इतिहास के उन बिंदुओं से लिया है, जो भारत के अतीत का स्वर्णचित्र पाठक के सामने उपस्थित करने में सफल होते हैं।

उनकी कविता की भाषा व्याकरण–सम्मत तथा विशुद्ध खड़ी बोली है, जिसमें आवश्यकतानुसार अंग्रेजी तथा उर्दू के प्रचलित शब्दों का भी प्रयोग किया गया है। 'हरिगीतिका' उनका प्रिय छंद है। उनकी भाषा सुगठित, ओजपूर्ण एवं प्रसाद–गुण से युक्त है।

प्रस्तुत पाठ मैथिलीशरण गुप्त की काव्य पुस्तक **पंचवटी** से उद्धृत है। इस पाठ में दर्शाया गया है कि राम वनवास प्रवास के दौरान पंचवटी में ठहरे हुए हैं। जहाँ भरत अपनी माता कैकई और अयोध्या की प्रजा के साथ राम, लक्ष्मण एवं सीता को अयोध्या वापस लौट चलने का निवेदन करने के लिए पधारे हुए हैं। राम को मनाते हुए कैकई के हृदय की सारी कलुषता धुल जाती है।

पंचवटी

(1)

चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में
स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है अवनि और अंबर-तल में
पुलक प्रकट करती है धरती हरित तृणों की नोकों से,
मानो झूम रहे हैं तरु भी मंद पवन के झोंकों से।

(2)

पंचवटी की छाया में है सुंदर पर्ण-कुटीर बना,
उसके सम्मुख स्वच्छ शिला पर धीर वीर निर्भीकमना,
जाग रहा यह कौन धनुर्धर जब कि भुवन-भर सोता है
भोगी कुसुमायुध योगी-सा बना दृष्टिगत होता है।।

(3)

किस व्रत में है व्रती वीर यह, निद्रा का यों त्याग किए,
राजभोग के योग्य विपिन में बैठा आज विराग लिए।
बना हुआ है प्रहरी जिसका उस कुटीर में क्या धन है,
जिसकी रक्षा में रत इसका तन है, मन है, जीवन है।।

(4)

मर्त्यलोक-मालिन्य मेटने स्वामि-संग जो आई है,
तीन लोक की लक्ष्मी ने यह कुटी आज अपनाई है।
वीर वंश की लाज है फिर क्यों वीर न हो प्रहरी ?
विजन देश है, निशा शेष है, निशाचरी माया ठहरी!

(5)

क्या ही स्वच्छ चाँदनी है यह, है क्या ही निस्तब्ध निशा,
है स्वच्छंद–सुमंद गंध वह, निरानंद है कौन दिशा ?
बंद नहीं, अब भी, चलते हैं नियति-नटी के कार्य-कलाप,
पर कितने एकांत भाव से, कितने शांत और चुपचाप!

(6)

है बिखेर देती वसुंधरा मोती, सबके सोने पर,
रवि बटोर लेता है उनको सदा सबेरा होने पर।
और विरामदायिनी अपनी संध्या को दे जाता है,
शून्य श्याम तनु जिससे उसका नया रूप झलकता है।

(7)

सरल तरल जिन तुहिन कणों से हँसती हर्षित होती है,
अति आत्मीयया प्रकृति हमारे साथ उन्हीं से रोती है।
अनजानी भूलों पर भी वह अदय दण्ड तो देती है,
पर बूढ़ों को भी बच्चों-सा सदय भाव से सेती है।

(8)

तेरह वर्ष व्यतीत हो चुके, पर हैं मानो कल की बात,
वन को आते देख हमें जब आर्त, अचेत हुए थे तात।
अब वह समय निकट ही है जब अवधि पूर्ण होगी वन की।
किंतु प्राप्ति होगी इस जन को इससे बढ़कर किस धन की?

(9)

और आर्य को ? राज्य-भार तो वे प्रजार्थ ही धारेंगे,
व्यस्त रहेंगे, हम सबको भी मानो विवश बिसारेंगे।
कर विचार लोकोपकार का हमें न इससे होगा शोक,
पर अपना हित आप नहीं क्या कर सकता है यह नरलोक?

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म कब हुआ था ?
   (क) 1868 ई. (ख) 1890 ई. (ग) 1886 ई. (घ) 1892 ई.
2. मैथिलीशरण गुप्त का जन्म-स्थान है :
   (क) कानपुर (ख) प्रयाग (ग) काशी (घ) चिरगाँव (झाँसी)
3. मैथिलीशरण गुप्त किस युग के कवि हैं ?
   (क) भारतेंदु युग (ख) द्विवेदी युग (ग) छायावादी युग (घ) प्रयोगवादी युग
4. मैथिलीशरण गुप्त का देहावसान कब हुआ ?
   (क) 1964 ई. (ख) 1946 ई. (ग) 1966 ई. (घ) 1962 ई.

5. 'पंचवटी' कविता के रचनाकार कौन हैं ?
   (क) निराला (ख) प्रसाद (ग) मैथिलीशरण गुप्त (घ) धर्मवीर भारती
6. 'रंग में भंग' का प्रकाशन कब हुआ ?
   (क) 1910 ई. (ख) 1912 ई. (ग) 1914 ई. (घ) 1916 ई.
7. 'साकेत' नामक महाकाव्य के रचनाकार कौन हैं ?
   (क) आयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (ख) रामधारी सिंह दिनकर
   (ग) जयशंकर प्रसाद (घ) मैथिलीशरण गुप्त
8. निम्न में से कौन-सी रचना मैथिलीशरण गुप्त की नहीं है ?
   (क) यशोधरा (ख) साकेत (ग) गोदान (घ) जयभारत

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'धर्नुधर जब कि भुवन–भर सोता है' में धुर्नधर कौन है ?
2. 'पंचवटी' की प्रकृति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. 'प्रहरी बना हुआ, वीर–व्रती लक्ष्मण किस धन की रक्षा कर रहा है और वह धन कैसा है?
4. संध्या के समय सूर्य को विरामदायिनी क्यों कहा गया है ?
5. मैथिलीशरण गुप्त का जीवन–परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
6. मैथिलीशरण गुप्त की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
7. 'पंचवटी' शीर्षक कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

III. दिए गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में,
   स्वच्छ चाँदनी बिछी हुई है अवनि और अंबर-तल में।
   पुलक प्रकट करती है धरती हरित तृणों की नोकों से,
   मानों झूम रहे हैं तरु भी मंद पवन के झोंकों से।
   (क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) 'चारु-चंद्र की चंचल किरणें' में कौन-सा अलंकार है ? उक्त अलंकार का एक अन्य उदाहरण लिखिए।

2. पंचवटी की छाया में है सुंदर पर्ण-कुटीर बना,
   उसके सम्मुख स्वच्छ शिला पर धीर वीर निर्भीक मना।
   जाग रहा यह कौन धनुर्धर जब कि भुवन-भर सोता है,
   भोगी कुसुमायुध योगी-सा बना दृष्टिगत होता है।।
   (क) प्रस्तुत पद्यांश के कवि एवं कविता का नाम लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) 'पंचवटी' तथा 'धनुर्धर' में कौन-सा समास है?

3. <u>है बिखेर देती वसुंधरा मोती, सबके सोने पर,</u>
<u>रवि बटोर लेता है उनको सदा सबेरा होने पर।</u>
और विरामदायिनी अपनी संध्या को दे जाता है,
शून्य श्याम तनु जिससे उसका नय रूप झलकता है।
(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) वसुंधरा, रवि, संध्या का दो–दो पर्यायवाची लिखिए ?

IV. भाषा के रंग :

1. **निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :**
(क) चारु-चंद्र की चंचल किरणें खेल रही हैं जल-थल में।
(ख) जाग रहा यह कौन धनुर्धर जब कि भुवन-भर सोता है ?
(ग) मर्त्यलोक मालिन्य मेटने, स्वामि-संग जो आई है।

2. **निम्नलिखित शब्दों का संधि-विच्छेद कीजिए तथा संधि का नाम लिखिए :**
लोकोपकार, कुसुमायुध, निरानंद, निस्तब्ध।

3. **निम्नलिखित पदों में समास-विग्रह करके समास का नाम लिखिए :**
पंचवटी, वीरवंश, सभय, कुसुमायुध, नरलोक।

4. 'पंचवटी' कविता से अनुप्रास अलंकार का कोई एक उदाहरण लिखिए।

V. अनुभूति एवं अभिव्यक्ति :

1. प्रस्तुत पाठ में पंचवटी की शोभा का मनोहारी चित्रण हुआ है। आप अपने आस पास के वातावरण की शोभा का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

शब्दार्थ

चारु–चंद्र – सुंदर चंद्रमा। **पर्ण–कुटीर** – पत्तों की कुटिया। **कुसुमायुध** – कामदेव। **मर्त्यलोक** – मृत्युलोक, भूतल। **निशाचरी** – राक्षसी। **निस्तब्ध** – मौन, गतिहीन, शांत। **निरानंद** – आनंद रहित। **नियति-नटी** – भाग्यरूपी नटिनी। **विरामदायिनी** – आराम देने वाली। **अदय** – दयाशून्य। **सदय** – दयाभाव युक्त **। अचेत** – बेहोश। **तात** – पिता। **अवधि** – निश्चित समय – सीमा। **प्रजार्थ** – प्रजाओं के लिए। **धारेंगे** – धारण करेंगे। **व्यस्त** – कार्य में लगा हुआ। **लोकोपकार** – लोकहित। **नरलोक** – संसार।

■

जयशंकर प्रसाद

(सन् 1889 – 1937 ई.)

जयशंकर प्रसाद का जन्म **सन् 1889 ई.** में **वाराणसी** में हुआ था। उनके पिता का नाम देवीप्रसाद साहु था। वे काशी के प्रसिद्ध क्वींस कालेज में पढ़ने गए, परंतु स्थितियाँ अनुकूल न होने के कारण आठवीं से आगे नहीं पढ़ पाए। बाद में स्वाध्याय से उन्होंने संस्कृत, हिंदी, फारसी का अध्ययन किया। अपने पैतृक कार्य को करते हुए भी उन्होंने अपने भीतर काव्य प्रेरणा को जीवित रखा। उनका जीवन बहुत सरल था। अत्यधिक श्रम करने तथा जीवन के अंतिम दिनों में यक्ष्मा से पीड़ित रहने के कारण **सन् 1937 ई.** में उनका निधन हो गया।

प्रसाद अत्यंत सौम्य, शांत एवं गंभीर प्रकृति के व्यक्ति थे और परनिंदा एवं आत्मस्तुति दोनों से सदा दूर रहते थे। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। मूलतः वे कवि थे, लेकिन उन्होंने नाटक, उपन्यास, कहानी, निबंध आदि अनेक साहित्यिक विधाओं में उच्चकोटि की रचनाओं का सृजन किया। उनकी प्रमुख काव्य-कृतियाँ हैं – **चित्राधार, कानन-कुसुम, झरना, आँसू, लहर और कामायनी**। आधुनिक हिंदी की श्रेष्ठतम काव्य-कृति मानी जाने वाली 'कामायनी' पर उन्हें हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा **'मंगलाप्रसाद पारितोषिक'** दिया गया। वे कवि के साथ-साथ सफल गद्यकार भी थे। **अजातशत्रु, चंद्रगुप्त, स्कंदगुप्त** और **ध्रुवस्वामिनी** उनके नाटक हैं तो **कंकाल, तितली** और **इरावती (अपूर्ण)** उपन्यास। **आकाशदीप, आँधी** और **इंद्रजाल** उनके कहानी संग्रह हैं।

उनका साहित्य कोमलता, माधुर्य, शक्ति और ओज का साहित्य माना जाता है। छायावादी कविता की अतिशय काल्पनिकता, सौंदर्य का सूक्ष्म चित्रण, प्रकृति-प्रेम, देश-प्रेम और शैली की लाक्षणिकता उनकी कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। इतिहास और दर्शन में उनकी गहरी रुचि थी जो उनके साहित्य में स्पष्ट दिखाई देती है।

प्रसाद की भाषा पूर्णतः साहित्यिक, परिमार्जित एवं परिष्कृत हिंदी है। भाषा प्रवाहयुक्त होते हुए भी संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है, जिसमें सर्वत्र ओज एवं माधुर्य गुण विद्यमान है। अपने सूक्ष्म भावों को व्यक्त करने के लिए उन्होंने लक्षणा एवं व्यंजना का आश्रय लिया

है। उनकी शैली काव्यात्मक चमत्कारों से परिपूर्ण है। संगीतात्मकता एवं लय पर आधारित उनकी शैली अत्यंत सरस एवं मधुर है तथा उनका साहित्य प्रसाद गुण से युक्त है।

पुनर्मिलन शीर्षक प्रस्तुत पाठ 'कामायनी' के 'निर्वेद' सर्ग से संकलित है। इस पाठ में कवि ने बताया है कि मनु हताहत एवं निराश हैं और श्रद्धा का मन परेशान है। श्रद्धा अपने पुत्र मानव (कुमार) को लेकर मनु की तलाश में निकल पड़ती है। अंत में मनु से श्रद्धा एवं मानव का पुनर्मिलन होता है।

पुनर्मिलन

चौंक उठी अपने विचार से
कुछ दूरागत ध्वनि, सुनती,
इस निस्तब्ध निशा में कोई
चली आ रही है कहती ?
"अरे बता दो मुझे दया कर
कहाँ प्रवासी है मेरा ?
उसी बावले से मिलने को
डाल रही हूँ मैं फेरा।
रूठ गया था अपनेपन से
अपना सकी न उसको मैं,
वह तो मेरा अपना ही था
भला मनाती किसको मैं !
यही भूल अब शूल–सदृश हो,
साल रही उर में मेरे,
कैसे पाऊँगी उसको मैं
कोई आकर कह दे रे !"
इड़ा उठी, दिख पड़ा राज-पथ
धुँधली.सी छाया चलती,
वाणी में थी करुण वेदना
वह पुकार जैसे जलती।
शिथिल शरीर वसन विशृंखल
कबरी अधिक अधीर खुली,
छिन्न पत्र मकरंद लुटी सी
ज्यों मुरझाई हुई कली।
नव कोमल अवलंब साथ में
वय किशोर उँगली पकड़े,

चला आ रहा मौन धैर्य-सा
            अपनी माता को जकड़े।
थके हुए थे दुखी बटोही,
            वे दोनों ही माँ-बेटे,
खोज रहे थे भूले मनु को
            जो घायल हो कर लेटे।
इड़ा आज कुछ द्रवित हो रही
            दुखियों को देखा उसने,
पहुँची पास और फिर पूछा
            ''तुमको विसराया किसने ?
इस रजनी में कहाँ भटकती
            जाओगी तुम बोलो तो,
बैठो आज अधिक चंचल हूँ
            व्यथा.गाँठ निज खोलो तो।
जीवन की लंबी यात्रा में
            खोए भी हैं मिल जाते,
जीवन है तो कभी मिलन है
            कट जाती दुख की रातें।''
श्रद्धा रुकी कुमार श्रांत था
            मिलता है विश्राम यहीं,
चली इड़ा के साथ जहाँ पर
            वह्नि शिखा-प्रज्वलित रही।
सहसा धधकी वेदी-ज्वाला
            मंडप आलोकित करती,
कामायनी देख पाई कुछ
            पहुँची उस तक डग भरती।
और वही मनु ! घायल सचमुच
            तो क्या सच्चा स्वप्न रहा ?

‘आह प्राण प्रिय ! यह क्या ? तुम यों’’
घुली हृदय, बन नीर बहा।
इड़ा चकित, श्रद्धा आ बैठी
वह थी मनु को सहलाती,
अनुलेपन.सा मधुर स्पर्श था
व्यथा भला क्यों रह जाती ?
उस मूर्च्छित नीरवता में कुछ
हलके–से स्पंदन आए,
आँखें खुलीं चार कोनों में
चार बिंदु आकर छाए।
उधर कुमार देखता ऊँचे,
मंदिर, मंडप, वेदी को,
यह सब क्या है नया मनोहर
कैसे ये लगते जी को ?
माँ ने कहा ‘अरे आ तू भी
देख पिता हैं पड़े हुए’
‘पिता ! आ गया लो’ यह कहते
उसके रोएँ खड़े हुए।
‘माँ जल दे, कुछ प्यासे होंगे
क्या बैठी कर रही यहाँ ?’
मुखर हो गया सूना मंडप
यह सजीवता रही कहाँ ?
आत्मीयता घुली उस घर में
छोटा.सा परिवार बना,
छाया एक मधुर स्वर उस पर
श्रद्धा का संगीत बना।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. छायावाद का प्रवर्तक किसे माना जाता है ?
   (क) मैथिलीशरण गुप्त (ख) बच्चन सिंह (ग) जयशंकर प्रसाद (घ) महादेवी वर्मा
2. जयशंकर प्रसाद का जन्म कब हुआ था ?
   (क) 1889 ई. (ख) 1898 ई. (ग) 1885 ई. (घ) 1892 ई.
3. जयशंकर प्रसाद का जन्म स्थान है :
   (क) प्रयाग (ख) लखनऊ (ग) वाराणसी (घ) मथुरा
4. जयशंकर प्रसाद का निधन कब हुआ था ?
   (क) 1937 ई. (ख) 1935 ई. (ग) 1940 ई. (घ) 1973 ई.
5. 'कामायनी' के रचनाकार हैं :
   (क) पंत (ख) निराला (ग) जयशंकर प्रसाद (घ) महादेवी वर्मा
6. 'कामायनी' पर प्रसाद को हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा कौन-सा पुरस्कार दिया गया ?
   (क) मंगला प्रसाद पारितोषिक (ख) साहित्य वाचस्पति
   (ग) भारत.भारती (घ) पदम भूषण
7. निम्न में से कौन-सा ग्रंथ जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित नहीं है ?
   (क) आँसू (ख) लहर (ग) झरना (घ) साकेत
8. 'पुनर्मिलन' कविता के रचनाकार कौन हैं ?
   (क) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (ख) महादेवी वर्मा (ग) जयशंकर प्रसाद (घ) सुमित्रानंद पंत
9. प्रसाद को उनकी किस कृति के लिए मंगला प्रसाद पारितोषिक पुरस्कार प्रदान किया गया था?
   (क) कामायनी (ख) लहर (ग) चित्राधार (घ) कानन-कुसुम
10. निम्न में से कौन-सा नाटक प्रसाद का नहीं है ?
    (क) अजातशत्रु (ख) ध्रुवस्वामिनी (ग) स्कंदगुप्त (घ) आधे.अधूरे

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'पुनर्मिलन' कविता के मूलभाव से संबंधित चार वाक्य लिखिए।

2. पुनर्मिलन कविता में कवि ने किसका मिलन दिखाया है ?

3. मनु को खोजते हुए श्रद्धा की शारीरिक एवं मानसिक स्थिति कैसी हो गई है ?

4. 'कामायनी' किसका प्रतीक है ?

5. अपने पिता को देखकर कुमार के मन में कौन-से मनोभाव जागृत हुए ?
6. जयशंकर प्रसाद का जीवन.परिचय एवं रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
7. जयशंकर प्रसाद की साहित्यिक सेवाओं एवं भाषाशैली का उल्लेख कीजिए।
8. अपनी पाठ्य.पुस्तक में संकलित 'पुनर्मिलन' कविता का भावार्थ लिखिए।

III. दिए गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. इड़ा उठी, दिख पड़ा राज-पथ
   धुँधली-सी छाया चलती,
   वाणी में थी करुण वेदना
   वह पुकार जैसे जलती।
   शिथिल शरीर वसन विशृंखल
   कबरी अधिक अधीर खुली,
   छिन्न पत्र मकरंद लुटी-सी
   ज्यों मुरझाई हुई कली।

   (क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) इड़ा ने जब श्रद्धा को देखा तो उसकी दशा कैसी थी ?

2. श्रद्धा रुकी कुमार श्रांत था
   मिलता है विश्राम यहीं,
   चली इड़ा के साथ यहाँ पर
   वह्नि शिखा-प्रज्वलित रही।
   सहसा धधकी वेदी-ज्वाला
   मंडप आलोकित करती,
   कामायनी देख पाई कुछ
   पहुँची उस तक डग भरती।
   और वही मनु ! घायल सचमुच
   तो क्या सच्चा स्वप्न रहा ?
   'आह प्राण प्रिय ! यह क्या ? तुम यों ?''
   घुला हृदय, बन नीर बहा।

   (क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) श्रद्धा ने मनु को किस अवस्था में देखा ?

3. 'माँ जल दे, कुछ प्यासे होंगे
    क्या बैठी कर रही यहाँ ?'
   मुखर हो गया सूना मंडप
    यह सजीवता रही कहाँ ?
   आत्मीयता घुली उस घर में
    छोटा-सा परिवार बना,
   छाया एक मधुर स्वर उस पर
    श्रद्धा का संगीत बना।
   (क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखें।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या करें।
   (ग) किसका मधुर स्वर, संगीत बन गया ?

IV. भाषा के रंग :

1. **निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :**
   (क) मुखर हो गया सूना मंडप।
   (ख) आत्मीयता घुली उस घर में, छोटा.सा परिवार बना।
2. **निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त रस का नाम बताइए :**
   (क) घुला हृदय, बन नीर बहा।
   (ख) इड़ा आज कुछ द्रवित हो रही दुखियों को देखा उसने।
3. 'मुखर हो गया सूना मंडप' में कौन.सा अलंकार है ?

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. प्रस्तुत कविता में इड़ा श्रद्धा को देखकर दुखी हो जाती और उसके पास पहुँचकर सहानुभूति पूर्वक उसके दुख का कारण पूछती है। किसी दुखी व्यक्ति को देखकर आपको कैसी अनुभूति होती है तथा दुखियों की सहायता आप किस प्रकार कर सकते हैं। बताइए।

शब्दार्थ

दूरागत – दूर से आती हुई। **निस्तब्ध** – गतिहीन, शांत। **प्रवासी** – परदेशी। **शूल** – काँटा। **साल रही** – चुभ रही है, कसक रही है। **शिथिल** – थका हुआ। **विशृंखल** – अस्त–व्यस्त, विखरे हुए। **कबरी** – जूड़ा, केशों का समूह। **अवलंब** – सहारा। **वय** – उम्र। **बटोही** – पथिक। **अनुलेपन** – उबटन, किसी तरल पदार्थ का लेपन। **स्पंदन** – कंपन। **आत्मीयता** – अपनापन।

■

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

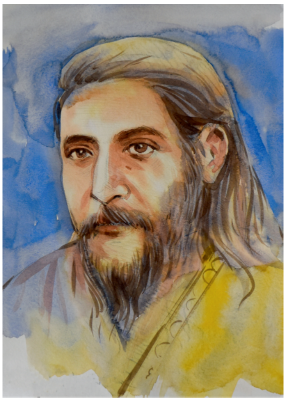

(सन् 1896-1961 ई.)

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म बंगाल के **महिषादल** (मेदिनीपुर जिले) में **सन् 1896 ई.** में हुआ था। वे मूलतः **गढ़ाकोला** (उन्नाव, उ0 प्र0) के निवासी थे। निराला की औपचारिक शिक्षा नौवीं तक महिषादल में ही हुई। उन्होंने स्वाध्याय से संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी का अध्ययन किया। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद की विचारधारा का उन पर विशेष प्रभाव था। निराला का पारिवारिक जीवन दुखों और संघर्षों से भरा था। आत्मीय जनों के असामयिक निधन ने उन्हें भीतर तक तोड़ दिया। साहित्यिक मोर्चे पर भी उन्होंने अनवरत संघर्ष किया। **सन् 1961 ई.** में प्रयाग में उनका देहांत हो गया।

उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं – **अनामिका, परिमल, बेला, नए पत्ते, गीतिका, अणिमा, सरोज-स्मृति, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता।** चतुरी चमार, कुल्ली भाट, बिल्लेसुर बकरिहा, प्रभावती, काले कारनामे, चोटी की पकड़ उनकी गद्य कृतियां हैं। **निराला रचनावली** के आठ खंडों में उनका संपूर्ण साहित्य प्रकाशित है। उन्होने **समन्वय, मतवाला** जैसी पत्रिकाओं का संपादन भी किया है। उपन्यास, कहानी, आलोचना और निबंध लेखन में भी उनकी ख्याति अविस्मरणीय है।

कविता को नया स्वर देने वाले निराला छायावाद के ऐसे कवि हैं जो एक ओर कबीर की परंपरा से जुड़ते हैं तो दूसरी ओर समकालीन कवियों के प्रेरणा स्रोत भी हैं। उनका यह विस्तृत काव्य-संसार अपने भीतर संघर्ष, क्रांति और निर्माण, ओज और माधुर्य, आशा और निराशा के द्वंद्व को कुछ इस तरह समेटे हुए है कि वह किसी सीमा में बंध नहीं पाता – जब वे मुक्त छंद की बात करते हैं, तो केवल छंद, रूढ़ियों आदि के बंधन को ही नहीं तोड़ते बल्कि काव्य विषय और युग की सीमाओं को भी अतिक्रमित करते हैं। उनके विद्रोही स्वभाव ने कविता के भाव-जगत और शिल्प-जगत में नए प्रयोगों को संभव किया। उनकी रचनाओं में एक तरफ तत्सम सामासिक पदावली और ध्वन्यात्मक बिंबों से युक्त राम की शक्ति पूजा और कठिन छंद-साधना का प्रतिमान **तुलसीदास** है, तो दूसरी तरफ देशज शब्दों का सोंधापन लिए **कुकुरमुत्ता**, **रानी और कानी, महँगू महंगा रहा** जैसी कविताएँ हैं।

दान शीर्षक या कविता 'अपरा' पुस्तक से संकलित है। इस कविता में कवि ने भिक्षुक की दीन हीन दशा का वर्णन करते हुए यह बताने का प्रयास किया है कि संसार का सौंदर्य, गीत, भाषा आदि सभी प्रकृति का दान पाते हैं। सभी में मानव को श्रेष्ठ माना जाता है, लेकिन यही मानव दीन हीन शोषित मानवों की उपेक्षा करके वानरों, कौवों आदि को भोजन खिलाता है। यह देखकर कवि दुःखी होता है और मानव की श्रेष्ठता पर व्यंग्य करते हुए, शोषितों एवं असहायों के प्रति संवेदना जागृत करने का प्रयास करता है।

दान

निकला पहिला अरविंद आज,
देखता अनिंद्य रहस्य-साज;
सौरभ-वसना समीर बहती,
कानों में प्राणों की कहती;
गोमती क्षीण-कटि नटी नवल
नृत्यपर-मधुर आवेश-चपल।
मैं प्रातः पर्यटनार्थ चला
लौटा, आ पुल पर खड़ा हुआ,
सोचा ''विश्व का नियम निश्चल''
जो जैसा, उसको वैसा फल
देती यह प्रकृति स्वयं सदया,
सोचने को न रहा कुछ नया,
सौंदर्य, गीत, बहु वर्ण, गंध,
भाषा, भावों के छंद-बंध,
और भी उच्चतर जो विलास,
प्राकृतिक दान वे, सप्रयास
या अनायास आते हैं सब,
सब में है श्रेष्ठ, धन्य मानव।''
फिर देखा, उस पुल के ऊपर
बहु संख्यक बैठे हैं वानर।
एक ओर पंथ के, कृशकाय
कंकाल शेष नर मृत्यु-प्राय
बैठा सशरीर दैन्य दुर्बल,
भिक्षा को उठी दृष्टि निश्चल,
अति क्षीण कण्ठ, है तीव्र श्वास,

जीता ज्यों जीवन से उदास।
ढोता जो वह, कौन-सा शाप ?
भोगता कठिन, कौन-सा पाप ?
यह प्रश्न सदा ही है पथ पर,
पर सदा मौन इसका उत्तर।
जो बड़ी दया का उदाहरण,
वह पैसा एक, उपायकरण !
मैंने झुक नीचे को देखा,
तो झलकी आशा की रेखा
विप्रवर स्नान कर चढ़ा सलिल
शिव पर दूर्वादल, तंडुल, तिल,
लेकर झोली आए ऊपर,
देखकर चले तत्पर वानर !
द्विज राम-भक्त, भक्ति की आस
भजते शिव को बारहों मास;
कर रामायण का पारायण,
जपते हैं श्रीमन्नारायण,
दुख पाते जब होते अनाथ,
कहते कपियों के जोड़ हाथ,
मेरे पड़ोस के वे सज्जन,
करते प्रतिदिन सरिता-मज्जन,
झोली से पुए, निकाल लिये,
बढ़ते कपियों के हाथ दिये,
देखा भी नहीं उधर फिर कर
जिस ओर रहा वह भिक्षु इतर,
चिल्लाया किया दूर दानव,
बोला मैं – ''धन्य, श्रेष्ठ मानव !''

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' किस युग के प्रमुख कवि हैं ?
   (क) छायावाद (ख) प्रगतिवाद (ग) प्रयोगवाद (घ) हालावाद
2. निराला का जन्म कब हुआ था ?
   (क) 1892 ई. (ख) 1896 ई. (ग) 1989 ई. (घ) 1961 ई.
3. निराला का जन्म स्थान कहाँ पर है ?
   (क) वाराणसी (ख) प्रयाग (ग) पटना (घ) महिलादल
4. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का निधन कब हुआ था ?
   (क) 1916 ई. (ख) 1961 ई. (ग) 1962 ई. (घ) 1963 ई.
5. अनामिका और तुलसीदास के रचनाकार कौन हैं ?
   (क) जयशंकर प्रसाद (ख) सुमित्रानंद पंत
   (ग) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (घ) महादेवी वर्मा
6. निम्न में से कौन-सी रचना निराला की नही है ?
   (क) अनामिका (ख) बेला (ग) गीतिका (घ) कामायनी
7. निम्न में से कौन-सी रचना निराला की है ?
   (क) कुकुरमुत्ता (ख) यामा (ग) लहर (घ) अनघ
8. निराला द्वारा रचित कविता 'दान' किस काव्य संग्रह से उद्धृत है ?
   (क) अणिमा (ख) अपरा (ग) परिमल (घ) बेला
9. 'राम की शक्ति पूजा' के रचनाकार कौन हैं ?
   (क) अज्ञेय (ख) बच्चन (ग) भारतेंदु (घ) निराला
10. 'समन्वय' और 'मतवाला' पत्रिका के संपादक कौन थे ?
   (क) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (ख) हजारीप्रसाद द्विवेदी
   (ग) जयशंकर प्रसाद (घ) महादेवी वर्मा

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'भिक्षु' की स्थिति कैसी है ?
2. प्रकृति ने सबसे श्रेष्ठ, मानव को माना है, क्यों ?
3. 'दान' शीर्षक कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।
4. निराला ने 'दान' कविता के माध्यम से किस पर प्रहार किया है ?
5. 'दान' कविता में कवि द्वारा किए गए व्यंग्य को लिखिए।

6. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं का उल्लेख कीजिए।
7. निराला की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
8. निराला द्वारा रचित 'दान' कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।

III. दिए गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. निकला पहिला अरविंद आज,
   देखता अनिंद्य रहस्य-साज;
   सौरभ—वसना समीर बहती,
   कानों में प्राणों की कहती;
   गोमती क्षीण—कटि नटी नवल
   नृत्यपर—मधुर आवेश—चपल।
   (क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) गोमती नदी में कहीं-कहीं पानी कम होने की वजह से उसकी तुलना किससे की गई है ?

2. मैंने झुक नीचे को देखा,
   तो झलकी आशा की रेखा
   विप्रवर स्नान कर चढ़ा सलिल
   शिव पर दूर्वादल, तंडुल, तिल,
   लेकर झोली आए ऊपर,
   देखकर चले तत्पर वानर !
   द्विज राम-भक्त, भक्ति की आस
   भजते शिव को बारहों मास;
   कर रामायण का पारायण,
   जपते हैं श्रीमन्नारायण,
   (क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित पद्यांश का भावार्थ लिखिए।
   (ग) सलिल शब्द का दो पर्यायवाची लिखिए।

3. दुख पाते जब होते अनाथ,
   कहते कपियों के जोड़ हाथ,
   मेरे पड़ोस के वे सज्जन,
   करते प्रतिदिन सरिता-मज्जन,
   झोली से पुए, निकाल लिये,

बढ़ते कपियों के हाथ दिये,
देखा भी नहीं उधर फिर कर
जिस ओर रहा वह भिक्षु इतर,
चिल्लाया किया दूर दानव,
बोला मैं – ''धन्य, श्रेष्ठ मानव !''

(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) बंदरों को पुए कौन खिला रहा था ?

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
   (क) सोचा 'विश्व का नियम निश्चल' जो जैसा, उसको वैसा फल।
   (ख) विप्रवर स्नान कर चढ़ा सलिल, शिव पर दुर्वादल, तिल।
2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए :
   (क) जीता ज्यों जीवन से उदास।
   (ख) भाषा भावों के छंद-बंध।
   (ग) कहते कपियों के जोड़ हाथ।
3. निम्नलिखित पदों का समास-विग्रह करते हुए समास का नाम लिखिए :
   कृशकाय, दूर्वादल, सरिता-मज्जन, राम–भक्त।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. प्रस्तुत कविता दान में कवि ने विप्र द्वारा वानरों को पुए खिलाने तथा भिखारी की उपेक्षा करने की बात कही है। अपने आस–पास के असहायों के प्रति आप अपनी भावनाओं को व्यक्त कीजिए।

शब्दार्थ

अरविंद – कमल। **अनिंद्य** – सुंदर। **सौरभ-वसना** – सुगंध रूपी वस्त्र। **क्षीण-कटि** – पतली कमर। **नटी-नवल** – नई उम्र वाली नर्तकी। **चपल** – गतिमान, अस्थिर, चंचल। **पर्यटनार्थ** – भ्रमण हेतु। **सदया** – दयापूर्ण। **कृशकाय** – दुबले-पतले शरीर वाला। **कंकाल** – हड्डियों का ढाँचा। **मृतप्राय** – मृत्यु के निकट। **दैन्य** – दीनता। **दूर्वादल** – हरी घास। **द्विज** – ब्राह्मण। **कपियों** – बंदरों। **मज्जन** – स्नान। **इतर** – इस तरफ, इस ओर। **दानव** – राक्षस।

■

सोहनलाल द्विवेदी

(सन् 1906–1988 ई.)

सोहनलाल द्विवेदी का जन्म **सन् 1906 ई.** में उत्तर प्रदेश के **फतेहपुर** जिले के **बिंदकी** नामक गाँव में हुआ था। उनकी हाईस्कूल तक की शिक्षा फतेहपुर में तथा उच्च शिक्षा काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी में हुई। वहाँ महामना मदनमोहन मालवीय के संपर्क में आने के बाद उनके हृदय में राष्ट्रीयता की भावना जगी और उन्होंने राष्ट्रीय भावना-प्रधान कविताएँ लिखना प्रारंभ किया। सन् 1938 से 1942 ई. तक वे लखनऊ से दैनिक राष्ट्रीय पत्र **अधिकार** का संपादन करते रहे। इसके बाद कुछ वर्षों तक वे **बालसखा** के अवैतनिक संपादक भी रहे। उनका साहित्य वर्तमान और अतीत के प्रति गौरव की भावना को जगाता है। 1969 में भारत सरकार ने उनको पद्मश्री उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया। **सन् 1988 ई.** में उनका देहावसान हो गया।

काव्य–रचना के साथ–साथ सोहनलाल द्विवेदी ने स्वाधीनता-आंदोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया। उनकी कविताओं का मुख्य विषय राष्ट्रीय उद्‌बोधन है, जिसमें जन जागरण का संदेश है। वे खादी प्रचार, ग्राम सुधार, देशभक्ति, सत्य, अहिंसा पर विशेष बल देते थे। उनकी गणना राष्ट्रीयता एवं स्वदेश-प्रेम का शंख फूँकने वाले प्रमुख कवियों में की जाती है। उन्होंने राष्ट्रीय भाव की कविताओं के अतिरिक्त बाल कविताएँ भी लिखी हैं। सन् 1941 ई. में उनका प्रथम काव्य संग्रह **भैरवी** प्रकाशित हुआ।

उनकी राष्ट्रीय कविताओं के प्रमुख संग्रह – **भैरवी, पूजागीत, प्रभाती** और **चेतना** आदि हैं। **बासंती** उनके प्रेम-गीतो का संग्रह है। **दूधबताशा, बालभारती, शिशुभारती, नेहरू चाचा, बिगुल, बाँसुरी, सुजाता, मोदक** आदि उनके बाल-कविता-संग्रह हैं। **वासवदत्ता, कुणाल** और **विषपान** आख्यान काव्य हैं। उन्होंने **गाँधी अभिनंदन ग्रंथ** का भी संपादन किया।

सोहनलाल द्विवेदी की भाषा सरल, सरस, मधुर, प्रवाहमयी एवं सुसंस्कृत है। उन्होंने गीति, प्रबंध तथा मुक्तक आदि शैलियों का कुशलतापूर्वक प्रयोग किया है। उनकी शैली में प्रवाह और रोचकता है।

प्रणाम कविता में कवि उन महापुरुषों को नमन कर रहे हैं, जो शोषितों और दलितों के बीच रहकर उनके उत्थान के लिए कार्य करते हैं। जिनकी जीवन-शैली और बलिदान का स्मरण करके मृत्यु का भय समाप्त हो जाता है, जो पीड़ित मानवता को सुखी बनाने हेतु सदैव तत्पर रहते हैं क्योंकि उनका उद्‌देश्य मानवता की स्थापना करना है।

उन्हें प्रणाम

कोटि-कोटि नंगों भिखमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ,
शोषित जन के, पीड़ित जन के, कर को थाम,
बढ़े जा रहे उधर, जिधर है मुक्ति प्रकाम।
ज्ञात नही है जिसके नाम,
उन्हें प्रणाम ! सतत प्रणाम!
भेद गया है दीन-अश्रु से जिनका मर्म,
मुहताजों के साथ न जिनको आती शर्म,
किसी देश में किसी वेश में करते कर्म,
मानवता का संस्थापन ही है जिनका धर्म।
जिनके गीतों के पढ़ने से मिलती शांति,
जिनकी तानों के सुनने से झिलती भ्रांति,
छा जाती मुखमंडल पर यौवन की कांति,
जिनकी टेकों पर टिकने से टिकती क्रांति।
मरण मधुर बन जाता है जैसे वरदान,
अधरों पर खिल जाती है मादक मुस्कान,
नहीं देख सकते जग में अन्याय वितान,
प्राण उच्छ्वसित होते, होने को बलिदान।
जो घावों पर मरहम का कर देते काम!
उन्हें प्रणाम ! प्रथम प्रणाम !
उन्हें जिन्हें है नहीं जगत में अपना काम,
राजा से बन गए भिखारी तज आराम,
दर-दर भीख माँगते सहते वर्षा घाम

दो सूखी मधुकरियाँ दे देतीं विश्राम !
जिनकी आत्मा सदा सत्य का करती शोध,
जिनको है अपनी गौरव गरिमा का बोध,
जिन्हें दुखी पर दया, क्रूर पर आता क्रोध
अत्याचारों का अभीष्ट जिनको प्रतिशोध !
उन्हें प्रणाम ! सतत प्रणाम !
यौवन में ही लिया जिन्होंने है वैराग,
नगर-नगर की ग्राम-ग्राम की छानी धूल
समझे जिससे सोई जनता अपनी भूल !
जिनको रोटी नमक न होता कभी नसीब,
जिनको युग ने बना रखा है सदा गरीब,
उन मूर्खों को विद्वानों को जो दिन-रात,
उन्हें जगाने को फेरी देते हैं प्रात;
उन्हें प्रणाम ! सतत प्रणाम !
जंजीरों में कसे हुए सीकचों के पार
जन्मभूमि जननी की करते जय-जयकार
सही कठिन, हथकड़ियों के बेतों की मार
आजादी की कमी न छोड़ी टेक पुकार !
स्वार्थ, लोभ, यश कभी सका है जिन्हें न जीत
जो अपनी धुन के मतवाले मन की मीत
ढाने को साम्राज्यवाद की दृढ़ दीवार
बार-बार बलिदान चढ़े प्राणों को वार !
बंद सीकचों मे जो हैं अपने सरनाम
उन्हें प्रणाम ! सतत प्रणाम !
जो फाँसी के तख्तों पर जाते हैं झूम,
जो हँसते-हँसते शूली को लेते चूम,
दीवारों में चुन जाते हैं जो मासूम,
टेक न तजते, पी जाते हैं विष का धूम !

उस आगत को जो कि अनागत दिव्य भविष्य
जिनकी पावन ज्वाला में सब पाप हविष्य !
सब स्वतंत्र, सब सुखी यहाँ पर सुख विश्राम
नवयुग के उस नव प्रभात को कोटि प्रणाम।

('उन्हें प्रणाम' प्रभाती संकलन में 'प्रथम प्रणाम' से उद्धृत)

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. 'अधिकार' दैनिक-पत्र का संपादन किया है?
   (क) जयशंकर प्रसाद (ख) सोहनलाल द्विवेदी
   (ग) महादेवी वर्मा (घ) सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'
2. सोहनलाल द्विवेदी का प्रथम काव्य संग्रह है :
   (क) बासंती (ख) भैरवी (ग) विषपान (घ) वासवदत्ता
3. 'उन्हें प्रणाम' कविता में कवि ने प्रणाम किया है :
   (क) पुरुषों को (ख) सत्पुरुषों को (ग) स्त्रियों को (घ) दलितों को
4. 'उन्हें प्रणाम' कविता में कवि ने भावात्मक श्रद्धा-सुमन अर्पित किया है :
   (क) राजनेताओं के प्रति (ख) देशभक्तों एवं क्रांतिकारियों के प्रति
   (ग) राष्ट्र के प्रति (घ) सभी के प्रति
5. 'उन्हें प्रणाम' के रचनाकार हैं :
   (क) जयशंकर प्रसाद (ख) सोहनलाल द्विवेदी
   (ग) महादेवी वर्मा (घ) सुमित्रानंदन पंत

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कवि ने मानवता की स्थापना करना किसका धर्म बताया है?
2. 'उन्हें प्रणाम' कविता का भावार्थ लिखिए।
3. 'उन्हें प्रणाम' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
4. उन्हें प्रणाम कविता में कवि की आशा का स्वरूप क्या है?
5. सोहनलाल द्विवेदी का जीवन परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली का उल्लेख कीजिए।
6. सोहनलाल द्विवेदी के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालिए।

III. दिए गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कोटि-कोटि नंगों, भिखमंगों के जो साथ,
खड़े हुए हैं कंधा जोड़े, उन्नत माथ,
शोषित जन के, पीड़ित जन के, कर को थाम,
बढ़े जा रहे उधर, जिधर है, मुक्ति प्रकाम !
ज्ञात नहीं है जिनके नाम !
उन्हें प्रणाम! सतत प्रणाम !

(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) प्रस्तुत पद्यांश में कवि किसको नमन कर रहा है ?
(ग) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

2. भेद गया है दीन-अश्रु से जिनका मर्म,
मुहताजों के साथ न जिनको आती शर्म,
किसी देश में किसी वेश में करते कर्म,
मानवता का संस्थापन ही है जिनका धर्म।

(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) प्रस्तुत पद्यांश में कवि का मुख्य लक्ष्य क्या है?

3. जिनकी आत्मा सदा सत्य का करती शोध,
जिनको है अपनी गौरव गरिमा का बोध,
जिन्हें दुखी पर दया, क्रूर पर आता क्रोध
अत्याचारों का अभीष्ट जिनको प्रतिशोध !

(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) आत्मा, सत्य, दया, क्रोध का विलोम लिखिए ?

4. उस आगत को जो कि अनागत दिव्य भविष्य
जिनकी पावन ज्वाला में सब पाप हविष्य !
सब स्वतंत्र, सब सुखी यहाँ पर सुख विश्राम
नवयुग के उस नव प्रभात को कोटि प्रणाम

(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) आगत, पावन, हविष्य, प्रभात का अर्थ लिखिए।

IV. **भाषा के रंग :**

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची लिखिए :
   राजा, दीन, मुख, जगत
2. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :
   शोषित, उन्नत, विष, ज्ञात, अन्याय, शांति, स्वतंत्र
3. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण, विशेष्य छांटिए :
   नवयुग, मरणमधुर, प्रतिशोध, नवप्रभात

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

प्रस्तुत कविता में कवि ने उन्हें कोटि प्रणाम किया है, जो फाँसी के फंदों पर झूल गए हैं। आप अपने देश की रक्षा करने वाले ऐसे पाँच शहीदों के नाम बताएँ।

शब्दार्थ

मर्म – हृदय। **मुहताजों** – निर्धन। **सतत** – निरंतर, लगातार। **कोटि** – करोड़ों। **उन्नत माथ** – मस्तक ऊँचा किये हुए। **प्रकाम** – पूरी तरह, संपूर्ण। **भ्रांति** – भ्रम। **टेक** – संकल्प, मान्यता। **टिकती** – स्थायी होती। **वितान** – विस्तार। **उच्छ्वसित** – प्रसन्नता से उद्यत। **मधुकरियाँ** – रोटियाँ। **शोध** – खोज। **बोध** – ज्ञान। **अभीष्ट** – इच्छित। **प्रतिरोध** – बदला। **अनुराग** – प्रेम। **वैराग्य** – संन्यास। **वार** – न्योछावर करना। **कर्मठ** – कर्मशील। **ध्रुव** – अटल। **आगत** – आने वाला। **अनागत** – न आने वाला। **हविष्य** – आहुति।

■

हरिवंशराय बच्चन

(सन् 1907-2003 ई.)

हरिवंशराय बच्चन का जन्म उ0 प्र0 के **प्रयागराज** में **सन् 1907 ई.** में हुआ था। 'बच्चन' उनका माता-पिता द्वारा प्यार से लिया जानेवाला नाम था, जिसे उन्होंने अपना उपनाम बना लिया। वे कुछ समय तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अंग्रेजी के प्राध्यापक रहने के बाद दिल्ली स्थित विदेश मंत्रालय में हिंदी विशेषज्ञ बनकर चले गए।

हरिवंशराय बच्चन उत्तर छायावादी काल के कवि हैं। उन्हें **हालावाद** का प्रवर्तक भी माना जाता है। उनकी कविताओं में मानवीय भावनाओं की सामान्य एवं स्वाभाविक अभिव्यक्ति तो हुई ही साथ ही व्यक्ति वेदना, राष्ट्र चेतना और जीवन-दर्शन के स्वर भी मिलते हैं। कविता के अलावा उन्होंने अपनी आत्मकथा भी लिखी है जो हिंदी गद्य की बेजोड़ कृति मानी गई है। उन्हें **दशद्वार से सोपान तक** के लिए 'सरस्वती सम्मान' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', 'सोवियत भूमि नेहरू पुरस्कार' तथा 'पद्मभूषण' से भी अलंकृत किया गया। **सन् 2003 ई.** में मुंबई में उनका निधन हो गया।

बच्चन की प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं– **मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश, निशा निमंत्रण, एकांत संगीत, मिलनयामिनी, सतरंगिणी, आरती और अंगारे, नए पुराने झरोखे, टूटी-फूटी कड़ियाँ।** उनकी आत्मकथा **क्या भूलूँ क्या याद करूँ, नीड़ का निर्माण फिर, बसेरे से दूर, दशद्वार से सोपान तक** चार खंडों में है। 'प्रवासी की डायरी' उनकी डायरी है।

बच्चन की कविताओं में उत्साह, उमंग, उल्लास, राष्ट्रीय चेतना, व्यवस्था में व्यक्ति की असहायता और बेबसी के चित्र दिखाई पड़ते हैं। उन्होंने छायावाद की लाक्षणिक वक्रता के बजाय सीधी-सादी जीवंत भाषा और संवेदनशील गेय शैली में अपनी बात कही है। सामान्य बोलचाल की भाषा को काव्य–भाषा की गरिमा प्रदान करने में बच्चन का उल्लेखनीय योगदान है।

पथ की पहचान कविता में कवि ने जीवन पथ की पहचान के लिए प्रेरित करने का प्रयास किया है। कवि कहना चाहते हैं कि हमारे सामने जो चुनौतियाँ आती हैं उनका मुकाबला हमें स्वयं के विवेक से करना पड़ता है। पथ की पहचान कविता बहुत सरल ढंग से पाठक को सचेत करती है।

पथ की पहचान

पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(1)

पुस्तकों में है नहीं
छापी गई इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता
है न औरों की जबानी,
अनगिनत राही गए इस
राह से, उनका पता क्या,
पर गए कुछ लोग इस पर
छोड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर
भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पंथी,
पंथ का अनुमान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(2)

यह बुरा है या कि अच्छा,
व्यर्थ दिन इस पर बिताना
अब असंभव, छोड़ यह पथ
दूसरे पर पग बढ़ाना,
तू इसे अच्छा समझ,
यात्रा सरल इससे बनेगी,
सोच मत केवल तुझे ही
यह पड़ा मन में बिठाना,
हर सफल पंथी, यही
विश्वास ले इस पर बढ़ा है,

तू इसी पर आज अपने
चित्त का अवधान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(3)

है अनिश्चित किस जगह पर
सरित, गिरि, गह्वर मिलेंगे,
है अनिश्चित, किस जगह पर
बाग, बन सुंदर मिलेंगे।
किस जगह यात्रा खतम हो
जाएगी, यह भी अनिश्चित,
है, अनिश्चित, कब सुमन, कब
कंटको के शर मिलेंगे,
कौन सहसा छूट जाएंगे,
मिलेंगे कौन सहसा
आ पड़े कुछ भी, रुकेगा
तू न, ऐसी आन कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(4)

कौन कहता है कि स्वप्नों
को न आने दे हृदय में,
देखते सब हैं इन्हें
अपनी उमर, अपने समय में,
और तू कर यत्न भी तो
मिल नहीं सकती सफलता,
ये उदय होते, लिए कुछ
ध्येय नयनों के निलय में,
किंतु जग के पंथ पर यदि
स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,

स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो,
सत्य का भी ज्ञान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(5)

स्वप्न आता स्वर्ग का, दृग-
कोरकों में दीप्ति आती,
पंख लग जाते पगों का,
ललकती उन्मुक्त छाती,
रास्ते का एक काँटा
पाँव का दिल चीर देता,
रक्त की दो बूँद गिरतीं,
एक दुनिया डूब जाती,
आँख में हो स्वर्ग लेकिन
पाँव पृथ्वी पर टिके हों,
कंटकों की इस अनोखी
सीख का सम्मान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. हरिवंशराय बच्चन का जन्म कब हुआ था ?
   (क) 1907 ई. (ख) 1970 ई. (ग) 1912 ई. (घ) 1921 ई.
2. हरिवंशराय बच्चन का जन्म स्थान कहाँ है ?
   (क) काशी (ख) प्रयागराज (ग) कानपुर (घ) लखनऊ
3. 'हालावाद' के प्रवर्तक कौन हैं ?
   (क) भारतेंदु हरिश्चंद्र (ख) महावीर प्रसाद द्विवेदी
   (ग) जयशंकर प्रसाद (घ) हरिवंशराय बच्चन

4. हरिवंशराय बच्चन को उनकी किस कृति के लिए सरस्वती सम्मान मिला था ?
   (क) क्या भूलूँ क्या याद करूँ (ख) नीड़ का निर्माण फिर
   (ग) बसेरे से दूर (घ) दशद्वार से सोपान तक
5. हरिवंशराय बच्चन का निधन कब हुआ था ?
   (क) 2003 ई. (ख) 2004 ई. (ग) 2005 ई. (घ) 2006 ई.
6. 'पथ की पहचान' कविता के रचनाकार कौन हैं ?
   (क) दिनकर (ख) अज्ञेय
   (ग) हरिवंशराय बच्चन (घ) सोहनलाल द्विवेदी
7. निम्न में से कौन-सी रचना बच्चन की नही है ?
   (क) मधुशाला (ख) मधुबाला (ग) मधुकलश (घ) मधुमालती
8. निम्न में से कौन-सी रचना बच्चन की है ?
   (क) निशा निमंत्रण (ख) आँसू (ग) लोकायतन (घ) नीहार
9. 'बंगाल का अकाल' कविता के रचनाकार कौन हैं ?
   (क) नागार्जुन (ख) धूमिल (ग) हरिवंशराय बच्चन (घ) केदारनाथ सिंह
10. हरिवंशराय बच्चन इलाहाबाद विश्वविद्यालय में किस विषय के प्राध्यापक थे ?
   (क) अंग्रेजी (ख) हिंदी (ग) गणित (घ) विज्ञान

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. बटोही को चलने के पूर्व बाट की पहचान करने की सलाह कवि किस अभिप्राय से देता है ?
2. यात्रा सुगम और सफल होने के लिए कवि क्या सुझाव देता है ?
3. 'स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो, सत्य का भी ज्ञान कर ले' कहने का क्या तात्पर्य है ?
4. कवि के अनुसार बटोही को कौन–कौन सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है?
5. हरिवंशराय बच्चन का जीवन-परिचय देते हुए उनकी काव्य-कृतियों का उल्लेख कीजिए।
6. हरिवंशराय बच्चन के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालिए।
7. हरिवंशराय बच्चन की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

III. दिए गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. पुस्तकों में है नहीं
    छापी गई इसकी कहानी,
हाल इसका ज्ञात होता
है न औरों की जबानी,

अनगिनत राही गए इस
राह से, उनका पता क्या,
पर गए कुछ लोग इस पर
छोड़ पैरों की निशानी,
यह निशानी मूक होकर
भी बहुत कुछ बोलती है,
खोल इसका अर्थ, पंथी,
पंथ का अनुमान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) कवि राहगीर को किससे प्रेरणा लेने की बात कह रहा है ?

2. <u>यह बुरा है या कि अच्छा,</u>
<u>व्यर्थ दिन इस पर बिताना</u>
<u>अब असंभव, छोड़ यह पथ</u>
<u>दूसरे पर पग बढ़ाना,</u>
तू इसे अच्छा समझ,
यात्रा सरल इससे बनेगी,
सोच मत केवल तुझे ही
यह पड़ा मन में बिठाना,
हर सफल पंथी, यही
विश्वास ले इस पर बढ़ा है,
तू इसी पर आज अपने
चित्त का अवधान कर ले।
पूर्व चलने के बटोही,
बाट की पहचान कर ले।

(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) विवेकपूर्ण कार्य का चुनाव करने के पश्चात् उसकी अच्छाई बुराई पर सोचना क्यों व्यर्थ है?

3. कौन कहता है कि स्वप्नों
को न आने दे हृदय में,
देखते सब हैं इन्हें
अपना उमर, अपने समय में,
और तू कर यत्न भी तो
मिल नहीं सकती सफलता,
ये उदय होते, लिए कुछ
ध्येय नयनों के निलय में,
किंतु जग के पंथ पर यदि
स्वप्न दो तो सत्य दो सौ,
स्वप्न पर ही मुग्ध मत हो,
सत्य का भी ज्ञान कर ले।

(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-से अलंकार प्रयुक्त हुए हैं ?

VI. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए :
   (क) पूर्व चलने के बटोही, बाट की पहचान कर ले।
   (ख) रास्ते का एक काँटा, पाँव का दिल चीर देता।
2. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकार का नाम लिखिए :
   (क) रक्त की दो बूँद गिरती एक दुनिया डूब जाती।
   (ख) है अनिश्चित, किस जगह पर बाग, बन सुंदर मिलेंगे।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

प्रस्तुत कविता पथ की पहचान में कवि ने बताया है कि कुछ महान लोग होते हैं, जो अपने संघर्षों से जाने व पहचाने जाते हैं और दूसरो को प्रेरित करते हैं। आप ऐसे किसी महापुरुष के बारे में बताइए जिसके गुणों से आप प्रभावित हों।

शब्दार्थ

अवधान – मनोयोग, ध्यान। **गह्वर** – गड्ढे। **सरित** – नदी। **गिरि** – पर्वत। **बाग** – बगीचा। **वन** – जंगल। **कंटक** – काँटा, बाधा। **शर** – बाण, तीर। **दृग-कोरकों** – नेत्र रूपी कली। **आन** – स्वाभिमान। **निलय** – कक्ष, रहने की जगह।

■

नागार्जुन

(सन् 1911-1998 ई.)

नागार्जुन का जन्म **तरौनी** (जिला दरभंगा, बिहार) में **सन् 1911 ई.** में हुआ था। उनका वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था। हिंदी में उन्होंने 'नागार्जुन' तथा मैथिली में 'यात्री' उपनाम से साहित्य-सृजन किया। **सन् 1998 ई.** में उनका देहावसान हो गया।

नागार्जुन प्रगतिशील कवि हैं। उनके काव्य में समय और परिवेश की समस्याओं, चिंताओं, लोक जीवन, प्रकृति, समकालीन राजनीति को यथार्थ एवं जनसंघर्षों की अभिव्यक्ति हुई है। उनकी कविता में धारदार व्यंग्य उपस्थित है। विषय की विविधता और प्रस्तुति की सहजता नागार्जुन के रचना संसार को एक नया आयाम देती है।

नागार्जुन ने छंदबद्ध और छंदमुक्त दोनों प्रकार की कविताएँ रची। उनकी काव्य भाषा में एक ओर संस्कृत काव्य परंपरा की प्रतिध्वनि है तो दूसरी ओर बोलचाल की भाषा की रवानी और जीवंतता भी। उनकी शैली स्वाभाविक और पाठकों के हृदय में तत्संबंधी भावनाओं को उद्दीप्त करने वाली होती है। उन्होंने काव्य के साथ गद्य में भी रचनाएँ की हैं। उनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ हैं : **युगधारा, प्यासी पथराई-आँखें, सतरंगे पंखों वाली, तालाब की मछलियाँ, हजार-हजार बाहों वाली, तुमने कहा था, पका है कटहल, भस्मांकुर, पुरानी जूतियों का कोरस** आदि।

उनके उपन्यासों में **बलचनमा, रतिनाथ की चाची, कुंभी पाक, उग्रतारा, जमनिया का बाबा, वरुण के बेटे, बाबा बटेसरनाथ** आदि हैं। उनकी समस्त रचनाएँ नागार्जुन रचनावली (सात खंड) में संकलित है। सन् 1935 ई. में उन्होंने **दीपक** (मासिक) तथा 1942-43 में **विश्वबंधु** (साप्ताहिक) पत्रिका का संपादन किया।

नागार्जुन को उत्तर प्रदेश के भारत-भारती सम्मान तथा मध्य प्रदेश के मैथिलीशरण गुप्त पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया।

बादल को घिरते देखा है कविता में कवि नागार्जुन ने बादल के कोमल और कठोर दोनों रूपों का वर्णन किया है जिसमें हिमालय की बर्फीली घाटियों, झीलों, झरनों तथा देवदार के जंगलों के साथ-साथ किन्नर-किन्नरियों के जीवन का यथार्थ चित्र भी शामिल है।

बादल को घिरते देखा है

अमल धवल गिरि के शिखरों पर, बादल को घिरते देखा है।
छोटे मोटे मोती जैसे, उसके शीतल तुहिन कणों को,
मानसरोवर के उन स्वर्णिम कमलों पर गिरते देखा है।

बादलों को घिरते देखा है।

तुंग हिमालय के कंधों पर छोटी-बड़ी कई झीलों है,
उनके श्यामल नील सलिल में, समतल देशों के आ-आकर
पावस की ऊमस से आकुल
तिक्त मधुर बिसतंतु खोजते, हंसों को तिरते देखा है।

बादलों को घिरते देखा है।

ऋतु बसंत का सुप्रभात, मंद–मंद था अनिल बह रहा
बालारूण की मृदु किरणें थी, अगल–बगल स्वर्णाभ शिखर थे
एक दूसरे से विरहित हो, अलग-अलग रहकर ही जिनको
सारी रात बितानी होती, निशा काल से चिर-अभिशापित
बेबस उस चकवा-चकई का, बंद हुआ क्रंदन, फिर उनमें
उस महान सरवर के तीरे, शैवालों की हरी दरी पर,
प्रणय-कलह छिड़ते देखा है।

बादलों को घिरते देखा है।

दुर्गम बर्फानी घाटी में, शत सहस्त्र फुट उच्च्च शिखर पर
अलख नाभि से उठने वाले, निज के ही उन्मादक परिमल
के पीछे धावित हो-होकर तरल तरुण कस्तूरी मृग को
अपने पर चिढ़ते देखा है।

बादलों को घिरते देखा है।

कहाँ गया धनपति कुबेर वह, कहाँ गई उसकी वह अलका
नहीं ठिकाना कालिदास के, व्योम-प्रवाही गंगाजल का
ढूँढ़ा बहुत परंतु लगा क्या, मेघदूत का पता कहीं पर,
कौन बताए यह छायामय, बरस पड़ा होगा न यहीं पर
जाने दो, वह कवि-कल्पित था, मैंने तो भीषण जाड़ों में,
नभ-चुंबी कैलाश शीर्ष पर महामेघ को झंझानिल से,
गरज-गरज भिड़ते देखा है।

बादलों को घिरते देखा है।

शत-शत निर्झर निर्झरिणी—कल
मुखरित देवदारु कानन में
शोणित धवल भोज पत्रों से छाई हुई कुटी के भीतर
रंग बिरंगे और सुगंधित फूलों से कुंतल को साजे
इंद्रनील की माला डाले शंख सरीखे सुघड़ गलो में,
कानों में कुवलय लटकाए, शतदल लाल कमल वेणी में;
रजत-रचित मणि खचित कलामय, पान पात्र द्राक्षासव पूरित
रखें सामने अपने-अपने, लोहित चंदन की त्रिपटी पर
नरम निदाग बाल कस्तूरी, मृग छालों पर पलथी मारे
मदिरारुण आँखों वाले उन, उन्मद किन्नर किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अँगुलियों को वंशी पर फिरते देखा है।

बादलों को घिरते देखा है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. 'बादल को घिरते देखा है' कविता के रचनाकार हैं :

(क) केदारनाथ अग्रवाल (ख) सुमित्रानंदन पंत

(ग) नागार्जुन (घ) महादेवी वर्मा

2. ''तुंग हिमालय के कंधों पर छोटी-बड़ी कई झीले हैं।'' पंक्तियों में निहित अलंकार है :

   (क) उपमा (ख) अनुप्रास (ग) मानवीकरण (घ) रूपक

3. अनिल का पर्यायवाची है :

   (क) अरूण (ख) आभा (ग) जल (घ) हवा

4. कवि ने बादल को किससे गरज कर भिड़ते देखा है ?

   (क) विद्युत से (ख) बादल से (ग) वायु से (घ) जल से

5. 'बादल को घिरते देखा है' कविता के सौंदर्य को कवि ने किस ऋतु का उद्‌गम बताया है—

   (क) पावस का (ख) शरद का (ग) ग्रीष्म का (घ) सुख का

6. 'निशा' का विलोम है :

   (क) रात्रि (ख) दोपहर (ग) दिवस (घ) प्रातः

7. 'नागार्जुन' का वास्तविक नाम था :

   (क) रामचंद्र मिश्र (ख) वैद्यनाथ मिश्र (ग) रामकृष्ण मिश्र (घ) देवव्रत मिश्र

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. 'बादल को घिरते देखा है' शीर्षक कविता का भावार्थ लिखिए।
2. इस कविता में बादलों के सौंदर्य-चित्रण के अतिरिक्त और किन दृश्यों का चित्रण किया गया है?
3. 'ढूँढ़ा बहुत परंतु लगा क्या, मेघदूत का पता कहीं पर' का तात्पर्य क्या है?
4. नागार्जुन का जीवन-परिचय देते हुए उनकी रचनाओं पर प्रकाश डालिए।
5. नागार्जुन के साहित्यिक अवदान एवं भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

III. दिए गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. बादलों को घिरते देखा है।
   तुंग हिमालय के कंधों पर
   छोटी-बड़ी कई झीलों है,
   उनके श्यामल नीर सलिल में,
   समतल देशों के आ-आकर
   पावस की ऊमस से आकुल
   तिक्त मधुर बिसतंतु खोजते,
   हंसों को तिरते देखा है।

   (क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) 'श्यामल नील सलिल' में कौन-सा अलंकार है ?

2. <u>कहाँ गया धनपति कुबेर वह,</u>
<u>कहाँ गई उसकी वह अलका</u>
नहीं ठिकाना कालिदास के,
व्योम-प्रवाही गंगाजल का
ढूँढ़ा बहुत परंतु लगा क्या,
मेघदूत का पता कहीं पर,
कौन बताए यह छायामय,
बरस पड़ा होगा न यहीं पर
(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) कुबेर के दो पर्यायवाची लिखिए।
(ग) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

3. रजत-रचित मणि खचित कलामय,
पान पात्र द्राक्षासव पूरित
रखें सामने अपने-अपने,
<u>लोहित चंदन की त्रिपटी पर</u>
<u>नरम निदाग बाल कस्तूरी,</u>
<u>मृग छालों पर पल्थी मारे</u>
<u>मदिरारुण आँखों वाले उन,</u>
उन्मद किन्नर–किन्नरियों की
मृदुल मनोरम अँगुलियों को
वंशी पर फिरते देखा है।
(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रजत एवं द्राक्षासव के दो–दो पर्यायवाची लिखिए।
(ग) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखिए :
   सलिल, गंगा, बादल, मृग।
2. शोणित धवल भोज पत्रों से छाई हुए कुटी के भीर, काव्य पंक्ति का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

3. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में निहित अलंकार को पहचान कर लिखिए :
   (क) 'श्मामल नील सलिल में'
   (ख) 'शत शत निर्झर निर्झरिणी कल'
   (ग) रजत-रचित मणि खचित कलामय, पान पात्र द्राक्षासव पूरित।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

प्रस्तुत कविता में प्रकृति के कोमल और कठोर दोनों रूपों का यथार्थ वर्णन किया गया है। आप अपने शब्दों में प्रकृति के कोमल रूप का वर्णन करें।

शब्दार्थ

अमल–धवल – निर्मल और सफेद। **तुहिन कण** – ओस की बूँद। **तुंग** – ऊँचा। **तिक्त–मधुर** – कड़वे और मीठे। **विसतंतु** – कमलनाल के भीतर स्थित कोमल रेशे या तंतु। **चिर-अभिशापित** – सदा से ही शापग्रस्त। दुखी, अभागे। **शैवाल** – काई की जाति की एक घास। **प्रणय–कलह** – प्यार–भरी छेड़छाड़। **उन्मादक** – नशीला **परिमल** – सुगंध। **कुबेर** – धन का स्वामी, देवातओं का कोषाध्यक्ष। **अलका** – कुबेर की नगरी। **व्योम प्रवाही** – आकाश में घूमने वाला। **इंद्रनील** – नीलम, नीले रंग का कीमती पत्थर। **कुवलय** – नील कमल। **शतदल** – कमल। **रजत–रचित** – चाँदी से बना हुआ। **मणि खचित** – मणियों से जड़ा हुआ। **द्राक्षासव** – अंगूरों से बनी सुरा। **लोहित** – लाल। **उन्मद** – मदमस्त। **निदाग** – दाग रहित।

■

शिवमंगल सिंह 'सुमन'

(सन् 1915–2002 ई.)

शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म **1915 ई.** में उत्तर प्रदेश के **उन्नाव** जिले के झंगरपुर गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम ठाकुर बख्श सिंह था। उनकी आंरभिक शिक्षा रीवां में हुई। उन्होंने ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेजिएट से मैट्रिक की परीक्षा पास की, तदंतर ग्वालियर से ही उन्होंने इंटर और स्नातक की भी पढ़ाई की। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.ए. और डी. लिट. की उपाधि प्राप्त की।

शिवमंगल सिंह 'समुन' ने इन्दौर और उज्जैन के संस्थानों में अध्यापक एवं अन्य प्रशासकीय दायित्व निभाए। वे नेपाल स्थित भारतीय दूतावास में सांस्कृतिक सचिव भी रहे।

शिवमंगल सिंह सुमन की काव्य–यात्रा छात्र–जीवन में ही शुरू हो गई थी। भाव और शैली की नवीनता से शीघ्र ही हिंदी समाज में उन्हें प्रसिद्धि और स्वीकार्यता प्राप्त हो गई। वे प्रगतिशील काव्य–धारा के प्रमुख कवियों में स्वीकारे गए। 'मिट्टी की बारात' संकलन के लिए उन्हें साहित्य अकादमी तथा सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार प्राप्त हुआ। वे पद्मश्री, पद्मभूषण, भारत–भारती सहित अनेक पुरस्कारों–सम्मानों से अलंकृत हुए। सन् 2002 ई. में उनका निधन हुआ।

उन्होंने गद्य, कविता और नाटक आदि विधाओं में लेखन कार्य किया है। उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं **हिल्लोल, जीवनगान, प्रलयसृजन, विंध्य हिमालय, मिट्‌टी की बारात, विश्वास बढ़ता ही गया, पर आँखे नहीं भरी** आदि।

शिवमंगल सिंह 'सुमन' ने जन साधारण में प्रयुक्त होने वाली भाषा का प्रयोग किया है। उनकी भाषा में स्पष्टता, सरलता तथा संगीतात्मकता है।

युगवाणी कविता के माध्यम से कवि ने मानवता के कल्याण की कामना की है। कवि ने श्रमिक एवं कृषक वर्ग को संबोधित करते हुए कहा है कि मैंने क्यारी-क्यारी में तुम्हारे ही पद्चिह्नों के दर्शन किए हैं। हमने परिश्रम से जो क्यारियाँ बोई थीं, उन पर बढ़ती हुई फसल में आज भी तुम्हारे श्रमशील कदम झाँकते दिखाई देते हैं।

युगवाणी

हर क्यारी में पद-चिह्न तुम्हारे देखे हैं,
हर डाली में मुस्कान तुम्हारी पायी है,
हर काँटे में दु:ख-दर्द किसी का कसका है,
हर शबनम ने जीवन की प्यास जगायी है।

हर सरिता की लचकीली लहरें डसती हैं,
हर अंकुर की आँखों में कोर समाती है,
हर किसलय में अधरों की आभा खिलती है,
हर कली हवा में मचल-मचल इठलाती है।

अंबर में उगती सोने-चाँदी की फसलें,
ये ज्वार-बाजरे की मस्ती लहराती है,
अंतर में इसका बिंब उभरता आता है,
चाँदनी, सिंधु में सौ-सौ ज्वार जगाती है।

मैं कैसे इनकी मोहकता से मुख मोड़ूँ,
मैं कैसे जीवन के सौ-सौ धंधे छोड़ूँ,
दोनों को साथ लिए चलना क्या सम्भव है?
तन का, मन का पावन नाता कैसे तोड़ूँ ?

क्या उम्र ढलेगी तो यह सब ढल जाएगा,
सूरज चंदा का पानी गल, जल जाएगा,
जिनके बल पर जीने-मरने का स्वर साधा,
उनका आकर्षण साँसों को छल जाएगा।

जिस दिन सपनों के मोल.भाव पर उतरूँगा,
जिस दिन संघर्षों पर जाली चढ़ जाएगी,

जिस दिन लाचारी मुझ पर तरस दिखाएगी,
उस दिन जीवन से मौत कहीं बढ़ जाएगी।

इन सबसे बढ़कर भूख बिलखती मिट्टी की
पथ पर पथराई आँखें पास बुलाती हैं,
भगवान भूल में रचकर जिनको भूल गया
जिनकी हड्डी पर धर्म-ध्वजा फहराती है।

इनको भूलूँ तो मेरी मिट्टी मिट्टी है
मेरी आँखों का पानी केवल पानी है,
इनको भूलूँ तो मेरा जन्म अकारथ है
मेरा जीना मरने की मूक कहानी है।

मैं देख रहा हूँ तुम इनको फिर भूल चले
बातों-बातों में हमें बहुत बहलाते हो,
बेबसी चीखती जब बच्चों की लाशों पर
उसको आजादी की प्रतिध्वनि बतलाते हो।

यों खेल करोगे तुम कब तक असहायों से
कब तक अफीम आशा की हमें खिलाओगे,
बरबाद हो गई फसल कहीं जोती–बोई
क्या बैठ अकेले ही मरघट पर गाओगे ?

विश्वास सर्वहारा का तुमने खोया तो
आसन्न-मौत की गहन गोंस गड़ जाएगी,
यदि बाँध बाँधने के पहले जल सूख गया
धरती की छाती में दरार पड़ जाएगी।

सदियों की कुर्बानी यदि यों बेमोल बिकी
जमुहाई लेने में खो गया सबेरा यदि,
जनता पूर्णिमा मनाने की जब तक सोचे
घिर गया अमावस का अंबर में घेरा यदि।

इतिहास न तुमको माफ करेगा याद रहे
पीढ़ियाँ तुम्हारी करनी पर पछताएँगी,
पूरब की लाली में कालिख पुत जाएगी
सदियों में फिर क्या ऐसी घड़ियाँ आएँगी?

इसलिए समय के सैलाबों को मत रोको
खुशहाल हवाओं में न खिड़कियाँ बंद करो,
हर किरण जिंदगी की आँगन तक आने दो
नव-निर्माणों की लपटों को मत मंद करो।

इस नए सबेरे की लाली को देखो तो
इसकी अपनी कितनी पहचान पुरानी है,
भू, भुवः, स्वर्ग को एक बनाने आई जो
युग की गायत्री सब छंदों की रानी है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जन्म स्थान कहाँ है ?
   (क) कानपुर (ख) उन्नाव (ग) लखनऊ (घ) फतेहपुर
2. 'युगवाणी' के रचनाकार हैं :
   (क) सुमित्रानंदन पंत (ख) शिवमंगल सिंह 'सुमन'
   (ग) रघुवीर सहाय (घ) भवानी प्रसाद मिश्र
3. 'युगवाणी' कविता में कवि ने किसका आह्वान किया है ?
   (क) पूँजीपति वर्ग (ख) श्रमिक वर्ग (ग) कर्मचारी वर्ग (घ) नौकरशाह
4. 'युगवाणी' कविता सुमन के किस काव्य–संग्रह से लिया गया है ?
   (क) विंध्य हिमालय से (ख) जीवन के गान से
   (ग) मिट्टी की बारात (घ) हिल्लोल से

5. 'युगवाणी' कविता में कवि का संदेश है :
(क) मानवता का कल्याण (ख) मानव का शोषण
(ग) अत्याचार का अंत (घ) इनमें से कोई नहीं

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कवि ने कविता में 'सर्वहारा वर्ग' को क्या परामर्श दिया है?
2. 'युगवाणी' कविता में कवि ने किसके इतिहास को माफ न करने को कहा है?
3. शिवमंगल सिंह 'सुमन' की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।
4. 'युगवाणी' कविता के माध्यम से कवि पाठकों को क्या संदेश देना चाहता है ?
5. 'युगवाणी' कविता का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए।
6. शिवमंगल सिंह 'सुमन' का जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए।

III. दिए गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. हर क्यारी में पद-चिह्न तुम्हारे देखे हैं,
हर डाली में मुस्कान तुम्हारी पायी है,
<u>हर काँटे में दुःख-दर्द किसी का कसका है,</u>
<u>हर शबनम ने जीवन की प्यास जगायी है।</u>
(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) 'कसका' और 'शबनम' शब्द का अर्थ लिखिए ?

2. <u>मैं कैसे इनकी मोहकता से मुख मोड़ूँ,</u>
<u>मैं कैसे जीवन के सौ-सौ धंधे छोड़ू,</u>
दोनों को साथ लिए चलना क्या संभव है?
तन का, मन का पावन नाता कैसे तोड़ू ?
(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) 'मोहकता' में कौन सा प्रत्यय है? उक्त प्रत्यय से एक अन्य शब्द बनाएँ।

3. <u>जिस दिन सपनों के मोल-भाव पर उतरूँगा,</u>
<u>जिस दिन संघर्षों पर जाली चढ़ जाएगी,</u>
जिस दिन लाचारी मुझ पर तरस दिखाएगी,
उस दिन जीवन से मौत कहीं बढ़ जाएगी।
(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) 'लाचारी' और 'तरस' का समानार्थी लिखिए।

4. इतिहास न तुमको माफ करेगा याद रहे
पीढ़ियाँ तुम्हारी करनी पर पछताएँगी,
पूरब की लाली में कालिख पुत जाएगी
सदियों में फिर क्या ऐसी घड़ियाँ आएँगी?
(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) उत्पत्ति की दृष्टि से 'माफ' और 'कालिख' की प्रकृति बताएँ।

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए :
सरिता, आँख, हवा, सिंधु, भू।
2. 'इनको भूलूँ तो मेरी मिट्टी मिट्टी है, मेरी आखों का पानी केवल पानी है।' प्रस्तुत पंक्तियों का काव्य–सौंदर्य स्पष्ट कीजिएं।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

प्रस्तुत कविता में प्रकृति के मोहकता का वर्णन किया गया है। आप प्रकृति का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।

शब्दार्थ

पद चिह्न – पैरों के चिह्न। **कसक** – पीड़ा। **शबनम** – ओस। **किसलय** – कोपलें। **आभा** – सौंदर्य। **सिंधु** – समुद्र। **पावन** – पवित्र। **संघर्ष** – लड़ाई। **अकारथ** – व्यर्थ। **मूक** – गूंगा। **बेबसी** – लाचारी। **सर्वहारा** – गरीब तबके के लोग। **गोंस** – फाँस। कील, **अंबर** – आकाश। **सैलाब** – बाढ़। **भुवः** – भूलोक।

■

केदारनाथ अग्रवाल

(सन् 1911-2000 ई.)

केदारदाथ अग्रवाल का जन्म **सन् 1911 ई.** को उत्तर प्रदेश के **बांदा** जनपद के **कमासिन** गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम हनुमान प्रसाद अग्रवाल था। उनकी आरंभिक शिक्षा गाँव के प्रारंभिक विद्यालय रायबरेली, कटनी और जबलपुर में हुई। प्रयागराज के क्रिश्चियन कॉलेज से उन्होंने मैट्रिक और इंटर की परीक्षा पास तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की। कानपुर के डी.ए.वी. कॉलेज से उन्होंने 'लॉ' की पढ़ाई की। तत्पश्चात वे बाँदा आ गए और वकालत करने लगे। **सन् 2000 ई.** में उनका निधन हुआ। केदारनाथ अग्रवाल मानवीय संवेदना, संतोष और वैचारिक दृढ़ता से संपन्न व्यक्ति थे।

वे हिंदी की प्रगतिशील काव्यधारा के शीर्ष कवि हैं। उनकी काव्य–यात्रा की शुरुआत छात्र जीवन में हो गई थी। आरंभ में उन्होंने ब्रजभाषा में रचनाएँ लिखीं, फिर वे खड़ी बोली की ओर मुड़े। राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन, श्रमिक आंदोलन एवं अन्य स्थानीय–वैश्विक स्थितियों ने उनकी कविता के दायरे को विस्तार दिया। उनकी कविता में फूलों सी कोमलता है और लोहे सी कठोरता भी। प्रकृति, इंसानी रिश्ते, घर–परिवार, जनता का संघर्ष ये सभी उनकी कविता में अकृत्रिम रूप में उपस्थित हैं।

उनकी प्रमुख काव्य–कृतियाँ हैं – **युग की गंगा, नींद के बादल, पंख और पतवार, फूल नहीं रंग बोलते हैं, आईना, कहे केदार खरी-खरी, अपूर्वा, बोले बोल अनमोल, पुष्पदीप** आदि हैं। उन्हें 'फूल नहीं रंग बोलते हैं' के लिए **सोवियत लैंड नेहरू** तथा अपूर्वा के लिए **साहित्य अकादेमी** पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

अच्छा होता कविता में कवि ने वर्तमान में मनुष्य के संवेदना-शून्य और मूल्य-विहीन-जीवन पर चिंता व्यक्त की है, किंतु आशा की एक किरण भी बनाए रखी है कि कितना अच्छा होता यदि आदमी दूसरों के लिए परमार्थी, वचन का पक्का, स्वभाव से सच्चा एवं निःस्वार्थी होता। यदि आदमी ईश्वर के द्वारा दी गई मानवीय गुणों की धरोहर को अक्षुण्ण बनाए रखे तो मानवता का कल्याण हो जाए और संसार से भय और आतंक का अंत हो जाए।

अच्छा होता

अच्छा होता
अगर आदमी
आदमी के लिए
परार्थी–
पक्का–
और नियत का सच्चा होता
न स्वार्थ का चहबच्चा –
न दगैल-दागी–
न चरित्र का कच्चा होता।
अच्छा होता
अगर आदमी
आदमी के लिए
दिलदार–
दिलेर–
और हृदय की थाती होता,
न ईमान का घाती–
ठगैत ठाकुर
न मौत का बराती होता

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. केदारनाथ अग्रवाल का जन्म स्थान है :
   (क) प्रयाग (ख) काशी (ग) बाँदा (घ) मथुरा
2. केदारनाथ अग्रवाल को 'सोवियत लैंड नेहरू' सम्मान किस रचना पर प्राप्त हुआ था ?
   (क) फूल नहीं रंग बोलते हैं (ख) अपूर्वा
   (ग) युग की गंगा (घ) गुलमेहंदी
3. केदारनाथ अग्रवाल किस विचारधारा के कवि हैं ?
   (क) मार्क्सवादी (ख) साम्यवादी (ग) उदारवादी (घ) कोई नहीं
4. 'अच्छा होता' नामक कविता केदारनाथ के किस काव्य–संग्रह से लिया गया है ?
   (क) अपूर्वा (ख) युग की गंगा (ग) नींद के बादल (घ) पंख और पतवार
5. 'अच्छा होता' कविता के कवि हैं :

(क) केदारनाथ अग्रवाल (ख) जयशंकर प्रसाद
(ग) भवानी प्रसाद मिश्र (घ) इनमें से कोई नही

6. परार्थी शब्द का विलोम होगा :
(क) सच्चा (ख) स्वार्थी (ग) कृतज्ञ (घ) कृतघ्न

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'अच्छा होता' में कवि ने मनुष्य की किन विशेषताओं को दिखाया है?
2. 'चरित्र का कच्चा' होने का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।
3. 'मौत का बाराती' कहने का आशय स्पष्ट कीजिए।
4. केदारनाथ अग्रवाल का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए उनकी रचनाओं की विशेषता बताइए।
5. केदारनाथ अग्रवाल के साहित्यिक अवदान पर प्रकाश डालिए।

III. दिए गए पद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. अच्छा होता
अगर आदमी
आदमी के लिए
परार्थी –
पक्का –
और नियत का सच्चा होता
न स्वार्थ का चहबच्चा –
न दगैल-दागी–
न चरित्र का कच्चा होता।
ठगैत ठाकुर
न मौत का बराती होता
(क) प्रस्तुत पद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) कविता के माध्यम से कवि ने क्या संदेश दिया है ?

IV. भाषा के रंग :

1. 'अच्छा होता' कविता का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।
2. नियत, सच्चा, स्वार्थ, चरित्र, आदमी, हृदय, ईमान, मौत, बराती, शब्दों में तत्सम, तद्भव एवं विदेशी शब्दों की पहचान कीजिए।
3. निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द लिखिए :
परार्थी, पक्का, सच्चा, दगैल, घाती।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

आप अपने पुस्तकालय से केदारनाथ अग्रवाल की कोई अन्य दो कविताएँ लिखिए तथा कक्षा में सस्वर वाचन कीजिए।

शब्दार्थ

परार्थी – दूसरे के लिए। **नियति** – प्रकृति, स्वभाव। **दगैल-दागी** – दोषी-कलंकी। **ठगैत** – ठगने वाला। **थाती** – धरोहर। **दिलेर** – हिम्मत वाला। **दिलदार** – दिलवाला, सहृदय। ■

गद्य–खंड

हिंदी गद्य साहित्य का विकास

आप पूर्व में पढ़ चुके हैं कि हिंदी भाषा और साहित्य का आरंभ आठवीं सदी के आस-पास हुआ। तब से लगभग एक हजार वर्ष तक का हिंदी साहित्य मूलतः 'कविता' का साहित्य है। गद्य का विकास बहुत बाद में हुआ। खड़ी बोली हिंदी गद्य की आरंभिक रचनाओं के रूप में **भाषा योगवाशिष्ठ, अजीर्ण मंजरी, जैन पद्मपुराण** आदि का उल्लेख किया जाता है, ये अठारहवीं सदी की रचनाएँ हैं। उन्नीसवीं सदी में हिंदी गद्य का वास्तविक विकास हुआ। इस सदी में हिंदी गद्य में साहित्य लेखन की शुरुआत हुई और शीघ्र ही गद्य साहित्य ने लोकप्रियता अर्जित कर ली।

यह स्मरण रहे कि उन्नीसवीं सदी में भारत में कई सुधाारक संस्थाएँ स्थापित हुईं, जैसे सन् 1828 ई. में राजा राममोहन राय द्वारा 'ब्रह्मसमाज', केशवचंद्र सेन द्वारा सन् 1866 ई. में 'आदि ब्रह्मसमाज', सन् 1867 ई. में महादेव गोविंद रानाडे द्वारा 'प्रार्थना समाज', स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा सन् 1875 ई. में आर्यसमाज। इन संस्थाओं ने भारतीय समाज को अंधविश्वास एवं रूढ़ियों से मुक्त कराने का प्रयास किया। यानी, एक ओर पश्चिमी ज्ञान, तकनीक और वैज्ञानिक उपलब्धियाँ तो दूसरी ओर भारतीय सुधाारक संस्थाओं के प्रयास-ये सब मिलकर उन्नीसवीं सदी में भारतीय समाज में जागरण लाने और उसे 'आधाुनिक' बनाने का प्रयास कर रहे थे। उसी समय प्रेस और पत्रकारिता ने अपनी ओर से इस प्रयास को और गति दी।

हिंदी का पहला पत्र **उदंत मार्तंड** कोलकाता से **पं. जुगल किशोर** के संपादन में **सन् 1826 ई.** में निकला। कोलकाता से ही **बंगदूत** (1829), **प्रजामित्र** (1834) और **समाचार सुधावर्षण** (1854) निकले।

हिंदी गद्य के विकास में कोलकाता के फोर्ट विलियम कॉलेज की उल्लेखनीय भूमिका है। इस कॉलेज की स्थापना सन् 1800 ई. में हुई थी। इस कॉलेज का उद्देश्य ईस्ट इंडिया कंपनी के जूनियर अंग्रेज कर्मचारियों को साहित्य, विज्ञान तथा ज्ञान के आवश्यक अंगों की उचित शिक्षा देना था। भाषाओं में अरबी, फारसी, संस्कृत, हिंदुस्तानी, बँगला आदि का ज्ञान देने की योजना वहाँ थी। जॉन गिलक्रिस्ट हिंदुस्तानी विभाग के अध्यक्ष थे। 'हिंदुस्तानी' में हिंदी और उर्दू, दोनों भाषाओं को सम्मिलित किया गया था। हिंदी भाषा के लिए वहाँ **लल्लूलाल** और **सदल मिश्र** की नियुक्ति हुई। उन्होंने फोर्ट विलियम कॉलेज के लिए खड़ी बोली हिंदी गद्य की पुस्तकें तैयार कीं।

लल्लूलाल ने खड़ी बोली गद्य में **प्रेमसागर** और सदल मिश्र ने **नासिकेतोपाख्यान** की रचना की। फोर्ट विलियम कॉलेज से बाहर के हिंदी गद्य लेखकों में **इंशाअल्लाह खाँ** और **सदासुख लाल नियाज** प्रमुख हैं। इंशाअल्लाह खाँ ने सन् 1800 ई. के आस–पास **रानी केतकी की कहानी** की रचना की। सदासुख लाल ने विष्णुपुराण को आधार बनाकर हिंदी में पुस्तक लिखी।

हिंदी गद्य के विकास में ईसाई मिशनरियों की भी उल्लेखनीय भूमिका रही है। विलियम कैरे ने बाइबिल का अनुवाद किया। शिक्षा के प्रसार ने भी हिंदी गद्य के विकास में योगदान किया। सन् 1833 ई. के आस–पास आगरा में 'स्कूल बुक सोसाइटी' की स्थापना हुई। सोसाइटी की ओर से कई शैक्षणिक पुस्तकों के अनुवाद हुए तथा नई पुस्तकें प्रकाशित हुईं। मिर्जापुर में ईसाई मिशनरियों के 'ऑरफन प्रेस' से भी कई पुस्तकें निकलीं।

ब्रह्म समाज और आर्य समाज जैसी समाज सुधारक संस्थाओं से भी हिंदी गद्य के विकास में सहायता मिली। राजा राममोहन राय ने वेदांत सूत्रों के भाष्य का हिंदी अनुवाद किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने **सत्यार्थ प्रकाश** की रचना हिंदी में की। आर्यसमाजी श्रद्धाराम फिल्लौरी ने सन् 1877 ई. में **भाग्यवती** की रचना की, जिसे हिंदी के आरंभिक उपन्यासों में स्वीकारा जाता है।

उस दौर में राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद ने हिंदी के विकास के लिए बहुत प्रयास किए। उन्होंने **राजा भोज का सपना, वीर सिंह का वृत्तांत**, जैसी कहानियाँ तथा **इतिहास तिमिरनाशक**, **मानव धर्मसार** जैसी पाठ्यपुस्तकें तैयार कीं। उनकी हिंदी के तीन रूप मिलते हैं–'राजा भोज का सपना' में सरल हिंदी, 'इतिहास तिमिरनाशक' में उर्दूपन और 'मानव धर्मसार' में संस्कृतनिष्ठ हिंदी। उन्होंने **बनारस अखबार** नाम से एक पत्र भी निकाला था जो नागरी लिपि में निकलता था।

राजा लक्ष्मण सिंह ने सन् 1861 ई. में आगरा से **प्रजा हितैषी** नामक पत्र निकाला। उन्होंने 'अभिज्ञानशाकुंतल' का हिंदी में अनुवाद किया।

संक्षेप में कहें कि उन्नीसवीं सदी के मध्य तक हिंदी गद्य की यात्रा गतिमान हो चुकी थी। हिंदी में समाचार पत्र प्रकाशित होने लगे थे, पाठ्यपुस्तकें और साहित्य भी प्रकाशित होने लगा था। अब हिंदी साहित्य में आधुनिकता की चेतना जगह पाने लगी थी। बौद्धिक पिछड़ेपन और निराशा के स्थान पर हिंदी साहित्य में वैज्ञानिक चेतना, तार्किकता और जागरण के स्वर सुनाई देने लगे थे। इसे संभव करने में गद्य की सर्वप्रमुख भूमिका थी। इसीलिए हिंदी साहित्य के आधुनिककाल को विद्वानों ने 'गद्यकाल' भी कहा है। इस 'गद्यकाल' के निम्न चरण स्वीकारे गए हैं :

क. भारतेंदु युग ख. द्विवेदी युग ग. शुक्ल युग घ. शुक्लोत्तर युग

भारतेंदु युग

(सन् 1868–1900 ई.)

भारतेंदु युग आधुनिक काल का प्रथम चरण है। भारतेंदु हिंदी में 'आधुनिकता' के अगुआ स्वीकारे गए हैं। उनके समकालीन रचनाकारों में बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन', बालकृष्ण भट्ट, लाला श्रीनिवास दास, प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी, राधकृष्ण दास, ठाकुर जगन्मोहन सिंह, अंबिकादत्त व्यास आदि प्रमुख थे। इन रचनाकारों का समूह 'भारतेंदु मंडल' के नाम से जाना जाता है। इन्होंने हिंदी साहित्य को नए भाव–बोध से संपन्न किया। इस युग के लेखकों के सामने कई चुनौतियाँ थीं। वे यदि अंग्रेजी राज की अनीतियों से दुखी थे तो भारतीय समाज की जड़ता भी उन्हें कम परेशान न करती थी। वे अपनी महान परंपराओं पर गर्व करना चाहते थे तो पश्चिमी ज्ञान के प्रति भी समान रूप से उत्सुक थे।

इस युग में कई पत्र–पत्रिकाएँ निकलीं और कई विधाएँ विकसित हुईं। इस युग के प्रायः सभी लेखकों ने पत्र–पत्रिकाएँ निकालीं। भारतेंदु ने सन् 1868 ई. में काशी से **कविवचन सुधा** का प्रकाशन किया। उन्होंने **हरिश्चंद्र मैगजीन**, **हरिश्चंद्र चंद्रिका** तथा **बाला बोधिनी** नाम से भी पत्रिकाएँ निकालीं। बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने **आनंदकादंबिनी**, बालकृष्ण भट्ट ने **हिंदी प्रदीप**, प्रतापनारायण मिश्र ने **ब्राह्मण** नाम से पत्रिकाएँ निकालीं।

इस काल में भाषा का सामान्य स्वरूप स्थिर हुआ। उसमें प्रौढ़ता और शैली की विविधता आई। इस काल में निबंध और नाटक, इन दो विधाओं का विशेष विकास हुआ।

निबंध

भारतेंदु को इस विधा का जनक मानने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए। उन्होंने विभिन्न विषयों, यथा–इतिहास, धर्म, कला, समाज–सुधार, भाषा आदि विषयों पर निबंध लिखे। उनके निबंध अत्यंत जीवंत और प्रवाही हैं। उनका व्यंग्य विशेष रूप से आकर्षक है। **प्रतापनारायण मिश्र** ने धोखा, मनोयोग, समझदार की मौत है, नाक, जीभ, दाँत, बात आदि निबंध लिखे। बालकृष्ण भट्ट इस काल के अत्यंत समर्थ निबंधकार हैं। उन्होंने वस्तुपरक और व्यक्तिपरक, दोनों प्रकार के निबंध लिखे। बालविवाह, अंग्रेजी शिक्षा और प्रकाश, चली सो चली, बातचीत, चढ़ती उमर आदि उनके प्रमुख निबंध हैं।

इस युग के निबंधकारों का लक्ष्य भारतीय समाज का जागरण था। वे भारतीयों को यथास्थितिवादी रहने देना नहीं चाहते थे। वे उनकी बौद्धिक पराधीनता और आलस्य पर प्रहार करते थे। स्वभावतः उनके निबंध जीवंत और व्यंग्यप्रधान होते थे। उनमें विशेष प्रकार की गति होती थी। उन्हें पढ़ते हुए पाठक को ऊब या थकान नहीं होती।

नाटक

इसी युग से हिंदी में नाटकों का लिखा जाना आरंभ हुआ। **भारतेंदु हरिश्चंद्र** इस युग के सर्वश्रेष्ठ नाटककार हैं। **अंधेर नगरी** और **भारत दुर्दशा** उनके प्रसिद्ध नाटक हैं। उनके नाटक व्यंग्य प्रधान हैं और आज भी प्रासंगिक हैं। अपने नाटकों के द्वारा उन्होंने अंग्रेजी राज के अन्याय एवं शोषण तथा भारतीयों की निराशा एवं पिछड़ेपन पर तीखे प्रहार किए। **लाला श्रीनिवासदास** ने **रणधीर प्रेममोहिनी**, **संयोगिता स्वयंवर** आदि नाटक लिखे। राधाकृष्ण दास का महाराणा प्रताप भी उस काल का प्रमुख नाटक है। राधाचरण गोस्वामी ने तन–मन गोसाई जी को अर्पण, बूढ़े मुँह मुँहासे आदि व्यंग्यात्मक नाटक लिखे।

इस युग के नाटकों का लक्ष्य पाठकों और दर्शकों का स्वस्थ मनोरंजन तथा उनमें राजनीतिक–सामाजिक चेतना का विकास करना था।

उपन्यास

अंग्रेजी और बाँग्ला से प्रेरणा पाकर इस युग में उपन्यास लेखन की भी शुरुआत हुई। इस युग के उपन्यासकारों में लाला श्रीनिवास दास, किशोरीलाल गोस्वामी, बालकृष्ण भट्ट, ठाकुर जगन्मोहन सिंह, देवकीनंदन खत्री, गोपालराम गहमरी आदि उल्लेखनीय हैं।

हिंदी का पहला उपन्यास किसे कहा जाए, इस प्रश्न पर विद्वानों के बीच पर्याप्त मतभेद रहा है। पंडित गौरीदत्त के उपन्यास **देवरानी जेठानी की कहानी** (1870), श्रद्धाराम फुल्लौरी के **भाग्यवती** (1877) तथा **लाला श्रीनिवास दास** के **परीक्षा गुरु** (1882) के मध्य यह विवाद मुख्यतः केंद्रित रहा है। उल्लेखनीय बात है कि ये तीनों उपन्यास सामाजिक प्रश्नों को उठाते हैं और समाज–सुधार का मॉडल प्रस्तुत करते हैं। बालकृष्ण भट्ट का **रहस्यकथा**, **नूतन ब्रह्मचारी**, **सौ अजान एक सुजान**, राधाकृष्ण दास का **निःसहाय हिंदू**, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का **ठेठ हिंदी का ठाठ** आदि इस युग के अन्य उल्लेखनीय उपन्यास हैं। ये उपन्यास उद्देश्यपरक हैं।

सामाजिक कुरीतियों का विरोध एवं आदर्श समाज की रचना करना इनका लक्ष्य है। इनकी कथा–संरचना में कसावट नहीं है पर हिंदी उपन्यास के विकास में इनका स्थायी महत्त्व है।

भारतेंदु युग के सर्वाधिक ख्यात उपन्यासकार देवकीनंदन खत्री हैं। उनके उपन्यास तिलिस्म, ऐयारी एवं रहस्य–रोमांच से भरे हैं, जिसमें **चंद्रकांता**, **चंद्रकांता संतति**, **नरेंद्र मोहिनी** आदि प्रमुख हैं । उनके उपन्यासों के विषय में प्रसिद्ध है कि उन्हें पढ़ने के लिए अनेक लोगों ने हिंदी सीखी। इसी काल में हिंदी में जासूसी उपन्यास भी लिखे गए। गोपाल राम गहमरी कृत **अद्भुत लाश**, **गुप्तचर** आदि उनमें प्रमुख हैं। इस काल के रोमानी उपन्यासों में ठाकुर जगन्मोहन सिंह का 'श्यामा स्वप्न' विशेष उल्लेखनीय है। इस काल में अंग्रेजी, बाँग्ला और मराठी उपन्यासों के हिंदी अनुवाद भी हुए।

कहानी

इस युग में कहानी लेखन पर रचनाकारों का गंभीर ध्यान नहीं गया। कहानी विधा का विकास भारतेंदु युग के बाद हुआ।

आलोचना

प्रायः विद्वानों ने भारतेंदु के 'नाटक' नामक निबंध से हिंदी आलोचना का आरंभ माना है। इस युग में विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में पुस्तकों की समीक्षाएँ प्रकाशित होने लगीं। बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' तथा बालकृष्ण भट्ट ने अपने पत्रों में समीक्षाएँ प्रकाशित कर इस विधा को समृद्ध किया। रीतिकाल की रचनाओं की टीका, कवि–परिचय आदि भी इस दौर में पर्याप्त लिखे गए। इन प्रकार सैद्धांतिक और व्यावहारिक, दोनों प्रकार की आलोचना का विकास हुआ।

भारतेंदु युग के लेखकों के समक्ष कई चुनौतियाँ थीं। उनके समय तक हिंदी गद्य का रूप पूरी तरह निश्चित नहीं हुआ था। उन्हें नई विधाओं का प्रचार–प्रसार करना था। साथ ही, हिंदी का भी। हिंदी, लोगों के व्यवहार की भाषा बने, वह काम–काज की भी भाषा बने। यह चुनौती उस दौर के लेखकों और बौद्धिकों के समक्ष थी।

नागरी लिपि के प्रचार प्रसार और हिंदी साहित्य की समृद्धि के उद्देश्य से सन् **1893** ई. में **काशी** में **नागरी प्रचारिणी सभा** की स्थापना हुई।

द्विवेदी युग

(सन् 1900–1918 ई.)

भारतेंदु युग ने हिंदी साहित्य में स्वतंत्रता, समानता, वैज्ञानिकता, तार्किकता जैसे मूल्यों को स्थापित किया। बीसवीं शताब्दी में इन मूल्यों को अधिक विस्तार मिला। अब साहित्य को मनोरंजन से आगे सामाजिक परिवर्तन एवं यथार्थवादी चेतना के प्रसार का साधन माना जाने लगा। अंग्रेजी राज की अनीतियों का विरोध, भारत के स्वराज्य एवं स्वाभिमान की पुकार, अतीत के गौरवशाली अध्यायों का पुनर्पाठ–द्विवेदी युग के साहित्य की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं। इस युग में खड़ी बोली गद्य का स्थिर और मानक रूप उपस्थित हुआ। इसी समय कविता की भाषा ब्रज से खड़ी बोली हुई। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इस परिवर्तन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके अवदान के कारण ही इस युग को द्विवेदी युग कहा गया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी सन् 1903 ई. में 'सरस्वती' पत्रिका के संपादक बने। सरस्वती का प्रकाशन सन् 1900 ई. की जनवरी से शुरू हुआ था। जनवरी सन् 1903 से 1920 ई. तक बीच के दो वर्षों को छोड़कर इसका संपादन आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से हिंदी में एक आंदोलन खड़ा कर दिया। वे साहित्य को सोद्देश्य मानते थे। उन्होंने तत्कालीन रचनाकारों को साहित्य रचना के अनेक विषय सुझाए। उनकी प्रेरणा से गद्य और पद्य, दोनों में नए विषयों पर रचनाएँ हुईं। उन्होंने 'सरस्वती' में विभिन्न सामयिक विषयों पर रचनाएँ प्रकाशित कराकर हिंदी पाठकों को युगीन हलचलों से परिचित कराया। वे हिंदी समाज को साहित्य और पत्रकारिता के जरिए जाग्रत करना चाहते थे और इसमें उन्हें पर्याप्त सफलता भी मिली। 'सरस्वती' के माध्यम से कई लेखक सामने आए जिनमें मैथिलीशरण गुप्त, राय देवीप्रसाद पूर्ण, लक्ष्मीधर वाजपेयी, ठाकुर गदाधर सिंह, सियारामशरण गुप्त आदि प्रमुख हैं। चंदधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' तथा प्रेमचंद की 'सौत' और 'पंच परमेश्वर' जैसी कहानियाँ 'सरस्वती' में ही प्रकाशित हुई थीं।

इस युग में कई नई विधाएँ विकसित हुईं। कहानी उनमें सबसे प्रमुख है। कहानी के अतिरिक्त जीवनी, आत्मकथा, यात्रा–वृत्तांत जैसी विधाओं को भी द्विवेदी युग में पर्याप्त प्रसिद्धि मिली।

निबंध

निबंध द्विवेदी–युग की प्रमुख विधा है। द्विवेदीयुग के निबंध भारतेंदु युग के समान प्रायः व्यंग्यप्रधान नहीं हैं। किंतु, उनमें विचारों की स्पष्टता, दृढ़ता, विविधता और अपने समय के सवालों से जुड़ाव बहुत गहरा है। भाषायी दृष्टि से इस युग के निबंध सुगठित एवं परिपक्व हैं। निबंधों में शब्द–प्रयोग एवं वाक्य संरचना का आदर्श रूप मिलता है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, अध्यापक पूर्ण सिंह, बालमुकुंद गुप्त, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, श्यामसुंदर दास, पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, पद्मसिंह शर्मा आदि इस युग के प्रमुख निबंधकार हैं। आचार्य द्विवेदी के निबंध अपनी वैचारिकता के लिए प्रसिद्ध हैं। वे प्रधानतः व्यास शैली के निबंधकार हैं। 'क्या हिंदी नाम की कोई भाषा ही नहीं', 'कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता' आदि उनके प्रमुख निबंध हैं। 'बातों के संग्रह' उनके निबंधों की पुस्तक है।

अध्यापक पूर्ण सिंह इस युग के व्यक्तिव्यंजक निबंधकार हैं। उनके निबंधों में कल्पना की उड़ान एवं स्वच्छंदता की प्रवृत्ति मिलती है। 'आचरण की सभ्यता', 'मजदूरी और प्रेम', 'कन्यादान' आदि उनके निबंध हैं।

बालमुकुंद गुप्त इस युग के प्रमुख निबंधकार हैं। इस युग के निबंधकारों में भारतेंदु युग वाली व्यंग्यात्मकता एवं हास्य—बोध का अभाव मिलता है। इस अभाव की पूर्ति बालमुकुंद गुप्त के निबंधों ने की। 'शिवशंभू के चिट्ठे' तथा 'चिट्ठे और खत' उनकी कृतियाँ हैं। 'शिवशंभू के चिट्ठे' में लार्ड कर्जन की निरंकुश और मनमानी नीतियों पर व्यंग्य हैं।

चंद्रधर शर्मा गुलेरी भी इस युग के प्रमुख निबंधकार हैं। 'पुरानी हिंदी', 'कछुआ धर्म', 'मारेसि मोहि कुठावँ' आदि इनके प्रसिद्ध निबंध हैं। उनके निबंधों में शास्त्रीयता और आधुनिकता का समन्वय मिलता है। वे परंपरा और तर्क का अद्भुत संयोग करते हैं। व्यंग्य और गांभीर्य, दोनों ही उनके निबंधों में है।

नाटक

द्विवेदी युग में 'नाटक' विधा का पर्याप्त विकास नहीं हुआ। ऐसा नहीं है कि इस युग में रचनाएँ नहीं लिखी गईं, किंतु उन्हें बहुत सफलता नहीं मिली। अंग्रेजी, संस्कृत और बाँग्ला से हिंदी में कई नाटकों के अनुवाद हुए।

उपन्यास

आप जान चुके हैं कि हिंदी में उपन्यास लेखन का आरंभ भारतेंदु युग में ही हो गया था। उस युग के कई रचनाकार, यथा—देवकीनंदन खत्री, गोपाल राम गहमरी आदि इस युग में भी सक्रिय रहे। किंतु, उनके उपन्यासों की विषय—वस्तु क्रमशः तिलिस्मी और जासूसी ही रही। इस युग ऐतिहासिक उपन्यासों का चलन शुरू हुआ। किशोरीलाल गोस्वामी, गंगाप्रसाद गुप्त, मथुरा प्रसाद शर्मा आदि ने ऐतिहासिक उपन्यास लिखे। ऐतिहासिक उपन्यासों का मूल लक्ष्य अतीत का गौरव—गान था।

सामान्य रूप से कहें तो इस युग के उपन्यासों की कोई विशेष पहचान नहीं उभर पाती। उपन्यासों में सामाजिक—राजनीतिक और भविष्योन्मुखी दृष्टि का अभाव मिलता है।

यहाँ प्रेमचंद का उल्लेख अपेक्षित है। प्रेमचंद का पहला हिंदी उपन्यास 'प्रेमा' सन् 1907 में प्रकाशित हुआ। यह प्रेमचंद की पहली हिंदी रचना है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने 'विधवा विवाह' के प्रश्न को उठाया है। यह उपन्यास पहले उर्दू में प्रकाशित हुआ था। सन् 1918 में उनका दूसरा हिंदी उपन्यास 'सेवासदन' छपा। इस उपन्यास में भी उन्होंने स्त्रियों से संबद्ध कई सामाजिक प्रश्नों को केंद्र में रखा।

कहानी

इस युग में कहानी विधा की ठोस शुरुआत हुई। हिंदी की कुछ आरंभिक कहानियों, प्रकाशन वर्ष और उनके लेखकों की सूची यहाँ प्रस्तुत है —

कहानियाँ	प्रकाशन वर्ष	लेखक
इंदुमती	1900 ई.	किशोरीलाल गोस्वामी
एक टोकरी भर मिट्टी	1900 ई.	माधवराव सप्रे
प्लेग की चुड़ैल	1902 ई.	मास्टर भगवानदास
ग्यारह वर्ष का समय	1903 ई.	रामचंद्र शुक्ल
दुलाई वाली	1907 ई.	बंग महिला
ग्राम	1911 ई.	जयशंकर प्रसाद
सुखमय जीवन	1911 ई.	चंद्रधर शर्मा गुलेरी
परीक्षा	1914 ई.	प्रेमचंद
उसने कहा था	1915 ई.	चंद्रधर शर्मा गुलेरी

कुल मिलाकर कहें कि द्विवेदी युग में कहानी विधा पूरी तरह स्थापित और स्वीकृत हो गई। उसमें विषय और शिल्प की विविधता तथा नवीनता दिखाई देने लगी।

आलोचना

इस युग में आलोचना के कई रूप मिलते हैं; यथा–तुलनात्मक आलोचना, अनुसंधानात्मक आलोचना, परिचयात्मक आलोचना, व्याख्यात्मक आलोचना, काव्य–निरूपण संबंधी आलोचना आदि। 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका', 'समालोचक', 'सरस्वती' आदि पत्रिकाओं ने आलोचना के विकास में भूमिका निभाई। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आलोचना की मुख्य चिंता सोद्देश्यपूर्ण साहित्य की पहचान और यथार्थवादी अभिरुचि को प्रश्रय देना निश्चित किया था। वे साहित्य और समाज में अविभाज्य संबंध मानते थे। उनके अनुसार ''जिस जाति विशेष में साहित्य का अभाव या उसकी न्यूनता आपको दिख पड़े, आप यह निस्संदेह निश्चित समझिए कि वह जाति असभ्य किंवा अपूर्ण सभ्य है। जिस जाति की सामाजिक अवस्था जैसी होती है उसका साहित्य भी ठीक वैसा ही होता है।'' इसी के साथ वे साहित्य की भूमिका रेखांकित करते हुए कहते हैं "साहित्य में जो शक्ति छिपी रहती है वह तोप, तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पाई जाती।"

संक्षेप में कहें कि आचार्य द्विवेदी ने हिंदी समाज के साहित्यिक विवेक का निर्धारण किया। इस युग के अन्य आलोचकों में लाला भगवानदीन, कृष्ण बिहारी मिश्र, पद्मसिंह शर्मा, मिश्रबंधु, श्यामसुंदर दास आदि प्रमुख हैं।

इस युग की पत्र–पत्रिकाओं ने हिंदी गद्य को माँजने–निखारने में भूमिका निभाई। 'सरस्वती', 'सुदर्शन', 'समालोचक', 'अभ्युदय', 'इंदु', 'प्रताप' आदि इस युग की प्रमुख पत्र–पत्रिकाएँ हैं।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना कब हुई थी?
   (क) 1800 (ख) 1801 (ग) 1802 (घ) 1803
2. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना कहाँ हुई थी?
   (क) मुंबई (ख) दिल्ली (ग) कोलकाता (घ) चेन्नई
3. हिंदी का पहला समाचार पत्र है?
   (क) उदंत मार्तंड (ख) प्रजामित्र (ग) समाचार सुधावर्षण (घ) सरस्वती
4. पं. जुगल किशोर किस पत्र के संपादक थे?
   (क) प्रताप (ख) सरस्वती (ग) उदंत मार्तंड (घ) बनारस अखबार
5. फोर्ट विलियम कॉलेज में हिंदुस्तानी विभाग के अध्यक्ष थे–
   (क) विलियम कैरे (ख) लल्लूलाल (ग) सदल मिश्र (घ) जॉन गिलक्रिस्ट
6. 'रानी केतकी की कहानी' किसकी रचना है ?
   (क) इंशाल्लाह खाँ (ख) सदल मिश्र (ग) लल्लूलाल (घ) जॉन गिलक्रिस्ट
7. 'नासिकेतोपाख्यान' किसकी रचना है?
   (क) इंशाल्लाह खाँ (ख) सदल मिश्र (ग) लल्लूलाल (घ) जॉन गिलक्रिस्ट
8. 'प्रेमसागर' किसकी रचना है?
   (क) इंशाल्लाह खाँ (ख) सदल मिश्र (ग) लल्लूलाल (घ) जॉन गिलक्रिस्ट
9. स्कूल बुक सोसाइटी की स्थापना कहाँ हुई थी?
   (क) प्रयाग (ख) लखनऊ (ग) आगरा (घ) मिर्जापुर
10. ऑरफन प्रेस कहाँ था?
    (क) प्रयाग (ख) लखनऊ (ग) आगरा (घ) मिर्जापुर
11. प्रकाशनारंभ की दृष्टि से सही क्रम है :
    (क) प्रजामित्र, उदंत मार्तंड, समाचार सुधावर्षण, बंगमित्र
    (ख) उदंतमार्तंड, बंगदूत, प्रजामित्र, समाचार सुधावर्षण
    (ग) बंगदूत, प्रजामित्र, समाचार सुधावर्षण, उदंतमार्तंड
    (घ) समाचार सुधावर्षण, उदंतमार्तंड, बंगमित्र, प्रजामित्र

12. 'भाग्यवती' के लेखक हैं?
(क) श्रद्धाराम फुल्लौरी
(ख) लाला श्रीनिवास दास
(ग) प्रेमचंद
(घ) महावीर प्रसाद द्विवेदी

13. निम्नलिखित में से कौन राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद की रचना नहीं है :
(क) राजा भोज का सपना
(ख) इतिहास तिमिरनाशक
(ग) वीर सिंह का वृत्तांत
(घ) सत्यार्थ प्रकाश

14. 'बनारस अखबार' किसने निकाला?
(क) भारतेंदु
(ख) सदल मिश्र
(ग) राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद
(घ) राजा लक्ष्मण सिंह

15. 'प्रजा हितैषी' पत्र किसने निकाला?
(क) भारतेंदु
(ख) राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद
(ग) सदल मिश्र
(घ) राजा लक्ष्मण सिंह

16. निम्नलिखित में से कौन भारतेंदु द्वारा प्रकाशित नहीं है?
(क) कविवचन सुधा
(ख) हरिश्चंद्र मैगजीन
(ग) हिंदी प्रदीप
(घ) बालाबोधिनी

17. निम्नलिखित में कौन सुमेल नहीं है :
(क) हिंदी प्रदीप—बालकृष्ण भट्ट
(ख) ब्राह्मण—महावीर प्रसाद द्विवेदी
(ग) हरिश्चंद्र चंद्रिका—भारतेंदु
(घ) ब्राह्मण—प्रतापनारायण मिश्र

18. प्रतापनारायण मिश्र का निबंध नहीं है?
(क) कछुआ धर्म
(ख) मनोयोग
(ग) दाँत
(घ) जीभ

19. बालकृष्ण भट्ट का निबंध नहीं है?
(क) बालविवाह
(ख) अंग्रेजी शिक्षा और प्रकाश
(ग) दाँत
(घ) बातचीत

20. भारतेंदु का नाटक है :
(क) अँधेर नगरी
(ख) संयोगिता स्वयंवर
(ग) रणधीर प्रेममोहिनी
(घ) कविवचन सुधा

21. 'चंद्रकांता' उपन्यास के लेखक हैं :
(क) प्रेमचंद
(ख) चंद्रधर शर्मा गुलेरी
(ग) देवकीनंदन खत्री
(घ) गोपालराम गहमरी

22. जासूसी उपन्यासों के लिए प्रसिद्ध हैं :
(क) गोपालराम गहमरी (ख) बालकृष्ण भट्ट
(ग) प्रेमचंद (घ) ठाकुर जगमोहन सिंह

23. निम्नलिखित में से कहानी का उदाहरण नहीं है :
(क) सौत (ख) उसने कहा था
(ग) देवरानी जेठानी की कहानी (घ) रानी केतकी की कहानी

24. भारतेंदु युग का उपन्यास नहीं है :
(क) भाग्यवती (ख) सेवासदन
(ग) देवरानी जेठानी की कहानी (घ) परीक्षा गुरु

25. निम्नलिखित में से सुमेल नहीं है :
(क) परीक्षा गुरु–लाला श्रीनिवास दास
(ख) भाग्यवती–श्रद्धाराम फुल्लौरी
(ग) नूतन ब्रह्मचारी–प्रेमचंद
(घ) ठेठ हिंदी का ठाठ–अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

26. नागरी प्रचारिणी सभा की स्थापना कब हुई?
(क) 1893 (ख) 1890 (ग) 1891 (घ) 1899

27. 'आचरण की सभ्यता' के लेखक हैं?
(क) महावीर प्रसाद द्विवेदी (ख) अध्यापक पूर्ण सिंह
(ग) चंद्रधर शर्मा गुलेरी (घ) बालमुकुंद गुप्त

28. सुमेल नहीं है–
(क) शिवशंभु के चिट्ठे–बालमुकुंद गुप्त
(ख) कवियों की उर्मिला विषयक उदासीनता–महावीर प्रसाद द्विवेदी
(ग) मजदूरी और प्रेम–प्रेमचंद
(घ) पुरानी हिंदी–चंद्रधर शर्मा गुलेरी

29. प्रेमचंद का पहली हिंदी रचना है :
(क) सेवासदन (ख) प्रेमा (ग) पंच परमेश्वर (घ) सौत

30. सुमेल नहीं है :
(क) इंदुमती–किशोरीलाल गोस्वामी (ख) दुलाईवाली–बंगमहिला
(ग) एक टोकरी भर मिट्टी–माधवराव सप्रे (घ) ग्राम–प्रेमचंद

31. सुमेल नहीं है :
(क) प्लेग की चुड़ैल–तिलिस्मी उपन्यास (ख) कन्यादान–निबंध
(ग) प्रताप–पत्र (घ) किशोरीलाल गोस्वामी–ऐतिहासिक उपन्यास

32. भारतेंदु युग के रचनाकार नहीं हैं :
    (क) प्रेमचंद
    (ख) बालकृष्ण भट्ट
    (ग) प्रतापनारायण मिश्र
    (घ) लाला श्रीनिवास दास

33. 'साहित्य में जो शक्ति छिपी रहती है वह तोप, तलवार और बम के गोलों में भी नहीं पाई जाती।' —यह किसका कथन है?
    (क) भारतेंदु
    (ख) बालकृष्ण भट्ट
    (ग) प्रतापनारायण मिश्र
    (घ) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

34. 'सरस्वती' का प्रकाशन कब शुरू हुआ?
    (क) 1900 (ख) 1901 (ग) 1902 (घ) 1903

35. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' के संपादक कब बने?
    (क) 1900 (ख) 1901 (ग) 1902 (घ) 1903

36. 'बातों के संग्रह' किसकी पुस्तक है?
    (क) भारतेंदु
    (ख) बालकृष्ण भट्ट
    (ग) प्रतापनारायण मिश्र
    (घ) आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी

37. 'ग्राम' किस विधा की रचना है?
    (क) कहानी (ख) नाटक (ग) निबंध (घ) उपन्यास

38. सुमेलित है—
    (क) सेवासदन—देवकीनंदन खत्री
    (ख) चंद्रकांता—प्रेमचंद
    (ग) ठेठ हिंदी का ठाठ—अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'
    (घ) कंकाल—निराला

39. हिंदी में उपन्यास लेखन का आरंभ किस युग में हुआ :
    (क) भारतेंदु युग (ख) द्विवेदी युग (ग) शुक्लयुग (घ) इनमें से कोई नहीं

40. 'उसने कहा था' के विषय में सही है :
    (क) कहानी, प्रेमचंद, 1915
    (ख) कहानी, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', 1916
    (ग) कहानी, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', 1915
    (घ) निबंध, चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', 1915

■

प्रतापनारायण मिश्र

(सन् 1856 – 1894 ई.)

प्रतापनारायण मिश्र का जन्म **सन् 1856 ई.** में उन्नाव जनपद के बैजे गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम **पं. संकठाप्रसाद मिश्र** था। प्रतापनारायण मिश्र ने बहुत विधिवत और नियमित ढंग से स्कूली शिक्षा नहीं पाई थी। उन्होंने स्वाध्याय और अभ्यास से ही संस्कृत, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी, बाँग्ला, मराठी और पंजाबी भाषाएँ सीख ली थीं।

प्रतापनारायण मिश्र का घरेलू जीवन बहुत व्यवस्थित नहीं रहा। उन्हें माता–पिता का भरपूर प्यार मिला था। 18 वर्ष की आयु में उनका विवाह हुआ था, किंतु कुछ दिनों बाद ही पत्नी का देहावसान हो गया। फिर उनका दूसरा विवाह हुआ। पिता के जीवित रहते आर्थिक अभाव का उन्हें सामना नहीं करना पड़ा, परन्तु उनके बाद वे आर्थिक मोर्चे पर निरंतर संघर्ष करते रहे। **सन् 1883** में उन्होंने कानपुर से **ब्राह्मण** नामक पत्र निकालना शुरू किया। कुछ दिनों के लिए वे कालाकाँकर से निकलनेवाले **हिंदोस्थान** पत्र के संपादक मंडल में भी रहे।

प्रतापनारायण मिश्र फक्कड़ स्वभाव के थे। खान–पान और स्वास्थ्य के प्रति वे लापरवाह थे। फलतः वे अस्वस्थ हुए और महीनों की बीमारी के बाद सन् 1894 ई. में उनका निधन हो गया।

प्रतापनारायण मिश्र ने कई विधाओं में लिखा। उन्होंने कविताएँ, नाटक और निबंध लिखे। उनकी रचनाओं में सबसे प्रमुख निबंध हैं। वे हिंदी में मौलिक निबंधों के आरंभकर्ताओं में गिने जाते हैं। अपने निबंधों में विनोद और हास्य की शैली में भी वे बड़ी गहरी और युगीन आवश्यकताओं के अनुरूप बात कह जाते हैं।

प्रतापनारायण मिश्र ने उर्दू, फारसी, अरबी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दों का अपने निबंधों में बहुत सहजता से प्रयोग किया है। उनके निबंध हिंदी गद्य की निर्माण प्रक्रिया को भी दर्शाते हैं। प्रस्तुत निबंध में भी 'उड़ावैंगे', 'टेड़ो बात', 'बातूनी कहै' जैसे प्रयोग हैं।

प्रतापनारायण मिश्र की प्रमुख रचनाएँ :

कविता : ब्रैडला स्वागत, शोकाश्रु, मन की लहर, कजरी, होरी, लावनी आदि।

नाटक : हठी हम्मीर, जुआरी खुआरी, दूध का दूध, पानी का पानी, कलिप्रवेश आदि।

निबंध : ट, त, द, दाँत, भौं, पेट, चिंता, स्वतंत्रता, ऊँच निवास नीच करतूती, समझदार की मौत है, एकै साधे सब सधै, इनकम टैक्स, रिश्वत, विलायत यात्रा आदि।

संपादन : ब्राह्मण।

बात शीर्षक निबंध अंग्रेजी राज में लिखी हुई रचना है। परतंत्र भारत में भारतीयों को जाग्रत करना तथा अपने अनुभवों और कष्टों को व्यक्त करने के लिए प्रेरित करना इस निबंध का लक्ष्य है। किंतु, भय और लोभ से भारतीय जनता उस दौर में चुप्पी साधे हुए थी। लेखक ने इसी पर निबंध में चोट की है। उसके अनुसार 'बात' केवल मन–बहलाव नहीं है। वह निर्माण और जागरण का साधन भी है।

प्रस्तुत पाठ विजयशंकर मल्ल द्वारा संपादित 'प्रतापनारायण मिश्र' ग्रंथावली से संकलित–संपादित है।

बात

यदि हम वैद्य होते तो कफ और पित्त के सहवर्ती बात की व्याख्या करते तथा भूगोलवेत्ता होते तो किसी देश के जल बात का वर्णन करते। किंतु इन दोनों विषयों में हमें एक बात कहने का भी प्रयोजन नहीं है इससे केवल उसी बात के ऊपर दो चार बात लिखते हैं जो हमारे संभाषण के समय मुख से निकल–निकल के परस्पर हृदयस्थ भाव प्रकाशित करती रहती है।

सच पूछिए तो इस बात की भी क्या बात है जिसके प्रभाव से मानव जाति समस्त जीवधारियों की शिरोमणि (अशरफुल मखलूकात) कहलाती है। शुकसारिकादि पक्षी केवल थोड़ी सी समझने योग्य बातें उच्चरित कर सकते हैं, इसी से अन्य नभचारियों की अपेक्षा आद्रित समझे जाते हैं। फिर कौन न मान लेगा कि बात की बड़ी बात है। हाँ, बात की बात इतनी बड़ी है कि परमात्मा को सब लोग निराकार कहते हैं तो भी इसका संबंध उसके साथ लगाए रहते हैं। वेद ईश्वर का बचन है, कुरआनशरीफ कलामुल्लाह है, होली बाइबिल वर्ड आफ गॉड है। यह वचन, कलाम और वर्ड बात ही के पर्याय हैं, सो प्रत्यक्ष में मुख के बिना स्थिति नहीं कर सकती। पर बात की महिमा के अनुरोध से सभी धर्मावलंबियों ने 'बिन बानी वक्ता बड़ योगी' वाली बात मान रखी है। यदि कोई न माने तो लाखो बातें बना के मनाने पर कटिबद्ध रहते हैं। यहाँ तक कि प्रेम सिद्धांती लोग निरवयव नाम से मुँह बिचकावेंगे। 'अपाणिपादो जवनो गृहीता' इत्यादि पर हठ करने वाले को यह कहके बात में उड़ावेंगे कि ''हम लँगड़े लूले ईश्वर को नहीं मान सकते। हमारा प्यारा तो कोटि काम सुंदर स्याम बरण विशिष्ट है।'' निराकार शब्द का अर्थ श्री शालिग्राम शिला है जो उसकी स्यामता का द्योतन करती है अथवा योगाभ्यास का आरंभ करने वाले को आँखें मूँदने पर जो कुछ पहिले दिखाई देता है वह निराकार अर्थात बिलकुल काला रंग है। सिद्धांत यह कि रंगरूप रहित को सब रंग रंजित एवं अनेक रूप सहित ठहरावेंगे किंतु कानों अथवा प्राणों वा दोनों को प्रेम रस से सिंचित करने वाली उसकी मधुर मनोहर बातों के मजे से अपने को वंचित न रहने देंगे।

जब परमेश्वर तक बात का प्रभाव पहुँचा हुआ है तो हमारी कौन बात रही? हम लोगों के तो ''गात माहि बात करामात है''। नाना शास्त्र, पुराण, इतिहास काव्य कोश इत्यादि सब बात ही के फैलाव हैं जिनके मध्य एक–एक बात ऐसी पाई जाती है जो मन, बुद्धि, चित्त को अपूर्व दशा में ले जाने वाली अथच लोक परलोक में सब बात बनाने वाली है। यद्यपि बात का कोई रूप नहीं बता सकता कि कैसी है पर बुद्धि दौड़ाइए तो ईश्वर की भाँति इसके भी अगणित ही

रूप पाइएगा। बड़ी बात, छोटी बात, सीधी बात, टेड़ो बात, खरी बात, खोटी बात, मीठी बात, कड़वी बात, भली बात, बुरी बात, सुहाती बात, लगती बात इत्यादि सब बात ही तो हैं ?

बात के काम भी इसी भाँति अनेक देखने में आते हैं। प्रीति–बैर, सुख–दुख, श्रद्धा–घृणा, उत्साह–अनुत्साहादि जितनी उत्तमता और सहजतया बात के द्वारा विदित हो सकते हैं दूसरी रीति से वैसी सुविधा ही नहीं। घर बैठे लाखों कोस का समाचार मुख और लेखनी से निर्गत बात ही बतला सकती है। डाकखाने अथवा तारघर के सहारे से बात की बात में चाहे जहाँ की जो बात हो जान सकते हैं। इसके अतिरिक्त बात बनती है, बात बिगड़ती है। बात आ पड़ती है, बात जाती रहती है, बात उखड़ती है। हमारे तुम्हारे भी सभी काम बात ही पर निर्भर करते हैं–'बातहि हाथी पाइए, बातहि हाथी पाँव।' बात ही से पराए अपने और अपने पराए हो जाते है। मक्खीचूस उदार तथा उदार स्वल्पव्ययी, कापुरुष युद्धोत्साही एवं युद्धप्रिय शांतिशील, कुमार्गी सुपथगामी अथच सुपंथी कुराही इत्यादि बन जाते हैं।

बात का तत्त्व समझना हर एक का काम नहीं है और दूसरों की समझ पर आधिपत्य जमाने योग्य बात गढ़ सकना भी ऐसों वैसों का साध्य नहीं है। बड़े–बड़े विज्ञवरों तथा महा–महा कवीश्वरों के जीवन बात ही के समझने–समझाने में व्यतीत हो जाते हैं। सहृदयगण की बात के आनंद के आगे सारा संसार तुच्छ जँचता है। बालकों की तोतली बातें, सुंदरियों की मीठी–मीठी प्यारी–प्यारी बातें सत्कवियों की रसीली बातें, सुवक्ताओं की प्रभावशालिनी बातें जिसके जी को और का और न कर दें, उसे पशु नहीं पाषाण खंड कहना चाहिए। क्योंकि कुत्ते, बिल्ली आदि को विशेष समझ नहीं होती तो भी पुचकार के 'तू तू' 'पूसी पूसी' इत्यादि बातें कह दो तो भावार्थ समझ के यथा सामर्थ्य स्नेह प्रदर्शन करने लगते हैं। फिर वह मनुष्य कैसा जिसके चित्त पर दूसरे हृदयवान की बात का असर न हो।

हमारे परम पूजनीय आर्यगण बात का इतना पक्ष करते थे कि "तन तिय तनय धाम धन घरनी। सत्यसंध कहँ तृन सम बरनी। अथच "प्रानन ते सुत अधिक है सूत ते अधिक परान। ते दूनौं दसरथ तजे वचन न दीन्हों जान"। इत्यादि उनकी अक्षरसंवद्धा कीर्ति सदा संसार पट्टिका पर सोने के अक्षरों से लिखी रहेगी। पर आजकल के बहुतेरे भारत कुपुत्रों ने यह ढंग पकड़ रखा है कि 'मर्द की जबान (बात का उदय स्थान) और गाड़ी का पहिया चलता ही फिरता रहता है'। आज और बात है कल ही स्वार्थांधता के वश हुजूरों की मरजी के मुवाफिक दूसरी बातें हो जाने में तनिक भी विलंब को संभावना नहीं है। यद्यपि कभी–कभी अवसर पड़ने पर बात के अंश का कुछ रंग ढंग परिवर्तित कर लेना नीति विरुद्ध नहीं है, पर कब ? जात्योपकार, देशोद्धार, प्रेम प्रचार आदि के समय, न कि पापी पेट के लिए।

एक हम लोग हैं जिन्हें आर्यकुल रत्नों के अनुगमन की सामर्थ्य नहीं है। किंतु हिंदुस्तानियों के नाम पर कलंक लगाने वालों के भी सहमार्गी बनने में घिन लगती है। इससे

यह रीति अंगीकार कर रखी है कि चाहे कोई बड़ा बतकहा अर्थात बातूनी कहै, चाहे यह समझे कि बात कहने का भी शउर नहीं है किंतु अपनी मति अनुसार ऐसी बातें बनाते रहना चाहिए जिनमें कोई न कोई, किसी न किसी के वास्तविक हित की बात निकलती रहे। पर खेद है कि हमारी बातें सुनने वाले उँगलियों ही पर गिनने भर को हैं। इससे 'बात बात में बात' निकालने का उत्साह नहीं होता। अपने जी को 'क्या बने बात जहाँ बात बनाए न बने' इत्यादि विदग्धालापों की लेखनी से निकली हुई बातें सुना के कुछ फुसला लेते हैं और बिन बात की बात को बात का बतंगड़ समझ के बहुत बात बढ़ाने से हाथ समेट लेना ही समझते हैं कि अच्छी बात है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. प्रतापनारायण मिश्र का जन्म किस जनपद में हुआ था :
   (क) गोरखपुर (ख) उन्नाव (ग) मेरठ (घ) प्रयागराज
2. प्रतापनारायण मिश्र का पत्र है :
   (क) हंस (ख) कविवचन सुधा (ग) हिंदी प्रदीप (घ) ब्राह्मण
3. प्रतापनारायण मिश्र का निबंध नहीं है :
   (क) दाँत (ख) भौं (ग) कल्पलता (घ) ट
4. प्रतापनारायण मिश्र के निबंधों की विशेषता है :
   (क) व्यंग्य (ख) मुहावरों–कहावतों का प्रयोग
   (ग) उर्दू–फारसी के शब्दों का प्रयोग (घ) उपर्युक्त सभी
5. 'सुख–दुख' में समास है :
   (क) तत्पुरुष (ख) अव्ययीभाव (ग) द्विगु (घ) द्वंद्व
6. पाठ में उल्लेख है :
   (क) वेद ईश्वर का वचन है (ख) कुरआनशरीफ कलामुल्लाह है
   (ग) बाइबल वर्ड ऑफ गॉड है (घ) उपर्युक्त सभी
7. प्रतापनारायण मिश्र का जन्म हुआ था :
   (क) 1856 (ख) 1857 (ग) 1858 (घ) 1859
8. 'ब्राह्मण' पत्र का प्रकाशन कब शुरू हुआ :
   (क) 1880 (ख) 1881 (ग) 1882 (घ) 1883

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. मानव जाति समस्त जीवधारियों की शिरोमणि क्यों कही जाती है?
2. 'बिन बानी वक्ता बड़ योगी' का क्या अर्थ है?
3. 'अपाणिपादो जवनो गृहीता' से क्या आशय है?
4. 'गात माहि बात करामात है'—का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
5. लेखक ने पाठ में 'बात' के कई काम बताए हैं। उनका उल्लेख कीजिए।
6. 'बातहि हाथी पाइए, बातहि हाथी पाँव'—का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
7. लेखक ने किसे 'पाषाण खंड' कहना चाहा है?
8. लेखक ने 'भारत कुपुत्रों' का प्रयोग किसके लिए किया है? और, क्यों?
9. बात का रंग ढंग परिवर्तित कर लेना कब नीति विरुद्ध नहीं है?
10. 'बात बात में बात' निकालने का उत्साह लेखक को नहीं है? क्यों?
11. 'बात' पाठ का मूल संदेश क्या है?
12. पाठ के आधार पर प्रतापनारायण मिश्र का संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।
13. पाठ के आधार पर प्रतापनारायण मिश्र की भाषा की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

III. दिए गए गद्यांशों के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. नाना शास्त्र, पुराण, इतिहास काव्य कोश इत्यादि सब बात ही के फैलाव हैं जिनके मध्य एक–एक बात ऐसी पाई जाती है जो मन, बुद्धि, चित्त को अपूर्व दशा में ले जाने वाली अथच लोक–परलोक में सब बात बनाने वाली है। यद्यपि बात का कोई रूप नहीं बता सकता कि कैसी है पर बुद्धि दौड़ाइए तो ईश्वर की भाँति इसके भी अगणित ही रूप पाइएगा। बड़ी बात, छोटी बात, सीधी बात, टेढ़ो बात, खरी बात, खोटी बात, मीठी बात, कड़वी बात, भली बात, बुरी बात, सुहाती बात, लगती बात इत्यादि सब बात ही तो हैं?

   (क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

   (ग) 'अगणित' और 'अपूर्व' में कौन–सा उपसर्ग है?

2. बात के काम भी इसी भाँति अनेक देखने में आते हैं। प्रीति–बैर, सुख–दुख, श्रद्धा–घृणा, उत्साह–अनुत्साहादि जितनी उत्तमता और सहजतया बात के द्वारा विदित हो सकते हैं दूसरी रीति से वैसी सुविधा ही नहीं। घर बैठे लाखों कोस का समाचार मुख और लेखनी से निर्गत बात ही बतला सकती है। डाकखाने अथवा तारघर के सहारे से बात की बात में चाहे जहाँ की जो बात हो जान सकते हैं। इसके अतिरिक्त बात बनती है, बात बिगड़ती है। बात आ

पड़ती है, बात जाती रहती है, बात उखड़ती है। हमारे तुम्हारे भी सभी काम बात ही पर निर्भर करते हैं–'बातहि हाथी पाइए, बातहि हाथी पाँव।' बात ही से पराए अपने और अपने पराए हो जाते है। मक्खीचूस उदार तथा उदार स्वल्पव्ययी, कापुरुष युद्धोत्साही एवं युद्धप्रिय शांतिशील, कुमार्गी सुपथगामी अथच सुपंथी कुराही इत्यादि बन जाते हैं।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) 'बात उखड़ती है' का क्या अर्थ है? इस मुहावरे का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

3. हमारे परम पूजनीय आर्यगण बात का इतना पक्ष करते थे कि "तन तिय तनय धाम धन घरनी। सत्यसंध कहँ तृन सम बरनी। अथच "प्रानन ते सुत अधिक है सूत ते अधिक परान। ते दूनौं दसरथ तजे वचन न दीन्हों जान"। इत्यादि उनकी अक्षरसंवद्धा कीर्ति सदा संसार पट्टिका पर सोने के अक्षरों से लिखी रहेगी। पर आजकल के बहुतेरे भारत कुपुत्रों ने यह ढंग पकड़ रखा है कि 'मर्द की जबान (बात का उदय स्थान) और गाड़ी का पहिया चलता ही फिरता रहता है'। आज और बात है कल ही स्वार्थांधता के वश हुजूरों की मरजी के मुवाफिक दूसरी बातें हो जाने में तनिक भी विलंब को संभावना नहीं है। यद्यपि कभी–कभी अवसर पड़ने पर बात के अंश का कुछ रंग ढंग परिवर्तित कर लेना नीति विरुद्ध नहीं है, पर कब ? जात्योपकार, देशोद्धार, प्रेम प्रचार आदि के समय, न कि पापी पेट के लिए।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) 'जात्योपकार' और 'देशोद्धार' का संधि–विच्छेद कीजिए ?

IV. भाषा के रंग :

1. पाठ में 'बात' से जुड़े कई मुहावरे हैं। उन्हें संकलित करें और वाक्य प्रयोग द्वारा उनका अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2. संधि विच्छेद कीजिए :
कवीश्वर, योगाभ्यास, धर्मोपदेश, निराकार, युद्धोत्साही, परमेश्वर, इत्यादि, धर्मावलंबी, प्रत्यक्ष, विदग्धालाप

3. समास विग्रह कीजिए :
मक्खीचूस, यथासामर्थ्य, पाषाणखंड, श्रद्धा–घृणा, सुवक्ता, कुमार्गी

4. विपरीतार्थक शब्द लिखिए :
कुमार्गी, निराकार, विज्ञ, कीर्ति, उत्साह, रहित, प्रेम

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. लेखक ने पाठ में बात के कई काम बताए हैं। क्या आप उनमें कुछ अन्य काम जोड़ सकते हैं। यदि हाँ, तो उन्हें लिखिए।
2. प्रतापनारायण मिश्र ने लेख के अंत में 'क्या बने बात जहाँ बात बनाए न बने' को उद्धृत किया है। यह उर्दू के महान कवि मिर्जा गालिब की एक गजल की पंक्ति है। आप उस गजल को खोजें और उस पर कक्षा में चर्चा करें।
3. 'बात' का प्रयोग मिर्जा गालिब के अतिरिक्त हिंदी और उर्दू के कई अन्य कवियों ने अपनी रचना में किया है। दोनों भाषाओं से ऐसे एक–एक उदाहरण खोजें।

शब्दार्थ

प्रयोजन – उद्देश्य। **हृदयस्थ** – हृदय में स्थित। **अशरफुल मखलूकात** – जगत में श्रेष्ठ। **निरवयव** – अवयव हीन। **निराकार** – आकार हीन। **अपाणिपादो जवनो ग्रहीता** – बिना हाथ के पकड़ना और बिना पाँव के चलना। **द्योतन** – प्रकाशित। **अथच** – और, अतिरिक्त। **कुराही** – गलत राह पर चलनेवाला। **विज्ञ** – विद्वान। **मुवाफिक** – अनुसार। **जात्युपकार** – जाति का उपकार। **अनुगमन** – पीछे पीछे चलना, अनुकरण करना। **सामर्थ्य** – क्षमता। **अंगीकार** – स्वीकार। **शऊर** – सलीका, ढंग। **मति** – समझ, विवेक। **विदग्धालाप** – बात करने में कुशल, **बतंगड़** – थोड़ी सी बात को बढ़ा–चढ़ा कर कहना।

रवींद्रनाथ टैगोर

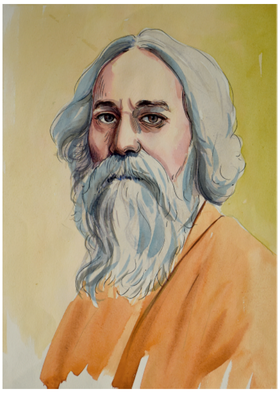

(सन् 1861 – 1941 ई.)

रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म **सन् 1861 ई.** में कोलकाता के जोड़ासाँकू ठाकुरबाड़ी में हुआ था। उनके पिता का नाम देवेंद्रनाथ ठाकुर तथा माता का नाम शारदा देवी था। रवींद्रनाथ टैगोर का परिवार एक संपन्न और बड़ा परिवार था। उनके भाई–बहनों की कुल संख्या चौदह थी। उस बड़े परिवार में अनुशासन और व्यवस्था का बड़ा ख्याल था। उन्हें पढ़ाई के लिए बंगाल एकेडमी भेजा गया, किंतु उनका मन वहाँ नहीं रमा। उन्हें सेंट जेवियर्स में पढ़ने के लिए भेजा गया। पर, वे वहाँ भी न टिके। स्कूल का वातावरण, बद्ध अनुशासन और रटंत पद्धति उन्हें रास न आई। पढ़ाई के लिए वे विदेश भी भेजे गए। किंतु, उनकी विधिवत शिक्षा न हो पाई। इनके बावजूद उन्होंने स्वाध्याय से कई भाषाओं, विषयों और संगीत का ज्ञान प्राप्त किया।

रवींद्रनाथ टैगोर के व्यक्तित्व और कृतित्व में कोमलता और दृढ़ता का अद्भुत संयोग है। पारिवारिक वातावरण ने उन्हें कल्पनाशील और भावुक बनाया तो देश–काल ने उन्हें दृढ़ और संघर्षशील। बचपन से ही वे काव्य लेखन के क्षेत्र में सक्रिय हो गए थे। उनके समग्र साहित्य में उपर्युक्त दोनों भाव–बोध समान रूप से उपस्थित हैं। उनका लेखन मनुष्य मात्र को सभी प्रकार के बंधन से मुक्त करने की प्रस्तावना करता है। उनके द्वारा बंगाल के बीरभूम में स्थापित शांति निकेतन की शिक्षा–प्रणाली के मूल में भी यही है। वे मानते थे कि प्रकृति के साहचर्य में ही मानव–प्रकृति का संपूर्ण उन्नयन हो सकता है और इस हेतु किसी भी प्रकार का बाह्य दबाव लाभकारी नहीं है।

रवींद्रनाथ टैगोर विश्व साहित्य की महान उपलब्धि के रूप में स्वीकृत हैं। सन् 1913 ई. में उन्हें **गीतांजलि** के लिए नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार पानेवाले वे पहले भारतीय थे। वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से भी सक्रिय रूप से जुड़े रहे। उनकी रचना 'जन गण मन अधिनायक जय हे' भारत का राष्ट्रगान है। बांग्लादेश का राष्ट्रगान 'आमार सोनार बाँग्ला' भी उन्हीं की रचना है।

रवींद्रनाथ टैगोर ने कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, आत्मकथा, यात्रा–वृत्तांत जैसी कई विधाओं को अपनी प्रतिभा से समृद्ध किया। उनका प्रभाव केवल बाँग्ला–साहित्य पर ही नहीं; हिंदी, उर्दू सहित भारत की विभिन्न भाषाओं के साहित्य पर निर्णायक रूप से पड़ा।

सन् 1941 ई. में कोलकाता में उनका निधन हुआ।

रवींद्रनाथ टैगोर की प्रमुख रचनाएँ : **उपन्यास** : राजर्षि, चोखेरबालि, गोरा, घरे बाइरे आदि; **काव्य** बनफूल, संध्या संगीत, प्रभात संगीत, छबि ओ गान, मानसी, गीतांजलि, महुआ आदि; **कहानी संकलन** : भिखारिणी, कंकाल, प्रायश्चित, दृष्टिदान आदि।

तोता कहानी एक व्यंग्य रचना है। और, व्यंग्य का मुख्य केंद्र है हमारी शिक्षा व्यवस्था। यह कहानी कहती है कि शिक्षार्थी की स्वाभाविकता को लीलकर रट्टू तोता बना देनेवाली व्यवस्था कभी भी हितकारी नहीं हो सकती। इसके साथ ही यह कहानी मूर्ख और आत्ममुग्ध राजसत्ता पर भी व्यंग्य करती है।

तोता

(1)

एक था तोता। वह बड़ा मूर्ख था गाता तो था, पर शास्त्र नहीं पढ़ता था। उछलता था, फुदकता था, उड़ता था, पर यह नहीं जानता था कि कायदा कानून किसे कहते हैं। राजा बोले, ''ऐसा तोता किस काम का? इससे लाभ तो कोई नहीं, हानि जरूर है। जंगल के फल खा जाता है, जिससे राजा मंडी के फल–बाजार में टोटो पड़ जाता है।''

मंत्री को बुलाककर कहा, ''इस तोते को शिक्षा दो।''

(2)

तोते को शिक्षा देने का काम राजा के भानजे को मिला। पंडितों की बैठक हुई। विषय था, ''उक्त जीव की अविद्या का कारण क्या है?'' बड़ा गहरा विचार हुआ।

सिद्धांत ठहरा तोता अपना घोंसला साधारण खर–पात से बनाता है। ऐसे आवास में विद्या नहीं आती। इसलिए सबसे पहले तो यह आवश्यक है कि इसके लिए कोई बढ़िया–सा पिंजरा बना दिया जाए। राज पंडितों को दक्षिणा मिली और वे प्रसन्न होकर अपने–अपने घर गए।

(3)

सुनार बुलाया गया। वह सोने का पिंजरा तैयार करने में जुट पड़ा। पिंजरा ऐसा अनोखा बना कि उसे देखने के लिए देश–विदेश के लोग टूट पड़े। कोई कहता ''शिक्षा की तो इति हो गई। कोई कहता, ''शिक्षा न भी हो तो क्या, पिंजरा तो बना। इस तोते का भी क्या नसीब है।''

सुनार को थैलियाँ भर–भरकर इनाम मिला। वह उसी घड़ी अपने घर की ओर रवाना हो गया। पंडित जी तोते को विद्या पढ़ाने बैठे। नस लेकर बोले, ''यह काम थोड़ी पोथियों का नहीं है।''

राजा के भानजे ने सुना। उन्होंने उसी समय पोथी लिखने वालों को बुलवाया। पोथियों की नकल होने लगी। नकलों के और नकलों की नकलों के पहाड़ लग गए। जिसने भी देखा, उसने यही कहा कि, ''शाबाश! इतनी विद्या के धरने को जगह भी नहीं रहेगी।''

नकलनवीसों को लद्दू बैलों पर लाद लादकर इनाम दिए गए। वे अपने–अपने घर की ओर दौड़ पड़े। उनकी दुनिया में तंगी का नाम–निशान भी बाकी न रहा।

दामी पिंजरे की देख–रेख में राजा के भानजे बहुत व्यस्त रहने लगे। इतने व्यस्त कि व्यस्तता की कोई सीमा न रही। मरम्मत के काम भी लगे ही रहते। फिर झाड़ू–पोंछ और पालिश

की धूम भी मची ही रहती थी। जो ही देखता, यही कहता कि, "उन्नति हो रही है।" इन कामों पर अनेक अनेक लोग लगाए गए और उनके कामों की देख–रेख करने पर और भी अनेक–अनेक लोग लगे। सब महीने–महीने मोटे–मोटे वेतन ले–लेकर बड़े–बड़े संदुक भरने लगे।

वे और उनके चचेरे ममेरे–मौसेरे भाई–बंधु बड़े प्रसन्न हुए और बड़े–बड़े कोठों–बालाखानों में मोटे–मोटे गद्दे बिछाकर बैठ गए।

(4)

संसार में और–और अभाव तो अनेक हैं, पर निंदकों की कोई कमी नहीं है। एक ढूँढ़ो हजार मिलते हैं। वे बोले, 'पिंजरे की तो उन्नति हो रही है, पर तोते की खोज–खबर लेने वाला कोई नहीं है। बात राजा के कानों में पड़ी। उन्होंने भानजे को बुलाया और कहा, "क्यों भानजे साहब, यह कैसी बात सुनाई पड़ रही है?" भानजे ने कहा, "महाराज, अगर सच–सच बात सुनना चाहते हों तो सुनारों को बुलाइये, पण्डितों को बुलाइए, नकलनवीसों को बुलाइए मरम्मत करने वालों को और मरम्मत की देखभाल करने वालों को बुलाइए। निंदकों को हलवे माँड़े में हिस्सा नहीं मिलता, इसीलिए वे ऐसी ओछी बात करते हैं।"

जवाब सुनकर राजा ने पूरे मामले को भली–भाँति और साफ–साफ तौर से समझ लिया। भानजे के गले में तत्काल सोने के हार पहनाए गए।

(5)

राजा का मन हुआ कि एक बार चलकर अपनी आँखों से यह देखें कि शिक्षा कैसे ६ ूम–धड़ाके से और कैसी बगटुट तेजी के साथ चल रही है। सो, एक दिन वह अपने मुसाहबों, मुँहलगों, मित्रों और मंत्रियों के साथ आप ही शिक्षाशाला में आ धमके। उनके पहुँचते ही ड्योढ़ी के पास शंख, घड़ियाल, ढोल, तासे, खुरदक, नगाड़े, तुरहियाँ, भेरियाँ, दमामें, काँसे, बाँसुरियाँ, झाल, करताल, मृदंग आदि–आदि आप ही आप बज उठे।

पण्डित गले फाड़–फाड़कर और बूटियाँ फड़का–फड़काकर मंत्र–पाठ करने लगे। मिस्त्री, मजदूर, सुनार, नकलनवीस, देखभाल करने वाले और उन सभी के ममेरे, फुफेरे, चचेरे मौसेरे भाई जय–जयकार करने लगे।

भानजा बोला, "महाराज, देख रहे हैं न ?"

महाराज ने कहा, "आश्चर्य! शब्द तो कोई कम नहीं हो रहा।"

भानजा बोला, "शब्द ही क्यों, इसके पीछे अर्थ भी कई कम नहीं।" राजा प्रसन्न होकर लौट पड़े। ड्योढ़ी को पार करके हाथी पर सवार होने ही वाले थे कि पास के झरमट में छिपा बैठा निंदक बोल उठा, "महाराज आपने तोते को देखा भी है ?" राजा चौंके। बोले, "अरे हाँ! यह तो मैं बिलकुल भूल ही गया था। तोते को तो देखा ही नहीं।" लौटकर पंडित से बोले, "मुझे यह देखना है कि तोते को तुम पढ़ाते किस ढंग से हो।" पढ़ाने का ढंग उन्हें दिखाया गया। देखकर

उनकी खुशी का ठिकाना न रहा। पढ़ाने का ढंग तोते की तुलना में इतना बड़ा था कि तोता दिखाई ही नहीं पड़ता था। राजा ने सोचा : अब तोते को देखने की जरूरत ही क्या है? उसे देखे बिना भी काम चल सकता है। राजा ने इतना तो अच्छी तरह समझ लिया कि बंदोबस्त में कहीं कोई भूल–चूक नहीं है। पिंजरे में दाना–पानी तो नहीं था, थी सिर्फ शिक्षा। यानी ढेर की ढेर पोथियों के ढेर के ढेर पन्ने फाड–फाड़कर कलम की नोंक से तोते के मुँह में घुसेड़े जाते थे। गाना तो बंद हो ही गया था, चीखने–चिल्लाने के लिए भी कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी गई थी। तोते का मुँह ठसाठस भरकर बिलकुल बंद हो गया था। देखने वाले के रोंगटे खड़े हो जाते।

अब दुबारा जब राजा हाथी पर चढ़ने लगे तो उन्होंने कान उमेठू सरदार को ताकीद कर दी कि "निंदक के कान अच्छी तरह उमेठ देना।"

(6)

तोता दिन पर दिन भद्र रीति के अनुसार अधमरा होता गया। अभिभावकों ने समझा कि प्रगति काफी आशाजनक हो रही है। फिर भी पक्षी स्वभाव के एक स्वाभाविक दोष से तोते का पिंड अब भी छूट नहीं पाया था। सुबह होते ही वह उजाले की ओर टुकूर टुकूर निहारने लगता था और बड़ी ही अन्याय भरी रीति से अपने डैने फड़फड़ाने लगता था। इतना ही नहीं, किसी–किसी दिन तो ऐसा भी देखा गया कि वह अपनी रोगी चोंचों से पिंजरे की सलाखें काटने में जुटा हुआ है।

कोतवाल गरजा, "यह कैसी बेअदबी है।"

फौरन लुहार हाजिर हुआ। आग, भाथी और हथौड़ा लेकर।

वह धमाधम लोहा–पिटाई हुई कि कुछ न पूछिए। लोहे की सांकल तैयार की गई और तोते के डैने भी काट दिए गए। राजा के संबंधियों ने हाँड़ी जैसे मुँह लटकाकर और सिर हिलाकर कहा, "इस राज्य के पक्षी सिर्फ बेवकूफ ही नहीं, नमकहराम भी हैं।" और तब पंडितों ने एक हाथ में कलम और दूसरे हाथ में बरछा ले–लेकर वह कांड रचाया, जिसे शिक्षा कहते हैं।

लुहार की लुहसार बेहद फैल गई और लुहारिन के अंगों पर सोने के गहने शोभने लगे और कोतवाल की चतुराई देखकर राजा ने उसे सिरोपा अदा किया।

(7)

तोता मर गया। कब मरा, इसका निश्चय कोई भी नहीं कर सकता। कमबख्त निंदक ने अफवाह फैलाई कि, "तोता मर गया।" राजा ने भानजे को बुलवाया और कहा, "भानजे साहब यह कैसी बात सुनी जा रही है ?"

भानजे ने कहा, "महाराज, तोते की शिक्षा पूरी हो गई है।"

राजा ने पूछा, "अब भी वह उछलता–फुदकता है?"

भानजा बोला, “अजी, राम कहिए।”

“अब भी उड़ता है?”

(8)

“नाय कतई नहीं।”

“अब भी गाता है ?”

“नहीं तो।”

“दाना न मिलने पर अब भी चिल्लाता है?”

“ना!”

राजा ने कहा, “एक बार तोते को लाना तो सही, देखूँगा जरा !”

तोता लाया गया। साथ में कोतवाल आए, प्यादे आए, घुड़सवार आए।

राजा ने तोते को चुटकी से दबाया। तोते ने न हाँ की, न हूँ की। हाँ, उसके पेट में पोथियों के सूखे पत्ते खड़खड़ाने जरूर लगे।

बाहर नव वसंत की दक्षिणी बयार में नव पल्लवों ने अपने निश्वासों से मुकुलित वन के आकाश को आकुल कर दिया।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म कब हुआ था?
   (क) 1861 (ख) 1869 (ग) 1862 (घ) 1864
2. रवींद्रनाथ टैगोर का जन्म कहाँ हुआ था?
   (क) कोलकाता (ख) पटना (ग) लखनऊ (घ) ढाका
3. शांतिनिकेतन कहाँ है?
   (क) कोलकाता (ख) गुवाहाटी (ग) बीरभूम (घ) इनमें से कोई नहीं
4. रवींद्रनाथ टैगोर किसके पक्ष में थे :
   (क) बाह्य अनुशासन (ख) रटंत पद्धति
   (ग) प्रकृति का साहचर्य (घ) इनमें से कोई नहीं
5. रवींद्रनाथ टैगोर की रचना नहीं है :
   (क) आनंदमठ (ख) गोरा (ग) घरे–बाइरे (घ) गीतांजलि
6. नोबल पुरस्कार से सम्मानित कृति है :
   (क) बनफूल (ख) दृष्टिदान (ग) गीतांजलि (घ) गोरा

7. तोता को शिक्षा देने का काम किसे सौंपा गया :
(क) राजा को (ख) राजा के भानजा को (ग) राजा के भाई को (घ) मंत्री को

8. रिक्त स्थान को भरें–
संसार में और–और अभाव तो अनेक हैं, पर .... की कोई कमी नहीं है।
(क) प्रशंसकों (ख) साथियों (ग) दुश्मनों (घ) निंदकों

9. फल–बाजार में कौन–सा समास है :
(क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) द्वंद्व (घ) अव्ययीभाव

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. तोता क्या नहीं जानता था?
2. पंडितों की बैठक किसलिए बुलाई गई थी? उस बैठक में क्या निर्णय हुआ?
3. राजा का भानजा किस कारण व्यस्त था?
4. जो ही देखता, यही कहता कि, "उन्नति हो रही है।"–यहाँ किस उन्नति का उल्लेख है। क्या वह सचमुच उन्नति का उदाहरण है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दीजिए।
5. निंदकों ने राजा तक क्या बात पहुँचाई ?
6. इस कहानी का मूल संदेश क्या है? लिखिए।
7. रवींद्रनाथ टैगोर का जीवन परिचय संक्षेप में लिखिए।

III. दिये गए गद्यांशों के आधार पर प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. राजा ने सोचा : अब तोते को देखने की जरूरत ही क्या है? उसे देखे बिना भी काम चल सकता है। राजा ने इतना तो अच्छी तरह समझ लिया कि बंदोबस्त में कहीं कोई भूल–चूक नहीं है। पिंजरे में दाना–पानी तो नहीं था, थी सिर्फ शिक्षा। यानी ढेर की ढेर पोथियों के ढेर के ढेर पन्ने फाड–फाड़कर कलम की नोंक से तोते के मुँह में घुसेड़े जाते थे। गाना तो बंद हो ही गया था, चीखने–चिल्लाने के लिए भी कोई गुंजाइश नहीं छोड़ी गई थी। तोते का मुँह ठसाठस भरकर बिलकुल बंद हो गया था। देखने वाले के रोंगटे खड़े हो जाते।
(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) उत्पत्ति के आधार पर 'रोंगटे' और 'बिलकुल' किस प्रकार के शब्द हैं?

2. तोता दिन पर दिन भद्र रीति के अनुसार अधमरा होता गया। अभिभावकों ने समझा कि प्रगति काफी आशाजनक हो रही है। फिर भी पक्षी स्वभाव के एक स्वाभाविक दोष से तोते का पिंड अब भी छूट नहीं पाया था। सुबह होते ही वह उजाले की ओर टुकूर टुकूर निहारने लगता था और बड़ी ही अन्याय भरी रीति से अपने डैने फड़फड़ाने लगता था। इतना ही नहीं, किसी–किसी दिन तो ऐसा भी देखा गया कि वह अपनी रोगी चोंचों से पिंजरे की सलाखें काटने में जुटा हुआ है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) 'प्रगति' और 'गुण' का विपरीतार्थक शब्द लिखिए ?

3. लोहे की सांकल तैयार की गई और तोते के डैने भी काट दिए गए। राजा के संबंधियों ने हाँड़ी जैसे मुँह लटकाकर और सिर हिलाकर कहा, "इस राज्य के पक्षी सिर्फ बेवकूफ ही नहीं, नमकहराम भी हैं।" और तब पंडितों ने एक हाथ में कलम और दूसरे हाथ में बरछा ले–लेकर वह कांड रचाया, जिसे शिक्षा कहते हैं।
(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या लिखिए।
(ग) उत्पत्ति के आधार पर 'हाँड़ी' और 'बरछा' किस प्रकार के शब्द हैं?

IV. भाषा के रंग :

1. विपरीतार्थक शब्द लिखिए :
मूर्ख, इनाम, जय, शिक्षा, बंद, आकाश
2. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों की प्रकृति बताएँ
शास्त्र, फुदकता, खर, नकल, व्यस्त, पालिश, झाड़ू, मरम्मत, हार, मुसाहब, घड़ियाल, बंदोबस्त, पिंजरा, गुंजाइश, ठसाठस, कलम, जरूरत, बरछा, लुहसार, टुकूर–टुकूर, दक्षिणी, वन, आकाश
3. पाठ से सरल, मिश्र और संयुक्त वाक्य के दो–दो उदाहरण चुनिए।
4. 'लुहारिन' में कौन–सा प्रत्यय है?

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. इस पाठ में जिस प्रकार की शिक्षा–व्यवस्था का दृश्य है, क्या आप उसे अपने आस–पास भी पाते हैं। और, क्या आप उससे संतुष्ट हैं? यदि हाँ, तो क्यों? यदि नहीं, तो आपके अनुसार उसे कैसा होना चाहिए। अपने शब्दों में लिखिए।

शब्दार्थ

टोटा – कमी। **कायदा** – नियम। **अविद्या** – विद्याहीन। **इति** – अंत। **लद्दू बैल** – बोझ ढोनेवाले बैल। **बालाखाना** – ऊपरी मंजिल, बड़ा मकान। **नकलनवीस** – नकल तैयार करनेवाले। **मुसाहब** – कर्मचारी। **बंदोबस्त** – व्यवस्था। **ताकीद** – निर्देश, चेतावनी। **कमबख्त** – अभागा। **बयार** – हवा। **मुकुलित** – खिला हुआ। **आकुल** – बेचैन।

■

प्रेमचंद

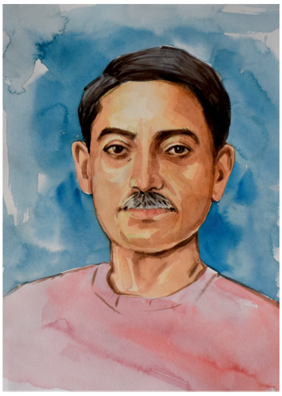
(सन् 1880 – 1936 ई.)

प्रेमचंद का जन्म **सन् 1880 ई.** में वाराणसी जनपद के **लमही** गाँव में हुआ था। उनकी माता का नाम **आनंदी देवी** और पिता का नाम **मुंशी अजायब लाल था**। प्रेमचंद का मूल नाम **धनपत राय** तथा घरेलू नाम **'नवाब'** था। उनकी पढ़ाई–लिखाई उर्दू–फारसी माध्यम में शुरू हुई थी। वे जब आठ साल के थे, तभी उनकी माँ गुजर गईं। उनके पिता पेशे से डाक मुंशी थे। उनका तबादला होता तो उनके साथ प्रेमचंद भी जाते। इसी क्रम में आठवीं तक की उनकी पढ़ाई गोरखपुर से हुई। उसके बाद वाराणसी से। वे जब पंद्रह साल के थे, और नवीं कक्षा में पढ़ते थे तभी उनका विवाह करा दिया गया। उसके कुछ महीनों बाद उनके पिता का निधन हो गया। मैट्रिक पास करने के बाद अपनी पढ़ाई और घर चलाने के लिए वे ट्यूशन पढ़ाने लगे और कुछ दिनों बाद नौकरी आरंभ की। अपनी नौकरी के सिलसिले में वे कई शहरों में रहे।

घरेलू विवादों के कारण पत्नी के घर छोड़कर चले जाने के बाद सन् 1907 ई. में उन्होंने शिवरानी देवी से विवाह किया। असहयोग आंदोलन के दौरान महात्मा गाँधी के आह्वान पर उन्होंने नौकरी छोड़ दी। उसके पश्चात पत्रकारिता और लेखन के प्रति समर्पित हो गए। जीवन के अंतिम वर्षों में वे फिल्म लेखन के लिए मुंबई भी गए। अपनी अत्यधिक व्यस्तता और श्रम के कारण वे अस्वस्थ रहने लगे और अंततः **सन् 1936 ई.** में बनारस में उनका निधन हो गया।

प्रेमचंद ने गद्य की कई विधाओं, यथा–कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, जीवनी, समीक्षा, आलोचना को समृद्ध किया। उन्होंने साहित्य को मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के सार्थक रूपों से जोड़ने का प्रयास किया। उनकी कहानियों को पढ़ते हुए लगता है कि वे हमारे घर–परिवार, पास–पड़ोस की कहानियाँ हैं।

प्रेमचंद ने हिंदी गद्य को स्थानीय मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों और शब्दों से समृद्ध किया। उनकी रचनाओं में अरबी–फारसी के साथ–साथ देशज शब्दों का सुंदर प्रयोग मिलता है। कहानी कहते हुए वे अपने पाठकों को बाँध लेते हैं।

प्रेमचंद की प्रमुख रचनाएँ : **कहानियाँ** : दुनिया का सबसे अनमोल रतन, नमक का दारोगा, बड़े घर की बेटी, परीक्षा, पंच परमेश्वर, सवा सेर गेहूँ, बूढ़ी काकी, अलग्योझा, पूस की रात, दो बैलों की कथा, गुल्ली डंडा, ईदगाह, सद्‌गति, कफन आदि। **उपन्यास** : सेवासदन, रंगभूमि, निर्मला, गबन, कर्मभूमि, गोदान आदि। **संपादन** : मर्यादा, माधुरी, जागरण, हंस।

मंत्र कहानी सन् 1928 ई. में पहली बार प्रकाशित हुई थी। यह कहानी हमें बताती है कि हमारी मनुष्यता अनमोल है। वह किसी भी सांसारिक संपत्ति, धन, सम्मान और पद से उच्च है। दूसरे के दुख, कष्ट और संकट से जुड़कर, उसकी मदद कर ही हम अपने मनुष्य होने का प्रमाण दे सकते हैं। बूढ़े भगत से यही सीख डॉक्टर चड्ढा और कहानी के पाठकों को मिलती है। कहानी का प्रस्तुत पाठ प्रेमचंद के कहानी–संकलन 'पाँच–फूल' से संकलित है।

मंत्र

1

संध्या का समय था। डॉक्टर चड्ढा गोल्फ खेलने को तैयार हो रहे थे। मोटर द्वार के सामने खड़ी थी कि दो कहार एक डोली लिए आते दिखाई दिए। डोली के पीछे एक बूढ़ा लाठी टेकता चला आता था। डोली औषधालय के सामने आकर रुक गई। बूढ़े ने धीरे–धीरे आकर द्वार पर पड़ी हुई चिक से झाँका। ऐसी साफ सुथरी जमीन पर पैर रखते हुए भय रहा था कि कोई घुड़क न बैठे। डॉक्टर साहब को मेज के सामने खड़े देखकर भी उसे कुछ कहने का साहस न हुआ।

डॉक्टर साहब ने चिक के अंदर से गरजकर कहा–कौन है? क्या चाहता है?

बूढ़े ने हाथ जोड़कर कहा–हजूर बड़ा गरीब आदमी हूँ। मेरा लड़का कई दिन से....

डॉक्टर साहब ने सिगार जलाकर कहा–कल सबेरे आओ, कल सबेरे; हम इस वक्त मरीजों को नहीं देखते।

बूढ़े ने घुटने टेककर जमीन पर सिर रख दिया और बोला–दुहाई है सरकार की, लड़का मर जाएगा। हजूर, चार दिन से आँखें नहीं... .

डॉक्टर चड्ढा ने कलाई पर नजर डाली। केवल 10 मिनट का समय और बाकी था। गोल्फ–स्टिक खूँटी से उतारते हुए बोले–कल सबेरे आओ, कल सबेरे; यह हमारे खेलने का समय है।

बूढ़े ने पगड़ी उतारकर चौखट पर रख दी और रोकर बोला–हजूर एक निगाह देख लें। बस एक निगाह! लड़का हाथ से चला जाएगा हजूर, सात लड़कों में यही एक बच रहा है हजूर, हम दोनों आदमी रो–रोकर मर जाएँगे, सरकार, आपकी बढ़ती होय, दीनबंधु।

ऐसे उजड्ड देहाती यहाँ प्रायः रोज ही आया करते थे। डॉक्टर साहब उनके स्वभाव से खूब परिचित थे। कोई कितना ही कुछ कहे; पर वे अपनी ही रट लगाते जाएँगे। किसी की सुनेंगे नहीं। धीरे से चिक उठाई और बाहर निकलकर मोटर की तरफ चले। बूढ़ा यह कहता हुआ उनके पीछे दौड़ा–सरकार बड़ा धरम होगा, हजूर दया कीजिए, बड़ा दीन–दुखी हूँ, संसार में कोई और नहीं है, बाबूजी!

मगर डॉक्टर साहब ने उसकी ओर मुँह फेरकर देखा तक नहीं, मोटर पर बैठकर बोले–कल सबेरे आना।

मोटर चली गई। बूढ़ा कई मिनट तक मूर्ति की भाँति निश्चल खड़ा रहा। संसार में ऐसे मनुष्य भी होते हैं, जो अपने आमोद–प्रमोद के आगे किसी की जान की भी परवा नहीं करते, शायद इसका उसे अब भी विश्वास न आता था। सभ्य–संसार इतना निर्मम, इतना कठोर है, इसका ऐसा मर्मभेदी अनुभव अब तक न हुआ था। वह उन पुराने जमाने के जीवों में था, जो लगी हुई आग को बुझाने, मुर्दे को कंधा देने, किसी के छप्पर को उठाने और किसी कलह को शांत करने के लिए सदैव तैयार रहते थे। जब तक बूढ़े को मोटर दिखाई दी, वह खड़ा टकटकी लगाए उस ओर ताकता रहा। शायद उसे अब भी डॉक्टर साहब के लौट आने की आशा थी। फिर उसने कहारों से डोली उठाने को कहा। डोली जिधर से आई थी, उधर ही चली गई। चारों ओर से निराश होकर वह डॉक्टर चड्ढा के पास आया था। इनकी बड़ी तारीफ सुनी थी। यहाँ से निराश होकर फिर वह किसी दूसरे डॉक्टर के पास न गया। किस्मत ठोंक ली।

उसी रात को उसका हँसता–खेलता सात साल का बालक अपनी बाल लीला समाप्त करके इस संसार से सिधार गया। बूढ़े माँ–बाप के जीवन का यही एक आधार था। इसी का मुँह देखकर जीते थे। इस दीपक के बुझते ही जीवन की अँधेरी रात भाँय–भाँय करने लगी। बुढ़ापे की विशाल ममता टूटे हुए हृदय से निकलकर उस अँधकार में आर्त स्वर से रोने लगी।

2

कई साल गुजर गए। डॉक्टर चड्ढा ने खूब यश और धन कमाया, लेकिन इसके साथ ही अपने स्वास्थ्य की रक्षा भी की, जो एक असाधारण बात थी। यह उनके नियमित जीवन का आशीर्वाद था कि 50 वर्ष की अवस्था में उनकी चुस्ती और फुर्ती युवकों को भी लज्जित करती थी। उनके हर एक काम का समय नियत था। इस नियम से वह जौ–भर भी न टलते थे। बहुधा लोग स्वास्थ्य के नियमों का पालन उस समय करते हैं, जब रोगी हो जाते हैं। डॉक्टर चड्ढा उपचार और संयम का रहस्य खूब समझते थे। उनकी संतान–संख्या भी इसी नियम के अधीन थी। उनके केवल दो बच्चे हुए, एक लड़का और एक लड़की। तीसरी संतान न हुई। इसलिए श्रीमती चड्ढा भी अभी जवान मालूम होती थीं। लड़की का तो विवाह हो चुका था। लड़का कॉलेज में पढ़ता था। वही माता–पिता के जीवन का आधार था। शील और विनय का पुतला, बड़ा ही रसिक, बड़ा ही उदार, विद्यालय का गौरव, युवक समाज की शोभा, मुखमंडल से तेज की छटा–सी निकलती थी। आज उसी की बीसवीं सालगिरह थी।

संध्या का समय था। हरी–हरी घास पर कुर्सियाँ बिछी हुई थीं। शहर के रईस और हुक्काम एक तरफ, कॉलेज के छात्र दूसरी तरफ, बैठे भोजन कर रहे थे। बिजली के प्रकाश से सारा मैदान जगमगा रहा था। आमोद–प्रमोद का सामान भी जमा था। छोटा–सा प्रहसन खेलने की तैयारी थी। प्रहसन स्वयं कैलासनाथ ने लिखा था। वही मुख्य ऐक्टर भी था। इस समय वह

एक रेशमी कमीज पहने, नंगे सिर, नंगे पाँव, इधर से उधर मित्रों की आव–भगत में लगा हुआ था। कोई पुकारता; कैलास जरा इधर आना, कोई उधर से बुलाता–कैलास, क्या उधर ही रहोगे। सभी उसे छेड़ते थे, चुहलें करते थे। बेचारे को जरा दम मारने का अवकाश न मिलता था।

सहसा एक रमणी ने उसके पास आकर कहा–क्यों कैलास, तुम्हारे साँप कहाँ हैं? जरा मुझे दिखा दो।

कैलास ने उससे हाथ मिलाकर कहा–मृणालिनी, इस वक्त क्षमा करो, कल दिखा दूँगा।

मृणालिनी ने आग्रह किया–जी नहीं, तुम्हें दिखाना पड़ेगा, मैं आज नहीं मानने की, तुम रोज कल–कल करते रहते हो।

मृणालिनी और कैलास दोनों सहपाठी थे और एक दूसरे के प्रेम में पगे हुए। कैलास को साँपों के पालने, खेलाने और नचाने का शौक था। तरह–तरह के साँप पाल रखे थे। उनके स्वभाव और चरित्र की परीक्षा करते रहते थे। थोड़े दिन हुए, उन्होंने विद्यालय में 'साँपों' पर एक मारके का व्याख्यान दिया था। साँपों को नचाकर दिखाया भी था। प्राणी–शास्त्र के बड़े–बड़े पंडित भी यह व्याख्यान सुनकर दंग रह गए थे। यह विद्या उसने एक बूढ़े सपेरे से सीखी थी। साँपों की जड़ी–बूटियाँ जमा करने का उसे मरज था। इतना पता–भर मिल जाए कि किसी व्यक्ति के पास कोई अच्छी जड़ी है, फिर उसे चैन न आता था। उसे लेकर ही छोड़ता था। यही व्यसन था। इस पर हजारों रुपए फूँक चुका था। मृणालिनी कई बार आ चुकी थी; पर कभी साँपों के देखने के लिए इतनी उत्सुक न हुई थी। कह नहीं सकते, आज उसकी उत्सुकता सचमुच जाग गई थी, या वह कैलास पर अपने अधिकार का प्रदर्शन करना चाहती थी; पर उसका आग्रह बेमौका था। उस कोठरी में कितनी भीड़ लग जाएगी, भीड़ को देखकर साँप कितने चौकेंगे और रात के समय उन्हें छेड़ा जाना कितना बुरा लगेगा, इन बातों का उसे जरा भी ध्यान न आया।

कैलास ने कहा–नहीं, कल जरूर दिखा दूँगा। इस वक्त अच्छी तरह दिखा भी तो न सकूँगा, कमरे में तिल रखने की जगह भी न मिलेगी।

एक महाशय ने छेड़कर कहा–दिखा क्यों नहीं देते जी, जरा–सी बात के लिए इतना टाल मटोल कर रहे हो। मिस गोविंद, हर्गिज न मानना। देखें कैसे नहीं दिखाते!

दूसरे महाशय ने और रद्दा चढ़ाया–मिस गोविंद इतनी सीधी और भोली हैं, तभी आप इतना मिजाज करते हैं। दूसरी सुंदरी होती तो इसी बात पर बिगड़ खड़ी होती।

तीसरे साहब ने मजाक उड़ाया–अजी बोलना छोड़ देती भला कोई बात है! इस पर आपको दावा है कि मृणालिनी के लिए जान हाजिर है।

मृणालिनी ने देखा कि ये शोहदे उसे चंग पर चढ़ा रहे हैं, तो बोली–आप लोग मेरी वकालत न करें, मैं खुद अपनी वकालत कर लूँगी। मैं इस वक्त साँपों का तमाशा नहीं देखना चाहती। चलो छुट्टी हुई।

इस पर मित्रों ने ठट्ठा लगाया। एक साहब बोले– देखना तो आप सब कुछ चाहें, पर कोई दिखाए भी तो?

कैलास को मृणालिनी की झेंपी हुई सूरत देखकर मालूम हुआ कि इस वक्त उसका इनकार वास्तव में उसे बुरा लगा है। ज्यों ही प्रीतिभोज समाप्त हुआ और गाना शुरू हुआ, उसने मृणालिनी और अन्य मित्रों को साँपों के दरवे के सामने ले जाकर महुअर बजाना शुरू किया। फिर एक–एक खाना खोलकर एक–एक साँप को निकालने लगा। वाह! क्या कमाल था! ऐसा जान पड़ता था कि ये कीड़े उसकी एक–एक बात, उसके मन का एक–एक भाव समझते हैं। किसी को उठा लिया, किसी को गर्दन में डाल लिया, किसी को हाथ में लपेट लिया। मृणालिनी बार–बार मना करती कि इन्हें गर्दन में न डालो, दूर ही से दिखा दो। बस जरा नचा दो। कैलास की गर्दन में साँपों को लिपटते देखकर उसकी जान निकली जाती थी। पछता रही थी कि मैंने व्यर्थ ही इनसे साँप दिखाने को कहा; मगर कैलास एक न सुनता था। प्रेमिका के सम्मुख अपनी सर्प–कला प्रदर्शन का ऐसा अवसर पाकर वह कब चूकता। एक मित्र ने टीका की–दाँत तोड़ डाले होंगे?

कैलास हँसकर बोला–दाँत तोड़ डालना मदारियों का काम है। किसी के दाँत नहीं तोड़े गए। कहिए तो दिखा दूँ? यह कहकर उसने एक काले साँप को पकड़ लिया और बोला–मेरे पास इससे बड़ा और जहरीला साँप दूसरा नहीं है। अगर किसी को काट ले तो आदमी आनन–फानन मर जाए। लहर भी न आए। इसके काटे का मंत्र नहीं। इसके दाँत दिखा दूँ?

मृणालिनी ने उसका हाथ पकड़कर कहा–नहीं, नहीं, कैलास, ईश्वर के लिए इसे छोड़ दो! तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ!

इस पर एक दूसरे मित्र बोले–मुझे तो विश्वास नहीं आता, लेकिन तुम कहते हो तो मान लूँगा।

कैलास ने साँप की गर्दन पकड़कर कहा–नहीं साहब, आप आँखों से देखकर तब मानिए दाँत तोड़कर बस में किया तो क्या किया। साँप बड़ा समझदार होता है। अगर उसे विश्वास हो जाए कि इस आदमी से मुझे कोई हानि न पहुँचेगी तो वह उसे हर्गिज न काटेगा।

मृणालिनी ने जब देखा कि कैलास पर इस वक्त भूत सवार है तो उसने यह तमाशा बंद करने के विचार से कहा–अच्छा भई, अब यहाँ से चलो, देखो गाना शुरू हो गया। आज मैं भी कोई चीज सुनाऊँगी। यह कहते हुए उसने कैलास का कंधा पकड़कर चलने का इशारा किया

और कमरे से निकल गई; मगर कैलास विरोधियों का शंका समाधान करके ही दम लेना चाहता था। उसने साँप की गर्दन पकड़कर जोर से दबाई, इतनी जोर से दबाई कि उसका मुँह लाल हो गया, देह की सारी नसें तन गईं। साँप ने अब तक उसके हाथों ऐसा व्यवहार न देखा था। उसकी समझ में न आता था कि यह मुझसे क्या चाहते हैं। उसे शायद भ्रम हुआ कि यह मुझे मार डालना चाहते हैं। अतएव वह आत्म–रक्षा के लिए तैयार हो गया।

कैलास ने उसकी गर्दन खूब दबाकर उसका मुँह खोल दिया और उसके जहरीले दाँत दिखाते हुए बोला–जिन सज्जनों को शक हो, आकर देख लें। आया विश्वास, या अब भी कुछ शक है? मित्रों ने आकर उसके दाँत देखे और चकित हो गए। प्रत्यक्ष प्रमाण के सामने संदेह को स्थान कहाँ। मित्रों की शंका निवारण करके कैलास ने साँप की गर्दन ढीली कर दी और उसे जमीन पर रखना चाहा, पर वह काला गेहुवन क्रोध से पागल हो रहा था। गर्दन नरम पड़ते ही उसने सिर उठाकर कैलास की उँगली में जोर से काटा और वहाँ से भागा। कैलास की उँगली से टप–टप खून टपकने लगा। उसने जोर से उँगली दबा ली और अपने कमरे की तरफ दौड़ा। वहाँ मेज की दराज में एक जड़ी रखी हुई थी, जिसे पीसकर लगा देने से घातक विष भी रफू हो जाता था। मित्रों में हलचल पड़ गई। बाहर महफिल में भी खबर हुई। डॉक्टर साहब घबड़ाकर दौड़े। फौरन उँगली की जड़ कसकर बाँधी गई और जड़ी पीसने के लिए दी गई। डॉक्टर साहब जड़ी के कायल न थे। वह उँगली का डसा भाग नश्तर से काट देना चाहते थे; मगर कैलास को जड़ी पर पूर्ण विश्वास था। मृणालिनी प्यानो पर बैठी हुई थी। यह खबर सुनते ही दौड़ी, और कैलास की उँगली से टपकते हुए खून को रूमाल से पोंछने लगी। जड़ी पीसी जाने लगी, पर उसी एक मिनट में कैलास की आँखें झपकने लगीं, ओठों पर पीलापन दौड़ने लगा। यहाँ तक कि वह खड़ा न रह सका। फर्श पर बैठ गया। सारे मेहमान कमरे में जमा हो गए। कोई कुछ कहता था, कोई कुछ। इतने में जड़ी पिसकर आ गई। मृगालिनी ने उँगली पर लेप किया। एक मिनट और बीता। कैलास की आँखें बंद हो गईं। वह लेट गया और हाथ से पंखा झलने का इशारा किया। माँ ने दौड़कर उसका सिर गोद में रख लिया और बिजली का टेबुलफैन लगा दिया गया।

डॉक्टर साहब ने झुककर पूछा–कैलास कैसी तबीयत है? कैलास ने धीरे से हाथ उठा दिया, पर कुछ बोल न सका! मृणालिनी ने करुण स्वर में कहा–क्या जड़ी कुछ असर न करेगी? डॉक्टर साहब ने सिर पकड़कर कहा–क्या बतलाऊँ, मैं इसकी बातों में आ गया। अब तो नश्तर से भी कुछ फायदा न होगा।

आध घंटे तक यही हाल रहा। कैलास की दशा प्रतिक्षण बिगड़ती जाती थी। यहाँ तक कि उसकी आँखें पथरा गईं, हाथ पाँव ठंडे हो गए, मुख की कांति मलिन पड़ गई, नाड़ी का कहीं पता नहीं। मौत के सारे लक्षण दिखाई देने लगे। घर में कुहराम मच गया। मृणालिनी एक

ओर सिर पीटने लगी, माँ अलग पछाड़ें खाने लगी। डॉक्टर चड्ढा को मित्रों ने पकड़ लिया, नहीं तो वह नश्तर अपनी गर्दन पर मार लेते।

एक महाशय बोले—कोई मंत्र झाड़ने वाला मिले, तो संभव है अब भी जान बच जाए।

एक मुसलमान सज्जन ने इसका समर्थन किया—अरे साहब, कब्र में पड़ी हुई लाशें जिंदा हो गई हैं। ऐसे—ऐसे बाकमाल पड़े हुए हैं।

डॉक्टर चड्ढा बोले—मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गया था कि इसकी बातों में आ गया। नश्तर लगा देता तो यह नौबत ही क्यों आती। बार—बार समझाता रहा कि बेटा साँप न पालो; मगर कौन सुनता था! बुलाइए, किसी झाड़—फूँक करने वाले ही को बुलाइए। मेरा सब कुछ ले ले, मैं अपनी सारी जायदाद उसके पैरों पर रख दूँगा। लँगोटी बाँधकर घर से निकल जाऊँगा; मगर मेरा कैलास, मेरा प्यारा कैलास उठ बैठे। ईश्वर के लिए किसी को बुलाइए।

एक महाशय का किसी झाड़ने वाले से परिचय था। वह दौड़कर उसे बुला लाए; मगर कैलास की सूरत देखकर उसे मंत्र चलाने की हिम्मत न पड़ी। बोला—अब क्या हो सकता है सरकार, जो कुछ होना था, हो चुका!

अरे मूर्ख, यह क्यों नहीं कहता कि जो कुछ न होना था, हो चुका। जो कुछ होना था, वह कहाँ हुआ? माँ—बाप ने बेटे का सेहरा कहाँ देखा! मृणालिनी का कामना तरु क्या पल्लव और पुष्प से रंजित हो उठा? मन के वह स्वर्णस्वप्न, जिनसे जीवन आनंद का स्रोत बना हुआ था, क्या वह पूरे हो गए? जीवन के नृत्यमय, तारिका—मंडित सागर में आमोद की बहार लूटते हुए क्या उनकी नौका जलमग्न नहीं हो गई? जो न होना था वह हो गया!

वही हरा—भरा मैदान था, वही सुनहरी चाँदनी एक निःशब्द संगीत की भाँति प्रकृति पर छाई हुई थी, वही मित्र समाज था, वही मनोरंजन के सामान थे, मगर जहाँ हास्य की ध्वनि थी, वहाँ अब करुण क्रंदन और अश्रु प्रवाह था।

3

शहर से कई मील दूर एक छोटे से घर में एक बूढ़ा और बुढ़िया अंगीठी के सामने बैठे जाड़े की रात काट रहे थे। बूढ़ा नारियल पीता था, और बीच—बीच में खाँसता था। बुढ़िया दोनों घुटनियों में सिर डाले आग की ओर ताक रही थी। एक मिट्टी के तेल की कुप्पी ताक पर जल रही थी! घर में न चारपाई थी, न बिछौना। एक किनारे थोड़ी सी पुआल पड़ी हुई थी। इसी कोठरी में एक चूल्हा था। बुढ़िया दिन भर उपले और सूखी लकड़ियाँ बटोरती थी। बुढा रस्सी बटकर बाजार में बेच लाता था। यही उनकी जीविका थी। उन्हें न किसी ने रोते देखा, न हँसते। उनका सारा समय जीवित रहने में कट जाता था। मौत द्वार पर खड़ी थी, रोने या हँसने की कहाँ फुर्सत! बुढ़िया ने पूछा—कल के लिए सन तो है ही नहीं, काम क्या करोगे?

'जाकर झगडू साह से दस सेर सन उधार लाऊँगा।'

'उसके पहले के पैसे तो दिए ही नहीं, और उधार कैसे देगा?'

'न देगा, न सही। घास तो कहीं नहीं गई है। दोपहर तक क्या दो आने की भी न काटूँगा?'

इतने में एक आदमी ने द्वार पर आवाज दी–भगत, भगत, क्या सो गए? जरा किवाड़ खोलो।

भगत ने उठकर किवाड़ खोल दिए। एक आदमी ने अंदर आकर कहा–कुछ सुना, डॉक्टर चड्ढा बाबू के लड़के को साँप ने काट लिया।

भगत ने चौंककर कहा–चड्ढा बाबू के लड़के को! वही चड्ढा बाबू हैं न, जो छावनी में बंगले में रहते हैं?

'हाँ–हाँ वही। शहर में हल्ला मचा हुआ है। जाते हो तो जाओ, आदमी बन जाओगे?'

बूढ़े ने कठोर भाव से सिर हिलाकर कहा–मैं नहीं जाता। मेरी बला जाए। वही चड्ढा हैं। खूब जानता हूँ। भैया को लेकर उन्हीं के पास गया था। खेलने जा रहे थे। पैरों पर गिर पड़ा कि एक नजर देख लीजिए; मगर सीधे मुँह बात तक न की। भगवान बैठे सुन रहे थे। अब जान पड़ेगा कि बेटे का गम कैसा होता है। कई लड़के हैं?

'नहीं जी, यही तो एक लड़का था। सुना है सबने जवाब दे दिया है।'

'भगवान बड़ा कारसाज है। उस बखत मेरी आँखों से आँसू निकल पड़े थे; पर इन्हें तनिक भी दया न आई थी। मैं तो उनके द्वार पर होता, तो भी बात न पूछता।'

'तो न जाओगे? हमने तो सुना था, सो कह दिया।'

'अच्छा किया–अच्छा किया, कलेजा ठंडा हो गया, आँखें ठंडी हो गईं। लड़का भी ठंडा हो गया होगा! तुम जाओ। आज चैन की नींद सोऊँगा। (बुढ़िया से) जरा तमाखू ले ले। एक चिलम और पीऊँगा। अब मालूम होगा लाला को! सारी साहिबी निकल जाएगी, हमारा क्या बिगड़ा। लड़के के मर जाने से कुछ राज तो नहीं चला गया। जहाँ छह बच्चे गए थे वहाँ एक और चला गया। तुम्हारा तो राज सूना हो जाएगा। उसी के वास्ते सबका गला दबा–दबाकर जोड़ा था न! अब क्या करोगे। एक बार देखने जाऊँगा; पर कुछ दिन बाद मिजाज का हाल पूछूँगा।'

आदमी चला गया। भगत ने किवाड़ बंद कर लिए, तब चिलम पर तमाखू रखकर पीने लगा।

बुढ़िया ने कहा–इतनी रात गए जाड़े–पाले में कौन जाएगा।

'अरे! दोपहर ही होता तो मैं न जाता। सवारी दरवाजे पर लेने आती तो भी न जाता। भूल नहीं गया हूँ। पन्ना की सूरत आज भी आँखों में फिर रही है। इस निर्दयी ने उसे एक नजर देखा तक नहीं! क्या मैं न जानता था कि वह न बचेगा? खूब जानता था। चड्ढा भगवान नहीं थे कि उसके एक निगाह देख लेने से अमृत बरस जाता। नहीं, खाली मन की दौड़ थी। जरा तसल्ली हो जाती; बस, इसीलिए उनके पास दौड़ा गया था। अब किसी दिन जाऊँगा और कहूँगा, क्यों साहब, कहिए क्या रंग है? दुनिया बुरा कहेगी, कहे; कोई परवाह नहीं। छोटे आदमियों में तो सब ऐब होते ही हैं। बड़ों में कोई ऐब नहीं होता। देवता होते हैं।'

भगत के लिए जीवन में यह पहला अवसर था कि ऐसा समाचार पाकर वह बैठा रह गया हो। 80 वर्ष के जीवन में ऐसा कभी न हुआ कि साँप की खबर पाकर वह दौड़ा न गया हो। माघ–पूस की अँधेरी रात, चैत–बैसाख की धूप और लू, सावन–भादों के चढ़े हुए नदी और नाले, किसी की उसने कभी परवाह न की। वह तुरंत घर से निकल पड़ता था, निस्स्वार्थ, निष्काम। लेने–देने का विचार कभी दिल में आया ही नहीं। यह ऐसा काम ही न था। जान का मूल्य कौन दे सकता है? यह एक पुण्य कार्य था। सैकड़ों निराशों को उसके मंत्रों ने जीवन–दान दे दिया था; पर आज वह घर से कदम नहीं निकल सका। यह खबर सुनकर भी सोने जा रहा है।

बुढ़िया ने कहा–तमाखू अंगीठी के पास रखी हुई है। उसके भी आज ढाई पैसे हो गए। देती ही न थी।

बुढ़िया यह कहकर लेटी। बूढ़े ने कुप्पी बुझाई, कुछ देर खड़ा रहा, फिर बैठ गया। अंत को लेट गया; पर यह खबर उसके हृदय पर बोझ की भाँति रखी हुई थी। उसे मालूम हो रहा था, उसकी कोई चीज खो गई है, जैसे सारे कपड़े गीले हो गए हैं, या पैरों में कीचड़ लगा हुआ है, जैसे कोई उसके मन में बैठा हुआ उसे घर से निकलने के लिए कुरेद रहा है। बुढ़िया जरा देर में खर्राटे लेने लगी। बूढ़े बातें करते–करते सोते हैं और जरा–सा खटका होते ही जागते हैं। तब भगत उठा, अपनी लकड़ी उठा ली, और धीरे से किवाड़ खोले।

बुढ़िया ने पूछा–कहाँ जाते हो?

'कहीं नहीं, देखता था कितनी रात है।'

'अभी बहुत रात है, सो जाओ।'

'नींद नहीं आती।'

'नींद काहे को आएगी? मन तो चड्ढा के घर पर लगा हुआ है।'

'चड्ढा ने मेरे साथ कौन–सी नेकी कर दी है जो वहाँ जाऊँ। वह आकर पैरों पड़े तो भी न जाऊँ।'

'उठे तो तुम इसी इरादे से हो।'

'नहीं री, ऐसा पागल नहीं हूँ कि जो मुझे काँटे बोवे उसके लिए फूल बोता फिरूँ।'

बुढ़िया फिर सो गई। भगत ने किवाड़ लगा दिए और फिर आकर बैठा, पर उसके मन की कुछ वही दशा थी जो बाजे की आवाज कान में पड़ते ही, उपदेश सुनने वालों की होती है। आँखें चाहे उपदेशक की ओर हों, पर कान बाजे ही की ओर होते हैं। दिल में भी बाजे की ध्वनि गूँजती रहती शर्म के मारे, जगह से नहीं उठता। निर्दयी प्रतिघात का भाव भगत के लिए उपदेशक था, पर हृदय उस अभागे युवक की ओर था जो इस समय मर रहा था, जिसके लिए एक–एक पल का विलंब घातक था।

उसने फिर किवाड़ खोले, इतने धीरे से कि बुढ़िया को भी खबर न हुई। बाहर निकल आया। उसी वक्त गाँव का चौकीदार गश्त लगा रहा था। बोला–कैसे उठे भगत, आज तो बड़ी सर्दी है! कहीं जा रहे हो क्या?

भगत ने कहा–नहीं जी, जाऊँगा कहाँ! देखता था अभी कितनी रात है, भला कै बजे होंगे?

चौकीदार बोला–एक बजा होगा और क्या, अभी थाने से आ रहा था; तो डॉक्टर चड्ढा बाबू के बँगले पर बड़ी भीड़ लगी हुई थी। उनके लड़के का हाल तो तुमने सुना होगा, कीड़े ने छू लिया है। चाहे मर भी गया हो। तुम चले जाओ, तो साइत बच जाए। सुना दस हजार तक देने को तैयार हैं।

भगत–मैं तो न जाऊँ, चाहे वह दस लाख भी दें। मुझे दस हजार या दस लाख लेकर करना क्या है? कल मर जाऊँगा, फिर कौन भोगने वाला बैठा हुआ है !

चौकीदार चला गया ! भगत ने आगे पैर बढ़ाया। जैसे नशे में आदमी की देह अपने काबू में नहीं रहती, पैर कहीं रखता है, पड़ता कहीं है, कहता कुछ है, जबान से निकलता कुछ है, वही हाल इस समय भगत का था। मन में प्रतिकार था, दंभ था, हिंसा थी, पर कर्म मन के अधीन न था। जिसने कभी तलवार नहीं चलाई, वह इरादा करने पर भी तलवार नहीं चला सकता। उसके हाथ काँपते हैं, उठते ही नहीं!

भगत लाठी खट–खट करता लपका चला जाता था। चेतना रोकती थी, उपचेतना ठेलती थी। सेवक स्वामी पर हावी था।

आधी रात निकल जाने के बाद सहसा भगत रुक गया। हिंसा ने क्रिया पर विजय पाई–मैं यों ही इतनी दूर चला आया। इस जाड़े पाले में मरने की मुझे क्या पड़ी थी? आराम से सोया क्यों नहीं? नींद न आती न सही, दो–चार भजन ही गाता। व्यर्थ इतनी दूर दौड़ा आया। चड्ढा का लड़का रहे, या मरे, मेरी बला से, मेरे साथ उन्होंने ऐसा कौन–सा सलूक किया था कि मैं उनके लिए मरूँ। दुनिया में हजारों मरते हैं, हजारों जीते हैं। मुझे किसी के मरने–जीने से मतलब!

मगर उपचेतना ने अब एक दूसरा रूप धारण किया, जो हिंसा से बहुत कुछ मिलता–जुलता था–वह झाड़–फूँक करने नहीं जा रहा है, वह देखेगा कि लोग क्या कर रहे हैं, जरा डॉक्टर साहब का रोना–पीटना देखेगा, किस तरह सिर पीटते हैं, किस तरह पछाड़ें खाते हैं। वह देखेगा कि बड़े लोग भी छोटों की भाँति रोते हैं या सबर कर जाते हैं। वह लोग तो विद्वान होते हैं, सबर कर जाते होंगे। हिंसा भाव को यों धीरज देता हुआ वह फिर आगे बढ़ा।

इतने में दो आदमी आते दिखाई दिए। दोनों बातें करते चले आ रहे थे–चड्ढा बाबू का घर उजड़ गया, यही तो एक लड़का था। भगत के कान में यह आवाज पड़ी। उसकी चाल और भी तेज हो गई। थकन के मारे पाँव न उठते थे। शिरोभाग इतना बढ़ा जाता था, मानो अब मुँह के बल गिर पड़ेगा। इस तरह वह कोई 10 मिनट चला होगा कि डॉक्टर साहब का बंगला नजर आया। बिजली की बत्तियाँ जल रही थीं; मगर सन्नाटा छाया हुआ था। रोने–पीटने की आवाज भी न आती थी। भगत का कलेजा धक–धक करने लगा। कहीं मुझे बहुत देर तो नहीं हो गई। वह दौड़ने लगा। अपनी उम्र में वह इतना तेज कभी न दौड़ा था। बस, यही मालूम होता था, मानो उसके पीछे मौत दौड़ी आ रही है।

4

दो बज गए थे। मेहमान विदा हो गए थे। रोनेवालों में केवल आकाश के तारे रह गए थे और सभी रो–रोकर थक गए थे। बड़ी उत्सुकता के साथ लोग रह–रहकर आकाश की ओर देखते थे कि किसी तरह सुबह हो और लाश गंगा की गोद में दे दी जाए।

सहसा भगत ने द्वार पर पहुँचकर आवाज दी। डॉक्टर साहब समझे कोई मरीज आया होगा। किसी और दिन उन्होंने उस आदमी को दुत्कार दिया होता, मगर आज बाहर निकल आए। देखा एक बूढ़ा आदमी खड़ा है, कमर झुकी हुई, पोपला मुँह, भौंहें तक सफेद हो गई थीं। लकड़ी के सहारे काँप रहा था। बड़ी नम्रता से बोले–क्या है भई, आज तो हमारे ऊपर ऐसी मुसीबत पड़ गई है कि कुछ कहते नहीं बनता, फिर कभी आना। इधर एक महीना तक तो शायद मैं किसी मरीज को न देख सकूँगा।

भगत ने कहा–सुन चुका हूँ बाबूजी, इसीलिए आया हूँ। भैया कहाँ हैं, जरा मुझे भी दिखा दीजिए। भगवान बड़ा कारसाज है, मुरदे को भी जिला सकता है। कौन जाने, अब भी उसे दया आ जाए!

चड्ढा ने व्यथित स्वर से कहा–चलो देख लो, मगर तीन–चार घंटे हो गए। जो कुछ होना था हो चुका। बहुतेरे झाड़ने–फूँकनेवाले देख–देखकर चले गए।

डॉक्टर साहब को आशा तो क्या होती, हाँ बूढ़े पर दया आ गई, अंदर ले गए। भगत ने लाश को एक मिनट तक देखा, तब मुसकराकर बोला–अभी कुछ नहीं बिगड़ा है बाबूजी।

वाह ! नारायन चाहेंगे तो आध घंटे में भैया उठ बैठेंगे। आप नाहक दिल छोटा कर रहे हैं। जरा कहारों से कहिए पानी तो भरें।

कहारों ने पानी भर—भरकर कैलास को नहलाना शुरू किया। पाइप बंद हो गया था। कहारों को संख्या अधिक न थी। इसलिए मेहमानों ने अहाते से पानी भर—भर कहारों को दिया। मृणालिनी कलसा लिए पानी ला रही थी। बूढ़ा भगत खड़ा मुसकिरा—मुसकिरा कर मंत्र पढ़ रहा था, मानो विजय उसके सामने खड़ी है जब एक बार मंत्र समाप्त हो जाता, तब वह एक जड़ी कैलास को सुँघा देता। इस तरह न जाने कितने घड़े कैलास के सिर पर डाले गए और न जाने कितनी बार भगत ने मंत्र फूँका। आखिर जब उषा ने अपनी लाल—लाल आँखें खोलीं, तो कैलास की लाल आँखें भी खुल गईं। एक क्षण में उसने अँगड़ाई ली और पानी पीने को माँगा। डॉक्टर चड्ढा ने दौड़कर नारायणी को गले लगा लिया, नारायणी दौड़कर भगत के पैरों पर गिर पड़ी और मृणालिनी कैलास के सामने आँखों में आँसू भरे पूछने लगी—अब कैसी तबीयत है?

एक क्षण में चारों तरफ खबर फैल गई। मित्रगण मुबारकबाद देने आने लगे। डॉक्टर साहब बड़े श्रद्धाभाव से हर एक के सामने भगत का यश गाते फिरते थे। सभी लोग भगत के दर्शनों के लिए उत्सुक हो उठे; मगर अंदर जाकर देखा, तो भगत का कहीं पता न था। नौकरों ने कहा—अभी तो यहीं बैठे चिलम पी रहे थे। हम लोग तमाखू देने लगे, तो नहीं ली, अपने पास से तमाखू निकालकर भरी। यहाँ तो भगत की चारों ओर तलाश होने लगी, और भगत लपका हुआ घर चला जा रहा था कि बुढ़िया के उठने से पहले घर पहुँच जाऊँ!

जब मेहमान लोग चले गए तो डॉक्टर साहब ने नारायणी से कहा—बुड्ढा न जाने कहाँ चला गया। एक चिलम तमाखू का भी रवादार न हुआ!

नारायणी—मैंने तो सोचा था, इसे कोई बड़ी रकम दूँगी।

चड्ढा—रात को तो मैंने नहीं पहचाना; पर जरा साफ हो जाने पर पहचान गया। एक बार यह एक मरीज को लेकर आया था। मुझे अब याद आता है कि मैं खेलने जा रहा था और मरीज को देखने से इनकार कर दिया था। आज उस दिन की बात याद करके मुझे जितनी ग्लानि हो रही है, उसे प्रकट नहीं कर सकता। मैं उसे अब खोज निकालूँगा और उसके पैरों पर गिरकर अपना अपराध क्षमा कराऊँगा। वह कुछ लेगा नहीं, यह जानता हूँ। उसका जन्म यश की वर्षा करने ही के लिए हुआ है। उसकी सज्जनता ने मुझे ऐसा आदर्श दिखा दिया है, जो अब से जीवनपर्यंत मेरे सामने रहेगा।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. प्रेमचंद का जन्म हुआ था :

   (क) गोरखपुर (ख) बस्ती (ग) चंदौली (घ) लमही

2. निम्नलिखित में से किस पत्रिका से प्रेमचंद का जुड़ाव नहीं रहा :

   (क) ब्राह्मण (ख) मर्यादा (ग) हंस (घ) माधुरी

3. निम्नलिखित में से कहानी नहीं है :

   (क) गुल्ली डंडा (ख) रंगभूमि (ग) पंच परमेश्वर (घ) परीक्षा

4. निम्नलिखित में से उपन्यास नहीं है :

   (क) गोदान (ख) कर्मभूमि (ग) ईदगाह (घ) रंगभूमि

5. 'मंत्र' कहानी का प्रकाशन वर्ष है :

   (क) 1925 (ख) 1926 (ग) 1927 (घ) 1928

6. 'कामना तरु' में समास है :

   (क) तत्पुरुष (ख) द्वंद्व (ग) द्विगु (घ) अव्ययीभाव

7. भगवान बड़ा कारसाज है–यह किसका कथन है :

   (क) भगत का (ख) कैलास का (ग) कैलास की माँ का (घ) डॉक्टर चड्ढा का

8. 'चैत–बैसाख'–यह कैसा प्रयोग है :

   (क) देशज (ख) तत्सम (ग) तद्भव (घ) विदेशज

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. डॉक्टर चड्ढा ने भगत के बेटे को क्यों नहीं देखा?
2. कहानी के आधार पर कैलास और उसके मित्रों का परिचय अपने शब्दों में दीजिए।
3. बूढ़े भगत की आर्थिक स्थिति कैसी थी? कहानी के आधार पर लिखिए।
4. 'तुम चले जाओ तो साइत बच जाए'–यह कथन किसने, किससे कहा?
5. डॉक्टर चड्ढा के बेटे को साँप काटने की खबर सुनकर बूढ़े भगत के मन में क्या भाव आए?
6. 'अभी बहुत रात है, सो जाओ'–यह किसका कथन है?
7. 'नींद काहे को आएगी? मन तो चड्ढा के घर पर लगा हुआ है।'–भगत की पत्नी ने यह क्यों कहा?
8. 'उनका सारा समय जीवित रहने में कट जाता था। मौत द्वार पर खड़ी थी, रोने या हँसने की कहाँ फुर्सत!'–इस वाक्य का भाव स्पष्ट कीजिए।
9. दुनिया बुरा कहेगी, कहे; कोई परवाह नहीं। छोटे आदमियों में तो सब ऐब होते ही हैं। बड़ों में कोई ऐब नहीं होता।'देवता होते हैं।'–भगत के इस कथन का भाव स्पष्ट कीजिए।

10. 'मैं तो न जाऊँ, चाहे वह दस लाख भी दें। मुझे दस हजार या दस लाख लेकर करना क्या है? कल मर जाऊँगा, फिर कौन भोगने वाला बैठा हुआ है!'–यह कहने के बाद भी भगत डॉक्टर चड्ढा के घर क्यों गया?
11. भगत डॉक्टर चड्ढा के घर से बिना बताए क्यों चला आया?
12. लेखक ने कहानी का शीर्षक 'मंत्र' क्यों रखा? यह कहानी क्या संदेश देती है?
13. पाठ के आधार पर प्रेमचंद का संक्षिप्त जीवन परिचय अपने शब्दों में लिखिए।
14. पाठ के आधार पर प्रेमचंद की भाषा की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

III. दिए गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए

1. संसार में ऐसे मनुष्य भी होते हैं, जो अपने आमोद–प्रमोद के आगे किसी की जान की भी परवा नहीं करते, शायद इसका उसे अब भी विश्वास न आता था। सभ्य–संसार इतना निर्मम, इतना कठोर है, इसका ऐसा मर्मभेदी अनुभव अब तक न हुआ था। वह उन पुराने जमाने के जीवों में था, जो लगी हुई आग को बुझाने, मुर्दे को कंधा देने, किसी के छप्पर को उठाने और किसी कलह को शांत करने के लिए सदैव तैयार रहते थे।
   (क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) 'मर्मभेदी' में कौन–सा प्रत्यय है? उस प्रत्यय से एक अन्य शब्द बनाएँ।

2. बूढ़े ने कुप्पी बुझाई, कुछ देर खड़ा रहा, फिर बैठ गया। अंत को लेट गया; पर यह खबर उसके हृदय पर बोझ की भाँति रखी हुई थी। उसे मालूम हो रहा था, उसकी कोई चीज खो गई है, जैसे सारे कपड़े गीले हो गए हैं, या पैरों में कीचड़ लगा हुआ है, जैसे कोई उसके मन में बैठा हुआ उसे घर से निकलने के लिए कुरेद रहा है। बुढ़िया जरा देर में खर्राटे लेने लगी। बूढ़े बातें करते–करते सोते हैं और जरा–सा खटका होते ही जागते हैं। तब भगत उठा, अपनी लकड़ी उठा ली, और धीरे से किवाड़ खोले।
   (क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
   (ग) 'कपड़ा' के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

3. रात को तो मैंने नहीं पहचाना, पर जरा साफ जाने पर पहचान गया। एक बार यह एक मरीज को लेकर आया था मुझे अब याद आता है कि मैं खेलने जा रहा था और मरीज को देखने से इनकार कर दिया था। आज उस दिन की बात याद करके मुझे जितनी ग्लानि हो रही है, उसे प्रकट नहीं कर सकता। मैं उसे अब खोज निकालूँगा और उसके पैरों पर गिरकर अपना अपराध क्षमा कराऊँगा। वह कुछ लेगा नहीं, यह जानता हूँ। उसका जन्म यश की वर्षा करने ही के लिए हुआ है। उसकी सज्जनता ने मुझे ऐसा आदर्श दिखा दिया है, जो अब से जीवनपर्यंत मेरे सामने रहेगा।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) 'ग्लानि' और 'मरीज' का समानार्थी शब्द लिखिए।

IV. भाषा के रंग :

1. वाक्य प्रयोग द्वारा निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट कीजिए :
   भूत सवार होना, पगड़ी उतारकर रखना, आँखें ठंडी होना, हाथ से चला जाना, लंगोटी बाँधकर निकलना, सीधे मुँह बात न करना
2. निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग बताएँ :
   असहमत, प्रतिघात, आमोद, निवारण, निर्दयी, अधर्म
3. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों की प्रकृति बताएँ :
   गोल्फ, प्रायः, रोज, चौखट, कठोर, सिधार, निगाह, सदैव, कमाल, आनन–फानन, सेहरा, बिछौना, चारपाई, खाँसता, रस्सी, तसल्ली, घातक, परवाह, बाजे, आवाज, तारीफ, बहुधा, तैयार, ऐब, बिदा, नाहक
4. वाक्य प्रयोग द्वारा निम्नलिखित शब्दों का लिंग निर्णय कीजिए :
   प्रकाश, किस्मत, स्वभाव, चरित्र, मूर्ति, गर्दन, तसल्ली, दाँत, संगीत, चूल्हा
5. कहानी के कई वाक्यों में विस्मयादिबोधक चिह्न का प्रयोग है। ऐसे दस वाक्यों का चुनें और बताएँ कि वे संदेहवाचक हैं या विस्मयवाचक।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. इस कहानी में प्रेमचंद भगत के 'मंत्र' द्वारा 'कैलास' की जीवनरक्षा दिखाते हैं। क्या आप मानते हैं कि किसी मंत्र द्वारा सर्पदंश का इलाज हो सकता है। अगर नहीं, तो प्रेमचंद ने ऐसी कहानी क्यों लिखी होगी? प्रेमचंद की दृष्टि में असल विष क्या है? इस पर सोचें और अपने शब्दों में उसे लिखिए।
2. 'मंत्र' शीर्षक से प्रेमचंद ने एक अन्य कहानी लिखी है। उस कहानी को उपलब्ध कर पढ़ें। दोनों कहानियों में कौन–सी कहानी आपको अधिक पसंद आई? यह लिखिए।

शब्दार्थ

मर्मभेदी–मार्मिक, हृदय पर आघात पहुँचानेवाला। **बहुधा**–प्रायः। **प्रहसन**–हास्य प्रधान नाटक। **मारके**–उल्लेखनीय, विशेष। **बेमौका**–उपयुक्त न होना। **सम्मुख**–सामने। **निवारण**–दूर करना। **बाकमाल**–प्रतिभासंपन्न, आश्चर्यजनक कार्य करनेवाला। **सेहरा**–विवाह का मुकुट, मौर। **जीवन पर्यंत**–जीवन भर। **ग्लानि**–पछतावा। **कारसाज**–काम बनानेवाला। **आमोद**–खुशी। **क्रंदन**–रोना। **ऐब**–दोष। **महुअर**–एक प्रकार का बाजा।

■

काका कालेलकर

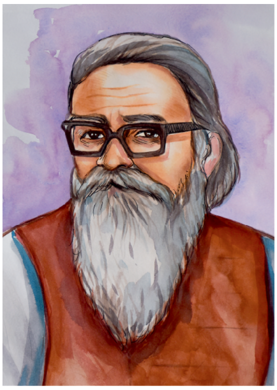

(सन् 1885 – 1981 ई.)

काका कालेलकर का जन्म **सन् 1885 ई.** में महाराष्ट्र के **सतारा** जनपद में हुआ था। उनका मूल नाम **दत्तात्रेय बालकृष्ण कालेलकर** था। उनकी आरंभिक शिक्षा गाँव में हुई और उसके पश्चात पुणे के फर्ग्यूसन कॉलेज से उन्होंने बी.ए. की पढ़ाई की। वे अध्यापन कार्य हेतु एक विद्यालय से जुड़े, किंतु अंग्रेजी सरकार ने शासन का विरोधी मानकर उस विद्यालय को बंद करवा दिया। सन् 1915 ई. में वे महात्मा गाँधी के संपर्क में आए। गाँधी जी के संपर्क में आकर वे पूरी तरह देश सेवा और देशोद्धार के कार्य में लग गए। साबरमती आश्रम से जुड़कर उन्होंने कई भूमिका का निर्वहन किया।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन, भाषा–सुधार और शिक्षा–प्रसार; इन तीनों क्षेत्रों को उन्होंने अलग–अलग नहीं, बल्कि साथ–साथ देखा। और, इन तीनों ही क्षेत्रों में वे एक समान सक्रिय रहे। वे गुजरात विद्यापीठ के कुलपति रहे। गुजरात में हिंदी के प्रचार–प्रसार में वे सक्रिय रहे और स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान कई बार जेल भी गए।

वे बहुभाषाविद थे। अपनी मातृभाषा कोंकणी के अतिरिक्त वे मराठी, गुजराती, हिंदी, अंग्रेजी, बाँग्ला भाषा के मूर्धन्य विद्वान थे। गाँधी जी गुजराती भाषा पर उनके अधिकार को देखकर स्वयं को चौथाई और उन्हें सवाई गाँधी कहते थे।

काका कालेलकर का योगदान हिंदी के प्रचार–प्रसार तक ही सीमित नहीं है। उन्होंने हिंदी गद्य को अपनी प्रवाहपूर्ण और ओजस्वी शैली से समृद्ध किया। कई भाषाओं के उनके ज्ञान और सामाजिक जीवन की सक्रियता ने उनकी भाषा और शैली को विशेष स्वरूप प्रदान किया। वे किसी घुमाव या गूढ़ ढंग के बजाय सीधे–सीधे गहरी बात कहनेवाली शैली के लेखक हैं। संवादात्मकता उसका प्रधान गुण है। स्वभावतः पाठक उनके लिखे हुए के साथ बँध जाता है।

काका कालेलकर साहित्य अकादमी, पद्‍भूषण सहित कई सम्मानों से सम्मानित हुए। वे राज्यसभा के भी सदस्य रहे। **सन् 1981 ई.** में दिल्ली में उनका निधन हुआ।

काका कालेलकर की प्रमुख रचनाएँ : **निबंध** : जीवन साहित्य, जीवन का काव्य आदि; **संस्मरण** : संस्मरण, बापू की झाँकी; **यात्रा वृत्तांत** : हिमालय प्रवास, यात्रा, उस पार के पड़ोसी आदि।

निष्ठामूर्ति कस्तूरबा शीर्षक यह पाठ कस्तूरबा गाँधी के व्यक्तित्व से परिचित कराने में सहायक है। कस्तूरबा भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की प्रमुख सेनानी थीं। महात्मा गाँधी की अनुपस्थिति में उन्होंने कई अवसरों पर अपने विवेक, कर्मठता और संघर्ष चेतना का महनीय परिचय दिया था। वे भारतीय स्त्री की निष्ठा, समर्पण और कर्तव्यपरायणता का आदर्श रूप थीं। सरलता और दृढ़ता का उनमें मणिकांचन संयोग था। वे आज भी हमारे लिए एक बड़ी प्रेरणा स्रोत हैं।

निष्ठामूर्ति कस्तूरबा

महात्मा गाँधी–जैसे महान पुरुष की सहधर्मचारिणी के तौर पर पूज्य कस्तूरबा के बारे में राष्ट्र को आदर मालूम होना स्वाभाविक है। राष्ट्र ने महात्मा जी को 'बापू जी' के नाम से राष्ट्रपिता के स्थान पर कायम किया ही है। इसलिए कस्तूरबा भी 'बा' के एकाक्षरी नाम से राष्ट्रमाता बन सकी हैं।

किंतु सिर्फ महात्मा जी के साथ के संबंध के कारण ही नहीं, बल्कि अपने आंतरिक सद्गुण और निष्ठा के कारण भी कस्तूरबा राष्ट्रमाता बन पाई हैं। चाहे दक्षिण अफ्रीका में हों या हिंदुस्तान में, सरकार के खिलाफ लड़ाई के समय जब जब चारित्र्य का तेज प्रकट करने का मौका आया कस्तूरबा हमेशा इस दिव्य कसौटी से सफलतापूर्वक पार हुई हैं।

इससे भी विशेष बात यह है कि बड़ी तेजी से बदलते हुए आज के युग में भी आर्य सती स्त्री का जो आदर्श हिंदुस्तान ने अपने हृदय में कायम रखा है, उस आदर्श की जीवित प्रतिमा के रूप में राष्ट्र पूज्य कस्तूरबा को पहचानता है। इस तरह की विविध लोकोत्तर योग्यता के कारण आज सारा राष्ट्र कस्तूरबा की पूजा करता है। कस्तूरबा अनपढ़ थीं। हम यह भी कह सकते हैं कि उनका भाषा ज्ञान सामान्य देहाती से अधिक नहीं था। दक्षिण अफ्रीका में जाकर रहीं इसलिए वह कुछ अंग्रेजी समझ सकती थीं और पचीस–तीस शब्द बोल भी लेती थीं। मिस्टर एंड्रूज–जैसे कोई विदेशी मेहमान घर आने पर उन शब्दों की पूँजी से वह अपना काम चला लेतीं और कभी–कभी तो उनके उस संभाषण से विनोद भी पैदा हो जाता।

कस्तूरबा को गीता के ऊपर असाधारण श्रद्धा थी। पढ़ानेवाला कोई मिले तो वह भक्तिपूर्वक गीता पढ़ने के लिए बैठ जातीं। किंतु उनकी गाड़ी कभी भी बहुत आगे नहीं जा सकी। फिर भी आगा खाँ महल में–कारावास के दरमियान–उन्होंने बार–बार गीता के पाठ लेने की कोशिश चालू रखी थी।

उनकी निष्ठा का पात्र दूसरा ग्रंथ था तुलसी–रामायण। बड़ी मुश्किल से दोपहर के समय उनको आधे घंटे की जो फुरसत मिलती थी उसमें वह बड़े अक्षरों में छपी तुलसी–रामायण के दोहे चश्मा चढ़ाकर पढ़ने बैठती थीं। उनका यह चित्र देखकर हमें बड़ा मजा आता। कस्तूरबा रामायण भी ठीक ढंग से कभी पढ़ न सकीं। राष्ट्रीय संत तुलसीदास के द्वारा लिखा हुआ सती सीता का वर्णन भले ही वह ठीक समझ न सकी हों, फिर भी प्रत्यक्ष सती–सीता तो बन ही सकीं।

दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ हैं–शब्द और कृति। इसमें कोई शक नहीं कि 'शब्दों' ने सारी पृथ्वी को हिला दिया है। किंतु अंतिम शक्ति तो 'कृति' की है। महात्मा जी ने इन दोनों शक्तियों की असाधारण उपासना की है। कस्तूरबा ने इन दोनों शक्तियों में से अधिक श्रेष्ठ शक्ति कृति की नम्रता के साथ उपासना करके संतोष माना और जीवनसिद्धि प्राप्त की।

दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने जब उन्हें जेल भेज दिया, कस्तूरबा ने अपना बचाव तक नहीं किया। न कोई सनसनाती पैदा करनेवाला निवेदन प्रकट किया। "मुझे तो वह कानून तोड़ना ही है जो यह कहता है कि मैं महात्मा जी की धर्मपत्नी नहीं हूँ।" इतना कहकर वह सीधे जेल में चली गईं। जेल में उनकी तेजस्विता तोड़ने की कोशिशें वहाँ की सरकार ने बहुत की किंतु अंत में सरकार की उस समय की जिद्द ही टूट गई।

डॉक्टर ने जब उन्हें धर्मविरुद्ध खुराक लेने की बात कही तब भी उन्होंने धर्मनिष्ठा पर कोई व्याख्यान नहीं दिया। उन्होंने सिर्फ इतना ही कहा–"मुझे अखाद्य खाना खाकर जीना नहीं है। फिर भले ही मुझे मौत का सामना करना पड़े।"

कस्तूरबा की कसौटी केवल सरकार ने ही की हो ऐसी बात नहीं है। खुद महात्मा जी ने भी कई बार उनसे कठोर और मर्मस्पर्शी बातें कहीं, तब भी उन्होंने हार कबूल नहीं की। पति का अनुसरण करना ही सती का कर्त्तव्य है, ऐसी उनकी निष्ठा होने के कारण मन में किसी भी प्रकार का संदेह लाए बिना वह धर्म के मामलों में पति का अनुसरण करती रहीं।

कस्तूरबा के प्रथम दर्शन मुझे शांति निकेतन में हुए। सन् 1915 के प्रारंभ में जब महात्मा जी वहाँ पधारे, तब स्वागत का शुभारंभ पूरा होते ही सब लोगों ने सोने की तैयारियाँ कीं। आँगन के बीच एक चबूतरा था। महात्मा जी ने कहा, हम दोनों यहीं सोएँगे। अगल–बगल में बिस्तरे बिछाकर बापू और बा सो गए और हम सबलोग आँगन में आस–पास अपने बिस्तरे बिछाकर सो गए। उस दिन मुझे लगा, मानो हमें आध्यात्मिक माँ–बाप मिल गए हैं।

उनके आखिरी दर्शन मुझे उस समय हुए जब वह बिड़ला हाउस में गिरफ्तार की गईं। महात्मा जी को गिरफ्तार करने के लिए सरकार की ओर से कस्तूरबा को कहा गया, "अगर आपकी इच्छा हो तो आप भी साथ में चल सकती हैं।" बा बोलीं, "अगर आप गिरफ्तार करें तो मैं जाऊँगी वरना आने की मेरी तैयारी नहीं है।" महात्मा जी जिस सभा में बोलनेवाले थे उस सभा में जाने का उन्होंने निश्चय किया था। पति के गिरफ्तार होने के बाद उनका काम आगे चलाने की जिम्मेदारी बा ने कई बार उठाई है। शाम के समय जब वह व्याख्यान के लिए निकल पड़ीं, सरकारी अमलदारों ने आकर उनसे कहा, "माता जी सरकार का कहना है कि आप घर पर ही रहें, सभा में जाने का कष्ट न उठाएँ।" बा ने उस समय उन्हें न देश–सेवा का महत्त्व समझाया और न उन्होंने उन्हें 'देशद्रोह करनेवाले तुम कुत्ते हो' कहकर उनकी निर्भर्त्सना ही की।

उन्होंने एक ही वाक्य में सरकार की सूचना का जवाब दिया, "सभा में जाने का मेरा निश्चय पक्का है, मैं जाऊँगी ही।"

आगा खाँ महल में खाने–पीने की कोई तकलीफ नहीं थी। हवा की दृष्टि से भी स्थान अच्छा था। महात्मा जी का सहवास भी था। किंतु कस्तूरबा के लिए यह विचार ही असह्य हुआ कि "मैं कैद में हूँ।" उन्होंने कई बार कहा–"मुझे यहाँ का वैभव कतई नहीं चाहिए, मुझे तो सेवाग्राम की कुटिया ही पसंद है।" सरकार ने उनके शरीर को कैद रखा किंतु उनकी आत्मा को वह कैद सहन नहीं हुई। जिस प्रकार पिंजड़े का पक्षी प्राणों का त्याग करके बंधनमुक्त हो जाता है उसी प्रकार कस्तूरबा ने सरकार की कैद में अपना शरीर छोड़ा और वह स्वतंत्र हुईं। उनके इस मूक किंतु तेजस्वी बलिदान के कारण अंग्रेजी साम्राज्य की नींव ढीली हुई और हिंदुस्तान पर उनकी हुकूमत कमजोर हुई। कस्तूरबा ने अपनी कृतिनिष्ठा के द्वारा यह दिखा दिया कि शुद्ध और रोचक साहित्य के पहाड़ों की अपेक्षा कृति का एक कण अधिक मूल्यवान और आबदार होता है। शब्दशास्त्र में जो लोग निपुण होते हैं उनको कर्त्तव्य–अकर्त्तव्य की हमेशा ही विचिकित्सा करनी पड़ती है। कृतिनिष्ठ लोगों को ऐसी दुविधा कभी परेशान नहीं कर पाती। कस्तूरबा के सामने उनका कर्त्तव्य किसी दीये के समान स्पष्ट था। कभी कोई चर्चा शुरू हो जाती तब 'मुझसे यही होगा' और 'यह नहीं होगा'–इन दो वाक्यों में अपना ही फैसला सुना देतीं।

आश्रम में कस्तूरबा हम लोगों के लिए माँ के समान थीं। सत्याग्रहाश्रम यानी तत्त्वनिष्ठ महात्मा जी की संस्था थी। उग्रशासक मगनलाल भाई उसे चलाते थे। ऐसे स्थान पर अगर वात्सल्य की आर्द्रता हमें मिलती थी तो वह कस्तूरबा से ही। कई बार बा आश्रम के नियमों को ताक पर रख देतीं। आश्रम के बच्चों को जब भूख लगती थी तब उनकी बात बा ही सुनती थीं। नियमनिष्ठ लोगों ने बा के खिलाफ कई बार शिकायतें करके देखीं। किंतु महात्मा जी को अंत में हार खाकर निर्णय देना पड़ा कि अपने नियम बा को लागू नहीं होते।

आश्रम में चाहे बड़े–बड़े नेता आएँ या मामूली कार्यकर्ता आएँ, उनके खाने–पीने की पूछताछ अत्यंत प्रेम के साथ यदि किसी ने की है तो वह पूज्य कस्तूरबा ने ही। आलस्य ने तो उनको कभी छुआ तक नहीं। किसी प्राणघातक बीमारी से मुक्त होकर चंगी हुई हों और शरीर में जरा–सी शक्ति आई हो कि तुरंत बा आश्रम की रसोई में जाकर काम करने लग जातीं। ठेठ आखिर में उनके हाथ–पाँव थक गए थे, शरीर जीर्ण–शीर्ण हुआ था। मुँह में एक दाँत बचा नहीं था। आँखें निस्तेज हो गई थीं तब भी वह रसोई में जातीं और जो काम बन सके, आस्थापूर्वक करतीं। मैं जब उनसे मिलने जाता और जब वह खाने के लिए मुझे कुछ देतीं, तब छोटे बच्चों की तरह हाथ फैलाने में मुझे असाधारण धन्यता का अनुभव होता था।

वह भले ही अशिक्षित रही हों, संस्था चलाने की जिम्मेदारी लेने की महत्त्वाकांक्षा भले ही उनमें कभी जागी नहीं हो, देश में क्या चल रहा है और उसकी सूक्ष्म जानकारी वह प्रश्न पूछ–पूछकर या अखबारों के ऊपर नजर डालकर प्राप्त कर ही लेती थीं।

महात्मा जी जब जेल में थे तब दो–तीन बार राजकीय परिषदों का या शिक्षण सम्मेलनों के अध्यक्ष का स्थान कस्तूरबा को लेना पड़ा था। उनके अध्यक्षीय भाषण लिख देने का काम मुझे करना पड़ा था। मैंने उनसे कहा–"मैं अपनी ओर से एक भी दलील भाषण में नहीं लाऊँगा। आप जो बतावेंगी, मैं ठीक भाषा में लिख दूँगा।" हाँ–ना कहकर वह अपने भाषण की दलीलें मुझे बता देतीं। उस समय उनकी वह शक्ति देखकर मैं चकित हो जाता था।

अध्यक्षीय भाषण किसी से लिखवा लेना आसान है। लेकिन परिषद् जब समाप्त होती है, तब उसका उपसंहार करना हर एक को अपनी प्रत्युत्पन्नमति से करना पड़ता है। जब कस्तूरबा ने उपसंहार के भाषण किए उनकी भाषा बहुत ही आसान रहती थी, किंतु उपसंहार परिपूर्ण सिद्ध होता था। इनके इन भाषणों में परिस्थिति की समझ, भाषा की सावधानी और खानदानी की महत्ता आदि गुण उत्कृष्टता से दिखाई देते थे।

आज के जमाने में स्त्री–जीवन संबंध के हमारे आदर्श हमने काफी बदल लिए हैं। आज कोई स्त्री अगर कस्तूरबा की तरह अशिक्षित रहे और किसी तरह महत्त्वाकांक्षा का उदय उसमें न दिखाई दे तो हम उसका जीवन यशस्वी या कृतार्थ नहीं कहेंगे। ऐसी हालत में जब कस्तूरबा की मृत्यु हुई पूरे देश ने स्वयं स्फूर्ति से उनका स्मारक बनाने का तय किया और सहज इकट्ठी न हो पाए, इतनी बड़ी निधि इकट्ठी कर दिखाई। इससे यह सिद्ध होता है कि हमारा प्राचीन तेजस्वी आदर्श अब देशमान्य है। हमारी संस्कृति की जड़ें आज भी काफी मजबूत हैं।

यह सब श्रेष्ठता या महत्ता कस्तूरबा में कहाँ से आई? उनकी जीवन–साधना किस प्रकार की थी? शिक्षण के द्वारा उन्होंने बाहर से कुछ नहीं लिया था। सचमुच, उनमें तो आर्य आदर्श को शोभा देनेवाले कौटुंबिक सद्गुण ही थे। असाधारण मौका मिलते ही और उतनी ही असाधारण कसौटी आ पड़ते ही उन्होंने स्वभावसिद्ध कौटुंबिक सद्गुण व्यापक किए और उनके जोरों पर हर समय जीवन–सिद्धि हासिल की। सूक्ष्म प्रमाण में या छोटे पैमाने पर जो शुद्ध साधना की जाती है उसका तेज इतना लोकोत्तरी होता है कि चाहे कितना ही बड़ा प्रसंग आ पड़े, व्यापक प्रमाण में कसौटी हो, चारित्र्यवान मनुष्य को अपनी शक्ति का सिर्फ गुणाकार ही करने का होता है।

सती कस्तूरबा सिर्फ अपने संस्कार बल के कारण पातिव्रत्य को, कुटुंब–वत्सलता को और तेजस्विता को चिपकाए रहीं और उसी के जोरों महात्मा जी के माहात्म्य के बराबरी में आ सकीं। आज हिंदू, मुस्लिम, पारसी, सिख, बौद्ध, ईसाई आदि अनेक धर्मी लोगों का यह विशाल देश अत्यंत निष्ठा के साथ कस्तूरबा की पूजा करता है और स्वातंत्र्य के पूर्व की शिवरात्रि के दिन उनका स्मरण करके सब लोग अपनी–अपनी तेजस्विता को अधिक तेजस्वी बनाते हैं।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. काका कालेलकर का जन्म कब हुआ था?
   (क) 1885 (ख) 1886 (ग) 1862 (घ) 1864
2. काका कालेलकर का निधन कब हुआ?
   (क) 1985 (ख) 1982 (ग) 1983 (घ) 1981
3. काका कालेलकर का जन्म स्थान है :
   (क) सतारा (ख) मुंबई (ग) अहमदाबाद (घ) नासिक
4. काका कालेलकर की रचना है :
   (क) बापू की झाँकी (ख) जीवन साहित्य (ग) संस्मरण (घ) ये सभी
5. कस्तूरबा को किस पुस्तक पर असाधारण श्रद्धा थी :
   (क) हितोपदेश (ख) गीता (ग) पंचतंत्र (घ) इनमें से कोई नहीं
6. लेखक की कस्तूरबा से आखिरी भेंट कहाँ हुई थी?
   (क) साबरमती आश्रम (ख) वर्धा आश्रम (ग) बिरला हाउस (घ) आगा खाँ पैलेस
7. उग्रशासक किन्हें कहा गया है?
   (क) देवदास गाँधी (ख) काका कालेलकर (ग) महात्मा गाँधी (घ) मगनलाल
8. काका कालेलकर के विषय में असत्य है :
   (क) वे कई भाषाएँ जानते थे
   (ख) उनकी मातृभाषा गुजराती थी
   (ग) वे 1915 में गाँधी जी के संपर्क में आए
   (घ) 'हिमालय प्रवास' उनकी रचना है

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. क्या कस्तूरबा महात्मा गाँधी की पत्नी होने के कारण ही राष्ट्रमाता कही गई हैं? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।
2. कस्तूरबा की किन दो पुस्तकों पर असाधारण श्रद्धा थी?
3. 'शब्द' और 'कृति' से क्या आशय है? कस्तूरबा ने इनमें से किसकी साधना की? वह साधना उन्होंने किस प्रकार की?
4. स्वतंत्रता आंदोलन में कस्तूरबा ने किस प्रकार की भूमिका निभाई? पाठ के आधार पर लिखिए।

5. 'देशद्रोह करनेवाले तुम कुत्ते हो'—कस्तूरबा ने ऐसा नहीं कहा। इससे उनके व्यक्तित्व के किस गुण का परिचय मिलता है। लिखिए।
6. आश्रम में आए लोगों की देखभाल कस्तूरबा किस प्रकार करती थीं?
7. काका कालेलकर कस्तूरबा की किस शक्ति पर चकित हो जाते थे?
8. कस्तूरबा की भाषण कला कैसी थी?
9. कस्तूरबा के समक्ष लेखक को कब असाधारण धन्यता का अनुभव होता था?
10. पाठ के आधार पर कस्तूरबा के व्यक्तित्व का परिचय अपने शब्दों में दीजिए।
11. काका कालेलकर की भाषा–शैली की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

III. दिए गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. दुनिया में दो अमोघ शक्तियाँ हैं—शब्द और कृति। इसमें कोई शक नहीं कि 'शब्दों' ने सारी पृथ्वी को हिला दिया है। किंतु अंतिम शक्ति तो 'कृति' की है। महात्मा जी ने इन दोनों शक्तियों की असाधारण उपासना की है। कस्तूरबा ने इन दोनों शक्तियों में से अधिक श्रेष्ठ शक्ति कृति की नम्रता के साथ उपासना करके संतोष माना और जीवनसिद्धि प्राप्त की।

   (क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

   (ग) 'संतोष' और 'नम्रता' का विपरीतार्थक शब्द लिखिए?

2. आगा खाँ महल में खाने–पीने की कोई तकलीफ नहीं थी। हवा की दृष्टि से भी स्थान अच्छा था। महात्मा जी का सहवास भी था। किंतु कस्तूरबा के लिए यह विचार ही असह्य हुआ कि "मैं कैद में हूँ।" उन्होंने कई बार कहा—"मुझे यहाँ का वैभव कतई नहीं चाहिए, मुझे तो सेवाग्राम की कुटिया ही पसंद है।" सरकार ने उनके शरीर को कैद रखा किंतु उनकी आत्मा को वह कैद सहन नहीं हई। जिस प्रकार पिंजड़े का पक्षी प्राणों का त्याग करके बंधनमुक्त हो जाता है उसी प्रकार कस्तूरबा ने सरकार की कैद में अपना शरीर छोड़ा और वह स्वतंत्र हुईं। उनके इस मूक किंतु तेजस्वी बलिदान के कारण अंग्रेजी साम्राज्य की नींव ढीली हुई और हिंदुस्तान पर उनकी हुकूमत कमजोर हुई।

   (क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

   (ग) 'तकलीफ' और 'हुकूमत' का समानार्थी शब्द लिखिए।

3. आश्रम में कस्तूरबा हम लोगों के लिए माँ के समान थीं। सत्याग्रहाश्रम यानी तत्त्वनिष्ठ महात्मा जी की संस्था थी। उग्रशासक मगनलाल भाई उसे चलाते थे। ऐसे स्थान पर अगर वात्सल्य की आर्द्रता हमें मिलती थी तो वह कस्तूरबा से ही। कई बार बा आश्रम के नियमों को ताक पर रख देतीं। आश्रम के बच्चों को जब भूख लगती थी तब उनकी बात बा ही सुनती थीं। नियमनिष्ठ लोगों ने बा के खिलाफ कई बार शिकायतें करके देखीं। किंतु महात्मा जी को अंत में हार खाकर निर्णय देना पड़ा कि अपने नियम बा को लागू नहीं होते।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) 'नियमों को ताक पर रखना' का क्या अर्थ है? इस मुहावरे का वाक्य में प्रयोग कीजिए।

IV. भाषा के रंग :

1. निम्नलिखित शब्दों के प्रत्यय पहचानें :
   स्वाभाविक, आंतरिक, योग्यता, तेजस्विता, राष्ट्रीय, नम्रता, अध्यक्षीय, आध्यात्मिक, धन्यता
2. संधि विच्छेद कीजिए :
   शुभारंभ, संतोष, प्रत्यक्ष, लोकोत्तरी, सत्याग्रहाश्रम, महत्वाकांक्षा
3. पाठ से पाँच देशज और विदेशज शब्द चुनिए।
4. समासविग्रह कीजिए :
   प्राणघातक, बंधनमुक्त, देशसेवा, धर्मनिष्ठा, स्त्री जीवन, धर्मविरुद्ध, माँ–बाप, देशद्रोह, स्वभावसिद्ध

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. कस्तूरबा की तरह स्वतंत्रता आंदोलन में अनेक महिलाओं ने सक्रिय भूमिका निभाई। ऐसी तीन विभूतियों के बारे में जानकारी एकत्रित कीजिए और उनका संक्षिप्त जीवन परिचय लिखिए।

शब्दार्थ

सहधर्मचारिणी – साथ–साथ कर्त्तव्य निभानेवाली, पत्नी। **लोकोत्तर** – लोक से परे, अलौकिक। **अमोघ** – अचूक। **अखाद्य** – न खाने योग्य। **मर्मस्पर्शी** – मर्म छूनेवाला। **अमलदार** – कर्मचारी। **निर्भर्त्सना** – निंदा। **कृतिनिष्ठा** – निष्ठापूर्वक कार्य। **चंगी** – स्वस्थ। **चकित** – आश्चर्य। **कौटुंबिक** – पारिवारिक।

■

श्रीराम शर्मा

श्रीराम शर्मा का जन्म **सन् 1892 ई.** में उत्तर प्रदेश के **मैनपुरी** जनपद के **किरथरा** ग्राम में हुआ था। उनके पिता का नाम रेवतीराम शर्मा था। अल्पायु में ही उनका निधन हो गया था। इस कारण श्रीराम शर्मा का बचपन संघर्षमय रहा। उनकी आरंभिक शिक्षा गाँव और खुर्जा में हुई। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से उन्होंने उच्च शिक्षा ग्रहण की।

श्रीराम शर्मा छात्र जीवन में स्वतंत्रता आंदोलन की गतिविधियों से जुड़ गए। गणेशशंकर विद्यार्थी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' प्रभृति विभूतियों के संपर्क ने उनकी दृष्टि और लेखन को धार दी। 'प्रताप' और 'विशाल भारत' जैसे पत्र–पत्रिकाओं से जुड़कर उन्होंने हिंदी साहित्य और हिंदी पत्रकारिता को अपना योगदान दिया।

हिंदी साहित्य के अंतर्गत श्रीराम शर्मा का उल्लेख विशेषकर शिकार साहित्य के लिए होता है। इनकी पुस्तक **शिकार** का प्रकाशन **सन् 1932 ई.** में हुआ था। 'शिकार साहित्य' एक कथेतर विधा है। श्रीराम शर्मा ने इस कथेतर विधा को अपनी भाषा और वर्णन शैली से लोकप्रिय बनाया। उनके शिकार साहित्य में रोमांच है और पशुओं का मनोविज्ञान भी। उनका विवरण, रचना को कहानी के पास ले आता है। रचना में विवरण की स्पष्टता, कुतूहल और विषय की केंद्रीयता से पाठक बँधा रहता है। इसमें उनकी भाषा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वह संप्रेषणीय और व्यंजक है। उनका शब्द भंडार विविधता से भरा है। देशज शब्दों के प्रयोग से उनके लेखन में एक विशेष चमक उत्पन्न होती है।

श्रीराम शर्मा ने शिकार साहित्य के अतिरिक्त संस्मरण, जीवनी साहित्य और निबंध लेखन भी किया है। श्रीराम शर्मा का निधन **सन् 1967 ई.** में हुआ।

श्रीराम शर्मा की प्रमुख रचनाएँ–शिकार साहित्य : प्राणों का सौदा, शिकार, बोलती प्रतिमा, जंगल के जीव; **संस्मरण** : सेवाग्राम की डायरी, सन बयालीस के संस्मरण; **जीवनी** : नेताजी (अंग्रेजी); **अन्य** : भारत के जंगली जीव।

स्मृति पाठ में लेखक का बचपन, उसका घरेलू वातावरण और आस–पास की प्रकृति, सभी हैं। खासकर बचपन की स्मृतियाँ अनमोल धरोहर होती हैं। वे हमारी सहजता और मनुष्यता को बचाए रखने में सहायक होती हैं। वे अकृत्रिम होती हैं और वैसे ही बने रहने की प्रेरणा देती

हैं। इस पाठ में भाई साहब का भय, साँप से बचकर चिट्ठियों को निकाल लाने की जद्दोजहद, छोटे भाई का रूदन, लेखक का साहस और बुद्धिमता—सब कुछ है। कुएँ में प्रवेश का निर्णय के पीछे भले ही भाई साहब का खौफ हो, पर उसके आगे की यात्रा साहस, धैर्य और बुद्धि से तय होती है। यह पाठ हमें संदेश देता है कि दृढ़ संकल्प से दुविधा की बेड़ियाँ कटती हैं और अंततः सफलता भी मिलती है। प्रस्तुत पाठ श्रीराम शर्मा की पुस्तक 'शिकार' से संकलित है।

■

स्मृति

सन् 1908 ई. की बात है। दिसंबर का आखीर या जनवरी का प्रारंभ होगा। चिल्ला' जाड़ा पड़ रहा था। दो–चार दिन पूर्व कुछ बूँदा बाँदी हो गई थी, इसलिए शीत की भयंकरता और भी बढ़ गई थी। सायंकाल के साढ़े तीन या चार बजे होंगे। कई साथियों के साथ मैं झरबेरी के बेर तोड़–तोड़कर खा रहा था कि गाँव के पास से एक आदमी ने जोर से पुकारा कि तुम्हारे भाई बुला रहे हैं, शीघ्र ही घर लौट जाओ। मैं घर को चलने लगा। साथ में छोटा भाई भी था। भाई साहब की मार का डर था इसलिए सहमा हुआ चला जाता था। समझ में नहीं आता था कि कौन–सा कसूर बन पड़ा। डरते–डरते घर में घुसा। आशंका थी कि बेर खाने के अपराध में ही तो पेशी न हो। पर आँगन में भाई साहब को पत्र लिखते पाया। अब पिटने का भय दूर हुआ। हमें देखकर भाई साहब ने कहा–"इन पत्रों को ले जाकर मक्खनपुर डाकखाने में डाल आओ। तेजी से जाना, जिससे शाम की डाक में चिट्ठियाँ निकल जाएँ। ये बड़ी जरूरी हैं।"

जाड़े के दिन थे ही, तिस पर हवा के प्रकोप से कँप–कँपी लग रही थी। हवा मज्जा तक को ठिठुरा रही थी, इसलिए हमने कानों को धोती से बाँधा। माँ ने भुँजाने के लिए थोड़े चने एक धोती में बाँध दिए। हम दोनों भाई अपना अपना डंडा लेकर घर से निकल पड़े। उस समय उस बबूल के डंडे से जितना मोह था, उतना इस उमर में रायफल से नहीं। फिर मेरा डंडा अनेक साँपों के लिए नारायण–वाहन (गरुड़) हो चुका था। मक्खनपुर के स्कूल और गाँव के बीच पड़ने वाले आम के पेड़ों से प्रतिवर्ष उससे आम झाड़े जाते थे। इस कारण वह मूक डंडा सजीव–सा प्रतीत होता था। प्रसन्नवदन हम दोनों मक्खनपुर की ओर तेजी से बढ़ने लगे। चिट्ठियों को मैंने टोपी में रख लिया, क्योंकि कुर्ते में जेबें न थीं।

हम दोनों उछलते–कूदते, एक ही साँस में गाँव से चार फर्लांग दूर उस कुएँ के पास आ गए जिसमें एक अति भयंकर काला साँप पड़ा हुआ था। कुआँ कच्चा था, और चौबीस हाथ गहरा था। उसमें पानी न था। न जाने साँप उसमें कैसे गिर गया था? कारण कुछ भी हो, हमारा उसके कुएँ में होने का ज्ञान केवल दो महीने का था। बच्चे नटखट होते ही हैं। मक्खनपुर पढ़ने जाने वाली हमारी टोली पूरी बानर टोली थी। एक दिन हम लोग स्कूल से लौट रहे थे कि हमको कुएँ में उझकने की सूझी। सबसे पहले उझकने वाला मैं ही था। कुएँ में झाँककर एक ढेला फेंका कि उसकी आवाज कैसी होती है। उसके सुनने के बाद अपनी बोली की प्रतिध्वनि सुनने की इच्छा थी, पर कुएँ में ज्योंही ढेला गिरा त्योंही एक फुसकार सुनाई पड़ी। कुएँ के किनारे खड़े हुए हम सब बालक पहले तो उस फुसकार से ऐसे चकित हो गए जैसे किलोले करता हुआ हिरनों का

झुंड अति समीप के कुत्ते की भौंक से चकित हो जाता है। उसके उपरांत सभी ने उछल—उछलकर एक—एक ढेला फेंका और कुएँ से आने वाली क्रोधपूर्ण फुसकार पर कहकहे लगाए।

गाँव से मक्खनपुर जाते और मक्खनपुर से लौटते समय प्रायः प्रतिदिन ही कुएँ में ढेले डालते थे। मैं तो आगे भागकर आ जाता था और टोपी को एक हाथ से पकड़कर दूसरे हाथ से ढेला फेंकता था। यह रोजाना की आदत हो गई थी। साँप से फुसकार करवा लेना मैं उस समय बड़ा काम समझता था। इसलिए जैसे ही हम दोनों उस कुएँ की ओर से निकले, कुएँ में ढेला फेंककर फुफकार सुनने की प्रवृत्ति जाग्रत हो गई। मैं कुएँ की ओर बढ़ा। छोटा भाई मेरे पीछे ऐसे हो लिया जैसे बड़े मृगशावक के पीछे छोटा छौना हो लेता है। कुएँ के किनारे से एक ढेला उठाया और उझककर एक हाथ से टोपी उतारते हुए साँप पर ढेला गिरा दिया, पर मुझ पर तो बिजली—सी गिर पड़ी। साँप ने फुसकार मारी या नहीं, ढेला उसे लगा या नहीं यह बात अब तक स्मरण नहीं। टोपी के हाथ में लेते ही तीनों चिट्ठियाँ चक्कर काटती हुई कुएँ में गिर गईं। अकस्मात जैसे घास चरते हुए हिरन की आत्मा गोली से हत होने पर निकल जाती है और वह तड़पता रह जाता है, उसी भाँति वे चिट्ठियाँ टोपी से क्या निकल गईं, मेरी तो जान निकल गई। उनके गिरते ही मैंने उनको पकड़ने के लिए एक झपट्टा भी मारा ठीक वैसे, जैसे घायल शेर शिकारी को पेड़ पर चढ़ते देख उस पर हमला करता है। पर वे तो पहुँच से बाहर हो चुकी थीं। उनके पकड़ने की घबराहट में मैं स्वयं झटके के कारण कुएँ में गिरते—गिरते बचा।

कुएँ की पाट पर बैठे हम रो रहे थे छोटा भाई ढाढ़े मारकर और मैं चुपचाप आँखें डबडबाकर। पतीली में उफान आने से ढकना ऊपर उठ जाता है और पानी बाहर टपक जाता है। निराशा, पिटने के भय और उद्वेग से रोने का उफान आता था। पलकों के ढकने भीतरी भावों को रोकने का प्रयत्न करते थे, पर कपोलों पर आँसू ढुलक ही जाते थे। माँ की गोद की याद आती थी। जी चाहता था कि माँ आकर छाती से लगा ले और लाड़—प्यार करके कह दे कि कोई बात नहीं, चिट्ठियाँ फिर लिख ली जाएँगी। तबीयत करती थी कि कुएँ में बहुत—सी मिट्टी डाल दी जाए और घर जाकर कह दिया जाए कि चिट्ठी डाल आए, पर उस समय झूठ बोलना मैं जानता ही न था। घर लौटकर सच बोलने से रुई की भाँति धुनाई होती। मार के खयाल से शरीर ही नहीं मन भी काँप जाता था। सच बोलकर पिटने के भावी भय झूठ बोलना और झूठ बोलकर चिट्ठियों के न पहुँचने की जिम्मेदारी के बोझ से दबा मैं बैठा सिसक रहा था। इसी सोच—विचार में पंद्रह मिनट होने को आए। देर हो रही थी, और उधर दिन का बुढ़ापा बढ़ता जाता था। कहीं भाग जाने को तबीयत करती थी, पर पिटने का भय और जिम्मेदारी की दुधारी तलवार कलेजे पर फिर रही थी।

दृढ़ संकल्प से दुविधा की बेड़ियाँ कट जाती हैं। मेरी दुविधा भी दूर हो गई। कुएँ में घुसकर चिट्ठियों को निकालने का निश्चय किया। कितना भयंकर निर्णय था ! पर जो मरने को तैयार हो, उसे क्या? मूर्खता अथवा बुद्धिमत्ता से किसी काम को करने के लिए कोई मौत का मार्ग

ही स्वीकार कर ले, और वह भी जानबूझकर, तो फिर वह अकेला संसार से भिड़ने को तैयार हो जाता है। और फल ? उसे फल की क्या चिंता! फल तो किसी दूसरी शक्ति पर निर्भर है। उस समय चिट्ठियाँ निकालने के लिए मैं विषधर से भिड़ने को तैयार हो गया। पासा फेंक दिया था। मौत का आलिंगन हो अथवा साँप से बचकर दूसरा जन्म–इसकी कोई चिंता न थी। पर विश्वास यह था कि डंडे से साँप को पहले मार दूंगा, तब फिर चिट्ठियाँ उठा लूँगा। बस, इसी दृढ़ विश्वास के बूते पर मैंने कुएँ में घुसने की ठानी।

छोटा भाई रोता था और उसके रोने का तात्पर्य था कि मेरी मौत मुझे नीचे बुला रही है, यद्यपि वह शब्दों से यह न कहता था। वास्तव में मौत सजीव और नग्न रूप में कुएँ में बैठी थी, पर उस नग्न मौत से मुठभेड़ के लिए मुझे भी नग्न होना पड़ा। छोटा भाई भी नंगा हुआ। एक धोती मेरी एक छोटे भाई की, एक चनेवाली, दो कानों से बँधी हुई धोतियाँ–पाँच धोतियाँ और कुछ रस्सी मिलाकर कुएँ की गहराई के लिए काफी हुईं। हम लोगों ने धोतियाँ एक–दूसरी से बाँधी और खूब खींच–खींचकर आजमा लिया कि गाँठें कड़ी हैं, खुलेंगी नहीं। अपनी ओर से कोई ध ाोखे का काम न रखा। धोती के एक सिरे पर डंडा बाँधा और उसे कुएँ में डाल दिया। दूसरे सिरे को डेंग (वह लकड़ी जिस पर चरस–पुर टिकता है) के चारों ओर एक चक्कर देकर और एक गाँठ लगाकर छोटे भाई को दे दिया। छोटा भाई केवल आठ वर्ष का था, इसीलिए धोती को डेंग से कड़ा करके बाँध दिया और तब उसे खूब मजबूती से पकड़ने के लिए कहा। मैं कुएँ में धोती के सहारे घुसने लगा। छोटा भाई रोने लगा। मैंने उसे आश्वासन दिलाया कि मैं कुएँ के नीचे पहुँचते ही साँप को मार दूंगा और मेरा विश्वास भी ऐसा ही था। कारण यह था कि इससे पहले मैंने अनेक साँप मारे थे। इसलिए कुएँ में घुसते समय मुझे साँप का तनिक भी भय न था।

कुएँ के धरातल से जब चार–पाँच गज रहा हूँगा, तब ध्यान से नीचे को देखा। अक्ल चकरा गई। साँप फन फैलाए धरातल से एक हाथ ऊपर उठा हुआ लहरा रहा था। पूँछ और पूँछ के समीप का भाग पृथ्वी पर था, आधा अग्र भाग ऊपर उठा हुआ मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। नीचे जो डंडा बँधा था, मेरे उतरने की गति से इधर–उधर हिलता था। उसी के कारण शायद मुझे उतरते देख साँप घातक चोट के आसन पर बैठा था। सँपेरा जैसे बीन बजाकर काले साँप को खिलाता है। और साँप क्रोधित हो फन फैलाकर खड़ा होता और फुंकार मारकर चोट करता है, ठीक उसी प्रकार साँप तैयार था। उसका प्रतिद्वंद्वी–मैं उससे कुछ हाथ ऊपर धोती पकड़े लटक रहा था। धोती डेंग से बँधी होने के कारण कुएँ के बीचोंबीच लटक रही थी और मुझे कुएँ के धरातल की परिधि के बीचोंबीच उतरना था। इसके माने थे साँप से डेढ़–दो फीट–गज नहीं–की दूरी, पर साँप पैर रखते ही चोट करता। स्मरण रहे, कच्चे कुएँ का व्यास बहुत कम होता है। नीचे तो वह डेढ़ गज से अधिक होता ही नहीं। ऐसी दशा में कुएँ में मैं साँप से अध िक–से– अधिक चार फीट की दूरी पर रह सकता था, वह भी उस दशा में जब साँप मुझसे दूर रहने का प्रयत्न करता, पर उतरना तो था कुएँ के बीच में, क्योंकि मेरा साधन बीचोंबीच लटक रहा था। ऊपर से लटककर तो साँप नहीं मारा जा सकता था। उतरना तो था ही। थकावट से

ऊपर चढ़ भी नहीं सकता था। अब तक अपने प्रतिद्वंद्वी को पीठ दिखाने का निश्चय नहीं किया था। यदि करता भी तो कुएँ के धरातल पर उतरे बिना क्या मैं ऊपर चढ़ सकता था? धीरे–धीरे उतरने लगा। एक–एक इंच ज्यों–ज्यों मैं नीचे उतरता जाता था, त्यों–त्यों मेरी एकाग्रचित्तता बढ़ती जाती थी। मुझे भी एक सूझ सूझी। दोनों हाथों से धोती पकड़े हुए मैंने अपने पैर कुएँ की बगल से लगा दिए। दीवार से पैर लगाते ही कुछ मिट्टी नीचे गिरी और साँप ने फू करके उस पर मुँह मारा। मेरे पैर भी दीवार से हट गए, और मेरी टाँगे कमर से समकोण बनाती हुई लटकती रहीं, पर इससे साँप से दूरी और कुएँ की परिधि पर उतरने का ढंग मालूम हो गया। तनिक झूलकर मैंने अपने पैर कुएँ की बगल से सटाए, और कुछ धक्के के साथ अपने प्रतिद्वंद्वी के सम्मुख कुएँ की दूसरी ओर डेढ़ गज पर कुएँ के धरातल पर खड़ा हो गया। आँखें चार हुई। शायद एक–दूसरे को पहचाना। साँप को चक्षुश्रवा कहते हैं। मैं स्वयं चक्षुश्रवा हो रहा था। अन्य इंद्रियों ने मानो सहानुभूति से अपनी शक्ति आँखों को दे दी हो। साँप के फन की ओर मेरी आँखें लगी हुई थीं कि वह कब किस ओर को आक्रमण करता है। साँप ने मोहनी–सी डाल दी थी। शायद वह मेरे आक्रमण की प्रतीक्षा में था, पर जिस विचार और आशा को लेकर मैंने कुएँ में घुसने की ठानी थी, वह आकाश–कुसुम था। मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी–कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं। मुझे साँप का साक्षात होते ही अपनी योजना और आशा की असंभवता प्रतीत हो गई। डंडा चलाने के लिए स्थान ही न था। लाठी या डंडा चलाने के लिए काफी स्थान चाहिए जिसमें वह घुमाया जा सके। साँप को डंडे से दबाया जा सकता था, पर ऐसा करना मानो तोप के मुहरे पर खड़ा होना था। यदि फन या उसके समीप का भाग न दबा, तो फिर वह पलटकर जरूर काटता और फन के पास दबाने की कोई संभावना भी होती तो फिर उसके पास पड़ी हुई दो चिट्ठियों को कैसे उठाता? दो चिट्ठियाँ उसके पास उससे सटी हुई पड़ी थीं और एक मेरी ओर थी। मैं तो चिट्ठियाँ लेने ही उतरा था। हम दोनों अपने पैंतरों पर डटे थे। उस आसन पर खड़े–खड़े मुझे चार–पाँच मिनट हो गए। दोनों ओर से मोरचे लगे थे, पर मेरा मोरचा कमजोर था। कहीं साँप मुझ पर झपट पड़ता तो मैं यदि बहुत करता तो उसे पकड़कर, कुचलकर मार देता, पर वह तो अचूक तरल विष मेरे शरीर में पहुँचा ही देता और अपने साथ–साथ मुझे भी ले जाता। अब तक साँप ने वार न किया था, इसलिए मैंने भी उसे डंडे से दबाने का खयाल छोड़ दिया। ऐसा करना भी उचित न था। अब प्रश्न था कि चिट्ठियाँ कैसे उठाई जाएँ। बस एक सूरत थी। डंडे से साँप की ओर से चिट्टियों को अपनी ओर सरकाया जाए। यदि साँप टूट पड़ा, तो कोई चारा न था। कुर्ता था, और कोई कपड़ा न था जिससे साँप के मुँह की ओर करके उसके फन को पकड़ लूँ। मारना या बिलकुल छेड़खानी न करना–ये दो मार्ग थे। सो पहला मेरी शक्ति के बाहर था।

डंडे को लेकर ज्यों ही मैंन साँप की दाई ओर पड़ी चिट्ठी की ओर उसे बढ़ाया कि साँप का फन पीछे को हुआ। धीरे–धीरे डंडा चिट्ठी की ओर बढ़ा, और ज्योंही चिट्ठी के पास पहुँचा कि फूँ के साथ काली बिजली तड़पी और डंडे पर गिरी। हृदय में कंप हुआ, और हाथों ने आज्ञा

मानी। डंडा छूट पड़ा। मैं तो न मालूम कितना ऊपर उछल गया। जान–बूझकर नहीं, यों ही बिदककर। उछलकर जो खड़ा हुआ, तो देखा डंडे के सिर पर तीन–चार स्थानों पर पीव–सा कुछ लगा हुआ है। वह विष था। साँप ने मानो अपनी शक्ति का सर्टिफिकेट सामने रख दिया था, पर मैं तो उसकी योग्यता का पहले ही कायल था। उस सर्टीफिकेट की जरूरत न थी। साँप ने लगातार फूँ–फूँ करके डंडे पर तीन–चार चोटें कीं। वह डंडा पहली बार इस भाँति अपमानित हुआ था या वह साँप का उपहास कर रहा था।

उधर ऊपर फूँ–फूँ और मेरे उछलने और फिर वहीं धमाके से खड़े होने से छोटे भाई ने समझा कि मेरा काम तमाम हो गया और बंधुत्व का नाता फूँ–फूँ और धमाके से टूट गया। उसने खयाल किया कि साँप के काटने से मैं गिर गया। मेरे कष्ट और विरह के खयाल से उसके कोमल हृदय को धक्का लगा। भ्रातृ–स्नेह के ताने–बाने को चोट लगी। उसकी चीख निकल गई।

छोटे भाई की आशंका बेजा न थी. पर उस फूँ और धमाके से मेरा साहस कुछ बढ़ गया। दुबारा फिर उसी प्रकार लिफाफे को उठाने की चेष्टा की। अबकी बार साँप ने वार भी किया और डंडे से चिपट भी गया। डंडा हाथ से छूटा तो नहीं पर झिझक, सहम अथवा आतंक से अपनी ओर को खिंच गया और गुंजलक मारता हुआ साँप का पिछला भाग मेरे हाथों से छू गया। उफ! कितना ठंडा था। डंडा मैंने एक ओर को पटक दिया। यदि उसका दूसरा वार पहले होता तो उछलकर मैं साँप पर गिरता और न बचता, लेकिन जब जीवन होता है, तब हजारों ढंग बचने के निकल आते हैं। वह दैवी कृपा थी। डंडा के मेरी ओर खिंच आने से मेरे और साँप के आसन बदल गए। मैंने तुरंत ही लिफाफे और पोस्टकार्ड बटोर उठा लिए। चिट्ठियों को धोती के छोर में बाँध दिया, और छोटे भाई ने उन्हें ऊपर खींच लिया।

डंडे को साँप के पास से उठाने में भी बड़ी कठिनाई पड़ी। साँप उससे अलग होकर उस पर धरना देकर बैठा था। जीत तो मेरी हो चुकी थी, पर अपना निशान गँवा चुका था। आगे हाथ बढ़ाता तो साँप हाथ पर वार करता, इसलिए कुएँ की बगल से एक मुट्ठी मिट्टी लेकर मैंने उसकी दाईं ओर फेंकी कि वह उस पर झपटा और मैंने दूसरे हाथ से उसकी बाईं ओर से डंडा खींच लिया, पर बात की बात में उसने दूसरी ओर भी वार किया। यदि बीच में डंडा न होता, तो–पैर में उसके दाँत गड़ गए होते।

ऊपर चढ़ना कोई आसान काम न था। केवल हाथों के सहारे, पैरों को बिना कहीं लगाए हुए 36 फीट ऊपर चढ़ना मुझसे अब नहीं हो सकता। 15–20 फीट बिना पैरों के सहारे, केवल हाथों के बल, चढ़ने की हिम्मत रखता हूँ; कम ही, अधिक नहीं। पर उस ग्यारह वर्ष की आयु में मैं 36 फीट चढ़ा। बाहें भर गई थीं। छाती फूल गई थी। धौंकनी चल रही थी। पर एक–एक इंच सरक–सरककर अपनी भुजाओं के बल मैं ऊपर चढ़ आया। यदि हाथ छूट जाते तो क्या होता इसका अनुमान करना कठिन नहीं है। ऊपर आकर बेहाल होकर, थोड़ी देर तक पड़ा रहा।

देह को झाड़–झूड़कर धोती और कुर्ता पहना। फिर किशनपुर के लड़के को, जिसने ऊपर चढ़ने की मेरी जेद्दोजहद को देखा था, ताकीद करके कि वह कुएँ वाली घटना किसी से न कहे हम लोग आगे बढ़े।

सन् 1915 ई. में मैट्रीक्युलेशन पास करने के उपरांत यह घटना मैंने माँ को सुनाई। सजल नेत्रों से माँ ने मुझे अपनी गोद में ऐसे बिठा लिया जैसे चिड़िया अपने बच्चों को डैने के नीचे छिपा लेती है।

कितने अच्छे थे वे दिन! उस समय रायफल न थी. डंडा था और डंडे का शिकार–कम–से–कम उस साँप का शिकार–रायफल के शिकार से कम रोचक और भयानक न था।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. श्रीराम शर्मा का जन्म कब हुआ था?
   (क) 1891 (ख) 1892 (ग) 1895 (घ) 1896
2. श्रीराम शर्मा का जन्मस्थल है?
   (क) किरथरा (ख) प्रयाग (ग) लखनऊ (घ) बस्ती
3. श्रीराम शर्मा किस विधा के लिए ख्यात हैं :
   (क) कहानी (ख) कविता (ग) शिकार साहित्य (घ) काव्य साहित्य
4. 'स्मृति' शीर्षक पाठ किस पुस्तक से संकलित है :
   (क) प्राणों का सौदा (ख) शिकार (ग) बोलती प्रतिमा (घ) इनमें से कोई नहीं
5. शिकार का प्रकाशन वर्ष है :
   (क) 1931 (ख) 1932 (ग) 1933 (घ) 1934
6. श्रीराम शर्मा किस पत्रिका से जुड़े थे :
   (क) सरस्वती (ख) चाँद (ग) माधुरी (घ) विशाल भारत
7. लेखक का विद्यालय किस गाँव में था :
   (क) रामपुर (ख) सुल्तानपुर (ग) मक्खनपुर (घ) इनमें से कोई नहीं
8. पाठ की घटना किस वर्ष की है
   (क) 1905 (ख) 1906 (ग) 1907 (घ) 1908
9. कुएँ में प्रवेश के समय लेखक की आयु कितनी थी :
   (क) 11 वर्ष (ख) 10 वर्ष (ग) 14 वर्ष (घ) 13 वर्ष

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. भाई के बुलाने पर घर लौटते समय लेखक किस बात से डरा हुआ था?

2. लेखक ने अपने डंडे को क्या कहा है?
3. बच्चों की टोली कुएँ में ढेला क्यों फेंकती थी?
4. लेखक के रोने का कारण क्या था?
5. 'उस समय झूठ बोलना मैं जानता ही न था। घर लौटकर सच बोलने से रुई की तरह धुनाई होती।'–इस कथन से लेखक की किस मनोदशा का पता चलता है?
6. लेखक कुएँ में किस प्रकार उतरा?
7. कुएँ में लेखक और साँप का सामना किस प्रकार हुआ?
8. कुएँ में उतरकर लेखक ने चिट्ठियाँ किस प्रकार बटोरीं। लिखें।
9. पाठ से लेखक के किन गुणों का परिचय मिलता है? लिखें।
9. श्रीराम शर्मा का जीवन परिचय संक्षेप में लिखें।
10. पाठ के आधार पर श्रीराम शर्मा की भाषा की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख करें।

III. दिए गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. सच बोलकर पिटने के भावी भय झूठ बोलना और झूठ बोलकर चिट्ठियों के न पहुँचने की जिम्मेदारी के बोझ से दबा मैं बैठा सिसक रहा था। इसी सोच–विचार में पंद्रह मिनट होने को आए। देर हो रही थी, और उधर दिन का बुढ़ापा बढ़ता जाता था। <u>कहीं भाग जाने को तबीयत करती थी, पर पिटने का भय और जिम्मेदारी की दुधारी तलवार कलेजे पर फिर रही थी।</u>

   (क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

   (ग) 'तलवार' के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

2. साँप ने मोहनी–सी डाल दी थी। शायद वह मेरे आक्रमण की प्रतीक्षा में था, पर जिस विचार और आशा को लेकर मैंने कुएँ में घुसने की ठानी थी, वह आकाश–कुसुम था। <u>मनुष्य का अनुमान और भावी योजनाएँ कभी–कभी कितनी मिथ्या और उलटी निकलती हैं।</u> मुझे साँप का साक्षात होते ही अपनी योजना और आशा की असंभवता प्रतीत हो गई।

   (क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

   (ग) 'आशा' और 'आकाश' का विपरीतार्थक शब्द क्या होगा?

3. सन् 1915 में मैट्रीक्युलेशन पास करने के उपरांत यह घटना मैंने माँ को सुनाई। <u>सजल नेत्रों से माँ ने मुझे अपनी गोद में ऐसे बिठा लिया जैसे चिड़िया अपने बच्चों को डैने के नीचे छिपा लेती है।</u>

   कितने अच्छे थे वे दिन! उस समय रायफल न थी. डंडा था और डंडे का शिकार–कम–से–कम उस साँप का शिकार–रायफल के शिकार से कम रोचक और भयानक न था।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) लेखक ने यह घटना माँ को कब बताई?

IV. भाषा के रंग :

1. समास–विग्रह कीजिए और समास पहचानें :
   चक्षुश्रवा, समकोण, प्रतिद्वंद्वी, एकाग्रचित, भ्रातृ–स्नेह
2. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों की प्रकृति बताएँ
   चिल्ला, धोती, डंडा, रायफल, ढेला, हिरन, झुंड, छौना, उद्वेग, रुई, दुधारी, तलवार, धोखा, साँप, रस्सी, निश्चय, डेंग, धरातल, थकावट, दीवार, पैर, फन, मिनट, मोरचे, वार, आँख
3. 'कठिनाई' में कौन–सा प्रत्यय है? उस प्रत्यय से पाँच अन्य शब्द बनाएँ।
4. रचना की दृष्टि से वाक्य की प्रकृति बताएँ :
   (क) सन् 1908 ई. की बात है।
   (ख) जाड़े के दिन थे ही, तिस पर हवा के प्रकोप से कँप–कँपी लग रही थी।
   (ग) मैं तो आगे भागकर आ जाता था और टोपी को एक हाथ से पकड़कर दूसरे हाथ से ढेला फेंकता था।
   (घ) दृढ़ संकल्प से दुविधा की बेड़ियाँ कट जाती हैं।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. लेखक ने लिखा है कि उसके कुर्ते में जेबें न थीं। इसके क्या कारण रहे होंगे। सोचें और लिखें।
2. पाठ में आए जिन वनस्पतियों का उल्लेख है, उनके नाम और गुण लिखिए।
3. पाठ में जिन पशुओं का उल्लेख है, उनके नाम नाम लिखिए।

शब्दार्थ

आशंका – संदेह, डर। **प्रसन्न वदन** – प्रसन्न मुख। **प्रतिध्वनि** – गूँज। **किलोलें** – खेल। **मृगशावक** – हिरन का बच्चा। **छौना** – छोटा बच्चा। **ढाढ़े मारकर रोना** – जोर–जोर से रोना। **दुधारी** – दोनों तरफ धार। **आश्वासन** – भरोसा। **चक्षुश्रवा** – आँखों से सुनने वाला। **पैतरों** – स्थिति। **ताकीद** – निर्देश, चेतावनी

■

महादेवी वर्मा

(सन् 1907 – 1987 ई.)

महादेवी वर्मा का जन्म **सन् 1907 ई.** में उत्तर प्रदेश के **फर्रुखाबाद** में हुआ था। उनके पिता का नाम **गोविंद प्रसाद वर्मा** तथा माँ का नाम **हेमरानी देवी** था। उनकी आरंभिक स्कूली शिक्षा इंदौर में हुई थी। उसके बाद की शिक्षा उन्होंने प्रयागराज (इलाहाबाद) में पाई। वे प्रयागराज के क्रास्टवेट कॉलेज की छात्रा थीं। उन्होंने सन् 1933 ई. में संस्कृत और वेद–विद्या में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. की उपाधि प्राप्त की थी। उसी वर्ष वे 'प्रयाग महिला विद्यापीठ' की प्राचार्य बनीं। उस संस्था से उनका जुड़ाव जीवनपर्यंत रहा। सन् 1935 ई. में वे प्रयाग से निकलनेवाली पत्रिका 'चाँद' की संपादक बनीं। हिंदी के प्रचार प्रसार और लेखकों की सहायता के लिए उन्होंने 'साहित्यकार संसद' की भी स्थापना की।

महादेवी वर्मा सक्सेरिया पुरस्कार, भारत भारती पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार, पद्‌भूषण सहित अनेक पुरस्कारों और सम्मानों से समादृत हुईं। **सन् 1987 ई.** में **प्रयाग** में उनका निधन हुआ।

महादेवी वर्मा ने कवयित्री के रूप में अपना लेखन शुरू किया था। सन् 1930 ई. में उनका पहला कविता संकलन 'नीहार' प्रकाशित हुआ। उनकी पहली गद्य पुस्तक 'अतीत के चलचित्र' सन् 1941 ई. में प्रकाशित हुई। अपने रेखाचित्रों में उन्होंने दलित, उपेक्षित और अवर्ण; विशेषकर स्त्री पात्रों के जीवन–संघर्ष को उपस्थित कर हिंदी गद्य को अधिक सामाजिक और समावेशी बनाया। पशु–पक्षियों पर केंद्रित उनके रेखाचित्रों में उनकी करुणा का चरम हमें मिलता है। यह कहने में संकोच नहीं होना चाहिए कि उनके लेखन ने हिंदी गद्य को अधिक जवाबदेह, मार्मिक और सामाजिक बनाया।

महादेवी वर्मा की भाषा तत्सम प्रधान है। वह अत्यंत व्यंजक, अत्यंत सधा और अनुशासित है। उसमें व्यंग्य की भी उपस्थिति है। रेखाचित्रों एवं संस्मरणों में उनकी भाषा पर्याप्त बिंबात्मक है।

महादेवी वर्मा की प्रमुख रचनाएँ : **काव्य संकलन**–नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत, दीपशिखा, सप्तपर्णा, संधिनी, यामा। **रेखाचित्र एवं संस्मरण** : अतीत के चलचित्र, स्मृति की

रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार। **निबंध–संकलन** : शृंखला की कड़ियाँ, क्षणदा, साहित्यकार की आस्था तथा अन्य निबंध आदि।

गिल्लू शीर्षक प्रस्तुत रेखाचित्र महादेवी वर्मा की असीम करुणा और उनके प्रति गिल्लू के अद्भुत लगाव को व्यंजित करनेवाला पाठ है। महादेवी ने उसकी प्राण रक्षा की, ममत्व दिया; गिल्लू ने वैसा ही समर्पण दिखाया। यह पाठ हमें संदेश देता है कि हमारा परिवेश बहुत ही सुंदर है; आवश्यकता इसकी है कि हम संवेदना और करुणा के साथ उसे देखें। उसी के सहारे हम इसे और सुंदर बना सकते हैं।

प्रस्तुत पाठ महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों के संकलन 'मेरा परिवार' से संकलित है।

■

गिल्लू

सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर उसे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है।

परंतु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा। कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो।

अचानक एक दिन सबेरे कमरे से बरामदे में आकर मैंने देखा, दो कौवे एक गमले के चारों ओर चोंचों से छुआ–छुऔवल जैसा खेल खेल रहे हैं। यह काकभुशुंडि भी विचित्र पक्षी है–एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।

हमारे बेचारे पुरखे न गरुड़ के रूप में आ सकते हैं, न मयूर के, न हंस के। उन्हें पितरपक्ष में हमसे कुछ पाने के लिए काक बनकर ही अवतीर्ण होना पड़ता है। इतना ही नहीं, हमारे दूरस्थ प्रियजनों को भी अपने आने का मधु संदेश इनके कर्कश स्वर में ही देना पड़ता है। दूसरी ओर हम कौवा और काँव–काँव करने की अवमानता के अर्थ में ही प्रयुक्त करते हैं।

मेरे काकपुराण के विवेचन में अचानक बाधा आ पड़ी, क्योंकि गमले और दीवार की संधि में छिपे एक छोटे से जीव पर मेरी दृष्टि रुक गई। निकट जाकर देखा, गिलहरी का एक छोटा–सा बच्चा है, जो संभवतः घोंसले से गिर पड़ा है और अब कौवे जिसमें सुलभ आहार खोज रहे हैं।

काकद्वय की चोचों के दो घाव उस लघुप्राण के लिए बहुत थे, अतः वह निश्चेष्ट–सा गमले से चिपका पड़ा था।

सबने कहा कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जावे।

परन्तु मन नहीं माना–उसे हौले से उठाकर अपने कमरे में लाई, फिर रुई से रक्त पोंछकर घावों पर पेंसिलिन का मरहम लगाया। रुई की पतली बत्ती दूध से भिगोकर जैसे–तैसे उसके नन्हें से मुँह में लगाई, पर मुँह खुल न सका और दूध की बूंदें दोनों ओर ढुलक गईं।

कई घंटे के उपचार के उपरांत उसके मुँह में एक बूँद पानी टपकाया जा सका। तीसरे दिन वह इतना अच्छा और आश्वस्त हो गया कि मेरी उँगली अपने दो नन्हें पंजों से पकड़कर, नीले काँच के मोतियों जैसी आँखों से इधर–उधर देखने लगा।

तीन–चार मास में उनके स्निग्ध रोयें, झब्बेदार पूँछ और चंचल चमकीली आँखें सबको विस्मित करने लगीं।

हमने उसकी जातिवाचक संज्ञा को व्यक्तिवाचक का रूप दे दिया और इस प्रकार हम उसे गिल्लू कहकर बुलाने लगे। मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया।

वही दो वर्ष गिल्लू का घर रहा। वह स्वयं हिलाकर अपने घर में झूलता और अपनी काँच के मनकों–सी आँखों से कमरे के भीतर और खिड़की से बाहर न जाने क्या देखता–समझता रहता था। परंतु उसकी समझदारी और कार्यकलाप पर सबको आश्चर्य होता था।

जब मैं लिखने बैठती तब अपनी ओर मेरा ध्यान आकर्षित करने की उसे इतनी तीव्र इच्छा होती थी कि उसने एक अच्छा उपाय खोज निकाला।

वह मेरे पैर तक आकर सर्र से परदे पर चढ़ जाता और फिर उसी तेजी से उतरता। उसका यह दौड़ने का क्रम तब तक चलता, जब तक मैं उसे पकड़ने के लिए न उठती।

कभी मैं गिल्लू को पकड़कर एक लंबे लिफाफे में इस प्रकार रख देती कि उसके अगले दो पंजों और सिर के अतिरिक्त सारा लघु गात लिफाफे के भीतर बंद रहता। इस अद्‌भुत स्थिति में कभी–कभी घंटों मेज पर दीवार के सहारे खड़ा रहकर वह अपनी चमकीली आँखों से मेरा कार्यकलाप देखा करता।

भूख लगने पर चिक चिक करके मानो वह मुझे सूचना देता और काजू या बिस्कुट मिल जाने पर उसी स्थिति में लिफाफे से बाहर वाले पंजों से पकड़कर उसे कुतरता रहता।

फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम वसंत आया। नीम–चमेली की गंध मेरे कमरे से होले होले आने लगी। बाहर की गिलहरियाँ खिड़की की जाली के पास आकर चिक चिक करके न जाने क्या कहने लगीं।

गिल्लू को जाली के पास बैठकर अपनेपन से बाहर झाँकते देखकर मुझे लगा कि इसे मुक्त करना आवश्यक है।

मैंने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया और इस मार्ग से गिल्लू ने बाहर जाने पर सचमुच ही मुक्ति की साँस ली। इतने छोटे जीव को घर में पले कुत्ते, बिल्लियों से बचाना भी एक समस्या ही थी।

आवश्यक कागज–पत्रों के कारण मेरे बाहर जाने पर कमरा बंद ही रहता है। मेरे कॉलेज से लौटने पर जैसे ही कमरा खोला गया और मैंने भीतर पैर रखा, वैसे ही गिल्लू अपने जाली के द्वार से भीतर आकर मेरे पैर से सिर और सिर से पैर तक दौड़ लगाने लगा। तब के यह नित्य का क्रम हो गया।

मेरे कमरे से बाहर जाने पर वह भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना, हर डाल पर उछलता कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।

मेरे पास बहुत से पशु–पक्षी हैं और उनका मुझसे लगाव भी कम नहीं है, परतु उनमें से किसी को मेरे साथ मेरी थाली में खाने की हिम्मत हुई है, ऐसा मुझे स्मरण नहीं आता।

गिल्लू इनमें अपवाद था। मैं जैसे ही खाने के कमरे में पहुँचती, वह खिड़की से निकलकर आँगन की दीवार, बरामदा पार करके मेज पर पहुँच जाता और मेरी थाली में बैठ जाना चाहता। बड़ी कठिनाई से मैंने उसे थाली के पास बैठना सिखाया, जहाँ बैठकर वह मेरी थाली में से एक–एक चावल उठाकर बड़ी सफाई से खाता रहता। काजू उसका प्रिय खाद्य था और कई दिन काजू न मिलने पर वह अन्य खाने की चीजें या तो लेना बंद कर देता था या झूले से नीचे फेंक देता था।

उसी बीच मुझे मोटर दुर्घटना में आहत होकर कुछ दिन अस्पताल में रहना पड़ा। उन दिनों जब मेरे कमरे का दर वाजा खोला जाता, गिल्लू अपने झूले से उतरकर दौड़ता और फिर किसी दूसरे को देखकर तेजी से अपने घोंसले में जा बैठता। सब उसे काजू दे जाते, परंतु अस्पताल से लौटकर जब मैंने उसके झूले की सफाई की तो उसमें काजू भरे मिले, जिनसे ज्ञात होता था कि वह उन दिनों अपना प्रिय खाद्य कितना कम खाता रहा।

मेरी अस्वस्थता में वह तकिये पर सिरहाने बैठकर अपने नन्हें–नन्हें पंजों से मेरे सिर और बालों को इतने हौले–हौले सहलाता रहता कि उसका हटना एक परिचारिका के हटने के समान लगता।

गर्मियों में जब मैं दोपहर में काम करती रहती तो गिल्लू न बाहर जाता, न अपने झूले में बैठता। उसने मेरे निकट रहने के साथ गर्मी से बचने का सर्वथा नया उपाय खोज निकाला था।

वह मेरे पास रखी सुराही पर लेट जाता और इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।

गिलहरियों के जीवन की अवधि दो वर्ष से अधिक नहीं होती अतः गिल्लू की जीवन–यात्रा का अंत आ ही गया। दिनभर उसने न कुछ खाया, न बाहर गया। रात में अन्त को यातना में भी वह मेरी वही उँगली पकड़कर मेरे बिस्तर पर आया और ठंडे पंजों से मेरी वही उँगली पकड़कर हाथ से चिपक गया, जिसे उसने अपने बचपन की मरणासन्न स्थिति में पकड़ा था।

पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। परंतु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

उसका झूला उतारकर रख दिया गया है और खिड़की को जाली बंद कर दी गई है, परंतु गिलहरियों की नई पीढ़ी जाली के उस पार चिक चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर वसंत आता ही रहता है।

सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू को समाधि दी गई है इसलिए भी कि उसे वह लता सबसे अधिक प्रिय थी–इसलिए भी कि उस लघुगात का, किसी वासंती दिन, जुही के पीताभ छोटे फूल में खिल जाने का विश्वास, मुझे संतोष देता है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. महादेवी वर्मा का जन्म कब हुआ था?
   (क) 1907 (ख) 1908 (ग) 1909 (घ) 1910
2. महादेवी वर्मा का निधन कब हुआ?
   (क) 1977 (ख) 1980 (ग) 1986 (घ) 1987
3. महादेवी वर्मा का पहला कविता संकलन प्रकाशित हुआ :
   (क) 1930 (ख) 1931 (ग) 1932 (घ) 1933
4. 'नीहार' क्या है?
   (क) कहानी संकलन (ख) कविता संकलन (ग) निबंध संकलन (घ) उपन्यास
5. 'अतीत के चलचित्र' क्या है :
   (क) कहानी संकलन (ख) कविता संकलन (ग) उपन्यास (घ) रेखाचित्र–संकलन
6. 'मेरा परिवार' क्या है :
   (क) रेखाचित्र–संकलन (ख) कविता संकलन (ग) उपन्यास (घ) कहानी संकलन
7. 'गिल्लू' का प्रिय खाद्य था :
   (क) दूध (ख) रोटी (ग) घी (घ) काजू
8. 'उष्ण' का विपरीतार्थक है :
   (क) गर्म (ख) शीत (ग) सूखा (घ) इनमें से कोई नहीं
9. 'सम्मानित' में प्रत्यय है :
   (क) नित (ख) नीत (ग) इत (घ) त

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. लेखिका को गिल्लू का स्मरण क्या देखकर हो आया?
2. गिल्लू लेखिका को किस प्रकार मिला और उसे कैसे बचाया गया?
3. यह काकभुशुंडि भी विचित्र पक्षी है–एक साथ समादरित, अनादरित, अति सम्मानित, अति अवमानित।–ऐसा क्यों?
4. लेखिका का ध्यान आकृष्ट करने के लिए क्या करता था?
5. गिल्लू किस बात में अपवाद था?
6. गर्मियों में लेखिका के निकट रहने और गर्मी से बचने का गिल्लू ने क्या उपाय खोज निकाला था?
7. गिल्लू के अंत का वर्णन लेखिका ने किस प्रकार किया है? लिखें।
8. लेखिका को किस बात का संतोष है?
9. लेखिका और गिल्लू के संबंध का परिचय अपने शब्दों में दें।
10. पाठ के आधार पर महादेवी वर्मा का जीवन परिचय लिखें।
11. पाठ के आधार पर महादेवी वर्मा की भाषा की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख करें।

III. दिए गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. सोनजुही में आज एक पीली कली लगी है। इसे देखकर अनायास ही उस छोटे जीव का स्मरण हो आया, जो इस लता की सघन हरीतिमा में छिपकर बैठता था और फिर मेरे निकट पहुँचते ही कंधे पर कूदकर उसे चौंका देता था। तब मुझे कली की खोज रहती थी, पर आज उस लघुप्राण की खोज है।

   <u>परंतु वह तो अब तक इस सोनजुही की जड़ में मिट्टी होकर मिल गया होगा। कौन जाने स्वर्णिम कली के बहाने वही मुझे चौंकाने ऊपर आ गया हो।</u>

   (क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

   (ग) 'अनायास' और 'लघुप्राण' में कौन–सा समास है?

2. मेरे कमरे से बाहर जाने पर वह भी खिड़की की खुली जाली की राह बाहर चला जाता और दिन भर गिलहरियों के झुंड का नेता बना, हर डाल पर उछलता कूदता रहता और ठीक चार बजे वह खिड़की से भीतर आकर अपने झूले में झूलने लगता।

   <u>मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी। कभी फूलदान के फूलों में छिप जाता, कभी परदे की चुन्नट में और कभी सोनजुही की पत्तियों में।</u>

   (क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

   (ग) 'डाल' के दो पर्यायवाची शब्द लिखिए।

3. पंजे इतने ठंडे हो रहे थे कि मैंने जागकर हीटर जलाया और उसे उष्णता देने का प्रयत्न किया। परंतु प्रभात की प्रथम किरण के स्पर्श के साथ ही वह किसी और जीवन में जागने के लिए सो गया।

   उसका झूला उतारकर रख दिया गया है और खिड़की को जाली बंद कर दी गई है, परंतु गिलहरियों की नई पीढ़ी जाली के उस पार चिक चिक करती ही रहती है और सोनजुही पर वसंत आता ही रहता है।

   (क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

   (ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

   (ग) उत्पत्ति की दृष्टि से 'गिलहरी' और 'जाली' किस प्रकार के शब्द हैं?

IV. भाषा के रंग :

1. 'विवेचन' का समानार्थी शब्द क्या होगा?
2. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों की प्रकृति बताएँ

   कोना, गात, लिफाफा, मेज, थाली, चावल, परिचारिका, उपाय, खोज, परदा, काजू, बिस्कुट, अपवाद, फूल, छोटा बरामदा
3. 'उष्णता' में 'ता' प्रत्यय है। इस प्रत्यय से पाँच अन्य शब्द बनाएँ।
4. अर्थ की दृष्टि से नीचे दिए गए वाक्यों की प्रकृति बताएँ :

   (क) सबने कहा कौवे की चोंच का घाव लगने के बाद यह बच नहीं सकता, अतः इसे ऐसे ही रहने दिया जावे।

   (ख) मुझे चौंकाने की इच्छा उसमें न जाने कब और कैसे उत्पन्न हो गई थी।

   (ग) फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम वसंत आया।

   (घ) मैंने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रुई बिछाकर उसे तार से खिड़की पर लटका दिया।
5. पाठ से द्वंद्व समास के तीन उदाहरण चुनिए।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. महादेवी वर्मा की पुस्तक 'मेरा परिवार' में विभिन्न पशुओं पर लिखे रेखाचित्र संकलित हैं। आप उस पुस्तक को पढ़ें और बताएँ कि उनमें से कौन पाठ आपको सबसे प्रिय लगा और क्यों?
2. क्या आपके पास भी कोई पालतू जानवर या पक्षी है। यदि हाँ, तो उसका परिचय अपने शब्दों में दीजिए।

शब्दार्थ

अनायास – बिना प्रयास के, सरलता से। **अवतीर्ण** – अवतरित। **लघुप्राण** – छोटा जीव। **समादरित** – विशेष आदर। **अनादरित** – बिना आदर के। **गात** – शरीर। **परिचारिका** – सेविका, **मरणासन्न** – जो मरने के निकट हो, **पीताभ** – पीली आभा, पीली चमक

■

हजारीप्रसाद द्विवेदी

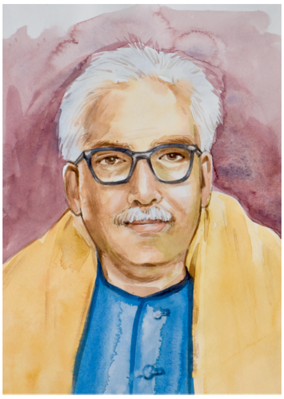

(सन् 1907 – 1979 ई.)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म **सन् 1907 ई.** में उत्तर प्रदेश के **बलिया** जनपद के आरत दुबे का छपरा, ओझवलिया गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम **अनमोल द्विवेदी** तथा माता का नाम **ज्योतिषमती** था। आचार्य द्विवेदी के बचपन का नाम **वैद्यनाथ द्विवेदी** था। उनकी आरंभिक शिक्षा ग्रामीण परिवेश में हुई। सन् 1927 ई. में उन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा पास की। उसी साल भगवती देवी से उनका विवाह हुआ। सन् 1929 ई. में उन्होंने इंटरमीडिएट और शास्त्री की परीक्षा पास की और उसके अगले साल सन् 1930 ई. में ज्योतिष विषय से शास्त्राचार्य उपाधि प्राप्त की।

हजारीप्रसाद द्विवेदी सन् 1930 ई. में रवींद्रनाथ ठाकुर द्वारा स्थापित शांतिनिकेतन में हिंदी अध्यापक बने। शांतिनिकेतन के अतिरिक्त वे काशी हिंदू विश्वविद्यालय, पंजाब विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान आदि से भी जुड़े। उन्हें साहित्य अकादेमी पुरस्कार, भारत सरकार से 'पद्मभूषण' सम्मान एवं लखनऊ विश्वविद्यालय से डी. लिट्. की उपाधि सहित कई सम्मान मिले। **सन् 1979 ई.** में **दिल्ली** में उनका निधन हुआ।

आचार्य द्विवेदी हिंदी में अपनी तरह के अकेले विद्वान थे। हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, बाँग्ला आदि भाषाओं एवं उनके साहित्य के वे गहन अध्येता था। उनकी दृष्टि अत्यंत उदार और समावेशी थी। वे एक उच्च कोटि के साहित्येतिहास लेखक, आलोचक, उपन्यासकार एवं निबंधकार थे। इन सभी विधाओं में उन्होंने अपना मौलिक योगदान दिया।

आचार्य द्विवेदी की भाषा तत्सम प्रधान है किंतु उसकी असल चमक तद्भव, देशज और विदेशज शब्दों के साहचर्य से संभव होती है। प्रवाह उनकी भाषा का विशेष गुण है। उदाहरणों, मुहावरों और कहावतों के साथ वे अपनी बात पाठकों के भीतर उतार देते हैं।

हजारीप्रसाद द्विवेदी की प्रमुख रचनाएँ : इतिहास एवं आलोचना : हिंदी साहित्य की भूमिका, हिंदी साहित्य का आदिकाल, हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास, कबीर, सूर साहित्य, नाथ संप्रदाय, सिक्ख गुरुओं का पुण्य स्मरण, प्राचीन भारत के कलात्मक विनोद

आदि। **निबंध** : अशोक के फूल, कल्पलता, कुटज, आलोक पर्व आदि। **उपन्यास** : बाणभट्ट की आत्मकथा, चारुचंद्रलेख, पुनर्नवा, अनामदास का पोथा।

प्रस्तुत निबंध **गुरु नानकदेव** उनके जीवन एवं विचारों से परिचित कराने वाली रचना है। यह पाठ हमें संदेश देता है कि हमारा विचार और व्यवहार एक हो। हम भयहीन, वैरहीन और अहंकारहीन हों। जाति या किसी अन्य भेद का विचार किए बिना हम 'प्रेम' को सर्वोच्च मूल्य के रूप में स्वीकारें तथा कभी भी संकीर्ण एवं अनुदार न बनें।

प्रस्तुत पाठ आचार्य द्विवेदी की पुस्तक 'सिक्ख गुरुओं का पुण्य स्मरण' से संकलित–संपादित है।

■

गुरु नानकदेव

आज से 500 वर्ष पहले गुरु नानकदेव का आविर्भाव हुआ था। गुरुजी का जन्म तलवंडी ग्राम के एक खत्री परिवार में हुआ था। गाँव के मालिक एक मुसलमान रईस (राय सलार) थे। गाँव का वातावरण ही ऐसा था जिससे गुरुजी के बालचित्त पर सांप्रदायिक सौहार्द का प्रभाव पड़ा। उन्हें पाठशाला में पढ़ने को भी भेजा गया था और अन्य विद्यार्थियों की तुलना में उनकी गंभीरता, शालीनता और भगवन्निष्ठा का आभास भी उन्हीं दिनों मिल चुका था। उनकी एक बड़ी बहन थी जिसका नाम नानकी बताया जाता है। नानक का विवाह भी हुआ था। उनकी पत्नी सुलक्खनी थीं। नानक का मन घर के कामों में नहीं लगता था। वे साधु–संग, एकांतवास और अध्यात्म–चिंतन में लगे रहते थे। माता–पिता उन्हें गृहस्थी के बंधन में बाँधना चाहते थे। बहनोई जयराम की सहायता से उन्हें पंजाब के सूबेदार दौलतखाँ लोदी के एक कर्मचारी के मोदीखाने में नौकरी मिल गई। परमात्मा जिसे अपना बनाना चाहता है उसके लिए सुयोग भी विचित्र प्रकार से दे देता है। कहा जाता है कि उस नौकरी के बंधन से उन्हें एक विचित्र प्रकार से मुक्ति मिल गई। आटा तौलते समय वे एक, दो, तीन गिनते–गिनते जब तेरह पर आए तो तेरह शब्द के पंजाबी उच्चारण 'तेरा' पर उनका ध्यान दूसरी ओर चला गया। 'मैं तेरा हूँ' इस भावना ने उन्हें तन्मय कर दिया। हाथ तौलते रहे, मुँह 'तेरा' 'तेरा' की रट में लग गया। सारा भंडार तौल दिया गया, 'तेरा' 'तेरा' 'तेरा'।

नतीजा जो होना था, वही हुआ। नौकरी छूट गई। नानक की अध्यात्म भावना के विकास का मार्ग प्रशस्त हो गया। साधुसंग, भ्रमण और धर्मोपदेश का अवकाश प्राप्त हुआ। उन्होंने कामरूप से लेकर मक्का–मदीने तक की यात्रा की। उन्हें संसार बाँध नहीं सका, पर संसार के बंधन से छुटकारा देने और दिलाने का रहस्य उन्हें अवश्य प्राप्त हो गया। इन सारी यात्राओं में गुरु के मुख से जो अनुभूत सत्य प्रकट हुआ, वह अनायास गीतरूप में उच्छ्‌वसित हुआ। सौभाग्य से उन्हीं के गाँव के एक मुसलमान रागी 'मरदाना' बराबर उनके साथ रहते रहे और उन्होंने यथासंभव उन वाणियों को राग के ढाँचे में बाँधकर स्मरण रखा।

गुरु नानक ने प्रेम का संदेश दिया है, क्योंकि मनुष्य–जीवन का जो चरम प्राप्तव्य है वह स्वयं प्रेमरूप है। प्रेम ही उसका स्वभाव है। प्रेम ही उसका साधन है। वे कहते हैं–'अरे ओ मुग्ध मनुष्य ! सच्ची प्रीति से ही तेरा मान–अभिमान नष्ट होगा, तेरी छोटाई की सीमा समाप्त होगी,

परम मंगलमय शिव तुझे प्राप्त होगा। उसी सच्चे प्रेम की साधना तेरे जीवन का परम लक्ष्य है। बाह्य आडम्बरों को तू धर्म समझ रहा है, बद्धमूल संस्कारों को तू आस्था मानता है ? नहीं प्यारे, यह सब धर्म नहीं है। धर्म तो स्वयं रूप होकर भगवान् के रूप में तेरे भीतर विराजमान है। उसी अगम अगोचर प्रभु की शरण पकड़। क्या पड़ा है इन छोटे अहंकारों में! ये मुक्ति के नहीं, बंधन के हेतु हैं।'

अपने जीवन के सत्तर वर्षों में लगभग एक तिहाई उम्र उन्होंने यात्रा में ही बिताई थी। उन दिनों की कठिन परिस्थितियों में उनकी यात्राएँ अद्‌भुत साहसपूर्ण कही जाएँगी। पाँच बार उन्होंने लंबी यात्राएँ कीं। उद्देश्य साधु–संग और भगवद्‌भक्ति का प्रचार था। पहली यात्रा पूरब की थी। उस समय उनकी आयु 31 वर्ष की थी। साथ में उनके प्रिय शिष्य मरदाना थे उनकी यह यात्रा कामरूप तक की थी। वे पानीपत, गोरखमाता, वाराणसी, नालंदा होते हुए कामरूप गए और फिर अपने स्थान को लौट आए। लौटते समय पाकपत्तन (मांटगुमरी) में शेख फ़रीद के शिष्य शेख इब्राहीम से धर्मालाप किया। सर्वत्र उनके मोहक व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ता था। मरदाना की बीन पर उनकी रचनाएँ श्रोताओं को मुग्ध कर देती थीं। दूसरी यात्रा सन् 1506 में शुरू हुई। इस बार वे दक्षिण की ओर गए। सिरपा, बीकानेर, अजमेर, आबू होते वे पुरी गए और उधर से नागपत्तन और श्रीलंका तक उनके जाने का विवरण मिलता है। इस बार उनके साथ सैदो और धेबी नाम के दो जाट शिष्य भी थे। तीसरी यात्रा 8 वर्ष बाद सन् 1514 ई. में शुरू हुई। इस यात्रा में वे उत्तर की ओर कैलास और मानसरोवर की ओर गए। साथ नासू और सीहा नाम के दो शिष्य थे। मानसरोवर में उनका योगियों के साथ सत्संग हुआ। इसी यात्रा में वे तिब्बत और दक्षिणी चीन भी गए। चौथी यात्रा पश्चिम की ओर हुई। वे हाजी के रूप में मक्का गए। बताया जाता है कि इसी यात्रा में वे यरूशलम, दमिश्क और अल्लेप्पों होते हुए बगदाद पहुँचे और अनेक मुस्लिम संतों और पंडितों से सत्संग किया। उनकी प्रेममयी वाणी ने सर्वत्र जादू का असर किया।

गुरु के जीवनकाल में ही उनका प्रभाव, सूर्य के के समान फैलने लगा था। उनके मन में किसी के प्रति राग या द्वेष नहीं था। उन्होंने किसी की निंदा नहीं की और एक परमात्मा को छोड़कर किसी की स्तुति भी नहीं की। दुख से वे उद्विग्न नहीं हुए, सुख की वासना मन में नहीं रखी। वे जीवन में कभी भी लोभ, मोह और अभिमान के वशीभूत नहीं हुए, हर्ष और शोक से विचलित नहीं हुए। भगवान् का परम अनुग्रह जिसे मिल जाता है वही इस प्रकार का विगतस्पृह हो सकता है। गुरुजी ऐसे लोगों को 'निराश' कहते हैं। निराश, अर्थात् जिसके मन में प्राप्ति और संचय की कोई स्पृहा न हो। गुरु की कृपा से, प्रभु के अनुग्रह से ही यह संभव है। जो गोविंद के साथ पानी की धारा में पड़े हुए पानी की बूँद के साथ एकमेक हो गया होता है, उसे ही इस

प्रकार की निस्पृहता प्राप्त होती है। एक भजन में ऐसे भक्तजन का चित्रण इस प्रकार किया गया है–

जो नर दुखु मै दुखु नहीं मानै।
मुख सनेह अरु भै नहि जाके कंचन माटी जानै।
नहिं निंदा नहि अस्तुति जाके लोभ मोह अभिमाना।
हरस सोक रहे नियारउ नाहिं मान अपमाना।
आसा मनसा सकल त्यागै जग ते रहै निरासा।
काम क्रोध जिह परसे नाहीं तेहि घटि ब्रह्म निवासा।
गुरु किरपा जिह नर कउ कीनीं तिह इह जुगुति पिछानी।
नानक लीन भयो गोविंद सिउ ज्यों पानी संगि पानी।।

वस्तुतः यही गुरु के आकर्षक व्यक्तित्व का रहस्य भी है और स्वरूप भी।

उन्होंने तथाकथित छोटी जातियों को भी भरपूर सम्मान दिया। भेदभाव तो उनमें लेशमात्र नहीं था। हिंदू और मुसलमान दोनों को वह समान भाव से स्नेह करते थे। कैसा भेदभाव? गुरु ने कभी अपने को किसी से अलग नहीं माना। उन्होंने कहा था कि एक ही ज्योति से संसार उत्पन्न किया गया है, इसमें कौन अच्छा है कौन बुरा–

एक जोति ते जग ऊपजा कौन भले कौन मंदे !

समाज की कुरीतियों और अंधविश्वासों को दूर करने के लिए वे बँधी–बँधाई बोलियों का नुस्खा नहीं बताते। वे ऐसी महान् धर्मसाधना का निर्देश करते हैं जिसे पाकर मनुष्य को कुछ पाना बाकी नहीं रह जाता है। वे भगवद्भक्ति और त्यागपरायण निर्भीक जीवन की बात कहते हैं और संपूर्ण रूप से सर्वात्मना समर्पित जीवन को मुख्य सम्मान मानते हैं।

गुरु नानक का परमात्मा पर अखंड विश्वास था। वे मानते थे कि हमारे प्रत्येक श्वास–प्रश्वास का हिसाब उसके पास है। ऐसा भक्त ही सच्चे अर्थों में निर्भय हो सकता है। जब उसकी मर्जी के बिना कुछ भी नहीं हो सकता, तो मृत्यु का भय और जीवन का लोभ दोनों ही मिथ्या सिद्ध होते हैं। भक्त न तो मरण की चिंता से उद्विग्न होता है, न जीवन के प्रलोभनों से विचलित :

मरणे की चिंता नहीं, जीवन की नहीं आस।
तू सरब जीआ प्रतिपालही लेखे सास गिरास।।

भय का अस्तित्व ऐसे भक्त के लिए है ही नहीं। केवल एक बात का ध्यान उसे बना रहता है कि कहीं ऐसा न हो कि मन सत्य मार्ग से विचलित हो जाए। परंतु जिसे सत्य का साक्षात्कार हो गया है– सत्य, जो स्वयं परमात्मा का स्वरूप है, उसका यह भय मिट जाता है।

अन्यायी से भय न पानेवाला ही सच्चे अर्थों में निर्भय है। पर निर्भयता के साथ–ही–साथ निर्वैरता भी होनी चाहिए। नानक ने कहा था–डरो मत और डराओ मत। निर्भय भी बनो और निरहंकार भी बनो और निर्वैर होना भी मत भूलो। इसलिए नहीं कि यही सफल जीवन–यात्रा की नीति है बल्कि इसलिए कि सत्यात्मा गुरु स्वयमेव ऐसा है और उसके प्रेम पाने का यही मार्ग है। दूसरे मार्ग धोखा हैं।

गुरु नानकदेव ने सत्य को ही एकमात्र लक्ष्य माना और जीवन के हर क्षेत्र में उस एक ध्रुवतारा की ओर ही उन्मुख रहे। उनके संदेश में कहीं भी संकीर्णता, संकोच और दुविधा नहीं है। उन्होंने विचार और व्यवहार के क्षेत्र को एक कर दिया और उनके शिष्यों ने श्रद्धा–सम्मान के साथ उसे अपने जीवन का ध्रुवतारा मान लिया। न उन्होंने भयवश समझौता किया और न लोभवश उसे खंडित होने दिया। गुरु नानकदेव का मंत्र तब तक काम करता रहेगा, जब तक उसे उसी विशाल पटभूमि पर रखकर देखा जाता रहेगा। आज हमारा यह परम पावन कर्त्तव्य है कि हम अपने देश के इस महान् गुरु का दिया हुआ मंत्र उसी रूप में स्वीकार करें जिस रूप में इन्होंने उसे दिया था। हम उसे किसी भी मूल्य पर संकीर्ण और अनुदार नहीं बना सकते।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म कब हुआ था?
   (क) 1907 (ख) 1908 (ग) 1909 (घ) 1910
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी की रचना नहीं है :
   (क) हिंदी साहित्य का इतिहास (ख) हिंदी साहित्य की भूमिका
   (ग) हिंदी साहित्य : उद्भव और विकास (घ) हिंदी साहित्य का आदिकाल
3. गुरुनानक देव का जन्मस्थल है :
   (क) पटना साहिब (ख) दिल्ली (ग) नांदेड़ (घ) तलवंडी
4. गुरु नानकदेव की पहली यात्रा कहाँ की थी?
   (क) कामरूप (ख) मानसरोवर (ग) बगदाद (घ) यरूशलम
5. उत्तर की यात्रा में गुरुनानक देव के साथ कौन थे?
   (क) सैदो (ख) धेबी (ग) नासू (घ) इनमें से कोई नहीं
6. 'विगतस्पृह' में समास है :
   (क) तत्पुरुष (ख) कर्मधारय (ग) अव्ययीभाव (घ) द्वंद्व

7. नानकदेव के अनुसार 'निराश' कौन हो सकता है :
   (क) जिसके मन में प्राप्ति और संचय की आशा न हो
   (ख) जो दुखी हो
   (ग) जो धनी हो
   (घ) इनमें से कोई नहीं
8. 'अनुदार' का विपरीतार्थक शब्द है :
   (क) क्रोध (ख) उदार (ग) कृपण (घ) धनवान

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'मैं तेरा हूँ'– इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
2. गुरुनानक की नौकरी क्यों छूट गई? नौकरी छूटने से उन्हें क्या लाभ हुआ?
3. गुरुनानक ने किसे 'धर्म' नहीं माना है?
4. गुरुनानक अहंकार में फँसने से बचने के लिए क्या कहते हैं? क्यों?
5. गुरुनानक ने किन–किन स्थलों की यात्राएँ कीं ?
6. गुरुनानक किन्हें 'निराश' कहते हैं? विस्तार से लिखिए।
7. नानकदेव ने जाति या धर्म के आधार पर किसी को अच्छा या बुरा नहीं माना। क्यों?
8. निर्भय भक्त होने के लिए क्या आवश्यक है? निर्भय भक्त को किस बात का ध्यान रखना चाहिए?
9. 'निर्भय भी बनो और निरहंकार भी बनो और निर्वैर होना भी मत भूलो।'–इसका आशय स्पष्ट करें।
10. पाठ के आधार पर गुरुनानक देव का संदेश अपने शब्दों में लिखिए।
11. हजारीप्रसाद द्विवेदी का जीवन–परिचय अपने शब्दों में लिखिए।
12. हजारीप्रसाद द्विवेदी की भाषा–शैली की किन्हीं तीन विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

III. दिए गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. वे साधु–संग, एकांतवास और अध्यात्म–चिंतन में लगे रहते थे। माता–पिता उन्हें गृहस्थी के बंधन में बाँधना चाहते थे। बहनोई जयराम की सहायता से उन्हें पंजाब के सूबेदार दौलतखाँ लोदी के एक कर्मचारी के मोदीखाने में नौकरी मिल गई। परमात्मा जिसे अपना बनाना चाहता है उसके लिए सुयोग भी विचित्र प्रकार से दे देता है। कहा जाता है कि उस नौकरी के बंधन से उन्हें एक विचित्र प्रकार से मुक्ति मिल गई। <u>आटा तौलते समय वे एक, दो, तीन गिनते–गिनते जब तेरह पर आए तो तेरह शब्द के पंजाबी उच्चारण 'तेरा' पर उनका ध्यान दूसरी ओर चला गया। 'मैं तेरा हूँ' इस भावना ने उन्हें तन्मय कर दिया। हाथ तौलते रहे, मुँह 'तेरा' 'तेरा' की रट में लग गया। सारा भंडार तौल दिया गया, 'तेरा' 'तेरा' 'तेरा'।</u>

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) 'साधु–संग' और 'माता–पिता' में कौन–सा समास है?

2. गुरु के जीवनकाल में ही उनका प्रभाव, सूर्य के के समान फैलने लगा था। उनके मन में किसी के प्रति राग या द्वेष नहीं था। उन्होंने किसी की निंदा नहीं की और एक परमात्मा को छोड़कर किसी की स्तुति भी नहीं की। दुख से वे उद्विग्न नहीं हुए, सुख की वासना मन में नहीं रखी। वे जीवन में कभी भी लोभ, मोह और अभिमान के वशीभूत नहीं हुए, हर्ष और शोक से विचलित नहीं हुए। भगवान् का परम अनुग्रह जिसे मिल जाता है वही इस प्रकार का विगतस्पृह हो सकता है। गुरुजी ऐसे लोगों को 'निराश' कहते हैं। निराश, अर्थात् जिसके मन में प्राप्ति और संचय की कोई स्पृहा न हो। गुरु की कृपा से, प्रभु के अनुग्रह से ही यह संभव है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) 'राग' और 'संचय' का विपरीतार्थक शब्द लिखिए।

3. गुरु नानकदेव ने सत्य को ही एकमात्र लक्ष्य माना और जीवन के हर क्षेत्र में उस एक ध्रुवतारा की ओर ही उन्मुख रहे। उनके संदेश में कहीं भी संकीर्णता, संकोच और दुविधा नहीं है। उन्होंने विचार और व्यवहार के क्षेत्र को एक कर दिया और उनके शिष्यों ने श्रद्धा–सम्मान के साथ उसे अपने जीवन का ध्रुवतारा मान लिया। न उन्होंने भयवश समझौता किया और न लोभवश उसे खंडित होने दिया। गुरु नानकदेव का मंत्र तब तक काम करता रहेगा, जब तक उसे उसी विशाल पटभूमि पर रखकर देखा जाता रहेगा।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।
(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(ग) 'संकीर्णता' और 'खंडित' में कौन–सा प्रत्यय है?

IV. भाषा के रंग :

1. 'गंभीरता' और 'शालीनता' में 'ता' प्रत्यय है। इस प्रत्यय से पाँच अन्य शब्द बनाएँ।
2. 'भयवश' में कौन–सा प्रत्यय है? उससे तीन अन्य शब्द बनाएँ।
3. 'विचलित' में कौन–सा प्रत्यय है?
4. संधि–विच्छेद कीजिए :
   भगवन्निष्ठा, तन्मय, अध्यात्म, परमात्मा, धर्मालाप, संसार
5. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों की प्रकृति बताएँ :
   मानसरोवर, भेदभाव, मर्जी, मरण, निर्भय, रहस्य, लंबी, मोहक, पानी
6. वाक्य प्रयोग द्वारा निम्नलिखित शब्दों का लिंग निर्णय कीजिए :
   यात्रा, संचय, सम्मान, जीवन, भय, लोभ, मृत्यु, मरण, प्रेम, संकोच, दुविधा, कर्तव्य

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. गुरुनानक देव ने कई स्थलों की यात्राएँ की। हम यात्राओं से सीखते हैं। क्या आपने अपनी किसी यात्रा से कुछ सीखा है? यदि हाँ, तो उसे अपने शब्दों में लिखिए।
2. गुरुनानक देव की यात्रा के जिन स्थलों का उल्लेख पाठ में है, उन्हें मानचित्र पर दिखाएँ।

शब्दार्थ

सौहार्द्र– सद्‌भाव, प्रेम, मित्रता। **भगवन्निष्ठा** – ईश्वर के प्रति निष्ठा, समर्पण। **मोदीखाने** – अन्न आदि रखने का स्थल। **तन्मय** – लीन। **प्राप्तव्य** – जो प्राप्त होने के लायक हो। **बद्धमूल** – जड़ से बँधा हुआ। **अगम** – जहाँ कोई पहुँच न सके। **अगोचर** – जो दिखाई न दे। **बीन** – एक प्रकार का वाद्य। **सत्संग** – साधुओं, सज्जनों, अच्छे लोगों का संग। **उद्विग्न** – परेशान। **विगतस्पृह** – किसी प्रकार की इच्छा से मुक्त। **स्पृहा** – इच्छा। **तथाकथित** – किसी के द्वारा मान लिया गया, पर वह प्रामाणिक न हो। **निर्भीक** – भयहीन। **निर्वैरता** – वैर से मुक्त। **निरहंकार** – अहंकार से मुक्त। **उन्मुख** – ऊपर की ओर मुँह किया हुआ, ताकता हुआ।

■

धर्मवीर भारती

(सन् 1926 – 1997 ई.)

धर्मवीर भारती का जन्म **सन् 1926 ई.** में **प्रयागराज** (इलाहाबाद) में हुआ था। उनके पिता का नाम **चिरंजीवलाल वर्मा** और माता का नाम **चंदा देवी** था। उनकी शिक्षा प्रयागराज में हुई। वहाँ के शैक्षिक और साहित्यिक माहौल ने धर्मवीर भारती की रचना–यात्रा के लिए ठोस आधार का काम किया।

धर्मवीर भारती ने साहित्य की कई विधाओं में एक समान सफलता एवं प्रसिद्धि अर्जित की। कवि, नाटककार, कहानीकार, निबंधकार, आलोचक, चिंतक, संपादक–इन सभी रूपों में वे अपने कृतित्व से हिंदी साहित्य में स्थायी सम्मान के हकदार हैं। उन्होंने अपने लेखन में किसी राजनीतिक वाद के प्रभाव को ग्रहण नहीं किया। संवेदना और भावुकता उनके समूचे लेखन या कहें कि उनकी चिंता–धारा के केंद्र में है। पर इसका यह अर्थ नहीं है कि उन्होंने विवेक को त्याग कर भावना को प्रधानता दी हो। उनकी कई कृतियों ने ऐतिहासिक सफलता पाई। 'गुनाहों का देवता' (उपन्यास), अंधा युग (नाटक), कनुप्रिया (काव्य) आदि उनमें प्रमुख हैं। वे 'धर्मयुग' साप्ताहिक के संपादक रहे। इस पत्र से उन्होंने आधुनिक हिंदी पत्रकारिता को नई सामर्थ्य प्रदान किया।

वे आधुनिक हिंदी गद्य के एक समर्थ लेखक हैं। उनकी भाषा प्रवाहमान, पारदर्शी एवं सहज है। चाहे कहानी–उपन्यास हो या वैचारिक लेखन; सर्वत्र वह कृत्रिमता से दूर और मानवीय संवेदनों को उभारनेवाली है। उनका शब्द–भंडार तत्सम से लेकर देशज, विदेशज सभी प्रकार के शब्दों से संपन्न है। बोलती हुई भाषा का वैभव उनके गद्य में दिखाई देता है, और यह उनकी सफलता और लोकप्रियता का बड़ा कारण है।

धर्मवीर भारती पद्मश्री, भारत–भारती सहित कई पुरस्कारों और सम्मानों से समादृत हुए। उनका निधन **सन् 1997 ई.** में हुआ।

धर्मवीर भारती की रचनाएँ : **काव्य संकलन**–ठंडा लोहा, सात गीत वर्ष, कनुप्रिया आदि। **प्रमुख कहानियाँ**–मुर्दों का गाँव, बंद गली का आखिरी मकान, गुलकी बन्नो आदि। **उपन्यास**–गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा आदि। **नाटक** : अंधायुग। **यात्रा वृत्तांत** : ठेले पर हिमालय।

'ठेले पर हिमालय' एक यात्रा–वृत्तांत है। एक यात्रा–वृत्तांत किसी स्थान विशेष का केवल भौगोलिक परिचय नहीं देता; वह उस स्थल की मूल पहचान, उसकी आत्मा से लेखक के रिश्ते का भी लेखा–जोखा होता है। इस तरह हिमालय प्रदेश की यह यात्रा 'ठेले पर हिमालय'; हिमालय के जरिए जीवन की भागम–भाग और आपाधापी से इतर शांति, सुकून और स्वस्थ वातावरण की तलाश है। यह प्रकृति से लगाव बढ़ानेवाला पाठ है। इसके साथ–साथ यह पाठ हमसे यह भी सवाल करता है कि क्या आज हिमालय उसी तरह है, जैसा कि धर्मवीर भारती ने उसे देखा था? निस्संदेह नहीं; तब उसका दोषी कौन है?

प्रस्तुत पाठ धर्मवीर भारती की पुस्तक 'ठेले पर हिमालय' से संकलित है।

■

ठेले पर हिमालय

'ठेले पर हिमालय'—खासा दिलचस्प शीर्षक है न! और यकीन कीजिए, इसे बिलकुल ढूँढ़ना नहीं पड़ा। बैठे—बिठाए मिल गया। अभी कल की बात है, एक पान की दूकान पर मैं अपने एक गुरुजन उपन्यासकार मित्र के साथ खड़ा था कि ठेले पर बर्फ की सिलें लादे हुए बर्फ वाला आया। ठंडे, चिकने चमकते बर्फ से भाप उड़ रही थी। मेरे मित्र का जन्म स्थान अल्मोड़ा है, वे क्षण भर उस बर्फ को देखते रहे, उठती हुई भाप में खोए रहे और खोए—खोए से ही बोले, "यही बर्फ तो हिमालय की शोभा है।" और तत्काल शीर्षक मेरे मन में कौंध गया, 'ठेले पर हिमालय'। पर आपको इसलिए बता रहा हूँ कि अगर आप नए कवि हों तो भाई, इसे ले जाएँ और इस शीर्षक पर दो तीन सौ पंक्तियाँ, बेडौल, बेतुकी लिख डालें—शीर्षक मौजूँ है, और अगर नई कविता से नाराज हों, सुललित गीतकार हों तो भी गुंजाइश है, इस बर्फ को डाँटें, "उतर आओ। ऊँचे शिखर पर बंदरों की तरह क्यों चढ़े बैठे हो? ओ नए कवियो! ठेले पर लदो। पान की दुकानों पर बिको।"

ये तमाम बातें उसी समय मेरे मन में आईं और मैंने अपने गुरुजन मित्र को बताईं भी। वे हँसे भी, पर मुझे लगा कि वह बर्फ कहीं उनके मन को खरोंच गई है और ईमान की बात यह है कि जिसने 50 मील दूर से भी बादलों के बीच नीले आकाश में हिमालय की शिखर रेखा को चाँद तारों से बात करते देखा है, चाँदनी में उजली बर्फ को धुँधली हलके नीले जाल में दूधिया समुद्र की तरह मचलते और जगमगाते देखा है. उसके मन पर हिमालय की बर्फ एक ऐसी खरोंच छोड़ जाती है जो हर बार याद आने पर पिरा उठती है। मैं जानता हूँ, क्योंकि वह बर्फ मैंने भी देखी है।

सच तो यह है कि सिर्फ बर्फ को बहुत निकट से देख पाने के लिए ही हम लोग कौसानी गए थे। नैनीताल से रानीखेत और रानीखेत से मझकाली के भयानक मोड़ों को पार करते हुए कोसी। कोसी से एक सड़क अल्मोड़े चली जाती है, दूसरी कौसानी। कितना कष्टप्रद, कितना सूखा और कितना कुरुप है वह रास्ता। पानी का कहीं नाम—निशान नहीं, सूखे भूरे पहाड़, हरियाली का नाम नहीं। ढालों को काटकर बनाए हुए टेढ़े मेढ़े रास्ते पर अल्मोड़े का एक नौसिखिया और लापरवाह ड्राइवर जिसने बस के तमाम मुसाफिरों की ऐसी हालत कर दी कि जब हम कोसी पहुँचे तो सभी के चेहरे पीले पड़ चुके थे। कौसानी जाने वाले सिर्फ हम दो थे, वहाँ उतर गए। बस अल्मोड़े चली गई। सामने के एक टीन के शेड में काठ की बेंच पर बैठकर

हम वक्त काटते रहे। तबीयत सुस्त थी और मौसम में उमस थी। दो घंटे बाद दूसरी लारी आकर रुकी और जब उसमें से प्रसन्न बदन शुक्ल जी को उतरते देखा तो हम लोगों की जान में जान आई। शुक्ल जी जैसा सफर का साथी पिछले जन्म के पुण्यों से ही मिलता है। उन्हीं ने हमें कौसानी आने का उत्साह दिलाया था और खुद तो कभी उनके चेहरे पर थकान या सुस्ती दीखी ही नहीं, पर उन्हें देखते ही हमारी भी सारी थकान काफूर हो जाया करती थी।

पर शुक्ल जी के साथ यह नई मूर्ति कौन है? लंबा–दुबला शरीर, पतला साँवला चेहरा, एमिल जोला–सी दाढ़ी, ढीला–ढाला पतलून, कंधे पर पड़ी हुई ऊनी जर्किन, बगल में लटकता हुआ जाने थर्मस या कैमरा या बाइनाकुलर। और खासी अटपटी चाल थी बाबूसाहब की। यह पतला–दुबला मुझी जैसा ही सीकिया शरीर और उस पर आपका झूमते हुए आना...... मेरे चेहरे पर निरंतर घनी होती हुई उत्सुकता को ताड़कर शुक्ल जी ने कहा–हमारे शहर के मशहूर चित्रकार हैं सेन, अकादमी से इनकी कृतियों पर पुरस्कार मिला है। उसी रुपए से घूमकर छुट्टियाँ बिता रहे हैं। थोड़ी ही देर में हम लोगों के साथ सेन घुल मिल गया, कितना मीठा था हृदय से वह। वैसे उसके करतब आगे चलकर देखने में आए।

कोसी से बस चली तो रास्ते का सारा दृश्य बदल गया। सुडौल पत्थरों पर कल–कल करती हुई कोसी, किनारे के छोटे–छोटे सुंदर गाँव और हरे मखमली खेत। कितनी सुंदर है सोमेश्वर की घाटी। हरी भरी। एक के बाद एक बस स्टेशन पड़ते थे, छोटे–छोटे पहाड़ी डाकखाने, चाय की दुकानें और कभी–कभी कोसी या उसमें गिरने वाले नदी नालों पर बने हुए पुल। कहीं–कहीं सड़क निर्जन चीड़ के जंगलों से गुजरती थी। टेढ़ी–मेढ़ी, ऊपर नीचे रेंगती हुई कँकड़ीली पीठ वाले अजगर सी सड़क पर धीरे–धीरे बस चली जा रही थी। रास्ता सुहावना था और उस थकावट के बाद उसका सुहावनापन हमको और भी तंद्रालस बना रहा था। पर ज्यों–ज्यों बस आगे बढ़ रही थी, हमारे मन में एक अजीब सी निराशा छाती जा रही थी; अब तो हम लोग कौसानी के नजदीक हैं, कोसी से 18 मील चले आए, कौसानी सिर्फ छह मील है, पर कहाँ गया वह अतुलित सौंदर्य, वह जादू जो कौसानी के बारे में सुना जाता था। आते समय मेरे एक सहयोगी ने कहा था कि कश्मीर के मुकाबले में उन्हें कौसानी ने अधिक मोहा है, गाँधी जी ने यहीं अनासक्ति योग लिखा था और कहा था कि स्विट्जरलैंड का आभास कौसानी में ही होता है। ये नदी, घाटी, खेत, गाँव सुंदर हैं किंतु इतनी प्रशंसा के योग्य तो नहीं ही हैं। हम कभी–कभी अपना संशय शुक्ल जी से व्यक्त भी करने लगे और ज्यों–ज्यों कौसानी नजदीक आता गया त्यों–त्यों अधैर्य, फिर असंतोष और अंत में तो क्षोभ हमारे चेहरे पर झलक आया। शुक्ल जी की क्या प्रतिक्रिया थी हमारी इन भावनाओं पर, यह स्पष्ट नहीं हो पाया क्योंकि वे बिलकुल चुप थे। सहसा बस ने एक बहुत लंबा मोड़ लिया और ढाल पर चढ़ने लगी।

सोमेश्वर की घाटी के उत्तर में जो ऊँची पर्वतमाला है, उस पर, बिलकुल शिखर पर, कौसानी बसा हुआ है। कौसानी से दूसरी ओर फिर ढाल शुरू हो जाती है। कौसानी के अड्डे पर जाकर बस रुकी। छोटा–सा, बिलकुल उजड़ा–सा गाँव और बर्फ का तो कहीं नाम निशान नहीं। बिलकुल ठगे गए हम लोग। कितना खिन्न था मैं। अनखाते हुए बस से उतरा कि जहाँ था वहीं पत्थर की मूर्ति–सा स्तब्ध खड़ा रहा गया। कितना अपार सौंदर्य बिखरा था सामने की घाटी में। इस कौसानी की पर्वतमाला ने अपने अंचल में यह जो कत्यूर की रंग–बिरंगी घाटी छिपा रही है, इसमें किन्नर और यक्ष ही तो वास करते होंगे। पचासों मील चौड़ी यह घाटी, हरे मखमली कालीनों जैसे खेत, सुंदर गेरू की शिलाएँ काटकर बने हुए लाल–लाल रास्ते, जिनके किनारे सफेद–सफेद पत्थरों की कतार और इधर–उधर से आकर आपस में उलझा जाने वाली बेले की लड़ियों–सी नदियाँ। मन में बेसाख्ता यही आया कि इन बेलों की लड़ियों को उठाकर कलाई में लपेट लूँ, आँखों से लगा लूँ। अकस्मात हम एक दूसरे लोक में चले आए थे। इतना सुकुमार, इतना सुंदर, इतना सजा हुआ और इतना निष्कलंक..... कि लगा इस धरती पर तो जूते उतारकर, पाँव पोंछकर आगे बढ़ना चाहिए। धीरे–धीरे मेरी निगाहों ने इस घाटी को पार किया और जहाँ ये हरे खेत और नदियाँ और वन, क्षितिज के धुँधलेपन में, नीले कोहरे में घुल जाते थे, वहाँ पर कुछ छोटे पर्वतों का आभास अनुभव किया, उसके बाद बादल थे और फिर कुछ नहीं। कुछ देर उन बादलों में निगाह भटकती रही कि अकस्मात फिर एक हलका–सा विस्मय का धक्का मन को लगा। इन धीरे–धीरे खिसकते हुए बादलों में यह कौन चीज है जो अटल है। यह छोटा–सा बादल के टुकड़े–सा,–और कैसा अजब रंग है इसका, न सफेद, न रुपहला, न हलका नीला... पर तीनों का आभास देता हुआ। यह है क्या? बर्फ तो नहीं है। हाँ जी! बर्फ नहीं है तो क्या है? और अकस्मात बिजली–सा यह विचार मन में कौंधा कि इसी कत्यूर घाटी के पार वह नगाधिराज, पर्वतसम्राट हिमालय है, इन बादलों ने उसे ढाँक रखा है, वैसे वह क्या सामने है; उसका एक कोई छोटा–सा बाल स्वभाव वाला शिखर बादलों की खिड़की से झाँक रहा है। मैं हर्षातिरेक से चीख उठा, "बरफ! वह देखो!" शुक्ल जी, सेन, सभी ने देखा, पर अकस्मात वह फिर लुप्त हो गया। लगा, उसे बाल शिखर जान किसी ने अंदर खींच लिया। खिड़की से झाँक रहा है, कहीं गिर न पड़े।

पर उस एक क्षण के हिम दर्शन ने हममें जाने क्या भर दिया था। सारी खिन्नता, निराशा, थकावट–सब छू–मंतर हो गई। हम सब आकुल हो उठे। अभी ये बादल छँट जाएँगे और फिर हिमालय हमारे सामने खड़ा होगा–निरावृत्त... असीम सौंदर्यराशि हमारे सामने अभी–अभी अपना घूँघट धीरे से खिसका देगी और... और तब? और तब? सचमुच मेरा दिल बुरी तरह धड़क रहा था। शुक्ल जी शांत थे, केवल मेरी ओर देखकर कभी–कभी मुस्करा देते थे, जिसका अभिप्राय था, 'इतने अधीर थे, कौसानी आई भी नहीं और मुँह लटका लिया। अब समझे

यहाँ का जादू! डाक बँगले के खानसामे ने बताया कि, "आप लोग बड़े खुशकिस्मत हैं साहब। 14 ट्यूरिस्ट आकर हफ्ते भर पड़ रहे, बर्फ नहीं दीखी। आज तो आपके आते ही आसार खुलने के हो रहे हैं।"

सामान रख दिया गया। पर, सभी बिना चाय पिए सामने के बरामदे में बैठे रहे और एकटक सामने देखते रहे। बादल धीरे–धीरे नीचे उतर रहे थे और एक–एक कर नए–नए शिखरों की हिम रेखाएँ अनावृत हो रही थीं। और फिर सब खुल गया। बाईं ओर से शुरू होकर दाईं ओर गहरे शून्य में धँसती जाती हुई हिमशिखरों की ऊबड़–खाबड़, रहस्यमयी, रोमांचक शृंखला। हमारे मन में उस समय क्या भावनाएँ उठ रही थीं यह अगर बता पाता तो यह खरोंच, यह पीर ही क्यों रह गई होती। सिर्फ एक धुँधला–सा संवेदन इसका अवश्य था कि जैसे बर्फ की सिल के सामने खड़े होने पर मुँह पर ठंडी–ठंडी भाप लगती है, वैसे ही हिमालय की शीतलता माथे को छू रही है और सारे संघर्ष, सारे अंतर्द्वंद्व, सारे ताप जैसे नष्ट हो रहे हैं। क्यों पुराने साधकों ने दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों को ताप कहा था और उसे शमित करने के लिए वे क्यों हिमालय जाते थे यह पहली बार मेरी समझ में आ रहा था। और अकस्मात एक दूसरा तथ्य मेरे मन के क्षितिज पर उदित हुआ। कितनी, कितनी पुरानी है यह हिमराशि! जाने किस आदिम काल से यह शाश्वत अविनाशी हिम इन शिखरों पर जमा हुआ है। कुछ विदेशियों ने इसीलिए हिमालय की इस बर्फ को कहा है–चिरंतन हिम (The Eternal Snows)। सूरज ढल रहा था और सुदूर शिखरों पर दर्रे; ग्लेशियर, ढाल, घाटियों का क्षीण आभास मिलने लगा था। आतंकित मन से मैंने यह सोचा था कि पता नहीं इन पर कभी मनुष्य का चरण पड़ा भी है या नहीं या अनंत काल से इन सूने बर्फ ढँके दर्रों में सिर्फ बर्फ के अंधड़ हू–हू करते हुए बहते रहे हैं।

सूरज डूबने लगा और धीरे–धीरे ग्लेशियरों में पिघली केसर बहने लगी। बर्फ कमल के लाल फूलों में बदलने लगी, घाटियाँ गहरी पीली हो गईं। अँधेरा होने लगा तो हम उठे और मुँह–हाथ धोने और चाय पीने में लगे। पर सब चुपचाप थे, गुमसुम, जैसे सबका कुछ छिन गया हो, या शायद सबको कुछ ऐसा मिल गया हो जिसे अंदर ही अंदर सहेजने में सब आत्मलीन हों या अपने में डूब गए हों। थोड़ी देर में चाँद निकला और हम फिर बाहर निकले... इस बार सब शांत था। जैसे हिम सो रहा हो। मैं थोड़ा अलग आरामकुर्सी खींचकर बैठ गया। यह मेरा मन इतना कल्पनाहीन क्यों हो गया है? इसी हिमालय को देखकर किसने–किसने क्या–क्या नहीं लिखा और यह मेरा मन है कि एक कविता तो दूर, एक पंक्ति, एक शब्द भी तो नहीं जागता।.... पर कुछ नहीं, यह सब कितना छोटा लग रहा है इस हिमसम्राट के समक्ष। पर धीरे–धीरे लगा कि मन के अंदर भी बादल थे जो छँट रहे हैं। कुछ ऐसा उभर रहा है जो इन शिखरों की ही प्रकृति का है....कुछ ऐसा जो इसी ऊँचाई पर उठने की चेष्टा कर रहा है ताकि इनसे इन्हीं के स्तर पर मिल सके। लगा, यह हिमालय बड़े भाई की तरह ऊपर चढ़ गया है,

और मुझे–छोटे भाई को–नीचे खड़ा हुआ, कुंठित और लज्जित देखकर थोड़ा उत्साहित भी कर रहा है, स्नेहभरी चुनौती भी दे रहा है–"हिम्मत है? ऊँचे उठोगे?"

और सहसा सन्नाटा तोड़कर सेन रवींद्र की कोई पंक्ति गा उठा और जैसे तंद्रा टूट गई। और हम सक्रिय हो उठे–अदम्य शक्ति, उल्लास, आनंद जैसे हममें छलक पड़ रहा था। सबसे अधिक खुश था सेन, बच्चों की तरह चंचल, चिड़ियों की तरह चहकता हुआ। बोला, "भाई साहब, हम तो वंडरस्ट्रक हैं कि यह भगवान का क्या–क्या करतूत इस हिमालय में होता है।" इस पर हमारी हँसी मुश्किल से ठंडी हो पाई थी कि अकस्मात वह शीर्षासन करने लगा। पूछा गया तो बोला, "हम हर पर्सपेक्टिव से हिमालय देखूँगा।" बाद में मालूम हुआ कि वह बंबई की अत्याधुनिक चित्रशैली से थोड़ा नाराज है और कहने लगा, "ओ सब जीनियस लोग शीर का बल खड़ा होकर दुनिया को देखता है। इसी से मैं भी शीर का बल हिमालय देखता **है।"**

दूसरे दिन घाटी में उतरकर 12 मील चलकर हम बैजनाथ पहुँचे जहाँ गोमती बहती है। गोमती की उज्ज्वल जलराशि में हिमालय की बर्फीली चोटियों की छाया तैर रही थी। पता नहीं, उन शिखरों पर कब पहुँचूँ, कैसे पहुँचूँ, पर उस जल में तैरते हुए हिमालय से जी भरकर भेंटा, उसमें डूबा रहा।

आज भी उसकी याद आती है तो मन पिरा उठता है। कल ठेले के बर्फ को देखकर वे मेरे मित्र उपन्यासकार जिस तरह स्मृतियों में डूब गए उस दर्द को समझता हूँ और जब ठेले पर हिमालय की बात कहकर हँसता हूँ तो वह उस दर्द को भुलाने का ही बहाना है। वे बर्फ की ऊँचाइयाँ बार–बार बुलाती हैं, और हम हैं कि चौराहों पर खड़े, ठेले पर लदकर निकलने वाली बर्फ को ही देखकर मन बहला लेते हैं। किसी ऐसे ही क्षण में, ऐसे ही ठेलों पर लदे हिमालयों से घिरकर ही तो तुलसी ने कहा था... "कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो... मैं क्या कभी ऐसे भी रह सकूँगा वास्तविक हिमशिखरों की ऊँचाइयों पर?" और तब मन में आता है कि फिर हिमालय को किसी के हाथ संदेशा भेज दूँ..."नहीं बंधु..... आऊँगा। मैं फिर लौट–लौट कर वहीं आऊँगा। उन्हीं ऊँचाइयों पर तो मेरा आवास है। वहीं मन रमता है... मैं करूँ तो क्या करूँ?"

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. धर्मवीर भारती का जन्म कब हुआ था?
   (क) 1925 (ख) 1926 (ग) 1927 (घ) 1928
2. 'गुनाहों का देवता' किस विधा की रचना है?
   (क) उपन्यास (ख) कहानी (ग) नाटक (घ) निबंध

3. 'बंद गली का आखिरी मकान' किसकी रचना है?
   (क) प्रेमचंद (ख) हजारीप्रसाद द्विवेदी (ग) धर्मवीर भारती (घ) बालकृष्ण भट्ट
4. 'ठेले पर हिमालय' किस विधा की रचना है?
   (क) उपन्यास (ख) कहानी (ग) नाटक (घ) यात्रावृत्तांत
5. यात्रा में लेखक के साथ कौन नहीं है?
   (क) लेखक की पत्नी (ख) सेन (ग) शुक्ल जी (घ) शर्मा जी
6. 'चाँद' है :
   (क) तत्सम (ख) तद्‌भव (ग) देशज (घ) विदेशज
7. लेखक की यात्रा कहाँ से शुरू हुई :
   (क) नैनीताल (ख) रानीखेत (ग) मझकाली (घ) कौसानी
8. 'हम हर पर्सपेक्टिव से हिमालय देखूँगा।'–किसने कहा?
   (क) लेखक (ख) सेन (ग) शुक्ल जी (घ) लेखक की पत्नी

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. लेखक ने कौसानी की यात्रा करना क्यों तय किया ?
2. कोसी तक पहुँचने में सभी यात्रियों के चेहरे क्यों पीले पड़ गए थे?
3. चित्रकार सेन का परिचय लेखक ने किन शब्दों में दिया है?
4. गाँधी जी ने कौसानी में क्या लिखा था?
5. लेखक को असंतोष और क्षोभ क्यों हो रहा था?
6. कत्यूर घाटी का वर्णन लेखक ने किन शब्दों में किया है? लिखें।
7. 'इतने अधीर थे, कौसानी आई भी नहीं और मुँह लटका लिया। अब समझे यहाँ का जादू।'–यहाँ किस जादू का उल्लेख है? लिखें।
8. लेखक का मन क्या याद कर पिरा उठता है?
9. धर्मवीर भारती का जीवन–परिचय संक्षेप में लिखें।
10. धर्मवीर भारती की भाषा की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख करें।

III. दिए गए गद्यांशों पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. यह मेरा मन इतना कल्पनाहीन क्यों हो गया है? इसी हिमालय को देखकर किसने–किसने क्या–क्या नहीं लिखा और यह मेरा मन है कि एक कविता तो दूर, एक पंक्ति, एक शब्द भी तो नहीं जागता।.... पर कुछ नहीं, यह सब कितना छोटा लग रहा है इस हिमसम्राट के समक्ष। पर धीरे–धीरे लगा कि मन के अंदर भी बादल थे जो छँट रहे हैं। कुछ ऐसा उभर रहा है जो इन शिखरों की ही प्रकृति का है....कुछ ऐसा जो इसी ऊँचाई पर उठने की चेष्टा कर रहा है

ताकि इनसे इन्हीं के स्तर पर मिल सके। लगा, यह हिमालय बड़े भाई की तरह ऊपर चढ़ गया है, और मुझे–छोटे भाई को–नीचे खड़ा हुआ, कुंठित और लज्जित देखकर थोड़ा उत्साहित भी कर रहा है, स्नेहभरी चुनौती भी दे रहा है–"हिम्मत है? ऊँचे उठोगे?"

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) 'ऊँचाई' में कौन–सा प्रत्यय है? उक्त प्रत्यय से एक अन्य शब्द बनाएँ।

2. क्यों पुराने साधकों ने दैहिक, दैविक और भौतिक कष्टों को ताप कहा था और उसे शमित करने के लिए वे क्यों हिमालय जाते थे यह पहली बार मेरी समझ में आ रहा था। और अकस्मात एक दूसरा तथ्य मेरे मन के क्षितिज पर उदित हुआ। कितनी, कितनी पुरानी है यह हिमराशि! जाने किस आदिम काल से यह शाश्वत अविनाशी हिम इन शिखरों पर जमा हुआ है। कुछ विदेशियों ने इसीलिए हिमालय की इस बर्फ को कहा है–चिरंतन हिम (The Eternal Snows)।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) 'कितनी, कितनी पुरानी है यह हिमराशि!'–अर्थ की दृष्टि से यह किस प्रकार का वाक्य है? उक्त प्रकृति का एक अन्य वाक्य बनाएँ।

3. वे बर्फ की ऊँचाइयाँ बार–बार बुलाती हैं, और हम हैं कि चौराहों पर खड़े, ठेले पर लदकर निकलने वाली बर्फ को ही देखकर मन बहला लेते हैं। किसी ऐसे ही क्षण में, ऐसे ही ठेलों पर लदे हिमालयों से घिरकर ही तो तुलसी ने नहीं कहा था... "कबहुँक हौं यहि रहनि रहौंगो... मैं क्या कभी ऐसे भी रह सकूँगा वास्तविक हिमशिखरों की ऊँचाइयों पर?" और तब मन में आता है कि फिर हिमालय को किसी के हाथ संदेशा भेज दूँ..."नहीं बंधु..... आऊँगा। मैं फिर लौट–लौट कर वहीं आऊँगा। उन्हीं ऊँचाइयों पर तो मेरा आवास है। वहीं मन रमता है... मैं करूँ तो क्या करूँ?"

(क) उपर्युक्त गद्यांश का संदर्भ लिखिए।

(ख) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(ग) उत्पत्ति की दृष्टि से 'चौराहा' और 'ठेले' किस प्रकार के शब्द हैं?

IV. भाषा के रंग :

1. उत्पत्ति के आधार पर शब्दों की प्रकृति बताएँ

   तमाम, शोभा, तत्काल, नाराज, दुधिया, समुद्र, रास्ता, उत्साह, बर्फ, मशहूर, चित्रकार, बेसाख्ता, धरती, पाँव, आसार, रोमांचक, नष्ट, आदिम, ताप, मुश्किल, ठेले

2. संधि–विच्छेद कीजिए :

   हिमालय, निरावृत, हर्षातिरेक, नगाधिराज

3. पर्यायवाची शब्द लिखिए—
   आकाश, रास्ता, नदी, शिला, आँख, बादल
4. 'सुकुमार' में 'सु' उपसर्ग है। इस उपसर्ग से पाँच अन्य शब्द बनाएँ।
5. रचना की दृष्टि से वाक्य की प्रकृति बताएँ :
   (क) सूरज ढल रहा था।
   (ख) कोसी से बस चली तो सारा दृश्य बदल गया।
   (ग) यही बर्फ तो हिमालय की शोभा है।
   (घ) मैं जानता हूँ, क्योंकि वह बर्फ मैंने भी देखी है।

V. अनुभूति और अभिव्यक्ति :

1. इस पाठ में हिमालय के सौंदर्य का वर्णन है। हिंदी के कई कवियों ने पर्वत–प्रदेश की सुंदरता का वर्णन अपने काव्य में किया है। ऐसी किन्हीं दो रचनाओं को संकलित कीजिए।
2. हिमालय प्राकृतिक सौंदर्य का बड़ा केंद्र है। किंतु, प्रदूषण ने उसे भी प्रभावित किया है। पर्वतीय क्षेत्र में प्रदूषण किन कारणों से फैल रहा है? लिखिए।
3. पाठ में 'एमिल जोला' और 'अनासक्ति योग' का उल्लेख है। एमिल जोला फ्रांसीसी लेखक थे। 'अनासक्ति योग' गीता पर महात्मा गाँधी की लिखी हुई टीका है। आप इन दोनों के बारे में विशेष जानकारी एकत्रित कीजिए।
4. पाठ में कई स्थानों का उल्लेख है। जैसे—नैनीताल, रानीखेत आदि। मानचित्र पर उन स्थलों को चिह्नित कीजिए।

शब्दार्थ

दिलचस्प – रोचक। **तत्काल** – उसी समय। **मौजू** – उपयुक्त, प्रासंगिक। **नौसिखिया** – अनुभवहीन। **प्रसन्न बदन** – प्रसन्न मुख। **बाइनाकुलर** – दूरबीन। **उत्सुकता** – इच्छा। **तंद्रालस** – थकान या नींद के कारण आलस। **अतुलित** – जिसकी तुलना न की जा सके । **खिन्न** – दुखी। **स्तब्ध** – निश्चेष्ट, सुन्न। **बेसाख्ता** – अनायास, तुरंत। **अकस्मात** – अचानक। **हर्षातिरेक** – अत्यधिक खुशी। **आसार** – संभावना। **ग्लेशियर** – बर्फ की नदी। **निरावृत** – आवरणहीन। **पीर** – पीड़ा। **विस्मय** – आश्चर्य। **अभिप्राय** – अर्थ। **चिरंतन** – पुराना। **अदम्य** – जिसे दबाया न जा सके।

■

सड़क सुरक्षा एवं यातायात के नियम

यातायात' दो शब्द से मिलकर बना है –''यात + आयात'; जिसका अर्थ है आना-जाना। प्राचीनकाल से ही मानव–सभ्यता की समस्त जीवन-शैली आवागमन पर ही निर्भर है। आधुनिक काल में बढ़ते संसाधन एवं विकास क्षेत्र को देखते हुए देश में नहीं; संपूर्ण विश्व में यातायात से संबंधित महत्त्वपूर्ण नियम बनाए गए हैं, क्योंकि इससे न केवल यातायात सुगम बनता है, बल्कि सड़क दुर्घटना से होने वाले भयावह खतरों से भी बचा जा सकता है। आम जनता खासतौर से युवा-वर्ग के लोगों में अधिक जागरूकता लाने के लिए इसे शिक्षा, सामाजिक जागरूकता इत्यादि आयामों से जोड़ा जाना प्रासंगिक है, क्योंकि विश्व मे सड़क-यातायात में मौतें और जख्मी होना एक साधारण घटना हो गई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार प्रति वर्ष 10 लाख से अधिक सड़क–हादसों के शिकार व्यक्तियों की मौत हो जाती है।

हादसों से बचने के लिए यातायात के नियमों का पालन करना अति आवश्यक है। इसके ज्ञान के अभाव एवं नियमों के सुचारु रूप से पालन न करने के कारण भारत में प्रत्येक वर्ष 1,50,000 से अधिक व्यक्ति सड़क-दुर्घटना में मारे जाते हैं। ऐसी विकट परिस्थितियों का अनुमान लगाया जा सकता है कि विश्व भर के कुल वाहनों में से केवल एक प्रतिशत वाहन भारत हैं। जबकि विश्व की कुल सड़क–दुर्घटना में से 10% हादसे भारत में होते हैं। ''विडंबना यह है कि कोई नियम तब तक अपने लक्ष्य को नहीं प्राप्त कर सकता जब तक पालनकर्ता उसे आत्मसात् करने की कोशिश न करें।''

सड़क यातायात के नियम विवेकपूर्ण होते हैं, और उनका विवेकपूर्ण पालन करना भी आवश्यक होता है। सड़क पर चलने वालों की सुरक्षा के लिए अनेक कानून एवं नियम बनाए गए हैं, जिनका पालन करना प्रत्येक नागरिक का दायित्व होता है, जिससे हर कोई सुरक्षित घर पहुँच सके। यदि हम इन नियमों का उल्लंघन करते हैं तो स्वयं के साथ-साथ दूसरों को भी हानि पहुँचाते हैं। यातायात के प्रमुख नियमों को सीखने की सुगमता के अनुसार दो भागों में विभक्त कर सकते हैं – (1) सुरक्षा से संबंधित यातायात के नियम एवं सावधानियाँ (2) वाहन चलाने के नियम एवं सावधानियाँ।

पैदल, साइकिल एवं रिक्शा चालकों को हमेशा अपनी लेन में अर्थात् बायीं तरफ रहना चाहिए एवं सड़क पार करते समय दायें-बायें देखने के बाद ही आगे बढ़ना चाहिए। व्यस्त सड़कों पर हमेशा जेब्रा-क्रासिंग का प्रयोग करना चाहिए तथा क्रास करते समय कभी

रुकिये

रास्ता दीजिए

प्रवेश निषेध/No Entry

वन वे प्रतिबन्धित

यह न सोचना चाहिए कि वाहन चालक उसे देख रहा है। सड़क की संरचनात्मक ढाँचागत सुविधाओं का पूरा उपयोग हो इसलिए सब-वे (तल मार्ग), फुट ओवर ब्रिज सबका पालन नियमगत करना आवश्यक होता है। शॉर्टकट या आसान विकल्प खोजना खतरनाक हो सकता है।

पैदल यात्रियों को सड़क पार करते समय मोटर-वाहनों एवं अपने बीच पर्याप्त दूरी रखनी चाहिए और पार्क की गई या खड़ी गाड़ियों के बीच से रास्ता नहीं बनाना चाहिए। सड़क के खतरों से अधिकांशतः बच्चे ज्यादा प्रभावित होते हैं, जिसमें हमेशा वाहन चालक की गलती नहीं होती है, क्योंकि बच्चों की लापरवाही और जागरूकता की कमी से भी सड़क दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है। बच्चे हमेशा बड़ों का अनुसरण करते हैं इसलिए उनके सामने विवशता में भी सड़क के नियम का उल्लंघन नहीं करना चाहिए और उन्हें ''रुकें, देखें, सुनें, सोचें'' का मूल मंत्र बताना व पालन कराना अति आवश्यक होता है।

वाहन चलाते समय यातायात नियम एवं सुरक्षा की जानकारी के साथ-साथ वाहन चलाने की योग्यता, उम्र एवं परिपक्वता की जानकारी भी आवश्यक होती है। सड़कों पर तीव्रता से बढ़ती दुपहिया और चौपहिया वाहनों की भीड़ को व्यवस्थित करने एवं सड़क पर आवश्यक जगहों पर लगे सड़क नियम से (यातायात नियम) संबंधित महत्त्वपूर्ण संकेतों की जानकारी रखना भी आवश्यक होता है। क्योंकि भारत में वर्ष 2011 की अवधि में लगभग 4.9 लाख सड़क दुर्घटनाएं हुई थी, जिसमें 1,51,471 लोगों की मृत्यु हुई। वाहन चलाते समय कुछ मानवीय भूलें होती हैं जिससे दुर्घटना हो जाती हैं, इसलिए ऐसे तथ्यों पर गहन विवेचना की आवश्यकता है। बहुत तेज गति से वाहन चलाना, नशे में गाड़ी चलाना, चालक की ध्यान भटकाने वाली चीजें, लालबत्ती का उल्लंघन करना, सीट-बेल्ट और हेलमेट जैसे सुरक्षा साधनों की उपेक्षा, लेन ड्राइविंग का पालन न करना और गलत तरीके से ओवरटेकिंग करना आदि कारणों से सड़क-दुर्घटना की सम्भावना बढ़ जाती है। इसलिए उपर्युक्त निर्देशित समस्त बिंदुओं पर ध्यान-केंद्रित करते हुए सावधानी बरतनी चाहिए। वर्तमान में वाहन चलाते समय मोबाइल फोन के बढ़ते प्रयोग के कारण दुर्घटनाएँ बढ़ी हैं। सुरक्षा की दृष्टि से वाहन चलाते समय मोबाइल फोन का प्रयोग नहीं करना चाहिए।

सभी को पीछे छोड़ने की प्रवृत्ति प्रायः हर किसी में होती है, गति में तीव्रता दुर्घटना का जोखिम और दुर्घटना के दौरान चोट की गम्भीरता बढ़ाती है। खुशी के मौके या शौक

Right hand curve
दाहिना मोड़
Left hand curve
बायां मोड़
Right Hair pin bend
दाहिना कैंची मोड़
Left Hair pin bend
बायं कैंची मोड़
Right Reverse bend
दाहिने मुड़कर फिर आगे
Left Reverse bend
बायां मुड़कर फिर आगे
Steep ascent
खड़ी चढ़ाई
Steep descent
सीधा ढाल
Narrow road ahead
आगे रास्ता संकरा है
road widens ahead
आगे रास्ता चौड़ा है
Narrow bridge
संकरा पुल
Slippery road
फिसलनी सड़क
Loose gravel
बिखरी बजरी
Cycle crossing
साइकिल क्रासिंग
Pedestrian crossing
पैदल क्रासिंग
School ahead
आगे विद्यालय है
Men at work
आदमी काम कर रहे हैं
Cattle
पशु
Falling rocks
पत्थर लुढ़क रहे हैं
Ferry
फेरी
Cross road
चौराहा
Gap in Median
मध्य पट्टी में भंग
Side road right
दाहिनी ओर पार्श्व-सड़क
Side road left
बाईं ओर पार्श्व-सड़क
Y- intersection
Y- सड़क संगम
Y- intersection
Y- सड़क संगम
Y- intersection
Y- सड़क संगम
T- intersection
T- सड़क संगम
Staggered intersection
विषम सड़क संगम
Staggered intersection
विषम सड़क संगम
Major road ahead
आगे मुख्य सड़क है
Major road ahead
आगे मुख्य सड़क है
Roundabout
गोल चक्कर
Dangerous dip
खतरनाक झील
Hump or rough road
ऊँची-नीची सड़क
Barrier ahead
आगे रोक है
(200 Metres)
(50-100 Metres)
Unguarded Level Crossing
अरक्षित समतल क्रासिंग
(200 Metres)
(50-100 Metres)
Guarded Level Crossing
रक्षित समतल क्रासिंग

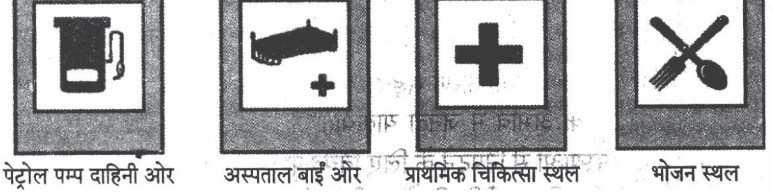
पेट्रोल पम्प दाहिनी ओर
अस्पताल बाईं ओर
प्राथमिक चिकित्सा स्थल
भोजन स्थल

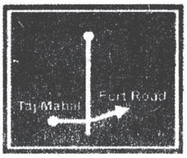

आगामी दिशा संकेत

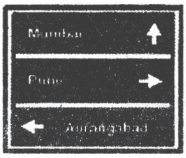

गंतव्य संकेत

गोल चक्कर पर दिशा संकेत

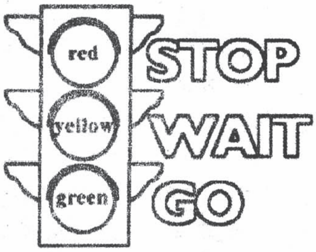

दिशा संकेत

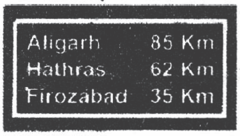

स्थान संकेत

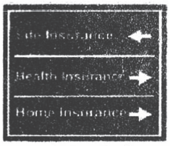

पुनराश्वासन संकेत

के कारण लोगों में नशे की प्रवृत्ति होती है; परंतु नशे की हालत मे गाड़ी चलाना, दुर्घटना में वृद्धि करता है। कभी-कभी गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन, होर्डिंग पर ध्यान चले जाना जैसी क्रियाएँ मस्तिष्क-संकेंद्रक को प्रभावित करता है, इसलिए गाड़ी चलाते समय ऐसी वस्तुओं से दूरी बना लेनी चाहिए। कुछ अन्य बातें भी इसमें शामिल होती हैं, जैसे गाड़ी का शीशा समायोजित करना, वाहन में स्टीरियों एवं रेडियो का चलाना, सड़क पर जानवरों का आ जाना, विज्ञापन या सूचनापट्ट आदि चीजों से चालक को अपना ध्यान नहीं भंग करना चाहिए और मार्ग–परिवर्तन एवं ध्यान हटाने वाली बाहरी चीजें देखने के दौरान सुरक्षित रहने के लिए वाहन गति धीमी रखने की आवश्यकता होती है।

वाहन चलाते समय चौराहों पर लगी बत्तियों एवं चौराहों पर किस नियम की आवश्यकता होती है उस पर चर्चा जरूरी है। लाल बत्ती संकेत देती है कि वाहन को रुकना है; पीली बत्ती का संकेत है कि चलने के लिए तैयार होना एवं अंत में हरी बत्ती का संकेत होता है कि अब आगे बढ़ना या चलना है। इसके साथ ही चौराहे पर बायें मुड़ना, हमेशा खुला रहने का मतलब है कि बायीं तरफ मुड़ने के लिए या जाने के लिए रुकने की आवश्कता नहीं है; परंतु ध्यान रखना होता है कि चौराहे पर हमारी दाहिनी तरफ से आने वाले वाहन से भी हमें बायीं तरफ रहना है और जब तक पर्याप्त जगह न मिले हमें दाहिनी लेन में नहीं आना चाहिए। परिवहन विभाग से जारी किए गये सड़क से संबंधित कई महत्त्वपूर्ण संकेत निर्धारित किए गये हैं, जिसकी जानकारी रखने एवं पालन करने से यातायात को सुगम, सहज एवं सुखद बनाया जा सकता है। सामान्य रूप से उसे दो भागों में बाँटा गया है ''लिखित संकेत एवं चित्र संकेत''। लिखित संकेतों में शब्दों, अंकों तथा वाक्यों का प्रयोग करके आवश्यक बातें बतायी जाती हैं। लिखित संकेतों का इतिहास बहुत पुराना है पर इनकी संख्या बहुत कम है। 'मील के पत्थर', 'होर्डिंग द्वारा दिशा-निर्देश', 'गंतव्य स्थानों का ज्ञान कराना' तथा 'सड़क-यातायात से संबंधित अचानक कोई परिवर्तन' आदि की जानकारी देने के लिए लिखित संकेतों का प्रयोग करते हैं, कभी-कभी कुछ मार्गों पर यातायात संकेत के साथ 'मोड़', 'तीव्र-मोड़', 'सड़क की मरम्मत हो रही है', 'कृपया धीरे

चलें', 'सावधान बच्चे हैं' जैसे लिखित संकेतों के माध्यम से भी सावधानी बरतने के लिए आगाह किया जाता है। प्रयोजन के आधार पर चित्र संकेतों को तीन श्रेणी में प्रदर्शित करते हैं –

(क) खतरे की चेतावनी देने वाले संकेत, (ख) विनियामक संकेत तथा (ग) सूचनात्मक संकेत।

चित्र संकेतों का सबसे बड़ा लाभ यह है कि उन्हें आसानी से देखा, समझा और पालन किया जा सकता है। प्रत्येक वाहन–चालक को निर्देशित चिन्ह को समझकर ही वाहन चलाना चाहिए। परिवहन विभाग द्वारा उक्त चिह्नों का सही ज्ञान कराकर ही वाहन-चालक को वाहन चलाने के लिए ड्राइविंग–लाइसेंस (चालन अनुमति पत्र) दिया जाता है। परंतु उसका उचित पालन ही यातायात को सुगम एवं सुखदायी बनाता है। चित्र संकेतों के आकार और रंग अलग-अलग होते हैं। लाल रंग के गोलाकार संकेत आदेशात्मक होते हैं, लाल रंग के त्रिकोणीय संकेत चेतावनी देने वाले होते हैं और नीले रंग के आयताकार संकेत सूचना प्रदायक होते हैं।

यातायात के संकेत ''भारतीय रोड-कांग्रेस'' (आई0 आर0 सी0) द्वारा जारी किये जाते हैं तथा संकेत चिह्नों और नियमों का प्रयोग कर बनाये जाते हैं, जिसका अनुपालन देश के सभी नागरिकों से करने की अपेक्षा की जाती है।

यातायात के नियमों का पालन करने में कभी-कभी अन्य गतिरोध उत्पन्न हो जाते हैं क्योंकि अधिकांशतः लोग नियमो की अनदेखी करके अति शीघ्रता करने की कोशिश करते हैं, जिसके कारण सड़कों पर जाम की स्थिति बन जाती है एवं यातायात बाधित होने लगता है। ऐसी परिस्थिति मे कभी-कभी विकल्प के अभाव में जनता यातायात के नियमों को तोड़ने के लिए विवश हो जाती है।

परिवहन नियम के अनुसार उक्त समस्याओं से निपटने के लिए विवेकपूर्ण तथ्यों का अनुपालन करना चाहिए जिससे कोई दुर्घटना या परेशानी का सामना न करना पड़े। उल्लिखित परिस्थिति में कभी-कभी रोड रेज (सड़क पर झगड़ा) की संभावना बन जाती है जिसको विविध संकेतों से पहचानकर बचा जा सकता है। उदाहरणार्थ – उत्तेजक वाहन चलाना, अचानक तीव्रता लाना और ब्रेक लगाना, सड़कों पर टेढ़ी-मेढ़ी (जिकजैक) ड्राइविंग करना; तीव्र गति में बार -बार लेन बदलना, अपनी लेन से अचानक दूसरे वाहन के आगे अपना वाहन लाना, जान बूझकर अन्य वाहनों के लिए अवरोध उत्पन्न करना, दूसरे वाहन को पीछे से या बगल से टक्कर मारना, वाहन को दूसरे वाहन के पीछे एकदम से सटाकर चलना, निरंतर हार्न बजाना व लाइट फ्लैश करना। वाहन-चालक को समझदारी दिखाते हुए अपने बचाव के लिए ऐसी स्थिति में उलझने से बचने की कोशिश करनी चाहिए।

यातायात के नियम पालनार्थ 'भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण' ने सड़क-सुरक्षा में सुधार करने के लिए अनेक कदम उठाये हैं जैसे–सड़क फर्नीचर, सड़क चिह्न (रोड मार्किंग), उन्नत परिवहन प्रणाली का प्रयोग करते हुए राजमार्ग यातायात प्रबंधन प्रणाली आरंभ करना, निर्माण कार्य के दौरान ठेकेदारों के अनुशासन को बनाए रखना, चुनिंदा क्षेत्रों में सड़क सुरक्षा ऑडिट इत्यादि। असंगठित क्षेत्रों में भारी मोटर वाहनों के लिए 'पुनश्चर्या प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाना', 'राज्यों में ड्राइविंग प्रशिक्षण स्कूलों की स्थापना', 'दृश्य-श्रव्य तथा प्रिंट माध्यमों के द्वारा सड़क सुरक्षा जागरूकता का प्रचार अभियान', सड़क सुरक्षा के क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य के लिए स्वैच्छिक संगठनों/व्यक्तियो के लिए राष्ट्रीय पुरस्कारों का संचालन, वाहनों में सुरक्षा-मानकों को और अधिक सख्त बनाना, जैसे – 'सीट-बेल्ट', 'पावर-स्टेयरिंग', 'रियर-व्यू-मिरर' इत्यादि। राष्ट्रीय राजमार्ग दुर्घटना सहायता सेवा-योजना के अंतर्गत विभिन्न राज्य सरकारों और सरकारी संगठनों को क्रेन तथा एम्बुलेन्स उपलब्ध कराना। राष्ट्रीय राजमार्गों को 2-लेन से 4-लेन, 4-लेन से 6-लेन करने का प्रावधान तथा युवा वर्ग में जागरूकता (सड़क-सुरक्षा) का प्रचार करने की प्रक्रिया को भी शामिल करना है।

अन्ततः यातायात के नियमों के बहुआयामी उद्देश्यों को ध्यान में रखकर प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य बनता है वह परिवहन विभाग द्वारा बनाए गए यातायात से संबंधित समस्त सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक संकेतों एवं नियमों का पालन कर देश की समृद्धि एवं विकास में अहम योगदान देने का प्रयास करें, जिसमें हमारा देश, समाज एवं परिवार सुरक्षित रहकर विकास की पराकाष्ठा को प्राप्त करने में सफल रहे।

■

एकांकी

एकांकी

एकांकी का अर्थ और स्वरूप

साहित्य को काव्य का समानार्थी मानकर काव्यशास्त्र में उसके दो मुख्य भेद किए गए हैं– श्रव्यकाव्य और दृश्यकाव्य। वस्तुतः यह विभाजन काव्य के बाह्य प्रकार अथवा इंद्रिय ग्राह्यता के आधार पर किए गए हैं। नाट्यशास्त्र में नाटक को काव्य का अंक मानते हुए इसके संरचनात्मक वैशिष्ट्य के कारण 'दृश्यकाव्य' कहा गया है। नाटक के अतिरिक्त साहित्य की सभी विधाएँ श्रव्य कही गये हैं। 'दृश्यकाव्य' के भी दो भेद किए गए हैं– रूपक तथा उपरूपक। रूपक में चारों प्रकार के अभिनय (आंगिक, वाचिक, सात्विक और आहार्य) से युक्त रस का उत्कर्ष होता है। उपरूपक आंगिक अभिनय से युक्त भाव ताल लय आश्रित होता है।

भरतमुनि 'रूपक' को स्पष्ट करते हुए कहते हैं– **तद्‌रूपारोपात्तु रूपकम्** (रूप का आरोप होने के कारण इसे रूपक कहते हैं। इसके दस भेद हैं– नाटक, प्रकरण, समवकार, किम, ईहामृग, भाण, प्रहसन, अंक, वीथी और व्यायोग। इनमें से प्रथम पाँच, तीन या तीन से अधिक अंकों का होता हैं। अर्थात् इनमें कथा–विन्यास या घटनाक्रम का विस्तार होता है। परंतु अंतिम पाँच में सिर्फ एक अंक ही होता है, अतः ये एकांकी माने जाते हैं। जिसमें कथा–विन्यास या घटनाक्रम अल्प या संक्षिप्त होता है। परंतु आज जो एकांकी का स्वरूप है वह संस्कृत एक अंकीय रूपकों से थोड़ा भिन्न है। आज का एकांकी रंग विधा भारतीय एवं पाश्चात्य शैलियों के मिश्रण से व्युत्पन्न है।

एकांकी का शाब्दिक अर्थ है– 'एक अंक वाला'। अर्थात् काव्य के उस भेद को हम एकांकी कहते हैं जो केवल एक ही अंक में संपूर्ण घटना क्रम को अपने में समाहित कर सहृदय को आनंद विभोर देता है। एकांकी को अंग्रेजी के **वन एक्ट प्ले** के समानांतर रखा जा सकता है। अतः विधा के रूप में एकांकी वह नाट्य रूप है, जिसके उद्‌भव के सूत्र पश्चिमी **मिरेकिल्स** और **मॉरेलिटीज** जैसे नाट्यरूप, विनोदपूर्ण **इंटरल्यूड्स** तथा **कर्टनरेजर** जैसे मूल नाटक के पहले खेले जाने वाले हल्के–फुल्के लघु नाटकों में प्राप्त होते हैं।

नाटक के सबसे लोकप्रिय और सशक्त प्रभेद एकांकी के बारे में कई धारणाएँ एक साथ प्रचलित हैं। माना यह जाता है कि एकांकी नाटक का लघु संस्करण है, एकांकी

कहानी का मंचीय रूप है, एकांकी जीवन के किसी एक पक्ष को ही अपना लक्ष्य बनाता है, एकांकी और नाटक में कहानी और उपन्यास जैसा संबंध है।

परिभाषा

एक अंक वाली नाट्यविधा, जो जीवन के किसी एक प्रसंग, एक अनुभव, एक अंश की झाँकी प्रस्तुत करती है, एकांकी होता है। **डॉ. नगेंद्र के अनुसार**– ''एकांकी में हमें जीवन के क्रमबद्ध विवेचन न मिलकर उसके एक वस्तु, एक महत्त्वपूर्ण घटना, एक विशेष परिस्थिति अथवा एक उद्दीप्त क्षण का चित्र मिलेगा।''

डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार– ''एकांकी नाटकों में अन्य प्रकार के नाटकों से विशेषता होती है। उसमें एक ही घटना होती है और यह घटना नाटकीय कौशल से कौतूहल का संचय करते हुए चरम सीमा तक पहुँचती है। उसमें कोई अप्रधान प्रसंग नहीं रहता।''

सेठ गोविंददास के अनुसार – ''एक ही विचार पर एकांकी नाटक की रचना हो सकती है। विचार के विकास के लिए जो संघर्ष अनिवार्य है, उस संघर्ष के पूरे नाटक में कई पहलू दिखाए जा सकते हैं, परंतु एकांकी में केवल एक पहलू। एकांकी में मुख्य और गौण दोनों ही पात्रों की संख्या बहुत परिमित होनी चाहिए।''

उदयशंकर भट्ट के अनुसार – ''एकांकी नाटक में जीवन का एक अंश, परिवर्तन का एक क्षण, सब प्रकार के वातावरण से प्रेरित एक झोंका, दिन में एक घंटे की तरह, मेघ में बिजली की तरह, वसंत में फूल के हास की तरह व्यक्त होता है।''

उपेंद्रनाथ 'अश्क' के अनुसार – ''पात्रों के पूरे चरित्र के किसी एक अंश की अथवा उनकी विविध समस्याओं में से किसी एक समस्या की झाँकी ही एकांकी में मिलती है।''

डॉ0 लक्ष्मीनारायण लाल के अनुसार – ''परमशिल्पी एकांकीकार वही है जो जीवन के एक पक्ष, एक घटना, एक परिस्थिति को उनकी ही स्वाभाविकता से अपनी कला में बाँध ले, जैसा कि जीवन में नित्य प्रति संभाव्य है।''

इस प्रकार, एकांकी ने जीवन के किसी एक विशिष्ट पक्ष को ईमानदारी से मूर्त करने वाली नाट्य–रचना के रूप में अपनी पहचान बनायी है। एकांकी वह लघु दृश्य विधा है, जिसमें किसी एक परिस्थिति, अनुभव और संवेदना की ऐसी प्रभावपूर्ण नाट्यभिव्यक्ति होती है कि दर्शक और पाठक मनोरंजन, संघर्ष और चिंतन की दशाओं से अभिभूत हो जायें। निश्चय ही एकांकी अपने आप में एक स्वतंत्र नाट्य विधा है, अभिनयात्मक अभिव्यक्ति की तीखी धार है।

एकांकी और नाटक में अंतर

यद्यपि एकांकी और नाटक दोनों दृश्य विधाएँ हैं, फिर भी दोनों के गठन अथवा शैल्पिक संरचना में अनेक अंतर है। क्षेमचंद्र सुमन ने नाटक को विस्तृत उद्यान और एकांकी को गुलदस्ता कहा है। नाटक में जहाँ जीवन अपने व्यापक रूप में प्रकट होता है, मूल कथानक के अतिरिक्त लघुकथा सूत्र भी उसमें अंतर्निहित होते हैं, चरित्रों में विविधता, नाटक में अनेक अंको का होना तथा कथानक का मंद प्रसार नाटक के अन्य लक्षण हैं, वहीं दूसरी ओर एकांकी में जीवन की एकपक्षीयता, सीमित पात्र योजना, कथा तीव्रता तथा संपूर्ण रचना में जिज्ञासा का प्रसार मिलता है। एकांकी में लघु कथा सूत्रों के लिए विशेष अवकाश नहीं। यदि एकांकी में घटना संयोजन, चरित्र–चित्रण तथा देशकाल अथवा वातावरण का उचित समन्वय न हो तो रंगमंच पर उसकी सफलता संदिग्ध है।

नाटक की भाषा विविधता और विस्तार से भरपूर होती है, जबकि एकांकी में भाषिक क्षमता का अपव्यय करना उचित नहीं है। नाटक का अंत व्यापक चरमबिंदु का परिचायक होता है और उसका कौतुहल भी अनिश्चित होता है। इसके विपरीत एकांकी में औत्सुक्य और चरमोत्कर्ष का सुनिश्चित विधान होता है। नाटक और एकांकी के अंतर को एक बिंब के माध्यम से स्पष्ट करते हुए डॉ. रामकुमार वर्मा कहते हैं' ''नाटक किसी तालुकेदार की भाँति अपनी मसनद पर बैठकर अपने सम्पूर्ण गाँव की उपज पर विचार करता है किंतु एकांकी तो केवल एक किसान मात्र है जिसके पास एक छोटा–सा कटा–छँटा खेत है।''

एकांकी के तत्त्व

आधुनिक हिंदी एकांकी कला और इसकी शिल्प विधि पर पश्चिम की एकांकी कला का विशेष प्रभाव रहा है और इसके मूलप्राण और प्रेरणा बिंदु पर हमारे जीवन का प्रभाव, जिसका फल यह हुआ कि इसमें संघर्ष और घात–प्रतिघात के तत्त्व की अत्यधिक प्रधानता सिद्ध हुई हैं। जीवन इतिहास अथवा पुराण और कल्पना जगत् की स्थितियाँ अपने–अपने सत्य के साथ एक–दूसरे से टकराती हैं और उनका संघर्ष समूचे एकांकी में फैल जाता है। इस तरह एकांकी में एक निश्चित समस्या की तीव्रता, उसके द्रुत विकास का वेग और चरम सीमा पर उस समस्या की चरम अन्विति, एकांकी–कला की मूल विशेषताएँ हैं। इस नाट्य–सामग्री अथवा रचना–विधान को एक सूत्र में बाँध रखने के लिए एकांकी में कौतूहल और जिज्ञासा तत्त्व की अत्यधिक आवश्यकता पड़ती है।

जिन पदार्थों से किसी वस्तु का निर्माण होता है, वे पदार्थ ही उस वस्तु के तत्व कहलाते हैं। कथावस्तु (कथानक), पात्र और संवाद (कथोपकथन) एकांकी के मूल तत्त्व हैं। इन्हीं नाट्कीय तत्त्वों के माध्यम से एकांकी की मूल घटना परिस्थिति अथवा समस्या

नाट्य–कौशल से कौतूहल और जिज्ञासा के सहारे अपनी चरम–सीमा तक पहुँचती है। इन तीन मूल तत्त्वों के अतिरिक्त एकांकी–सृजन में शिल्प–कौशल हेतु भाषा–शैली, देशकाल (वातावरण), उद्‌देश्य (रस / विचार) की भी आवश्यकता होती है। अतः एकांकी का अध्ययन करते समय हमें मुख्यतः छह तत्त्वों का ध्यान रखना होगा –

(1) कथावस्तु (कथानक)
(2) पात्र (चरित्र–चित्रण)
(3) संवाद (कथोपकथन)
(4) भाषा–शैली
(5) देशकाल (वातावरण)
(6) उद्‌देश्य (रस / विचार)

(1) कथावस्तु–कथावस्तु का संबंध किसी दीप्त घटना से होता है। घटना अत्यंत क्षिप्र गति से घटित होती है और आरंभ, विकास तथा चरम सीमा से गुजरती हुई मूल संवेदना का उद्‌घाटन करती है। एकांकी की कथावस्तु आधिकारिक कथा को लेकर ही चलती है। इसमें प्रासंगिक कथा के लिए अवकाश नहीं होता है। एकांकीकार कथावस्तु में जीवन को माइक्रोस्कोप द्वारा उसकी सूक्ष्मता से सूक्ष्मता में दिखलाने का प्रयास करता है। कथावस्तु में जीवन में तीव्र अनुभूति अपेक्षित होती है। यहाँ नाटकीय तनाव को भी महत्त्व प्राप्त है। इससे कार्य–व्यापार की योजना और उसकी गतिशीलता को बल मिलता है। कथावस्तु जितनी तनावभरी (द्वंद्वपूर्ण) और संघर्ष पूर्ण होती है एकांकी उतना ही सशक्त और सफल बन पाता है। कथावस्तु की अन्विति के लिए एकांकी में यद्यपि संकलन त्रय को महत्त्व प्राप्त है, पर इसके निर्वाह की कोई अनिवार्य बाध्यता नही है। परंतु इतना ध्‍ यान रखना आवश्यक है कि एकांकी के प्रस्तुति काल और घटना के घटित काल में एकरूपता होनी चाहिए। वास्तव में एक विशेष स्थान और एक विशेष समय पर एक विशेषकार्य को संपादित करने वाली घटना ही एकांकी में संकलन–त्रय को स्वरूपित करती है। इसके निर्वाह से एकांकी की प्रभाव क्षमता में वृद्धि होती है।

(2) पात्र (चरित्र चित्रण) : एकांकी के पात्रों के चयन में विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता रहती है। पात्रों के चरित्रों के आधार पर ही भावपक्ष एवं कलापक्ष का संप्रेषण होता है। एकांकी के पात्रों के चयन में सीमा एवं आवश्यकता का भी ध्यान रखना पड़ता है। अनावश्यक भीड़ को टालना भी अवश्यंभावी हो जाता है। पात्रों की संख्या जितनी कम रहती है उतनी ही गंभीरता से घटना प्रधान हो जाती है। विषयानुरुप एक केंद्रीय पात्र या नायक या नायिका के साथ सहयोग एवं मनोरंजन हेतु सीमित पात्र होते हैं। पात्रों

का चयन हमारे आसपास के सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक परिवेश के होने से दर्शकों को स्वयं को उनसे जोड़ने में आसानी होती है। पात्र जीवन के बाहर के न होकर यथार्थ के अभिभावक और संभाव्य हो। साथ ही जनजीवन और भावनाओं का प्रतिनिधित्व भी वह करें। पात्रो के चरित्रांकन में गतिशीलता होनी चाहिए।

(3) संवाद (कथोपथन) : संवादों के द्वारा ही एकांकी की कथावस्तु, चरित्र का विकास, उद्देश्य की सफलता को सिद्ध किया जा सकता है। संवाद के मुख्य रूप से दो कार्य होते हैं – पात्र या पात्रों की चरित्रगत वैशिष्टय को प्रकट करना तथा कथा को तीव्रतर प्रवाह देना। परिस्थिति घटनाक्रम काल एवं पात्रों के बीच तारतम्यता बनाने का कार्य संवाद ही करता है। अभिनेयता की दृष्टि से सरल संक्षिप्त संवाद ही प्रभावी होते हैं। पात्रों के परिवेश, देशकाल और वातावरण के अनुकूल ही संवादों की योजना की जानी चाहिए। बहुत लंबे व्याख्यान या संवाद दर्शको को उबा देने वाले होते है। छोटे, चुटीले और सारगर्भित संवाद एकांकी में जीवंतता लाने का कार्य करते हैं। बनावटी और उपदेशपरक संवादों से बचना चाहिए। अनावश्यक या निष्प्रयोजन वार्तालाप को स्थान नहीं देना चाहिए। संवाद ऐसे होने चाहिए जो न सिर्फ एकांकीकार की भावना या उद्देश्य को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करें बल्कि दर्शकों को भी एकांकी से तल्लीनतापूर्वक जोड़े रखने में सहायक हों।

(4) भाषा शैली : अभिव्यक्ति और सम्प्रेषण का सबसे सशक्त माध्यम भाषा है। इस कारण एकांकी की भाषा सहज, सरल, सुबोध और सुस्पष्ट होनी चाहिए। एकांकी में विषयवस्तु या घटनाक्रम के आधार पर विशिष्ट भाषा शैली को अपनाया जाता है। एक ही विषय को लेकर कहानी, नाटक, काव्य आदि विभिन्न विधाओं की रचना की जा सकती है, जिस विषय के प्रति लेखक का जो दृष्टिकोण होता है, उसकी अभिव्यक्ति के लिए वह वैसा ही माध्यम भी चयनित करता है। साधारण सी कथावस्तु को भी सुदृढ़ भाषा शैली से उच्चकोटि का बनाया जा सकता है। पात्रों को और उनके परिवेश को ध्यान में रखकर भाषा का चयन किया जाना चाहिए। एक संभ्रात और उच्चवर्ग का प्रतिनिधित्व करने वाला पात्र शिष्ट, शालीन, परिष्कृत परिमार्जित भाषा शैली का ही प्रयोग करेगा, वहीं निम्न वर्ग की भाषा में ये गुण नहीं मिलेंगे। पात्रों के अनुकूल भाषा का चयन अत्यंत आवश्यक है। एकांकी की शैली भी दर्शको के मन.मस्तिष्क पर बोझ न होकर बोधगम्य और प्रभावी होनी चाहिए।

(5) देशकाल (वातावरण) : एकांकी में किसी विशेष देशकाल अथवा वातावरण से संबंधित पात्रों एवं घटनाओं का चित्रण होता है। देशकाल–वातावरण के चित्रण में एकांकीकार को युग अनुरूप के प्रति विशेष सतर्क रहना आवश्यक है। एकांकी तभी सजीव हो सकता है जब भाषा, पात्रों के परिधान, पात्रों की भाषा उस युग के समानुरूप हो, इससे वह कालखंड जीवंत हो उठता है। जिस घटना, देश, काल और उद्देश्य के लिए एकांकी

रची जाती है उससे जुड़े हुए वातावरण, समकालीन इतिहास, सांस्कृतिक चेतना, परिधान, खान–पान, रीति–रिवाज आदि का सहज, स्वाभाविक और प्रामाणिक सृजन किया जाता है। सभी दृश्यों एवं परिस्थितियों का साभिप्राय एवं क्रमागत ढ़ंग से प्रस्तुत किया जाए तथा ऋतु, प्रकृति, दृश्य विधान आदि का संक्षिप्तीकरण करते हुए संकेतात्मक ढ़ंग से किसी घटना को रोचक सजीव एवं यथार्थ बना दिया जाता है।

(6) उद्‌देश्य (रस/विचार) : प्राचीन दृष्टि से नाटक एवं एकांकी में रस निष्पत्ति का होना अनिवार्य था। रंगमंचीय क्रियाकलाप में रस उतपन्न होता है और दर्शक उसका आस्वादन करता है। शृंगार, वीर और करुण रसों में से किसी एक रस की अनुभूति मुख्य रूप से होती है।

किंतु आधुनिक युग में रस से आगे उद्‌देश्य की भी माँग की जाती है। भारतेंदु के मतानुसार नाटक में उद्‌देश्य का स्वरूप समाज और जीवन को ऐतिहासिक जरूरतों के अनुसार होना चाहिए जो नाटक/एकांकी भाव को केवल रसानुभूति तक ले जाते हैं अथवा उद्‌देश्य को समाज–इतिहास निरपेक्ष सनातन रूप में प्रस्तावित करते हैं, वे आधुनिक दृष्टि से अपर्याप्त और अयोग्य होते हैं।

सामान्यतः किसी भी साहित्यिक विधा और कला का उद्‌देश्य मनोरंजन, सामाजिक चित्रण या सामाजिक सुधार होता है लेकिन उत्कृष्ट नाटक/एकांकी मानवीय संवेदना से युक्त होने चाहिए। जिसमें समकालीन जीवन की सच्चाई को अधिक असरदार ढंग से मंच पर पेश करने की शक्ति भी होनी चाहिए।

एकांकी के प्रकार

भारतीय एवं पाश्चात्य रंग परंपरा को देखते हुए विद्वानों ने एकांकी के कई दृष्टियों से अनेक भेद करते हैं, जिन्हें हम यहाँ मुख्यतः तीन दृष्टियों से निम्नलिखित भेद कर एकांकी का अध्ययन कर सकते हैं –

(क) विषय की दृष्टि से

(ख) प्रतिपाद्य की दृष्टि से

(ग) शैली अथवा शिल्प की दृष्टि से

(क) विषय की दृष्टि से एकांकी के दस भेद किए जा सकते हैं –

1. सामाजिक एकांकी– समाज से जुड़ी समस्याओं को आधार बनाकर सामाजिक एकांकी की रचना की जाती है। इसका क्षेत्र बहुत विस्तृत है। सामाजिक जीवन के

विविध पक्षों को जैसे–प्रेम, वर्ग-संघर्ष, पीढ़ी-संघर्ष तथा अस्पृश्यता आदि विषय होते है। उदाहरण स्वरूप–लक्ष्मी का स्वागत (उपेंद्रनाथ 'अश्क')

2. ऐतिहासिक एंकाकी–ऐतिहासिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर लिखे गए एकांकी ऐतिहासिक एकांकी कहलाते हैं। 'दीपदान' (रामकुमार वर्मा) इसका अच्छा उदाहरण है।

3. मनौवैज्ञानिक एकांकी–मनोविज्ञान के आधार पर रचित एकांकी मनोवैज्ञानिक एकांकी होते हैं।

4. राजनैतिक एकांकी–किसी राजनैतिक परिदृश्य को उजागर करने वाले एकांकी को राजनैतिक एकांकी कहा जाता है।

5. चारित्रिक एकांकी–किसी चरित्र.विशेष का उद्देश्य लेकर लिखी गई एकांकी चारित्रिक एकांकी होती है। उदाहरण स्वरूप–सीमा–रेखा (विष्णुप्रभाकर)

6. पौराणिक एकांकी–अध्यात्म और पुराणों पर आधारित कथानक को लेकर लिखे गए एकांकी पौराणिक एकांकी होते है।

7. सांस्कृतिक एकांकी–सांस्कृतिक समस्या पर केंद्रित कर लिखी गई एकांकी सांस्कृतिक एकांकी होते हैं।

8. आंचलिक एकांकी–किसी अंचल विशेष को लेकर उसके रीति–रिवाजो, लोक–भाषा, रहन–सहन, वेशभूषा, खान–पान आदि लेकर लिखे गए एकांकी आंचलिक एकांकी होते हैं।

9. दार्शनिक एकांकी–दर्शन पर आधारित एकांकी दार्शनिक एकांकी कहे जाते हैं।

10. तथ्यपरक एकांकी–किसी विशेष संदेश या उद्देश्य को लेकर लिखा गया एकांकी जो किसी विशेष प्रसंग पर बल देकर उसका निष्कर्ष अथवा प्रभाव ग्रहण करने का दायित्व दर्शकों पर छोड़ देता है, उसे तथ्यपरक एकांकी कहते हैं।

(ख) प्रतिपाद्य की दृष्टि से–

इस दृष्टि से एकांकी के अनेक भेद किए जा सकते हैं। हालांकि इनको किसी सीमा में बाँधा नहीं जा सकता है। इसके अंतर्गत समस्यामूलक एकांकी, हास्य एकांकी, विचारपरक एकांकी और वैज्ञानिक एकांकी विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

समस्यामूलक एकांकी में वैयक्तिक और सामाजिक समस्या को लेकर तथा कहीं-कहीं उसके समाधान को देते हुए भी एकांकी का निर्माण किया जाता है।

हास्य एकांकी में विनोद और हास्य की प्रधानता होती है। एकांकीकार विचित्र और हास्यास्पद घटनाक्रम एवं चरित्र को सृजित करता है, जिसके संवाद दर्शकों के हृदय में हास्य और मनोरंजन का कारक बनते हैं। इनमें सहज, सरल, उत्साहवर्धक वातावरण का निर्माण होता है।

व्यंग्य एकांकी में हास्य-मनोरंजन के साथ-साथ व्यक्ति, समाज अथवा विडंबना के प्रति तीखा प्रहार होता है। ऐसे एकांकियों की भाषा दुहरे अर्थ को व्यंजित करते हुए रहस्यों को अनावृत करती है।

विचारात्मक एकांकी किसी विशेष प्रज्ञात्मक दृष्टिकोण को अभिव्यक्ति करता है। वैज्ञानिक एकांकी आज के विज्ञान जगत की किसी उलझन को लेकर प्रयोगशाला के वातावरण की चर्चा एवं परिदृश्य को दर्शकों के समक्ष उपस्थित करते हैं।

(ग) शैली अथवा शिल्प की दृष्टि से–

इस दृष्टि से एकांकी को चार भागों में बाँटा गया है :

(1) स्वप्न रुपक (फैन्टेसी)

(2) प्रहसन

(3) काव्य एकांकी

(4) रेडियो-रूपक

स्वप्न रूपक अर्थात् अतिकल्पना प्रधान एकांकी में एकांकीकार बहुत दूर तक अपनी सूझ और कल्पना के बल पर एकांकी का निर्माण करता है। डा0 रामकुमार वर्मा द्वारा लिखित 'बादल की मृत्यु' ऐसा ही एकांकी है।

प्रहसन में हास्य-व्यंग्य को मूलाधार बना एकांकियाँ सृजित की जाती हैं। भारतेंदु हरिश्चंद का 'अंधेर नगरी' इसका उदाहरण है।

काव्य एकांकी का माध्यम भी काव्य ही होता है। काव्य एकांकी में आवश्यक है कि उसमें नाटकीयता और कविता दोनों ही हो। भगवतीचरण वर्मा का 'कर्ण' और सुमित्रानंदन पंत का 'रजत शिखर' काव्य एकांकी हैं।

रेडियो-रूपक आधुनिक युग की बहुत ही लोकप्रिय एकांकी विधा है। इन एकांकियों की रचना आकाशवाणी पर प्रसारित करने के लिए की जाती है। इसमें ध्वनियों का विशेष महत्त्व और प्रभाव होता था। ध्वनियों के माध्यम से ही अभिनय के क्रिया व्यापारों का निर्वहन होता है। यहाँ पर श्रोता ध्वनियों को सुनकर ही आगे के दृश्य या भाव समझ लेते हैं।

रचना विधान के अनुसार एक दृश्यीय, एक पात्रीय जैसे भेद भी किए जा सकते हैं। एक पात्रीय एकांकी में एक पात्र ही अपने व्यवहारों और क्रिया-कलापों से दर्शको तक पहुँचने में सफल होता है।

एकांकी के उपर्युक्त प्रकारों के अतिरिक्त अन्य विभेद भी किए जा सकते हैं। वैषम्य एकांकी, विद्रुप एकांकी, अति नाटकीय एकांकी, व्याख्यामूलक, अनुभूतिमय, आदर्शवादी, यथार्थवादी, कलावादी, प्रगतिवादी एकांकी आदि अनेक प्रकारों की भी चर्चा की जा सकती है।

हिंदी एकांकी का उद्‌भव और विकास

अंग्रेजी एकांकी का आविर्भाव सन् 1903 ई. में माना जाता है। एकांकी (One act play) की आवश्यकता पहले पहल अंग्रेजी रंगमंच में 'समय बिताने' के लिए हुई। कहा जाता है कि सन् 1903 ई. में डब्ल्यू0 डब्ल्यू0 जैकव की कहानी पर आधारित 'मंकीज पा' मूल नाटक के पूर्व कर्टनरेजर (Curtain raiser) के रूप में खेला जा रहा था। परंतु दर्शकों को यह प्रदर्शन इतना सशक्त लगा कि बहुत सारे दर्शक मूल नाटक देखे बिना ही लौट गए। उसी दिन एकांकी का स्वतंत्र अस्तित्व सामने आया।

भारतीय परंपरा में एक अंकीय नाटक का स्रोत बहुत पुराना है, जिसका जिक्र नाट्‌यशास्त्र में मिलता है। अतः हिंदी के आरंभिक एक अंक के नाटकों की परंपरा का एक स्रोत संस्कृत साहित्य में देखा जा सकता है। दस रूपकों में से पाँच– रूपक, भाषा, प्रहसन, अंक, वीथी और व्यायोग एक अंक वाले ही हैं। संस्कृत के नाटककारों में भी एक अंक के नाटक लिखने की परंपरा भास, वत्सराज, रामचंद्र, विश्वनाथ, वररुचि, शूद्रक, ईश्वरदत्त आदि के यहाँ प्राप्त होती है। परंतु यही परंपरा अपने अविच्छिन्न रूप में हिंदी में नहीं आ पाई। हिंदी एकांकी में पाश्चात्य तत्त्व का भी सम्मिश्रण है।

हिंदी साहित्य कोश के अनुसार **भारतेंदु हरिश्चंद्र** हिंदी एकांकी के जनक हैं। अतः हिंदी में एकांकी नाटकों के विकास का **प्रथम चरण** भारतेंदु के एकांकी से माना जा सकता है। भारतेंदु ने संस्कृत की एकांकी परंपरा का अनुसरण करते हुए कई एकांकियाँ लिखीं, जिनमें **वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति**, विषस्य विषमौवधम **अंधेर नगरी** और **धनंजय विजय** प्रमुख हैं। इन सभी में एक ही अंक है जिन्हें संस्कृत परंपरा के अनुसार प्रहसन कहा जा सकता है। भारतेंदु कालीन अन्य नाटककारों ने भी कुछ एक अंक वाले नाटकों की रचना की है, जिनमें **लाला श्रीनिवासदास** कृत **प्रहलाद चरित्र**, **राधाचरण गोस्वामी** कृत **श्रीदामा, सती चंद्रावली, प्रताप नारायण मिश्र** कृत **कलिकौतुक, राधाकृष्ण दास** कृत **दुःखनी बाला** आदि उल्लेखनीय है। इनमें से अधिकांश प्रहसन है और सामाजिक तथा धार्मिक विषयों को लेकर रचना हुई है। नाट्‌यकला की दृष्टि से अधिक महत्त्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि इनका कोई निश्चित शिल्पविधान नहीं है।

हिंदी एकांकी के विकास का **दूसरा चरण** प्रसाद युग को माना जाता है। **जयशंकर प्रसाद** ने सन् 1929 ई. में **एक घूँट** नामक अपना एक अंक का नाटक लिखा। कुछ विद्वान इसे हिंदी का पहला एकांकी मानते है। 'एक घूँट' एकांकी में वह द्वंद्व देखने को मिलता है, जो आधुनिक पाश्चात्य एकांकी विधा की विशेषता है पर समग्र रूप से विचार करने पर इसमें संस्कृत के एक अंक वाले रूपकों का प्रभाव परिलक्षित होता है। 'एक घूँट' पात्रों की मनोवैज्ञानिकता को दर्शाने वाला एकांकी है। प्रसाद की नाट्यकला पर भारतीय और पाश्चात्य दोनों नाट्यकलाओं का प्रभाव पड़ा है।

हिंदी एकांकी के विकास का **तीसरा चरण** सन् 1930 से 1947 ई. तक का है। सन् 1930 ई. में डॉ. राम कुमार वर्मा के प्रसिद्ध एकांकी **बादल की मृत्यु** का प्रकाशन होता है। कुछ विद्वान इसके सम्यक् स्वरूप को देखते हुए इसे हिंदी का पहला एकांकी मानते हैं। इस पूरे दशक में हिंदी एकांकी अपनी उर्वर रचनाशीलता लेकर सामने आया। भूवनेश्वर, डॉ. रामकुमार वर्मा, लक्ष्मीनारायण मिश्र, सेठ गोविंददास, उपेन्द्रनाथ 'अश्क', जगदीशचंद माथुर, भगवतीचरण वर्मा, उदयशंकर भट्ट, चंद्रगुप्त विद्यालंकार, हरिकृष्ण प्रेमी, गोविंद वल्लभ पंत आदि इस तीसरे चरण के प्रतिष्ठित एकांकीकार हैं। इन एकांकीकारों में कुछ एकांकीकार की लेखन–यात्रा अपने प्रकर्ष पर स्वातंत्रयोत्तर काल में उपस्थित हुए। परंतु इनमें से भुवनेश्वर का लेखन सन् 1950 ई. के आसपास समाप्त हो जाता है। भुवनेश्वर ने हिंदी एकांकी को आधुनिक स्वरूप प्रदान किया। उनके एकांकी वस्तु समस्या संरचना की कसावट और शिल्प की गइराई सभी दृष्टियों से समर्थ बन पड़े हैं। **भुवनेश्वर** का एकांकी लेखन **कारवाँ** (सन् 1935 ई.) से प्रारंभ होता है, जिसे एकांकी जगत का नया प्रयोग कहा जा सकता है। भुवनेश्वर पर **वर्नाड शॉ** और **इब्सन** का प्रभाव स्पष्ट है। 'कारवाँ' का प्रतिपाद्य विषय समाज के रूढ़ वैवाहिक विश्वासों का भेदन है। 'कारवाँ' संकलन के पश्चात् **ताँबे के कीड़े**, **आजादी की नींद**, **सिकंदर** आदि उनके प्रसिद्ध एकांकी हैं। भुवनेश्वर के एकांकी की सामग्री, दृष्टि और तकनीक तीनों में नवीनता थी।

हिंदी एकांकी के विकास का अगला चरण स्वातंत्र्योतर काल का है। इस समय डॉ. रामकुमार वर्मा का लेखन सर्वाधिक रूप से उभरकर उपस्थित है। **सप्तकिरण, दीपदान, रिमझिम, मयूर पंख, पृथ्वी राज की आँखें, चारू मित्र, जूही के फूल, इंद्रधनुष**, **ध्रुवतारिका, रजतरश्मि** आदि उनके प्रसिद्ध एकांकी हैं। वर्मा जी ने अपने एकांकियों में शिल्पविधान तो पश्चिम से ग्रहण किया, पर कथानक, वातावरण आदि में भारतीयता का निर्वाह किया है। उनका यर्थाथवादी दृष्टिकोण आदर्शोंन्मुखी है। उनके ज्यादातर पात्र मध्यवर्गीय सुशिक्षित और सभ्य है, जिनकी चारित्रिक विशेषताओं का उद्घाटन मनोवैज्ञानिक ढंग से किया गया है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में उदयशंकर भट्ट ने भी अधिकाधिक एकांकी लिखे। मध्यवर्गीय जीवन की समस्याओं को एकांकी रचने का आधार बताया। **समस्या का अंत**, **नये मेहमान**, **धूमशिखा, अंधकार** और **प्रकाश**, **पर्दे के पीछे**, **आज का आदमी** आदि उनके प्रसिद्ध एकांकी हैं। उनमें से अधिकांश में मनोविश्लेषणात्मक शैली का निर्वाह हुआ है। उनके एकांकी अधिकाधिक सौद्देश्यपूर्ण होने के कारण कलात्मक सिद्धि प्राप्त नहीं कर पाए।

स्वातंत्र्योत्तर काल में सेठ गोविंददास के एकांकी ने भी श्रीवृद्धि की। उन्होंने मुख्यतः राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं का आधार बनाकर एकांकी रचना की है। वे गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित हैं। अंतर्द्वंद्व का चित्रण सुंदर बन पड़ा है। विषय वैविध्य की दृष्टि से उनके एकांकी का महत्व स्मरणीय है। उनके लेखन के मूल में विचार की गहनता है। इस कारण नाटकीय स्थितियाँ ठीक से नियोजित नहीं हो पाई हैं। **सप्तरश्मि, व्यवहार, एकादशी, पंचभूत, चतुष्पथ** आदि उनके प्रसिद्ध एकांकी हैं।

उपेंद्रनाथ 'अश्क' स्वातंत्र्योत्तर काल के प्रमुख एकांकीकार हैं। उन्हें मंचीयता की बहुत अच्छी पहचान है। यथार्थ जीवन की विविधोन्मुखी आंतरिक सत्य तक उनकी पहुँच है। उन्होंने मध्यवर्ग की समस्याओं को अपने एकांकी का प्रतिपाद्य बनाया है। उनके एकांकी का केंद्र बिंदु मध्यवर्गीय जीवन ही रहा है। उन्होंने घरेलू समस्याओं का विवेचन प्रभावशाली ढंग से किया है। उनके एकांकी विषय की दृष्टि से सामाजिक और मनोवैज्ञानिक तथा शिल्प की दृष्टि से प्रतीकात्मक है। **देवताओं की छाया में, तूफान से पहले, चरवाहे, पर्दा उठाओ पर्दा गिराओ, साहब को जुकाम है, लक्ष्मी का स्वागत** आदि उनके प्रमुख एकांकी हैं।

लक्ष्मीनारायण मिश्र के एकांकी को 'समस्या–एकांकी' कहा जाता है। उन्होंने पश्चिमी तकनीक, बौद्धिक दृष्टिकोण तथा मनोवैज्ञानिक आधार लेकर समस्या एकांकी की रचना की है।

जगदीशचंद्र माथुर ने पाश्चात्य रंग से परिचित होकर रंगमंच की सुविधाओं और सीमाओं को ध्यान में रखते हुए सामाजिक और ऐतिहासिक विषयों को लेकर एकांकी नाटकों की रचना की। उनकी प्रवृत्ति घटना के विस्तार में न जाकर किसी मार्मिक स्थिति के जरिए जीवन की मूलभूत समस्या का सार्थक विश्लेषण करने की रही है। गठन की दृष्टि से माथुर जी के एकांकी नपे–तुले हैं और उनकी जागरूक सृजन–चेतना के द्योतक है। उन्होंने एकांकी शिल्प को नया संस्कार देने के साथ–साथ एक नया नाट्य–भाषा गढ़ने का कार्य किया है। **भोर का तारा, कलिंग विजय, रीढ़ की हड्डी, मकड़ी का जाला, ओ मेरे सपने** आदि उनके प्रसिद्ध एकांकी हैं।

स्वातंत्र्योत्तर काल के एकांकीकारों में भगवतीचरण वर्मा और विष्णु प्रभाकर का नाम भी उल्लेखनीय हैं। भगवतीचरण वर्मा ने आजादी मिलने के बाद देश में जो नैतिक विघटन आया है उसका यथार्थ चित्रण अपने एकांकियों में प्रस्तुत किया है। **बुझता दीपक, चौपाल** आदि एकांकी इस दृष्टि से प्रमुख हैं।

विष्णु प्रभाकर के एकांकी– 'रेडियो–एकांकी' 'साहित्यिक एकांकी' और 'मंचीय एकांकी' के रूप में मिलते हैं। विषय वैविध्य और गाँधीवादी आदर्शवादिता उनके एकांकियों की मूलभूत विशेषताएँ हैं। पर बाद में उनके एकांकी आदर्श से यथार्थ की ओर भी उन्मुख हुए हैं। **बंधन मुक्त, पाप, प्रतिशोध, वीरपूजा, चंद्र किरण, सीमा रेखा, लिपिस्टिक की मुस्कान, ममता का विष** आदि उनके प्रमुख एकांकी हैं।

स्वातंत्र्कोत्तर काल में ही उल्लेखित एकांकीकारों के अतिरिक्त कुछ ऐसे एकांकीकार भी आए, जिन्होंने नयी कविता, नई कहानी, नया नाटक की तरह **नए एकांकी** की भूमि तैयार की। आधुनिक जीवन–मूल्यों की खोज, मानव–संघर्ष की सार्थकता और रंगमंच के सर्जनात्मक सौंदर्य की महत्ता नए एकांकी का मुख्य विषय बनी। लक्ष्मीनारायण लाल ने नई संवेदनशीलता, नई समस्याएँ, नए भाव बोध, नए जीवन मूल्य, नई आशावदिता, नए रंग–प्रयोग, नई प्रस्तुती के साथ हिंदी एकांकी को नया स्वरूप और नई सार्थकता प्रदान की। **मोहन राकेश** के एकांकी में सांप्रतिक विघटित जीवन मूल्य और मानवीय संबंध को केंद्र में रखा गया।

इस प्रकार कहा जा सकता है हिंदी एकांकी का फलक व्यापक है और उसका स्वरूप वैविध्य–प्रधान है। हिंदी एकांकी प्रारंभ से लेकर अब तक प्रौद्योगिक और संचारिक क्रांति की दुनिया में अपनी विषयवस्तु, शिल्प–गठन एवं प्रदर्शन–स्वरूप की दृष्टि से लगातार परिवर्तनशील रहा है। एकांकी आज अन्य–अन्य रूपों में अधिक प्रभावशाली भी बन रहा है।

■

सेठ गोविंददास

(सन् 1896–1974 ई.)

सेठ गोविंददास का जन्म मध्य प्रदेश के **जबलपुर** में सन् **1896 ई.** में माहेश्वरी व्यापारिक परिवार में राजा गोकुलदास के यहाँ हुआ था।

उनको साहित्य में गहरी अभिरुचि के साथ, स्केटिंग, नृत्य, घुड़सवारी आदि का शौक था। उनके परिवार पर वल्लभ सम्प्रदाय का गहरा प्रभाव होने के कारण वल्लभ सम्प्रदाय की रास-लीलाओं, नाटकों और धार्मिक उत्सवों से उनका नाता रहा। नाटक लिखने की रुचि भी यहीं से विकसित हुई।

गाँधी जी के असहयोग आंदोलन का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा और वैभवपूर्ण जीवन का परित्याग कर वे दीन–दुखियों के साथ सेवा दल में सम्मिलित हो गए। देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् वे सांसद हुए और आजीवन बने रहे। हिंदी भाषा जन मानस की, राष्ट्रीय और स्वाधीन भारत की भाषा होने के कारण इससे उनका गहरा लगाव था। सन् **1974** ई. में उनका देहावसान हुआ।

नाटक और एकांकी ही उनके लेखन का केंद्रबिंदु था। सर्वप्रथम उन्होंने 'विश्व प्रेम' नाटक लिखा। उसका मंचन भी हुआ। पाश्चात्य नाटककारों बर्नाड शॉ, इब्सन, व ओनील का प्रभाव उनके लेखन पर गहरा रहा। उन्होंने नई शैली का प्रयोग करते हुए 'प्रतीक शैली' में भी नाटक लिखे। उनकी भाषा सरल, सहज, सुबोध, और सीधे हृदय में उतरने वाली है।

कृतियाँ

एकांकी : सप्त रश्मि, एकादशी, पंचभूत, चतुष्पथ, आप बीती–जगबीती, व्यवहार आदि।

नाटक : कर्तव्य, कर्ण, स्नेह या स्वर्ग, कुलीनता, शशिगुप्त, शेरशाह, अशोक, रहीम, भारतेंदु हरिश्चंद्र, महात्मा गाँधी आदि।

उपन्यास : इंदुमती।

सेठ गोविंददास गाँधीवादी थे। विचारों की उच्चता, आचरण में पवित्रता और जीवन में सादगी उनके व्यक्तित्व की मुख्य विशेषताएँ हैं। एकांकी और नाटकों के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना के प्रसार में उनका महत्त्वपूर्ण स्थान है।

व्यवहार

मुख्य–पात्र

रघुराजसिंह	: एक जमींदार
नर्मदाशंकर	: रघुराजसिंह के स्टेट का मैनेजर
चूरामन	: एक किसान
क्रांतिचंद्र	: चूरामन का पुत्र

स्थान : एक नगर एवं गाँव

पहला दृश्य

स्थान : नगर में रघुराजसिंह के महल की एक बालकनी

समय : प्रातःकाल

एक विशाल बालकनी का जो हिस्सा दिखाई देता है वह सुंदरता से बना और सजा हुआ है। उसके खंभे संगमरममर के हैं और रेलिंग बीड़ की रँगी हुई। फर्श मोज़ेक का बना है, जिसमें रंग-बिरंगे बेल-बूटे हैं। छतपर चूने की नक्काशी है और उससे बिजली की कई बत्तियाँ झूल रही हैं, जिनके शेड बेशकीमती हैं। एक बिजली का पंखा भी लटक रहा है। पीछे की रेलिंग के निकट ही वृक्षों के ऊपरी भाग दीख पड़ते हैं, जिससे जान पड़ता है कि बालकनी तीसरी या चौथे मंजिल पर है। बालकनी में लकड़ी का एक सुंदर झूला, सोफा-सेट, टेबिलें आदि सुंदरता से सजी हैं। कुछ चीनी-मिट्टी के गमले भी रखे हैं, जो भिन्न-भिन्न प्रकार के पौधों से भरे हुए हैं। बालकनी की बनावट और सजावट को देखने से वह किसी अत्यंत संपंन व्यक्ति के महल का एक भाग जान पड़ती है। रघुराजसिंह बालकनी के एक कोने में खड़ा हुआ एक छोटी-सी सुंदर दूरबीन से पीछे के दरख्तों के परे की कोई वस्तु देख रहा है। रघुराजसिंह करीब 25 वर्ष की अवस्था का, गौर-वर्ण, ऊँचा-पूरा, किंतु दुबला सुंदर मनुष्य है। वह ढीली बाँहों का पतला-सा कुरता और चूड़ीदार पाजामा पहने हुए है। उसका सिर खुला हुआ, जिस पर लंबे बाल लहरा रहे हैं। छोटी-छोटी मूँछे हैं और आँखों पर मोटे फ्रेम का चश्मा। उसके नजदीक ही नर्मदाशंकर खड़ा हुआ है। नर्मदाशंकर की उम्र लगभग 65 वर्ष की है। यह साँवले रंग, ठिगने कद का मोटा आदमी है। सिर पर बड़ा-सा साफा बाँधे है और शरीर पर शेरवानी तथा पाजामा पहने है। उसके

बड़े-से मुख पर उसकी छोटी-छोटी आँखें और बड़ी-बड़ी सफेद मूँछें एक खास स्थान रखती हैं।

रघुराजसिंह : **(दूरबीन से देखते-देखते)** भोज की ठीक तैयारी हो रही है, मैनेजर साहब, बहन के विवाह में किसानों की यह दावत मैं विवाह का सबसे बड़ा काम मानता हूँ। **(कुछ रुककर)** कुल मिलाकर कितने किसान आवेंगे ?

नर्मदाशंकर : पच्चीस हजार से कम नहीं, राजा साहब, आपने उन्हें मय बाल-बच्चों के आने का निमंत्रण जो भेजा हैं।

रघुराजसिंह : ***(दूरबीन से देखते-देखते ही)*** क्यों, पहले की शादियों में किसानों को कुटुंब-सहित निमंत्रण नहीं दिया जाता था ?

नर्मदाशंकर : कभी नहीं, सिर्फ मर्द बुलाये जाते थे, वे भी चुने हुए घरों के, और घर पीछे एक आदमी।

रघुराजसिंह : ***(दूरबीन से देखते-देखते ही)*** पर यह गलत बात थी, मैनेजर साहब, सिर्फ मर्दों को, और वह भी चुने हुए घरों के, तथा घर पीछे एक ही आदमी को बुलाने का क्या अर्थ है ?

नर्मदाशंकर : अर्थ तो सभी पुरानी बातों का है, राजा साहब! (कुछ रुककर) हाँ, एक कठिनाई जरूर है।

रघुराजसिंह : **(दूरबीन आँखों के सामने से हटाकर, नर्मदाशंकर की ओर देख)** कैसी कठिनाई, मैनेजर साहब ?

नर्मदाशंकर : **(गला साफकर कुछ भर्राए हुए स्वर में)** आप माफ करें तो कहूँ।

रघुराजसिंह : आप मेरे पिता जी के समय से काम कर रहे हैं, शायद चालीस वर्ष आपको काम करते-करते बीते गए। मैं आपके सामने पैदा हुआ। पिता जी की मृत्यु के बाद मेरी नाबालिगी में आपने ही कुछ काम किया, आज भी आप ही मैनेजर हैं, आपको मैं अपना बुजुर्ग मानता हूँ, आपको कोई बात कहने के पहले माफी माँगने की जरूरत है ?

नर्मदाशंकर : मै आपकी कृपा का हाल जानता हूँ, राजा साहब, इसीलिए आज कुछ कहने की हिम्मत कर रहा हूँ। जो-जो बातें पहले होती थीं उनके कारण ही **(बालकनी की ओर इशारा कर)** ये महल-महलात, यह वैभव और ऐश्वर्य नज़र आता है। विवाह में घर पीछे एक किसान और वह भी चुने हुए घरों के किसानों को, निमंत्रण देने का सवाल नहीं है, प्रश्न है कार्य की सारी पद्धति का।

रघुराजसिंह : अच्छा, तो जिस पद्धति से मैं काम कर रहा हूँ वह आप मुनासिब नहीं समझते ?

नर्मदाशंकर : **(सहमे हुए स्वर में)** बात तो ऐसी ही है और समय-समय पर मैं अपनी राय का संकेत भी करता आया हूँ।

रघुराजसिंह : **(कुछ याद करते हुए)** हाँ, मुझे याद आ रहा है। काम सँभालते ही जब मैंने किसानों पर का सारा कर्ज़ माफ किया तब वह भी आपको पसंद नहीं आया था।

नर्मदाशंकर : हाँ, राजा साहब, मुझे तो पसंद नहीं आया था।

रघुराजसिंह : **(विचारते हुए)** परंतु आखिर उस कर्ज में से कितना कर्ज वसूल होता?

नर्मदाशंकर : सवाल कर्ज़ की वसूली का नहीं है।

रघुराजसिंह : तब ?

नर्मदाशंकर : किसानों पर उस कर्ज़ के कारण दबाव था, वह चला गया।

रघुराजसिंह : ओह ! तो अपना कोई फायदा न होने पर भी किसानों को कुचलकर रखना ही पुरानी पद्धति का अर्थ है।

नर्मदाशंकर : नहीं, राजा साहब, ऐसी बात नहीं है।

रघुराजसिंह : तब ?

नर्मदाशंकर : बिना किसानों पर दबाव रखे हम ज़मींदारी से कोई लाभ उठा ही नहीं सकते।

(कुछ देर निस्तब्धता)

रघुराजसिंह : **(गंभीरता से विचारते हुए)** और जिन ज़मीनों पर ज्यादा लगान था, मेरा उनका लगान घटाना भी आपको पसंद न आया होगा ?

नर्मदाशंकर : किसी ज़मीन पर ज्यादा लगान था ही नहीं, राजा साहब।

रघुराजसिंह : किसी ज़मीन पर ज्यादा लगान नहीं था ?

नर्मदाशंकर : किसी पर भी नहीं।

रघुराजसिंह : तो जो किसान इतना रोते और बिलखते थे, वह सब उनका ढोंग था ?

नर्मदाशंकर : बिल्कुल ढोंग, राजा साहब।

रघुराजसिंह : इतने मनुष्य झूठे आँसू बहाते थे ?

नर्मदाशंकर : आप इन किसानों से अभी वाकिफ नहीं हैं, राजा साहब, ये क्या-क्या कर सकते हैं, आप जानते नहीं। आँखों में दवा डालकर ये आँसू बहा सकते हैं।

(कुछ देर निस्तब्धता)

रघुराजसिंह : **(विचारते हुए)** और जिन गरीब किसानों को मैंने बिना कोई नज़राना लिए ज़मीनें दी, वह भी गलती की ?

नर्मदाशंकर : वे इतने ग़रीब थे ही नहीं, राजा साहब कि नज़राना न दे सकें।

रघुराजसिंह : पर कितने किसानों ने उनकी सिफारिश की थी ?

नर्मदाशंकर : चोर-चोर मौसेरे भाई, राजा साहब।

(फिर कुछ देर निस्तब्धता)

रघुराजसिंह : और आज विवाह के उपलक्ष्य में मैंने कुटुम्ब–सहित किसानों को जो भोज दिया, इसमें क्या गलती है ?

नर्मदाशंकर : किसानों का भोज खर्च का नहीं, आमदनी का कारण होता था, वह अब खर्च का कारण हो जाएगा।

रघुराजसिंह : अर्थात् ?

नर्मदाशंकर : राजा साहब, इस निमंत्रण में सिर्फ संपन्न किसानों को बुलाया जाता था। घर पीछे एक आदमी को निमंत्रण दिया जाता था। एक मिठाई, एक नमकीन, एक साग, एक रायता और पूड़ी-कचौड़ी उन्हें खिला दी जाती थी। फ़ी आदमी मुश्किल से चार आना खाता था। खानेवाले – कोई एक रुपया, कोई दो, कोई चार, कोई पाँच, कोई सात, व्यवहार करते थे–कोई ग्यारह और कोई इक्कीस भी। आज से भोज में न जाने कितनी तरह की मिठाइयाँ, नमकीन, तरकारियाँ, रायते, मुरब्बे, अचार, चटनियाँ और भी न जाने क्या-क्या, इन्हें खिलाया जाएगा। संपन्न कम और दरिद्र अधिक आएंगे, फिर उनका पूरा कुटुंब खाएगा। व्यवहार देने वाले कितने होंगे ?

रघुराजसिंह : **(आश्चर्य से)** व्यवहार ! आप इनसे व्यवहार लेंगे ?

नर्मदाशंकर : **(और भी आश्चर्य से)** क्यों ? व्यवहार नहीं लिया जाएगा ?

रघुराजसिंह : कभी नहीं ।

(नर्मदाशंकर आश्चर्य से स्तंभित-सा होकर रघुराजसिंह की तरफ देखता है।

कुछ देर निस्तब्धता।)

नर्मदाशंकर : **(धीरे-धीरे अत्यन्त भर्राये हुए स्वर में)** लेकिन ... लेकिन, राजा साहब, व्यवहार ...व्यवहार न लेना तो उन किसानों ... किसानों का भी अपमान ... अपमान करना ... ।

दूसरा दृश्य

(लघु भवनिका)

स्थान : गाँव के एक मकान का कोठा।

समय : प्रातःकाल।

(साधारण लंबाई-चौड़ाई का देहाती मकान का एक कोठा है। तीन ओर की दिखने वाली दीवालों पर गारे की छपाई है, जो छुई मिट्टी से पुती है। कहीं-कहीं दीवालें मैली हो गई हैं। पीछे की दीवाल में ऊपर की तरफ दो छोटी-छोटी खिड़कियाँ हैं, जिनमें लकड़ी के भद्दे से जँगले हैं। खिड़कियाँ ऊपर होने के कारण खिड़कियों के बाहर क्या है, यह दिखाई नहीं देता। दाहिनी ओर की दीवाल में एक छोटा-सा दरवाजा है, जिसकी चौखट और किवाड़ देहाती ढंग के बने हैं। दरवाजा बंद है। छत पर बाँसों का पटाव है, जिस पर गारा छपा हुआ है और छुई पुती हुई है। इधर-उधर से गारे की छपाई झड़ जाने के कारण बाँस दिखाई देते हैं, जमीन गोबर से लिपी हुई है। तीन तरफ खाली जमीन छोड़कर बीचोबीच पीछे की दीवाल से सटाकर एक लाल रंग की जाजम बिछी हुई है। जाजम इधर-उधर मैली हो गई है और यत्र-तत्र फट भी गई है। जाजम पर कई किसान बैठे हुए हैं। इनकी अवस्थाएँ भिन्न-भिन्न हैं और स्वरूप भी अलग-अलग। लेकिन कपड़े सबके प्रायः एक से हैं। इनके कपड़ों के कारण देखने वालों को इनके किसान होने में कोई शक नहीं रह जाता। इस समुदाय में एक ही व्यक्ति ऐसा है जो किसान नहीं जान पड़ता। इसका नाम है क्रांतिचंद्र। क्रांतिचंद्र की अवस्था 22-23 वर्ष से ज्यादा नहीं है। वह साँवले रंग का, ऊँचा पूरा बलिष्ठ व्यक्ति है। उसकी बहुत बड़ी-बड़ी आँखें और कुछ सिकुड़े से ओंठ उसके मुख में एक खास स्थान रखते हैं। वह खाकी रंग की कमीज और निकर पहने है। सिर खुला हुआ है, जिस पर लंबे सँवारे हुए बाल हैं। क्रांतिचंद्र के पास ही उसका पिता चूरामन बैठा है। चूरामन की उम्र करीब 60 वर्ष की है, उसका रंग भी साँवला है। सारा शरीर दुबला और मुख पिचका हुआ जिसमें उसकी घुसी हुई आँखें उसके मुख को अत्यधिक करुण बना रही हैं। उसकी ओर अन्य किसानों की वेश-भूषा में कोई फर्क नहीं है, इतना ही अंतर है कि वह कानों में सोने की मुरकियाँ पहने हुए हैं। क्रांतिचंद्र अत्यंत क्रोध-भरी मुद्रा

और अत्यधिक क्रूर दृष्टि से, जो उसकी बड़ी-बड़ी आँखों के कारण और ज्यादा क्रूर हो गई हैं, चूरामन की तरफ देख रहा है और चूरामन जमीन की ओर। कभी-कभी वह क्रांतिचंद्र की तरफ दृष्टि उठाता है, पर ज्यों ही वह देखता है कि क्रांतिचंद्र उसकी ओर देख रहा है, त्योंही वह अपनी दृष्टि फिर नीचे कर लेता है। बाकी के किसान कभी पिता और पुत्र की तरफ देखते हैं। कोठे में एक विचित्र प्रकार का सन्नाटा छाया हुआ है।)

क्रांतिचंद्र : **(धीरे-धीरे)** तो निमंत्रण के ठीक समय तक हम लोग इसी प्रकार मौन बैठे रहेंगे और बाहर बैठे हुए सब लोग हमारे निर्णय की प्रतीक्षा करते रहेंगे?

(कोई कुछ नहीं बोलता। फिर निस्तब्धता)

क्रांतिचंद्र : **(कुछ देर बाद, उठते हुए)** अच्छी बात है, आप लोग इसी प्रकार बैठे रहें, मुझे जो कुछ करना ठीक जान पड़ता है, मैं जाकर करता हूँ। **(खड़ा होता है।)**

चूरामन : बैठ, बैठ, रेवापरसाद ! सुन तो।

क्रांतिचंद्र : **(खड़े-खड़े ही, क्रोध से)** मेरा नाम रेवाप्रसाद नहीं है, पिता जी, मैंने कई बार आपसे कह दिया, मै न किसी का प्रसाद हूँ न किसी का दास।

चूरामन : **(डरते-डरते)** भूल गया, भूल गया, पर तू बैठ तो किरांती चंदर।

क्रांतिचंद्र : **(कुछ शान्ति से)** पर बैठकर करूँ क्या ? यहाँ तो सभी ने मौन व्रत धारण कर रखा है।

चूरामन : मउन बिरत की बात नहीं है, बेटा, तूने पिरसन ही ऐसा रखा है कि जवाब सरल काम थोड़ई है।

क्रांतिचंद्र : **(बैठते हुए)** मैंने ऐसा प्रश्न रखा है ? पिता जी, पिंजरे में बंदी पक्षी के उड़ने के लिए यदि पिंजरे का द्वार खोल दिया जाए तो द्वार खोलनेवाला कोई समस्या खड़ी नहीं करता। अंधकार में रहने वाले व्यक्ति को यदि प्रकाश में ले आया जाय तो प्रकाश में लाने वाला कोई भूल नहीं करता।

(कोई कुछ नहीं बोलता। फिर निस्तब्धता)

क्रांतिचंद्र : **(फिर उठते हुए)** मैं देखता हूँ, यहाँ इस प्रश्न का निर्णय न हो सकेगा। (खड़ा होता है।)

एक किसान : तब कहाँ होगा, भैया ?

दूसरा किसान : हाँ, सब गाँवन के पंच तो हियाँ बइठे हैं। यहाँ निरनय न होई तो कहाँ होई ?

क्रांतिचंद्र : **(खड़े-खड़े ही)** दासता की शृंखलाओ में वर्षों नहीं, नहीं युगों, नहीं-नहीं पीढ़ियों तक बँधे रहने के कारण पंचों में इस प्रश्न के निर्णय की सामर्थ्य नहीं रह गई है।

तीसरा किसान : तब निरनय कौन करेगा ?

क्रांतिचंद्र : बाहर खड़ी हुई किसान जनता।

चूरामन : बैठ रेवा, बैठ तो ...

क्रांतिचंद्र : **(क्रोध से)** फिर ... फिर ... रेवा, पिता जी ...

चूरामन : अरे, भैया, बुढ़ा गया हूँ, भूल जाता हूँ रे।

क्रांतिचंद्र : **(कुछ शांत होते हुए)** पर भूल और उस पर भी भूल, भूलों की झाड़ियों ने ही तो हमारी यह दशा कर दी है। मूल की बातों में भूल होना सबसे बड़ी भूल है।

चूरामन : अच्छा, तू बैठ तो।

(क्रांतिचंद्र बैठ जाता है फिर कोई कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता।)

क्रांतिचंद्र : **(कुछ देर बाद)** फिर सन्नाटा ! आप लोगों को हो क्या गया है ? एक छोटी-सी बात के निर्णय में इस प्रकार का पशोपेश।

चूरामन : छोटी बात ! यह छोटी बात है ?

क्रांतिचंद्र : और क्या है ? जमींदार के निमंत्रण में जाकर गंदे घी की मिठाई, चोकर की पूड़ियाँ और सड़े साग खाना छोटी बात नहीं तो कोई बड़ी बात है ? फिर यह सब भी किस अपमान से किया जाता है। मुझे अपने छुटपन के एक ऐसे ही निमंत्रण का स्मरण है। महल के फाटक से ही हमारा अपमान आरंभ हुआ था। सदर फाटक में तो हम लोग घुसने ही न पाए। एक पुराना टूटा-फूटा फाटक हमारे लिए खोला गया था। हरेक को प्रवेश के पहले अपने निमंत्रण का टिकट दिखाना पड़ा। आपको निमंत्रण था, पिता जी, मुझे नहीं, इसलिए आपके कितने गिड़गिड़ाने और अनुनय-विनय करने पर मुझे घुसने दिया गया था। वह दृश्य आज

भी अनेक बार दृष्टि के सामने घूम जाता है। हम लोगों को घुड़साल में खिलाया गया था, घुड़साल में। घोड़ों की लीद और मूत की दुर्गंध से नाक सड़ी जाती थी। उस दुर्गंध को इतने वर्षों के पश्चात् भी मेरी नाक तो नहीं भूली है। फटी पत्तलों और फूटे सकोरों में हमें परसा गया था। परसगारी करने वाले हमें इस प्रकार परसते थे, मानो हम कंगार हों और वह भोजन करा हम पर महान् उपकार किया जा रहा है। भोजन की सामग्री का स्वाद अभी भी मेरी जीभ नहीं भूली है – कह नहीं सकता, घी में मिठाई बनी थी या किसी गंदे परनाले के पानी में, दही का रायता था या छुई मिट्टी का, साग था कदाचित् सप्ताहों का सड़ा हुआ और पूरियाँ आटे की तो नहीं थीं, लकड़ी के बुरादे की हो सकती है ऐसे भोजन के पश्चात् हमारे गरीब भाइयों को जो खनाखन व्यवहार का रुपया देना पड़ा था, उसका शब्द अभी भी मेरे कानों में गूँज उठता है। पिताजी आप कहते हैं ऐसे निमंत्रण में न जाने का निर्णय छोटी बात नहीं है, बड़ी, बहुत बड़ी बात है।

चूरामन : बेटा! पिरसन, मान-अपमान और भोजन का नहीं है।

क्रांतिचंद्र : तब ?

चूरामन : ज़मींदार का न्योता है, बेटा ज़मींदार का।

क्रांतिचंद्र : ऐसा ! तो जो आपको लूट रहा है, जो आपका खून पी रहा है, उस लुटेरे, उस डाकू के भय से आप निमंत्रण में जा रहे हैं।

चूरामन : **(भयभीत स्वर में)** बेटा ... बेटा ... कैसी ... कैसी बातें कर रहा है, क्या पागल हो गया है ? इसकूल और कालेज में जाकर क्या लड़के इस तरा से पगले हो जाते हैं ? भींतों के भी कान होते हैं, बेटा ... थोड़ा ...

क्रांतिचंद्र : **(आश्चर्य से)** सच्ची बात कहने में काहे का डर, पिता जी ? दूसरों के श्रम पर बिना कोई श्रम किए जो तरह-तरह के गुलछर्रे उड़ाते हैं वे लुटेरे नहीं तो क्या हैं ? श्रम करने वाले भूखे और नंगे रहते हैं और ये आरामतलब बिना कोई काम किए अलमस्त। ऐसे लोग खून चूसने वाले नहीं तो और क्या कहे जा सकते हैं। स्कूल और कॉलेज यदि सच्ची वस्तुस्थिति दिखा दें तो क्या वे कोई अपराध करते हैं ? दीवालों के कान होते हैं ! पिता जी, मैं डरता नहीं हूँ, भय से

अधिक बुरी वस्तु मैं संसार में और कोई नहीं मानता। ईंट-चूने, मिट्टी गारे की दीवालों के नहीं, मनुष्यों के समूहों के सामने मैं ये सब बातें कहने, ऊँचे से-ऊँचे स्वर में कहने के लिए तैयार हूँ, तैयार ही नहीं, पिता जी, मैंने कही है; स्वयं जमींदार के सम्मुख कहने, उसे लिखकर भेजने के लिए प्रस्तुत हूँ।

चूरामन : शिव, शिव ! शिव, शिव !

एक किसान : सब धान बाइस पसेरी नहीं होता। सब जमींदार एक से नहीं होते।

दूसरा किसान : फिर हमारे इन ज़मींदार ने तो काम हाथ में लेते ही हम पर न जाने कित्ते उपकार किए हैं।

तीसरा किसान: इस न्योते को ही देखो न ? पहले ब्याह-सादी में छाँट-छाँट कर, छटे घरों के एक-एक आदमी को न्योता जाता था, अब पूरे-के-पूरे गाँवों को न्योता, हर किसान को, किसान के पूरे कुनबे को न्योता।

क्रांतिचंद्र : ठीक, जान पड़ता है, जमींदार आप सबकी आँखों में धूल डालने में सफल हो गया। यद्यपि मैं कॉलेज से हाल ही में आया हूँ, पर विद्यार्थी की हैसियत से यहाँ आता-जाता तो रहता ही था। जमींदार के काम सँभालने के पश्चात् उसके द्वारा जो उपकार हुए हैं उन सबका वृत्त मैं भली-भाँति जानता हूँ और सिद्ध कर सकता हूँ कि उसकी जिन बातों को आप उपकार मानते हैं वे उपकार की न होकर यथार्थ में आपके अपकार की बातें हैं।

एक किसान : **(व्यंग्य से)** ऐसा !

क्रांतिचंद्र : जी हाँ। और जो कुछ मैं कहता हूँ उसकी सत्यता सिद्ध करने की सामर्थ्य भी रखता हूँ। उसकी पहली बात जिसे आप उपकार समझते हैं, यही है न कि उसने आप पर जो कर्ज था, उसे छोड़ दिया?

एक किसान : हाँ। (दूसरों की ओर देखकर) क्यों, भइया?

कुछ किसान : **(एक साथ)** हाँ .... हाँ।

क्रांतिचंद्र : आप बता सकते हैं, इसमें से कितना कर्ज ऐसा था, जो वसूल हो सकता?

(कोई कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता)

क्रांतिचंद्र : जिस वर्ष कर्ज की यह छूट की गई उस वर्ष गर्मियों की छुट्टी में मैंने अनेक गाँवों में जा-जाकर उन किसानों की स्थिति की जाँच की थी,

जिन पर कर्ज छोड़ा गया था। आप सच मानिए, इन किसानों में से सौ में से निन्यानवे ऐसे थे, जिनके पास जमींदार के कर्ज का ब्याज चुकाते-चुकाते भोजन बनाने के टूटे-फूटे बर्तन तक न बचे थे। खेती का जो इक्का-दुक्का सामान था, कंकाल हुए बैल थे, सड़ा या कानून के अनुसार कर्ज में पतला-सा बीज था, वह नीलाम कराया नहीं जा सकता था। फिर ज़मीदार कर्ज वसूल कहाँ से करता ?

एक किसान : पर सौ में एक से तो वसूल कर लेता।

क्रांतिचंद्र : यही तो आप समझते नहीं। सौ में से एक से पुराना कर्ज़ वसूल करने की अपेक्षा, पुराना कर्ज छोड़, उन्हें नया कर्ज देकर उनसे ब्याज वसूल करना जमींदार के लिए कहीं अधिक लाभप्रद था।

(सब किसान एक-दूसरे का मुख देखते हैं। फिर सब चूरामन की ओर देखते है। वह कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता।)

क्रांतिचंद्र : **(कुछ देर बाद)** दूसरा उपकार, जो इस जमींदार का आप मानते होंगे, वह कदाचित् उसका कुछ जमींनों का लगान कम करना है ?

एक किसान : हाँ, हाँ, यह तो उनका बड़ा भारी काम है।

कुछ किसान : **(एक साथ)** हाँ ... हाँ ... हाँ ...

क्रांतिचंद्र : यहाँ भी आप लोग भूल में हैं।

कुछ किसान : **(एक साथ)** कैसे ... कैसे ?

क्रांतिचंद्र : इस संबंध में भी मैंने जाँच कर ली है। जिनकी ज़मीनों पर लगान कम किया गया, उनमें से सौ में से निन्यानबे किसानों पर बकाया लगान की नालिशें की गयी थीं। ज़मीनों के अतिरिक्त उनके पास कुछ भी नहीं था। बेदखलियाँ हो सकती थीं, परंतु वे जमीनें इतनी बुरी दशा में थीं कि बेदखली के पश्चात् कोई उन्हें लेता ही नहीं। जमींदार घर में कितनी जमीन जोतता, अतः लगान कम करके उन्हीं किसानों के पास जमीन रहने देना जमींदार के लिए ज्यादा फायदेमंद था।

(फिर सब किसान एक-दूसरे का मुख देखने लगते हैं और फिर सब चूरामन की ओर देखते हैं। कोई कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता)

क्रांतिचंद्र : आप थोड़ा-सा ध्यान देकर जमीदार की कार्रवाइयों को देखें तो उनका सच्चा रहस्य आपकी समझ में आ जाय।

(फिर कुछ देर निस्तब्धता)

क्रांतिचंद्र : तीसरा काम जो इस जमींदार ने किया, वह है कुछ किसानों को बिना नजराने के मुफ्त में जमीनें देना। (कुछ रुककर) क्यों ?

कुछ किसान : **(एक साथ)** हाँ ... हाँ ... हाँ ... हाँ ...

क्रांतिचंद्र : मैं आपसे पूछता हूँ यदि जमींदार यह न करता तो करता क्या ? आप नहीं जानते कि उसकी हजारों एकड़ ज़मीन पड़ती पड़ी है। बिना नजराने की जमीनें उठा देने से भी उसकी आमदनी बढ़ी है या घटी ? मैंने इस संबंध में भी सारी बातों का पता लगाया है और इस काम में जमींदार की वार्षिक आय में कोई पच्चीस हजार रुपये की वृद्धि हुई है।

(सब लोग फिर एक-दूसरे की ओर देखकर चूरामन की तरफ देखने लगते हैं। वह फिर कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता।)

क्रांतिचंद्र : अब विवाह के इस निमंत्रण को ले लीजिए। आप समझते हैं कि छँटे हुए किसानों को ही निमंत्रण न देकर, हर गाँव के हर किसान को निमंत्रण दे, जमींदार ने आप सब पर बड़ा प्रेम दर्शाया है। मैं कहता हूँ कि इस दुर्भिक्ष के समय आप पर और विशेषकर गरीब किसानों पर, इससे बड़ा जुल्म संभव नहीं था। इसके पिता केवल संपन्न किसानों को बुलाते थे। उनसे व्यवहार वसूल होता था। अब सभी बुलाए गए हैं कुटुंब सहित। सबसे व्यवहार की वसूली होगी, एक-एक घर से नहीं, घर के प्रत्येक व्यक्ति से। चार आना खिलाकर चार रुपया वसूल किए जाएंगे।

एक किसान : भाई, यह तो सच है।

कुछ किसान : **(एक साथ)** हाँ ... हाँ ... हाँ ... हाँ ...

(कुछ देर निस्तब्धता)

क्रांतिचंद्र : जमींदार और किसान के हित एक-दूसरे के ठीक विरुद्ध है। दोनों एक-दूसरे का हित-साधन कर ही नहीं सकते। जो जमींदार डींग मारता है वह लुटेरा और डाकू ही नहीं, धोखेबाज भी है तथा धोखा देकर अधिक लूटते और खून चूसने का इच्छुक। हम किसान अधिक संख्या में हैं। जिधर अधिक संख्या होती है वहीं बल। हमने न सच्ची वस्तुस्थिति समझी है और न अपना बल पहचाना है। शत्रु को मित्र मान, उससे

मित्र का-सा व्यवहार, सच्ची वस्तुस्थिति को न पहचानना, भूल नहीं तो और क्या है ? बल रहते हुए भी अपने को निर्बल समझने से अधिक कौन-सी भूल हो सकती है ? जमींदार हमारा शत्रु है, सबसे बड़ा शत्रु। भक्षक और भक्ष का कैसा व्यवहार ? उनके आपस में कैसा प्रेम ? और अपना सच्चा स्वरूप पहचानकर, अपना बल जानकर, यदि हमसब एक हो इस भोज में सम्मिलित न हों तो जमींदार हमारा क्या कर सकता है ? **(कुछ रुककर सबकी ओर एक बार दृष्टि घुमा)** मैं कहता हूँ इससे अच्छा अवसर मिल नहीं सकता, जब हम जमींदार को बता दे कि तुम और हम यथार्थ में मित्र नहीं, शत्रु हैं। तुम्हारा हमारा कोई व्यवहार नहीं, तुम्हारे हित और हमारे हित एक-दूसरे के ठीक विपरीत हैं। अब हमने उन्हें पहचान लिया है। अपने-आपको भी हमने जान लिया है। हम अपने रास्ते चलेंगे, तुम अपने रास्ते चलो। तुम एक हो, हम करोड़ों। एक का सातों सुख भोगना और करोड़ों को अन्न के लिए 'त्राहि-त्राहि' और 'पाहि-पाहि' करना, वस्त्रों के बिना नंगे घूमना, घरों के बिना वृक्षों के नीचे पड़े रहना, यह सदा संभव नहीं। तुमने वर्षों नहीं, युगों से हमें लूटा है, हमारा खून पीकर स्वयं लाल हुए हो, हम अब धोखा नहीं खा सकते। तुम्हारा नाश करके ही हम सुखी हो सकते हैं। यह सब स्वयं समझ लेने ही नहीं, पर उसे बता देने के पश्चात् ही हमारा कार्य ठीक दिशा में हो सकेगा, क्योंकि उस कार्य के मार्ग का प्रधान रोड़ा भय फिर हमारे सामने न रह जाएगा।

(क्रांतिचंद्र चुप होकर सब की तरफ देखता है। कोई कुछ नहीं बोलता। सब लोग चूरामन की ओर देखते हैं। चूरामन जमीन की तरफ। कुछ देर निस्तब्धता)

क्रांतिचंद्र : **(फिर क्रोध से खड़े होकर)** जान पड़ता है आप पंचों के लिए सच्ची वस्तुस्थिति समझ सकना, अपने बल को पहचान कर ठीक दिशा में चलना संभव नहीं रह गया है, परंतु मैं जानता हूँ कि किसान जनता की यह दशा नहीं है। आप थोड़े बहुत संपन्न हैं न, इस नाममात्र की संपन्नता के कारण जीवन में पड़े हुए सुख के छाटे-छोटे छींटे भी नहीं छोड़ पाते। इन सुखों के छींटों के सूख जाने का भय आपसे अपने भाइयों के गले पर भी छुरी चलवा रहा है। अपने भाइयों के खून से

तर खाने की सामग्री भी आप पंच खाने को तैयार हैं, परंतु याद रखिए, इस खाने में अब आपके गरीब किसान भाई आपका साथ देने वाले नहीं हैं। किसानों का नब्ज, जितनी दूर तक में देख सकता हूँ, आप पंच कहे जाने पर भी नहीं। आपकी ज्ञान-शक्ति स्वार्थ के कारण कुंठित जो हो गई है। आप सच्चे पंच रहे ही कहाँ हैं ? **(पीछे की दीवाल की दोनों खिड़कियों के निकट जा उनमें से बाहर की ओर देखते हुए)** बाहर की इस अपार किसान जनता के, पिता जी, आप सच्चे चूड़ामणि हो सकते थे, **(लौटकर)** पर इतना प्रयत्न करने के पश्चात् मुझे आज मालूम हो गया है कि यह आपके लिए संभव नहीं, जाने दीजिए, आपके पाप का प्रायश्चित आपका पुत्र करेगा। पंच कहे जाने वाले, इक्के-दुक्के कुल्हाड़ी के बेंट, चाहे जमींदार के भोज में सम्मिलित हो जाएँ, पर सच्चे किसान कभी भी उस भोज में न जाएंगे। वे उन मिठाइयों, उन पूरी-कचौड़ियों, उन साग-रायतों को हाथ भी न लगाएंगे, जो उनके खून को चूसकर बनाए गए हैं। वह सामग्री चाहे आप पंचों के गले उतर जाय, पर सच्चे किसानों के ओंठों का स्पर्श भी न कर सकेगी **(दाहिनी ओर की दीवाल के दरवाजे के निकट जाते हुए)** और ..... और ..... स्मरण रखिएगा कि चाहे आप अपने भाइयों की इच्छा के विरुद्ध उसे खा आवें **(रुककर, बड़े ही क्रूर स्वर में आँखों से आग-सी बरसाते हुए)** पर वह अब आपको हजम न हो सकेगी। उसका एक-एक कण आपके उदरों को चीर-चीरकर निकलेगा और ...... और ..... **(शीघ्रता से बाहर जाता है।)**

चूरामन : **(मानो किसी नींद से जगा हो)** बेटा ! ... बेटा ! ...ठैर ... ठैर ... सुन ... सुन ... तो

(क्रांतिचंद्र को न लौटते देख जल्दी से बाहर जाता है।)

(भीतर बैठे हुए किसानों में खलबली-सी मच जाती है। सभी उठकर दरवाजे की ओर बढ़ते हैं। नेपथ्य में 'क्रांतिचंद्र की जय', 'क्रांति अमर हो', 'किसानों की जय', 'जमींदार-प्रथा का नाश हो' इत्यादि के बुलंद नारे सुनाई देते हैं।)

लघु-यवनिका

तीसरा दृश्य

स्थान : रघुराजसिंह के महल की बालकनी

समय : मध्याह्न

वही बालकनी है जो पहले दृश्य में थी। सूर्य तो नहीं दिखता, पर यत्र-तत्र उसमें धूप पड़ती हुई दिखाई देती है, जिससे जान पड़ता है कि दिन चढ़ गया है। रघुराजसिंह अकेला बेचैनी से इधर-उधर टहल रहा है। उसके मुख पर उद्विग्नता के भाव झलक रहे हैं। हाथ में उसके वही दूरबीन है, जो पहले दृश्य में थी। अनेक बार ठहरकर दूरबीन से वह पीछे की दरख्तों के परे कुछ देख लेता है। बदहवास-सी अवस्था में नर्मदाशंकर का हाथ में एक खुली चिट्ठी लिए हुए जल्दी से प्रवेश।

नर्मदाशंकर : राजा साहब ! राजा साहब !

रघुराजसिंह : **(टहलना बंद कर, नर्मदाशंकर की ओर बढ़कर) कहिए** ... कहिए, मैनेजर साहेब, किसानों का कोई पता ...

नर्मदाशंकर : जी हाँ। (चिट्ठी रघुराजसिंह को देकर) यह पता है।

(रघुराजसिंह चिट्ठी लेकर उसे पढ़ने क्या, आँखों पीने–सा से लगता है। एक पंक्ति के एक सिरे से दूसरे सिरे तक और एक पंक्ति के बाद दूसरी पंक्ति पर नाचती हुई उसकी आँखों की पुतलियों से उसके हृदय के उद्वेग का पता चलता है। बड़ी-सी चिट्ठी को वह सेकंडों में पढ़ डालता है। उसे पूरा करते-करते उससे खड़ा नहीं रहा जाता, वह पहले कुर्सी पकड़ता है और फिर एकाएक कुर्सी पर बैठ जाता है। कुरसी पर बैठकर वह फिर से चिट्ठी पढ़ता है। अब उसका सिर झुक जाता है। नर्मदाशंकर एकटक रघुराजसिंह की सारी मुद्रा को देखता रहता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।)

नर्मदाशंकर : देखा, राजा साहब, देखा, आपने इन किसानों की बदमाशी को देखा ? आप इन पर प्राण देते हैं। इनके थोड़े से लाभ के लिए अपनी ज्यादा-से-ज्यादा हानि करने के लिए तैयार रहते हैं। काम सँभालने के बाद आपने इन बदजातों के लिए क्या नहीं किया ? पर ... पर, राजा साहब, लातों के देव बातों से थोड़े ही सीधे रहते हैं। जमींदार की बहन के विवाह-भोज का किसानों द्वारा बहिष्कार ! एक भी किसान का न आना ! और ऐसी ... आह !

ऐसी चिट्ठी, बेहूदगी ज्यादा-से-ज्यादा बेहूदगी भरी हुई चिट्ठी भेजना ! इन दो कौड़ी के किसानों की यह मजाल ! इनकी यह हिम्मत। इनका यह साहस ! इनकी यह हिमाकत ! ओह ! जमींदारों के सिरमौर इस घराने की आज क्या इज्जत रह गई ? दूसरे जमींदार हम पर किस प्रकार हँसेगे ? हमारी कैसी खिल्ली उड़ेगी ? हमारा कैसा मजाक उड़ाया जाएगा? ओह ! ओ ...

रघुराजसिंह : **(एकाएक खड़े होकर, पत्र को देखते हुए)** पर......पर.....मैनेजर साहब, 'किसानों के प्रतिनिधि क्रांतिचंद्र' ने ठीक तो लिखा है – 'भक्षक और भक्ष्य का कैसा व्यवहार ?' मेरी गलती थी जो मैं यह समझता था कि किसानों का मैं हित कर सकता हूँ। जमींदार रहते हुए कोई जमींदार किसानों का हित नहीं कर सकता। मुझे तो अब दूसरी ही बात सोचनी है।

नर्मदाशंकर : **(आश्चर्य से)** कैसी ?

रघुराजसिंह : **(टहलते हुए)** मैं जमींदार रहना चाहता हूँ तो सच्चा जमींदार रहकर अपना, अपने साढ़े तीन हाथ के शरीर का, अपने छोटे कुटुंब का हित करूँ या...या...(चुप हो जाता है।)

नर्मदाशंकर : या?

रघुराजसिंह : या....या...इस जमींदारी के तौक को गले से निकाल, जिनके हित की मैं डींग मारता हूँ, उन्हीं का–सा हो, उन्हीं के सच्चे हित में अपना जीवन....अपना जीवन व्यतीत कर दूँ।

नर्मदाशंकर : **(अत्यधिक आश्चर्य से चिल्लाकर)** राजा साहब! राजा साहब.......

(रघुराजसिंह गंभीर मुद्रा से सिर नीचा कर इधर-उधर टहलने लगता है। नर्मदाशंकर आश्चर्य से स्तंभित-सा रघुराजसिंह की ओर देखता रहता है।)

यवनिका

समाप्त

सारांश

सेठ गोविंददास द्वारा रचित एकांकी 'व्यवहार' ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित है। इस एकांकी में सेठ गोविंददास ने जमींदार व किसानों के संघर्ष और द्वंद्व का चित्रण किया है। इसमें जमींदार वर्ग के युवा पीढ़ी को गरीब किसान मजदूरों के प्रति हित का चिंतन करते हुए चित्रण किया गया है। एकांकी तीन दृश्यों में विभाजित है। जिसका सारांश निम्नवत् है –

प्रथम दृश्य – यह दृश्य रघुराजसिंह के महल की बालकनी का है। रघुराजसिंह गाँव का जमींदार है तथा नर्मदाशंकर उसका मैनेजर है। रघुराजसिंह अपनी बहन के वैवाहिक भोज में सभी ग्रामीण किसानों को सपरिवार आमंत्रित करता है। नर्मदाशंकर रघुराजसिंह के इस निर्णय को गलत बताता है, क्योंकि ऐसा करने से उसे आर्थिक हानि होगी। रघुराजसिंह के पूर्वज ऐसे समारोहो में चुने हुए ग्रामीणों के यहाँ से केवल पुरूषों को आमंत्रित करते थे। जिससे आर्थिक नुकसान कम व व्यवहार स्वरूप मिले उपहारों से लाभ होता था। नर्मदाशंकर रघुराजसिंह के लिए हुए कुछ अन्य निर्णयों जो कि किसानों के हित में थे, जैसे– लगान कम करना, कर्ज माफ करना, बिना नजराना लिए जमीन देने को भी गलत बताता है। जबकि रघुराजसिंह किसानों के शोषण का समर्थन नहीं करते हैं।

दूसरा दृश्य – यह दृश्य गाँव के एक मकान के छत से प्रारम्भ होता है जहाँ बहुत से किसान बैठे हैं जो भिन्न-भिन्न अवस्थाओं के हैं, इन्हीं में 22-23 वर्ष का शिक्षित नवयुवक है जो वेषभूषा से किसान नहीं प्रतीत होता। वह चूरामन नामक किसान का पुत्र क्रांतिचंद्र है। उसने गाँव के एक घर में सभी किसानों, गाँव के पंचो तथा अन्य ग्रामीणों की एक सभा का आयोजन किया है। जिसका उद्देश्य जमींदार के दिए गए भोज पर निर्णय लेना है कि किसान वहाँ जाए या नहीं। क्रांतिचंद्र इस बात से विकल है कि निर्णय लेने में देरी क्यूँ की जा रही है। जबकि भोज का समय निकट आता जा रहा है। क्रांतिचंद्र निमंत्रण को अस्वीकार करना चाहता है, क्योंकि उसे स्वीकार करना किसान-मजदूरों का अपमान है। बचपन में वह एक बार जाकर उस अपमान का अनुभव कर चुका है। पर कुछ किसान इससे असहमत है उनका मानना है कि ऐसा नहीं करना चाहिए। क्रांतिचंद्र बताता है कि जमींदार किस प्रकार उन्हे धोखा दे रहा है, जब किसान जमींदार द्वारा किए गए उपकारों की बात करते हैं तो क्रांतिचंद्र अपने विचारो से उन्हें अवगत कराता है कि ये सब कार्य भी जमींदार ने अपने लाभ के लिए किए हैं। इस प्रकार क्रांतिचंद्र भोज के निमंत्रण को स्वीकार करने को किसानों का अपमान बताते हुए उसे अस्वीकृत करने के लिए कह वहाँ से चला जाता है। सभी किसान अचंभित रह जाते है।

तृतीय दृश्य – तीसरा दृश्य फिर जमींदार रघुराजसिंह की बालकनी से प्रारंभ होता है। जहाँ वह बेचैनी से चहलकदमी कर रहें हैं। तभी उनका मैनेजर बदहवास स्थिति में क्रांतिचंद्र का संदेश लेकर आता है। संदेश पढ़कर रघुराजसिंह शर्मिंदा हो जाता है क्योंकि वह पत्र किसानों का भोज के अस्वीकृत करने से संबंधित है। नर्मदाशंकर इसे किसानों की बदमिजाजी और बदमाशी बताता है। रघुराजसिंह निश्चय करते हैं कि उन्हें अभी और परिवर्तन करने होंगे, जिससे किसानों की आत्मीयता प्राप्त की जा सके। नर्मदाशंकर के समझाने पर भी वह जमींदारी की तौक (हँसुली या घेरा) गले से निकालकर, किसानों के सच्चे हितैषी बन जीवन सार्थक करने को संकल्पित होते है। यहीं पर एकांकी समाप्त हो जाता है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. 'व्यवहार' एकांकी के एकांकीकार कौन हैं ?
   (क) सेठ गोविंददास (ख) डा0 रामकुमार वर्मा
   (ग) उपेन्द्रनाथ 'अश्क' (घ) विष्णु प्रभाकर।
2. जमींदार रघुराजसिंह को किसानों के विरुद्ध भड़काने में किसका हाथ हैं ?
   (क) चूरामन (ख) क्रांतिचंद्र
   (ग) नर्मदाशंकर (घ) इनमें से कोई नहीं
3. जमींदार ने किसानों के हित में कार्य किए :
   (क) लगान माफ किया था। (ख) सड़क बनवाई थी।
   (ग) उनके मकान पक्के कराए थे।(घ) उपर्युक्त सभी सत्य
4. 'व्यवहार' एकांकी का तीसरा दृश्य :
   (क) रघुराजसिंह के कोठी का दृश्य। (ख) कोठी के बालकनी का दृश्य
   (ग) खेत–खलिहान का दृश्य (घ) गाँव के मकान की छत का दृश्य
5. 'व्यवहार' एकांकी में रघुराजसिंह किस उपलक्ष्य में भोज देता है ?
   (क) बेटे के विवाह की। (ख) बहन के विवाह की।
   (ग) क्रांतिचंद्र के जन्मदिन (घ) इनमें से कोई नहीं।
6. रघुराजसिंह का मैनेजर है :
   (क) क्रांतिचंद्र (ख) चूरामन (ग) नर्मदाशंकर (घ) कोई नहीं
7. चूरामन के पुत्र का नाम है :
   (अ) रघुराजसिंह (ब) क्रांतिचंद्र (स) नर्मदाशंकर (द) इनमें से कोई नहीं

8. गाँव के प्रत्येक परिवार से एक व्यक्ति को भोज में बुलाने का क्या अभिप्राय था ?
(क) कम खर्च में अधिक व्यवहार की वसूली करना।
(ख) किसानों को अपमानित करना
(ग) किसानों को तंग करना।
(घ) भीड़ को नियंत्रित करना।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. एकांकीकार के कथनानुसार व्यवहार क्या है ?
2. 'व्यवहार' एकांकी का सर्वश्रेष्ठ पात्र कौन है और क्यों ?
3. नर्मदाशंकर की दृष्टि में सभी किसान परिवार के साथ भोजन में नहीं आने चाहिए, क्यों? स्पष्ट कीजिए।
4. 'व्यवहार' एकांकी को कितने भागों में वर्गीकृत किया गया है और उनके स्थान कौन–कौन से हैं?
5. क्रांतिचंद्र का कहा मानकर किसानों का भोज बहिष्कार का निर्णय कहाँ तक सही है? स्पष्ट कीजिए।
6. 'व्यवहार' एकांकी की मुख्य विशेषताओं को उजागर कीजिए।
7. 'व्यवहार' एकांकी के द्वारा दिए गए संदेश को स्पष्ट कीजिए।
8. 'व्यवहार' एकांकी का कथानक संक्षेप में लिखिए।
9. एकांकी का शीर्षक 'व्यवहार' कितना उपयुक्त है ? विचार कीजिए।
10. सेठ गोविंददास के जीवन का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनके साहित्यिक अवदानों को स्पष्ट कीजिए।
11. 'व्यवहार' एकांकी के आधार पर किसान और जमींदार के संबंध को अपने शब्दों में लिखिए।
12. 'व्यवहार' एकांकी के आधार पर उसके प्रमुख पात्र का चरित्रांकन कीजिए।
13. जमींदारी प्रथा से उन्मूलन के लिए क्रांतिचंद्र क्या करता है, उसके औचित्य पर प्रकाश डालिए।

■

उदयशंकर भट्ट

(सन् 1898–1966 ई.)

उदयशंकर भट्ट का जन्म उत्तर प्रदेश के **इटावा** जिले में सन् **1898** ई. में हुआ था। उनके पूर्वज गुजरात से आकर उत्तर प्रदेश के बुलंद शहर के कर्णवास ग्राम में बस गए थे। उनके पिता पं0 फतेहशंकर भट्ट अंग्रेजी पढ़े-लिखे थे, फिर भी वे संस्कृतनिष्ठ थे और अपने कवित्त, सवैयों आदि रचनाओं का पाठ काव्यगोष्ठियों आदि मे किया करते थे। उदयशंकर भट्ट को भी इन्हीं गोष्ठियों से साहित्य-लेखन में रुचि हुई। उन्होंने संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी की शिक्षा पितामह दुर्गाशंकर के संरक्षण में इटावा से प्राप्त की। सन् 1923 ई. में जीविका की खोज में लाहौर गए।

उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से 'बी0 ए0' की पंजाब से 'शास्त्री' और कलकत्ता से ''काव्यतीर्थ'' की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। वे लाहौर में सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी लाला लाजपत राय के नेशनल कालेज में प्राध्यापक बने तथा यहाँ पर भगतसिंह, सुखदेव, भगवतीचरण वर्मा आदि के अतिरिक्त सुप्रसिद्ध हिंदी उपन्यासकार यशपाल को भी पढ़ाया। इसके बाद आप लाहौर के खालसा कालेज और सनातन धर्म कालेज में अध्यापन करते रहे। भट्ट जी का संबंध एक ओर कांग्रेस के स्वाधीनता–आंदोलन के सेनानियों के साथ था, तो दूसरी ओर सशस्त्र क्रांतिकारी संगठन के साथ भी था। स्वाधीनता–प्राप्ति के बाद उन्होंने 'आकाशवाणी' के परामर्शदाता और निदेशक जैसे महत्त्वपूर्ण पदों पर काम किया। उनका निधन **सन् 1966 ई.** में हुआ।

कृतियाँ

एकांकी : समस्या का अंत, धूमशिखा, वापसी, परदे के पीछे, आज का आदमी, आदिम–युग, विश्वामित्र, जवानी, अभिनव एकांकी, स्त्री का हृदय, अंधकार और प्रकाश आदि।

नाटक : विक्रमादित्य, दाहर अथवा सिंहपतन, मुक्तिदूत, शकविजय, अंबा, सागर विजय, कमला, अंतहीन अंत, क्रान्तिकारी, नया समाज आदि।

काव्य : तक्षशिला, राका, मानसी, युगदीप, अमृत और विष आदि।

उपन्यास : 'सागर, लहरें और मनुष्य', 'लोक परलोक', 'शेष अशेष' आदि।

उदयशंकर भट्ट ने मानव जीवन का सूक्ष्म अध्ययन किया था। इस कारण से उनकी रचनाओं में जीवन–व्यापी समस्याओं को सुलझाने की भरसक चेष्टा की गई है। उन्होंने पौराणिक कथाओं को लेकर अनेक उत्कृष्ट एकांकियों की रचना की है। सामाजिक एकांकियों में उनका लक्ष्य प्रायः किसी न किसी समस्या का निरूपण करते हुए उसका समाधान प्रस्तुत करना रहा है। आरंभ के उनके एकांकी गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित दिखते हैं, परंतु परवर्ती एकांकियों में यथार्थवादी दृष्टि प्राप्त होती है। बौद्धिक विवेचना–क्षमता और तीव्र आलोचनात्मक दृष्टि दोनों ही उनकी शक्तियाँ हैं। उनके एकांकी जहाँ प्रतीकात्मक होते हैं, वहीं हास्यपूर्ण भी।

■

नए मेहमान

पात्र–परिचय

विश्वनाथ	: गृहपति
रेवती	: विश्वनाथ की पत्नी
प्रमोद	: विश्वनाथ का बेटा
किरण	: विश्वनाथ की बेटी
बाबूलाल	: अतिथि
नन्हेमल	: अतिथि
आगंतुक	: रेवती का भाई
संतोष	: विश्वनाथ का बेटा
पड़ोसी	

(गर्मी की ऋतु, रात के आठ बजे का समय । कमरे के पूर्व की ओर दो दरवाजे। दक्षिण का द्वार बाहर आने-जाने के लिए। पश्चिम का द्वार भीतर खुलता है। उत्तर की ओर एक मेज है जिस पर कुछ किताबें और अखबार रखे हैं। पास में ही दो कुर्सियाँ रखी हैं। पश्चिम द्वार के पास एक पलंग बिछा है। मेज पर रखा हुआ पुराना पंखा चल रहा है, जिससे बहुत कम हवा आ रही है। कमरा बेहद गरम है। मकान एक साधारण गृहस्थ का है। पलंग के पास चार-पाँच साल का एक बच्चा सो रहा है। पंखे की हवा केवल उस बच्चे को लग रही है। फिर भी वह पसीने से तर है। इसलिए वह कभी-कभी बेचैन हो उठता है, फिर सो जाता है।

कुरता-धोती पहने एक व्यक्ति प्रवेश करता है। पसीने से उसके कपड़े तर हैं। कुरता उतारकर वह खूँटी पर टाँग देता है और हाथ के पंखे से बच्चे को हवा करता है। उसका नाम विश्वनाथ है। उम्र 45 वर्ष, गठा हुआ शरीर, गेहुँआ रंग, मुख पर गम्भीरता तथा सुसंस्कृति के चिह्न।)

विश्वनाथ : ओफ, बड़ी गर्मी है। (पंखा जोर-जोर से करने लगता है) इन बंद मकानों में रहना कितना भयंकर है! मकान है कि भट्ठी!

(पश्चिम की ओर से एक स्त्री प्रवेश करती है।)

रेवती : (आँचल से मुँह का पसीना पोंछती हुई) पत्ता तक नहीं हिल रहा है। जैसे साँस बंद हो जायगी। सिर फटा जा रहा है। (सिर दबाती है)

विश्वनाथ : पानी पीते-पीते पेट फूला जा रहा है, और प्यास है जो कि बुझने का नाम नहीं लेती। अभी चार गिलास पानी पीकर आया हूँ, फिर भी होंठ सूख रहे हैं। एक गिलास पानी और पिला दो। ठंडा तो क्या होगा!

रेवती : गरम है। आँगन में घड़े में भी तो पानी ठंडा नहीं होता, हवा लगे, तब तो ठंडा हो। जाने कब तक इस जेलखाने में सड़ना होगा।

विश्वनाथ : मकान मिलता ही नहीं। आज दो साल से दिन-रात एक करके ढूँढ़ रहा हूँ। हाँ, पानी तो ले आओ, जरा गला ही तर कर लूँ।

रेवती : बरफ ले आते। पर मरी बरफ भी कोई कहाँ तक पिये।

विश्वनाथ : बरफ! बरफ का पानी पीने से क्या फायदा? प्यास जैसी-की-तैसी, बल्कि दुगुनी लगती है। ओफ! लो, पंखा कर लो। बच्चे क्या ऊपर हैं ?

रेवती : रहने दो, तुम्हीं करो। छत इतनी छोटी है कि पूरी खाटें भी तो नहीं आतीं। एक खाट पर दो-दो, तीन-तीन बच्चे सोते हैं, तब भी पूरा नहीं पड़ता।

विश्वनाथ : एक ये पड़ोसी हैं, निर्दय, जो खाली छत पड़ी रहने पर भी, बच्चों के लिए एक खाट नहीं बिछाने देंगे।

रेवती : वे तो हमें मुसीबत में देखकर प्रसन्न होते हैं। उस दिन मैंने कहा तो लाला की औरत बोली—'क्या छत तुम्हारे लिये है ? नकद पचास देते हैं, तब चार खाटों की जगह मिली है। न बाबा, यह नहीं हो सकेगा। मैं खाट नहीं बिछाने दूँगी। सब हवा रुक जायगी उन्हें और किसी को सोता देखकर नींद नहीं आती।'

विश्वनाथ : पर बच्चों के सोने में क्या हर्ज है ? जरा आराम से सो सकेंगे। कहो तो मैं कहूँ ?

रेवती : क्या फायदा ? अगर लाला मान भी लेगा तो वह दुष्टा नहीं मानेगी। वैसे भी मैं उसकी छत पर बच्चों को अकेला सोना पसंद नहीं करूँगी बड़ी डायन औरत है। उसके तो बाल-बच्चे हैं नहीं, कहीं कुछ कर दे, तब ?

विश्वनाथ : फिर जाने दो। मैं नीचे आँगन में सो जाया करूँगा। कमरे में भला क्या सोया जाएगा ? मैं कभी-कभी सोचता हूँ, यदि कोई अतिथि आ जाये तो क्या होगा ?

रेवती : ईश्वर करे इन दिनों कोई मेहमान न आये। मैं तो वैसे ही गर्मी के मारे

मर रही हूँ। पिछले पंद्रह दिन से दर्द के मारे सिर फट रहा है। मैं ही जानती हूँ कैसे रोटी बनाती हूँ।

विश्वनाथ : सारे शहर में जैसे आग बरस रही हो। यहाँ की गर्मी से ईश्वर बचाए। इसीलिए गर्मियों में सभी संपन्न लोग पहाड़ों पर चले जाते हैं।

रेवती : चले जाते होंगे। गरीबों की तो मौत है।

(रेवती जाती है। बच्चा गर्मी से घबरा उठता है। विश्वनाथ जोर-जोर से पंखा करता है।)

विश्वनाथ : इन सुकुमार बालकों का क्या अपराध है ? इन्होंने क्या बिगाड़ा है ? तमाम शरीर मारे गर्मी के उबल रहा है।

(रेवती पानी का गिलास लेकर आती है।)

रेवती : बड़े का तो अभी बुरा हाल है। अब भी कभी-कभी देह गरम हो जाती है।

विश्वनाथ : (पानी पीकर) उसने क्या कम बीमारी भोगी है – पूरे तीन महीने तो पड़ा रहा है। वह तो कहो मैंने उसे शिमला भेज दिया, नहीं तो न जाने ...

रेवती : भगवान् ने रक्षा की। देखा नहीं, सामने वाली की लड़की को फिर से टाइफाइड हो गया और वह चल बसी। तुम कुछ दिनों की छुट्टी क्यों नही ले लेते? मुझे डर है, कही कोई बीमार न पड़ जाए।

विश्वनाथ : छुट्टी कोई दे तब न! छुट्टी ले भी लूँ तो खर्च चाहिए। खैर, तुम आज जाकर ऊपर सो जाओ। मैं आँगन में खाट डालकर पड़ा रहूँगा। बच्चे को ले जाओ। यह गर्मी में भुन रहा है।

रेवती : यह नहीं हो सकता। मैं नीचे सो जाऊँगी। तुम ऊपर छत पर जाकर सो जाओं और ऊपर भी क्या हवा है! चारों तरफ दीवारें तप रही हैं। तुम्हीं जाओ ऊपर।

विश्वनाथ : यही तो तुम्हारी बुरी आदत है। किसी का कहना न मानोगी, बस अपनी ही हाँके जाओगी। पंद्रह दिन से सिर में दर्द हो रहा है। मैं कहता हूँ, खुली हवा में सो जाओगी तो तबीयत ठीक हो जाएगी।

रेवती : तुम तो व्यर्थ की जिद करते हो। भला यहाँ आँगन में तुम्हें नींद आएगी ? बंद मकान, हवा का नाम नहीं। रात भर नींद न आएगी। सवेरे काम पर जाना है। जाओ, मेरा क्या है, पड़ी रहूँगी।

विश्वनाथ : नहीं, यह नहीं हो सकता । आज तो तुम्हें ऊपर सोना पड़ेगा। वैसे भी मुझे कुछ काम करना है।

रेवती : ऐसी गर्मी में क्या काम करोगे ? तुम्हें भी न जाने क्या धुन सवार हो जाती

है। जाओ, सो जाओ। मैं आँगन में खाट पर इसे लेकर जैसे-तैसे रात काट लूँगी, जाओ।

विश्वनाथ : अच्छा, तुम जानो। मैं तो तुम्हारी भलाई के लिए कह रहा था। मैं ही ऊपर जाता हूँ।

(बाहर से कोई दरवाजा खटखटाता है।)

रेवती : कौन होगा ?

विश्वनाथ : न जाने! देखता हूँ।

रेवती : हे भगवान्! कोई मुसीबत न आ जाए।

(बच्चे को पंखा करती है। बच्चा गर्मी के मारे घबराकर उठ बैठता है और पानी माँगता है। वह बच्चे को पानी पिलाती है, पंखा करती है। इसी समय दो व्यक्तियों के साथ विश्वनाथ प्रवेश करता है। रेवती बच्चे को लेकर आँगन में चली जाती है। आगंतुक एक साधारण बिस्तर तथा एक संदूक लेकर कमरे में प्रवेश करते हैं। विश्वनाथ भी पीछे-पीछे आता है। कमीजों के ऊपर काली बंडी, सिर पर सफेद पगड़ियाँ। बड़े की अवस्था पैंतीस और छोटे की चौबीस है। रंग साँवला, बड़े की मूँछें मुँह को घेरे हुए, माथे पर सिलवट। छोटे की अधकटी मूँछें, लंबा मुख और बड़े-बड़े दाँत। दोनों मैली धोतियाँ पहने हैं। बड़े का नाम नन्हेमल और छोटे का बाबूलाल है। इस हबड़-तबड़ मे दोनों बच्चे ऊपर से उतरकर आते हैं और दरवाजे के पास खड़े होकर आगंतुकों को देखते हैं।)

विश्वनाथ : (बड़े लड़के से) प्रमोद, जरा कुर्सी इधर खिसका दो। (दूसरे अतिथि से) आप इधर खाट पर आ जाइए। जरा पंखा तेज कर देना, किरण। (किरण पंखा तेज करता है, किंतु पंखा वैसे ही चलता है।)

नन्हेमल : (पगड़ी के पल्ले से मुँह का पसीना पोंछकर उसी से हवा करता हुआ।) बड़ी गर्मी है। क्या कहें, पंडित जी, पैदल चले आ रहे हैं, कपड़े तो ऐसे हो गए कि निचोड़ लो।

विश्वनाथ : जी, आप लोग ...

बाबूलाल : चाचा, मेरे कपड़े निचोड़कर देख लो एक लोटे से कम पसीना नहीं निकलेगा। धोती ऐसी चर्रा रही है, जैसे पुरानी हो। पिछले दिनों नकद नौ रुपये खर्च करके खरीदी थी।

नन्हेमल : मोतीराम की दुकान से ली होगी। बड़ा मक्कार है। मैंने भी कुरतों के लिए छह गज मलमल मोल ली थी, सवा रुपये गज दी, जबकि नत्थामल के यहाँ साढ़े नौ आने गज बिक रही थी। पंडित जी, गला सूखा जा रहा

है। स्टेशन पर पानी भी नहीं मिला, मन करता है लेमन की पाँच-छह बोतलें पी जाऊँ।

बाबूलाल : मुझे कोई पिलाकर देखे, दस से कम नहीं पीऊँगा। (बच्चों की ओर देखकर) क्या नाम है तुम्हारा भाई?

प्रमोद : प्रमोद।

किरण : किरण।

बाबूलाल : ठंडा-ठंडा पानी पिलाओ दोस्त, प्राण सूखे जा रहे हैं।

विश्वनाथ : देखो प्रमोद, कहीं से बर्फ मिले तो ले आओ, आप लोग...

नन्हेमल : अपना लोटा कहाँ रखा है ? थैले में ही है न ?

बाबूलाल : बिस्तर में होगा चाचा, निकालूँ क्या ? और तो और, बिस्तर भी पसीने से भीग गया, चाचा, मैं तो पहले नहाऊँगा, फिर जो होगा देखा जायेगा, हाँ, नहीं तो। मुझे नहीं मालूम था यहाँ इतनी गर्मी है।

नन्हेमल : देखते जाओ। हाँ, साहब!

विश्वनाथ : क्षमा कीजिएगा, आप कहाँ से पधारे हैं ?

नन्हेमल : अरे, आप नहीं जानते। वह लाला संपतराम है न गोटेवाले, मेरे चचेरे भाई हैं क्या बताए साहब, उन बेचारों का कारोबार सब चौपट हो गया, हम लोगों के देखते-देखते वह लाखों के आदमी खाक में मिल गए। बाबू, यह लो मेरी बंडी संदूक में रख दो।

विश्वनाथ : कौन संपतराम ?

बाबूलाल : अरे वही गोटेवाले। लाओ न, चाचा, (संदूक खोलकर बंडी रखते हुए) माल-मसाला तो अंटी में है न?

नन्हेमल : नहीं! जेब में है। बंडी की जेब में। अब डर की क्या बात है! घर ही तो है। जरा बीड़ी का बंडल तो मेरी जेब से निकाल।

बाबूलाल : बीड़ी तो मेरे पास भी है, लो! जरा, भाई, दियासलाई ले आना।

किरण : अभी लाया।

(जाता है और लौटकर दियासलाई देता है। दोनों बीड़ी पीते है।)

विश्वनाथ : मैं संपतराम को नहीं जानता।

नन्हेमल : संपतराम को जानने की... क्यों, वह तो आपसे मिले हैं। आपकी तो वह...

बाबूलाल : हाँ, उन्होंने कई बार मुझसे कहा है। आपकी तो वह बहुत तारीफ करते हैं। पंडित जी, क्या मकान इतना ही बड़ा है?

नन्हेमल : देख नहीं रहे, इसके भी पीछे एक कमरा दिखाई देता है। पंडित जी, इसके पीछे आँगन होगा और ऊपर छत होगी ? शहर में तो ऐसे ही मकान होते हैं।

किरण : **(विश्वनाथ से)** माँ पूछती है खाना...

नन्हेमल : क्यों बाबूलाल ? पंडित जी, कष्ट तो होगा, पर तुम जानो, खाना तो...

बाबूलाल : बस एक साग और पूरी।

नन्हेमल : वैसे तो मैं पराँठे भी खा लेता हूँ।

बाबूलाल : अरे, खाने की भली चलाई, पेट ही तो भरना है। शहर में आए हैं, तो किसी को तकलीफ थोड़े ही देंगे। देखिए पंडित जी, जिसमें आपकों आराम हो, हम तो रोटी भी खा लेंगे। कल फिर देखी जायेगी।

नन्हेमल : भूख कब तक नहीं लगेगी, सारा दिन तो हो गया।

बाबूलाल : नहाने का प्रबंध तो होगा, पंडित जी ?

(प्रमोद बर्फ का पानी लाता है)

नन्हेमल : हाँ भैया, ला तो जरा, मैं तो डेढ़ लोटा पानी पीऊँगा।

बाबूलाल : उतना ही मैं भी।

(दोनों गट-गट पानी पीते हैं।)

किरण : (विश्वनाथ से धीरे से) फिर खाना?

विश्वनाथ : (इशारे से) ठहर जा जरा।

नन्हेमल : (पानी पीकर) आह, अब जान में जान आई। सचमुच गर्मी में पानी ही तो जान है।

बाबूलाल : पानी भी खूब ठंडा है। वाह भैया, खुश रहो।

नन्हेमल : कितने सीधे लड़के हैं!

बाबूलाल : शहर के हैं न।

विश्वनाथ : क्षमा कीजिए, मैंने आपको...

दोनों : अरे पंडित जी, आप कैसी बातें करते हैं ? हम तो आपके पास के हैं।

विश्वनाथ : आप कहाँ से आए हैं ?

नन्हेमल : बिजनौर से।

विश्वनाथ : (आश्चर्य से) बिजनौर से! बिजनौर में तो......। मैं बिजनौर गया हूँ, किंतु...

नन्हेमल : मैं जरा नहाना चाहता हूँ।

बाबूलाल : मैं भी स्नान करूँगा।

विश्वनाथ : पानी तो नल में शायद ही हो, फिर भी देख लो। प्रमोद, इन्हें नीचे नल पर ले जाओ।

बाबूलाल : तब तक खाना भी तैयार हो जायेगा।

(दोनों बाहर निकल आते हैं, रेवती का प्रवेश)

रेवती : ये लोग कौन हैं ? जान-पहचान के तो मालूम नहीं पड़ते।

विश्वनाथ : न जाने कौन हैं!

रेवती : पूछ लो न!

विश्वनाथ : क्या पूछ लूँ ? दो-तीन बार पूछा, ठीक-ठीक उत्तर हीं नहीं देते।

रेवती : मेरा तो दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है। इधर पिछली शिकायत फिर से बढ़ती जा रही है। पहले सोते-सोते हाथ-पैर सुन्न हो जाते थे, अब बैठे ही बैठे हो जाते हैं।

विश्वनाथ : क्या बताऊँ, जीवन में तुम्हें कोई सुख न दे सका। नौकर भी नहीं टिकता है।

रेवती : पानी जो तीन मंजिल पर चढ़ाना पड़ता है, इसलिए भाग जाते हैं, गर्मी क्या कम है! और किसी को क्या जरूरत पड़ी है जो गर्मी में भुने। यह तो हमारा ही भाग्य है कि चने की तरह भाड़ में भुनते रहते हैं।

विश्वनाथ : क्या किया जाये ?

रेवती : फिर क्या खाना बनाना ही होगा ? पर ये हैं कौन ?

विश्वनाथ : खाना तो बनाना ही पड़ेगा। कोई भी हों अब आए हैं तो खाना जरूर खाएंगे। थोड़ा-सा बना लो।

रेवती : (तुनककर) खाना तो खिलाना ही होगा—तुम भी खूब हो। भला, इस तरह कैसे काम चलेगा? दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है, फिर खाना बनाना इनके लिए इस समय ? आखिर ये आए कहाँ से हैं ?

विश्वनाथ : कहते हैं, बिजनौर से आए हैं।

रेवती : (आश्चर्य से) बिजनौर! क्या बिजनौर में तुम्हारी जान-पहचान है ? अपनी बिरादरी का तो कोई आदमी वहाँ रहता नहीं है।

विश्वनाथ : बहुत दिन हुए एक बार काम से बिजनौर गया था, पर तब से अब तो बीस साल हो गए हैं।

रेवती : सोच लो, शायद वहाँ कोई साहित्यिक मित्र हो, उसी ने इन्हें भेजा हो।

विश्वनाथ : ध्यान तो नहीं आता, फिर भी कदाचित् कोई मुझे जानता हो और उसी ने भेजा हो। किसी संपतराम का नाम बता रहे थे, मैं जानता भी नहीं।

रेवती : बड़ी मुश्किल है। मैं खाना नहीं बनाऊँगी। पहले आत्मा फिर परमात्मा, जब शरीर ही ठीक नहीं रहता तो फिर और क्या करूँ ?

विश्वनाथ : क्या कहेंगे कि रातभर भूखा मारा, बाजार से कुछ मँगा दो न!

रेवती : बाजार से क्या मुफ्त में आ जायेगा! तीन-चार रुपये से कम में क्या इनका पेट भरेगा। पहले तुम पूछ लो, मैं बाद में खाना बनाऊँगी।

(बाबूलाल का प्रवेश। रेवती का दूसरी ओर से जाना)

बाबूलाल : तबीयत अब शांत हुई, फिर भी पसीने से नहा गया हूँ, न जाने पंडित जी आप यहाँ कैसे रहते हैं। (पंखा करता है)

विश्वनाथ : आठ-नौ लाख आदमी इस शहर में रहते हैं और उनमें से छह-सात लाख आदमी इसी तरह के मकानों में रहते हैं।

(ऊपर छत पर शोर मचता है)

क्या बात है? कैसा झगड़ा है, प्रमोद?

प्रमोद : (आकर) उन्होंने दूसरी छत पर हाथ धो लिए, पानी फैल गया, इसीलिए वह पड़ोस की स्त्री चिल्ला रही है। मैंने कहा, 'सवेरे साफ करा देंगे, इन्हें मालूम नहीं था।'

विश्वनाथ : तुमने क्यों नहीं बताया कि हाथ दूसरी जगह धोओ।

प्रमोद : मैं पानी पीने अपनी छत पर चला गया था। वहाँ उषा रोने लगी। उसे चुप कराया, पानी पिलाया और पंखा करता रहा।

विश्वनाथ : चलो कोई बात नहीं, उनसे कह दो कि सवेरे साफ करा देंगे।

(नेपथ्य में – "अरे बाबू, मेरी धोती देना। मैं भी नहा लूँ।")

बाबूलाल : लाया, चाचा। (जाता है)

(पड़ोसी का तेजी से प्रवेश)

पड़ोसी : देखिए साहब, मेहमान आपके होंगे, मेरे नहीं। मैं यह बर्दाश्त नहीं कर सकता कि मेरी छत पर इस तरह गंदा पानी फैलाया जाए। सारी छत गंदी कर दी।

विश्वनाथ : वाकई गलती हो गई। कल सवेरे साफ करा दूँगा।

पड़ोसी : आप से रोज ही गलती होती है।

विश्वनाथ : अनजान आदमी से गलती हो ही जाती है। उसे क्षमा कर देना चाहिए। कल से ऐसा नहीं होगा।

पड़ोसी : होगा क्यों नहीं, रोज होगा। रोज होता है। अभी उसी दिन आपके एक और मेहमान ने पानी फैला दिया था। फिर हमारी खाट बिछाकर लेट गया था।

विश्वनाथ : मैंने समझा तो दिया था। फिर तो वह आदमी खाट पर नहीं लेटा था।

पड़ोसी : तो आपके यहाँ इतने मेहमान आते ही क्यों हैं ? यदि मेहमान बुलाने हों, तो बड़ा-सा मकान लो।

विश्वनाथ : यह भी आपने खूब कहा कि इतने मेहमान क्यों आते हैं। अरे भाई, मेहमानों को क्या मैं बुलाता हूँ ? खैर, आज क्षमा करें, अब आगे ऐसा नहीं होगा।

पड़ोसी : कहाँ तक कोई क्षमा करे। क्षमा, क्षमा! बस एक ही बात याद कर ली है– क्षमा!

(चला जाता है। दोनों अतिथि आते हैं।)

दोनों : क्या बात है ?

विश्वनाथ : कुछ नहीं, आप धोतियाँ छज्जे पर सुखा दें।

नन्हेमल : ले बाबू, डाल तो दे, और ला, बीड़ी निकाल।

बाबूलाल : मेरी जेब से ले लो। **(धोतियाँ लेकर चला जाता है)**

नन्हेमल : सचमुच हमारी वजह से आपको बड़ा कष्ट हुआ। (बैठकर बीड़ी सुलगाता है) भैया, जरा-सा पानी और पिला। उफ. बड़ी गर्मी है। हाँ साहब, खाने में क्या देर-दार है ? बात यह है कि नींद बड़े जोर से आ रही है।

(बाबूलाल आता है)

विश्वनाथ : देखिए! मैं आपसे एक-दो बात पूछना चाहता हूँ।

दोनों : हाँ, हाँ पूछिए, मालूम होता है आपने हमें पहचाना नहीं है।

विश्वनाथ : जी हाँ, बात यह है कि मैं बिजनौर गया तो अवश्य हूँ, पर बहुत दिन हो गए हैं।

नन्हेमल : तो क्या हर्ज है कभी-कभी ऐसा भी हो जाता है। हम तो आपको जानते हैं। कई बार आपको देखा भी है।

बाबूलाल : लाला भानामल की लड़की की शादी में आप नजीबाबाद गग थे?

नन्हेमल : अरे, दूर क्यों जाते हो? अभी पिछले साल आप मुरादाबाद गग थे?

विश्वनाथ : हाँ, पिछले साल मैं लखनऊ जाते हुए दो दिन के लिए जगदीश प्रसाद के पास मुरादाबाद ठहरा था।

नन्हेमल : हाँ, सेठ जगदीश प्रसाद के यहाँ हमने आपको देखा था।

बाबूलाल : उनकी आटे की मिल है, क्या कहने हैं उनके, बड़े आदमी हैं। हम उन्हीं के रिश्तेदार हैं।

विश्वनाथ : पर उनका तो प्रेस है।

नन्हेमल : प्रेस भी होगा। उनकी एक बड़ी मिल भी है। अब एक और गन्ने की मिल बिजनौर में खुल रही है।

बाबूलाल : अगले महीने तक खुल जाएगी। हाँ भैया, पानी ले आए, लो चाचा, पहले तुम पी लो।

विश्वनाथ : तो आप कोई चिट्‌ठी-विट्‌ठी लाए हैं?

दोनों : (सकपकाकर) चिट्‌ठी-विट्‌ठी तो नहीं लाए हैं।

नन्हेमल : संपतराम ने कहा था कि स्टेशन से उतरकर सीधे रेलवे रोड चले जाना। वहाँ कृष्ण गली में वे रहते हैं।

विश्वनाथ : पर कृष्ण गली तो यहाँ छह हैं। कौन-सी गली में बताया था ?

नन्हेमल : छह हैं! बहुत बड़ा शहर है, साहब! हमें तो यह मालूम नहीं है, शायद बताया हो। याद ही नहीं रहा।

विश्वनाथ : (खीझकर) जिसके यहाँ आपको जाना है, उसका नाम तो बताया होगा ?

बाबूलाल : क्या नाम था, चाचा ?

नन्हेमल : नाम तो याद नहीं आता। जरा ठहरिए, सोच लूँ।

बाबूलाल : अरे चाचा, कविराज या कवि बताया था। मैं उस समय नहीं था। सामान लेने घर गया था। तुम्हीं ने रेल में बताया था।

नन्हेमल : हाँ, साहब, कविराज बताया था। आप तो बेकार शक में पड़े हैं। हम कोई चोर थोड़े ही हैं।

बाबूलाल : चोर छिपे थोड़े ही रहते हैं। पंडित जी, क्या बताएं, हमारे घर चलकर देख लें, तो पता लगेगा कि हम भी...

नन्हेमल : चुप, एक बीड़ी और निकाल बाबू।

बाबूलाल : यह लो।

विश्वनाथ : लेकिन मैं कविराज तो नहीं हूँ।

दोनों : **(चिल्लाकर)** तो कवि ही बताया होगा, साहब!

नन्हेमल : हमें याद नहीं आ रहा। हमें तो जो पता दिया था उसी के सहारे आ गए। नीचे आवाज लगाई और आप मिल गए, ऊपर चढ़ आए। पहले हमने सोचा होटल या धर्मशाला में ठहर जाएँ। फिर सोचा, घर के ही तो हैं। चलो, घर ही चलें।

विश्वनाथ : जिनके यहाँ आपको जाना था, वह काम क्या करते हैं ?

नन्हेमल : काम ? क्या काम बताया था बाबू ?

बाबूलाल : मेरे सामने तो कोई बात ही नहीं हुई। मैं तो सामान लेने चला गया था। आप तो पंडित जी, शायद वैद्य हैं।

नन्हेमल : हाँ याद आया। बताया था वैद्य हैं।

विश्वनाथ : पर मैं तो वैद्य नहीं हूँ।

प्रमोद : पिछली गली में एक कविराज वैद्य रहते हैं।

विश्वनाथ : हाँ, हाँ, ठीक, कहीं आप कविराज रामलाल वैद्य के यहाँ तो नहीं आए हैं ?

दोनों : (उछलकर) अरे हाँ, वहीं तो कविराज रामलाल।

विश्वनाथ : शायद वे उधर के हैं भी।

नन्हेमल : ठीक है, साहब, ठीक है वहीं हैं। मैं भी सोच रहा था कि आप न संपतराम को जानते हैं, न जगदीश प्रसाद को–(प्रमोद से) कहाँ है उन कविराज का घर ?

विश्वनाथ : जाओ, इन्हें उनका मकान बता दो। मैं भीतर हो आऊँ।

दोनों : चलो, जल्दी चलो, भैया अच्छा साहब, राम-राम।

विश्वनाथ : **(भीतर से ही)** राम-राम!

(सब चले जाते हैं। कुछ देर बाद विश्वनाथ का पत्नी सहित प्रवेश)

रेवती : अब जान में जान आई। हाय, सिर फटा जा रहा है।

(नीचे से आवाज आती है)

(नेपथ्य में–'भले आदमी, जाने कहाँ मकान लिया है ढूँढ़ते-ढूँढ़ते आधी रात होने आई है।'

रेवती : (प्रसन्न होकर) अरे, भैया हैं! आओ, आओ तुमने तो खबर भी न दी।

आगंतुक : रेवती! (दोनों मिलते हैं। विश्वनाथ से) पिछले चार घंटे से बराबर मकान खोज रहा हूँ। क्या मेरा तार नहीं मिला ?

विश्वनाथ : नहीं तो, कब तार दिया था ?

आगंतुक : कल ही तो झाँसी से दिया था। सोचता था कि ठीक समय पर मिल जाएगा। ओह, बड़ी परेशानी हुई।

रेवती : लो, कपड़े उतार डालो। पंखा करती हूँ। अरे प्रमोद, जा जल्दी से बर्फ तो ला। मामा जी को ठंडा पानी पिला और देख, नुक्कड़ पर हलवाई की दुकान खुली हो तो...

आगंतुक : भाई बहुत बड़ा शहर है। वह तो कहो, मैं भी ढूँढ़कर ही रहा, नहीं तो न जाने कहाँ होटल या धर्मशाला में रहना पड़ता। बड़ी गर्मी है। मैं जरा बाथरूम जाना चाहता हूँ।

विश्वनाथ : हाँ, हाँ, अवश्य। सामने चले जाइए।

आगंतुक : एक बार तो जी में आया कि सामने होटल में ठहर जाऊँ। शायद रात को आप लोगों को कोई कष्ट हो।

रेवती : ऐसा क्यों सोचते हैं आप! कष्ट काहे का! यह तो हम लोगों का कर्त्तव्य था। अच्छा, तुम तैयार हो, मैं खाना बनाती हूँ।

आगंतुक : भई देखो, इस समय खाना-वाना रहने दो। मैं पानी पीकर सो जाऊँगा। वैसे मुझे भूख भी नहीं है।

रेवती : (जाती हुई, लौटकर) कैसी बातें करते हो, भैया! मैं अभी खाना बनाती हूँ।

आगंतुक : इतनी गर्मी में! रहने दो न!

विश्वनाथ : तुम बाथरूम तो जाओ। (आगंतुक जाता है। रेवती से) कहो, अब ?

रेवती : अब क्या—मैं खाना बनाऊँगी। भैया भूखे नहीं सो सकते।

विश्वनाथ : (हंसकर) हाँ, ऐसा न हुआ तो कदाचित् और ... सिर का दर्द ...

रेवती : यहाँ कर्तव्य के साथ प्रेम है।

विश्वनाथ : दिखावा भी।

रेवती : वह भी, किंतु अपनत्व तो है ही। तुम मिठाई मँगवाओ, मैं पूरियाँ तले देती हूँ। (छत की तरफ) संतोष! संतोष, उठ तो सही। देख, मामा जी आए हैं। जल्दी आ (गाती है) आज मेरे आए भैया ...

सारांश

'नए मेहमान' उदयशंकर भट्ट का समस्या—प्रधान एकांकी है। जिसमें बड़े महानगरों में रहने वाले मध्यम वर्ग का यथार्थवादी चित्रण है। इस एकांकी में महानगरीय सभ्यता में मध्यम आय के लोगों की आवास समस्या और कष्टप्रद जीवन का सजीव चित्रण किया गया है।

'नए मेहमान' एकांकी का मुख्य पात्र विश्वनाथ है। वह एक बड़े नगर की धनी बस्ती में अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहता है। उसका घर बहुत छोटा है। गर्मी का मौसम है और रात के आठ बजे हैं। उसकी पत्नी रेवती का गर्मी से बुरा हाल है। उसका छोटा बच्चा भी बीमार है। उसके मकान की छत भी बहुत छोटी है, जिसमें चारपाई बिछाने की भी पर्याप्त जगह नहीं है। विश्वनाथ की पड़ोसन बहुत कठोर स्वभाव की है, वह अपने खाली पड़े छत का प्रयोग भी उन्हें नहीं करने देती। पति-पत्नी एक दूसरे के प्रति समर्पण के कारण एक-दूसरे को छत पर सोने का आग्रह करते है। अंत में विश्वनाथ छत पर जाने को तैयार हो जाता है।

जैसे ही विश्वनाथ व उसका परिवार सोने की तैयारी करते है वैसे ही बाहर से कोई दरवाजा खटखटाता है। विश्वनाथ दरवाजा खोलता है। दो अपरिचित व्यक्ति बाबूलाल और नन्हेमल घर में प्रवेश करते है और विश्वनाथ के उन्हें नहीं पहचानने के बाद भी घर में जम जाते हैं। वे विश्वनाथ से ठंडे पानी की माँग करते हैं। विश्वनाथ द्वारा उनका परिचय पूछे जाने पर वे उसे बातों में उड़ा देते हैं। विश्वनाथ संकोची स्वभाव के कारण कुछ नहीं कह पाता। विश्वनाथ की पत्नी रेवती खाना बनाने के लिए तैयार नहीं होती और अपने पति से जिद करती है कि इन मेहमानों से इनका पता– परिचय पूछो। जब विश्वनाथ उनसे साफ-साफ पूछता है तो पता चलता है वे भूलवश उसके घर आ गए थे। वास्तव में उन्हें विश्वनाथ के पड़ोस में रहने वाले कविराज रामलाल वैद्य के यहाँ जाना था। इस पर विश्वनाथ के बच्चे उन्हें सही जगह पर पहुँचाकर आते हैं। पति-पत्नी चैन की साँस लेते हैं।

जैसे ही रेवती विश्वनाथ इन दोनों से मुक्त होते हैं वैसे रेवती का भाई आ जाता है। अपने भाई के आगमन पर रेवती बहुत प्रसन्न होती है और उसकी आवभगत में लग जाती है। उसे इस बात का दु:ख है कि उसका भाई उनका मकान ढूँढ़ता रहा और बहुत देर बाद सही स्थान पर पहुँचा। वह भाई के बार-बार मना करने पर भी भोजन बनाने को तत्पर हो जाती है और बच्चों को बर्फ और मिठाई लाने के लिए भेजती है। विश्वनाथ मुस्कुराकर व्यंग्य से कहता है–कहो, अब ? इस पर रेवती कहती है–''क्या अब–मैं खाना बनाऊँगी। भैया भूखे नहीं सो सकते।'' इसी बिंदु पर एकांकी का विनोदपूर्ण अंत हो जाता है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. विश्वनाथ एवं रेवती परेशान हैं :
   (क) वर्षा के कारण (ख) अंधेरे के कारण
   (ग) सर्दी के कारण (घ) गर्मी के कारण
2. पड़ोसी विश्वनाथ से किस बात की शिकायत करता है :
   (क) मेहमानों द्वारा छत पर कपड़े फैलाने के कारण
   (ख) मेहमानों द्वारा शोर मचाने के कारण
   (ग) छत पर खाट बिछाने के कारण
   (घ) मेहमानों द्वारा गंदा पानी फैलाने के कारण।
3. विश्वनाथ के पड़ोसी उनसे हमेशा परेशान क्यों रहते थे :
   (क) क्योंकि उनके यहाँ कोई मेहमान नहीं आता था।
   (ख) क्योकि विश्वनाथ में यहाँ हमेशा कोई न कोई मेहमान आता रहता था।
   (ग) वे स्वभाव से ही दुष्ट थे।
   (घ) इनमें से कोई नहीं

4. विश्वनाथ के दोनों मेहमान :
   (क) वास्तव में पता भूल गए थे। (ख) केवल रात बिताना चाहते थे।
   (ग) विश्वनाथ को ठगना चाहते थे। (घ) वे विश्वनाथ के रिश्तेदार थे।
5. विश्वनाथ ने पड़ोसियों को निर्दयी क्यों कहा ?
   (क) क्योंकि वे उनकी मुसीबत देखकर खुश होते थे।
   (ख) क्योंकि वे अपनी खाली छत पर बच्चों के लिए खाट नहीं बिछाने देते थे।
   (ग) क्योंकि उनमें सामाजिकता का भाव नहीं था।
   (घ) उपर्युक्त सभी।
6. रेवती, अचानक आए दो नए मेहमानों के लिए भोजन नहीं बनाना चाहती थी, क्योंकिः
   (क) मेहमानों से उसकी आत्मीयता नहीं थी।
   (ख) रात में भोजन बनाना संभव नहीं था।
   (ग) सच में उसके सिर में दर्द था।
   (घ) उपयुक्त सभी।
7. रेवती दूसरे आगंतुक के लिए भोजन की व्यवस्था तत्परता से करती है, क्योंकि :
   (क) वह स्वार्थी है। (ख) दूसरा आगंतुक उसका भाई था।
   (ग) विश्वनाथ के विशेष निर्देश के कारण (घ) उपर्युक्त सभी।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. विश्वनाथ व रेवती की परेशानी का क्या कारण है ?
2. विश्वनाथ और रेवती किन कारणों से मेहमानों से असंतुष्ट थे ?
3. 'नए मेहमान' वास्तव में कौन थे ? एकांकी के आधार पर स्पष्ट कीजिए।
4. 'नए मेहमान' एकांकी हास्य प्रधान है या समस्यामूलक। सार्थक उत्तर दीजिए।
5. पड़ोसियों को विश्वनाथ से क्या-क्या शिकायते हैं ?
6. आगंतुक के आने पर रेवती की प्रसन्नता को स्पष्ट कीजिए।
7. विश्वनाथ 'नए मेहमानों' से सही पता क्यों नहीं पूछ पा रहा था ?
8. रेवती का सर क्यों फटा जा रहा था ?
9. उदयशंकर भट्ट के जीवन और कृतित्व का उल्लेख कीजिए।
10. 'नए मेहमान' की कथावस्तु अपने शब्दों में लिखिए।
11. 'नए मेहमान' एकांकी की मुख्य स्त्री पात्र कौन है – उसका चरित्रांकन कीजिए।
12. 'नए मेहमान' एकांकीकार का निहित उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
13. 'नए मेहमान' एकांकी के प्रमुख पात्र विश्वनाथ का चरित्र-चित्रण कीजिए।
14. नन्हेमल और बाबूलाल के माध्यम से अतिथेय – समस्या पर विचार कीजिए।
15. 'नए मेहमान' एकांकी के माध्यम से शहरी वातावरण पर प्रकाश डालिए।

■

डॉ0 रामकुमार वर्मा

(सन् 1905–1990 ई.)

हिंदी के सुप्रसिद्ध एकांकीकार, नाटककार, आलोचक साहित्येतिहासकार डा0 रामकुमार वर्मा का जन्म **मध्य प्रदेश** के **सागर** जिले में सन् **1905** ई. में हुआ था। उनके पिता श्री लक्ष्मी प्रसाद वर्मा डिप्टी कलेक्टर थे एवं माता श्रीमती राजरानी देवी थीं, जो अपने समय के कवयित्रियों में विशेष स्थान रखती थीं। रामकुमार वर्मा का बचपन का नाम **कुमार** था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनकी माता द्वारा घर पर प्रारंभ हुई। सन् 1922 ई. में उन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण की। सन् 1929 ई. में वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम0ए0 (हिंदी) की परीक्षा उत्तीर्ण कर तत्पश्चात् सन् 1929 ई. में ही वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग के प्राध्यापक नियुक्त हुए और प्रोफेसर–अध्यक्ष के पद पर वर्षों तक कार्य करने के उपरांत सन् 1966 ई. में वहीं से अवकाश प्राप्त हुए। सन् 1940 ई. में 'हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' विषय पर उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से पी0एच0डी0 की उपाधि अर्जित की। उनका निधन **सन् 1990 ई.** को **प्रयाग** में हुआ।

बचपन से ही रामकुमार वर्मा को अभिनय का शौक था। इसी कारण वे आरंभ से ही रंगमंच से जुड़ गए। सन् 1963 ई. में उन्हें भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' की उपाधि से अलंकृत किया। वर्मा जी हिंदी के ऐसे प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं, जिन्होंने एकांकी, नाटक, कविता और आलोचना आदि विविध साहित्यिक विधाओं में लगभग एक सौ कृतियों की रचना की। वर्मा जी का साहित्यिक लेखन और प्रकाशन 17 वर्ष की अवस्था में सन् 1922 ई. से ही प्रारंभ हो गया था।

कृतियाँः

एकाकी संग्रह : पृथ्वीराज की आँखें, मयूर पंख, रेशमी टाई, रूप-रंग, चारुमित्रा, कौमुदी महोत्सव, अमृत की खोज, केसर का सौरभ, रजत रश्मि, इंद्रधनुष, दीपदान, रिमझिम, बापू आदि।

नाटक : नाना फड़नवीस, महाराणा प्रताप, संत तुलसीदास, भगवान बुद्ध, जयभारत, सम्राट कनिष्क, सरजा शिवाजी, कर्मवीर कर्ण आदि।

काव्य-संग्रह : वीर हमीर, चित्तौड़ की चिता, अंजलि, चित्ररेखा, जौहर आदि।

आलोचना : साहित्य-समालोचना, कबीर का रहस्यवाद आदि।

एकांकीकार के रूप में डा0 रामकुमार वर्मा का व्यक्तित्व एक ऐसे आदर्शवादी और कल्पनाशील कलाकार का रहा है, जिसने भारतीय संस्कृति की मर्यादा के साथ अपनी साहित्यिक मान्यताओं का सार्थक समन्वय किया। अपने एकांकियों में वे कलुष के भीतर से पवित्रता, दैन्य के भीतर से शालीनता, वासना के भीतर से आत्मसंयम एवं क्षुद्रता से महानता का अन्वेषण करने में समर्थ हुए, और यह सब उन्होंने पात्रों एवं परिस्थितियों के संघर्ष से स्वाभाविक रूप में किया। वर्मा जी का ध्वनि-रूपक (रेडियो एकांकी) समय-समय पर आकाशवाणी द्वारा भी प्रसारित होते रहे हैं। विश्वविद्यालय के समारोहों में अभिनय-व्यवस्था में उनका विशेष योगदान रहा है।

■

दीपदान

पात्र-परिचय

कुँवर उदयसिंह : चित्तौड़ के स्वर्गीय महाराणा साँगा का सबसे छोटा पुत्र। राज्य का उत्तराधिकारी। आयु 14 वर्ष।

चंदन : धाय माँ पन्ना का पुत्र। आयु 13 वर्ष।

बनवीर : महाराणा साँगा के भाई पृथ्वी का दासी-पुत्र। आयु 32 वर्ष।

कीरत : जूठी पत्तल उठाने वाला बारी। आयु 40 वर्ष

पन्ना : कुँवर उदयसिंह का संरक्षण करनेवाली धाय। चंदन की माँ। आयु 30 वर्ष।

सोना : रावल सरूपसिंह की अत्यंत रूपवती लड़की। कुँवर उदयसिंह के साथ खेलने वाली आयु 16 वर्ष।

सामली : अंतःपुर की परिचारिका। आयु 28 वर्ष।

काल : सन् 1536 ई.
समय : रात्रि का दूसरा पहर
स्थान : कुँवर उदयसिंह का कक्ष, चित्तौड़

(कक्ष में पूरी सजावट है। दरवाजों पर रेशमी परदे पड़े हैं। एक पार्श्व में उदयसिंह की शय्या है। सिरहाने पन्ना के बैठने का स्थान है।)

(नेपथ्य में नारियों की सम्मिलित नृत्य-ध्वनि और गान जो धीरे-धीरे हल्का होता है।)

उदयसिंह : (दौड़ता हुआ आता है, पुकारता है।) धाय माँ, धाय माँ!

पन्ना : (भीतर से आती हुई) क्या है, कुँवर! (देखकर) अरे, रात हो गई और तुमने अभी तक तलवार म्यान में नहीं रखी ?

उदयसिंह : धाय माँ, देखो न कितनी सुंदर-सुंदर लड़कियाँ नाच रही हैं। गीत गाती हुई तुलजा भवानी के सामने नाच रही हैं। चलो देखो न!

पन्ना : मैं नहीं देख सकूँगी लाल!

उदयसिंह : नहीं धाय माँ, थोड़ी देर के लिए चलो न!

पन्ना : नहीं कुँवर जी, मुझे नाच देखना अच्छा नहीं लगता।

उदयसिंह : क्यों नहीं अच्छा लगता ? मैं तो नाचनेवाली लड़कियों को बड़ी देर तक देखता रहा, और वे भी तो मुझे बड़ी देर तक देखती रहीं, मैं कितना अच्छा हूँ!

पन्ना : बहुत अच्छे हो। तुम तो चित्तौड़ के सूरज हो। महाराणा साँगा जी के छोटे कुँवर। सूरज की तरह तुम्हारा उदय हुआ है। तभी तो तुम्हारा नाम कुँवर उदयसिंह रखा गया है।

उदयसिंह : (हँसकर) अच्छा, यह बात है! पर क्या रात में भी सूरज का उदय होता है ? मैं तो रात में भी हँसता-खेलता रहता हूँ।

पन्ना : दिन में तो चित्तौड़ के सूरज हो, कुँवर ! और रात में तुम राजवंश के दीपक हो! महाराणा साँगा के कुल-दीपक!

उदयसिंह : कुल-दीपक! कहीं तुम मुझे दान न कर देना, धाय माँ! वे नाचने वाली लड़कियाँ तुलजा भवानी की पूजा में दीपदान करके ही नाच रही हैं। वे दीपक छोटे-से कुंड में कैसे नाचते हैं, (मचले हुए स्वर में) चलो न धाय माँ! तुम उनका दीपदान देख लो। जिस तरह दीपक नाचते हैं उसी तरह वे भी नाच रही हैं।

पन्ना : मैं इस समय कुछ भी नहीं देखूँगी। कुँवर!

उदयसिंह : (रूठकर) तो जाओं, मैं भी नहीं देखूँगा। मैं उदयसिंह भी नहीं बनूँगा और कुल-दीपक भी नहीं। कुछ नहीं बनूँगा।

पन्ना : रूठ गये! कुँवर, रूठने से राजवंश नहीं चलते। देखो, तुम्हारे कपड़ों पर धूल छा रही है। दिन भर तुम तलवार का खेल खेलते रहे, थक गये होगे। जाओ, सो जाओ। मैं तुम्हारी तलवार अलग रख दूँगी।

उदयसिंह : (रूठे हुए स्वर में) मैं तलवार के साथ ही सो जाऊँगा।

पन्ना : अभी वह समय नहीं आया कुँवर! चित्तौड़ की रक्षा में तुम्हें तलवार के साथ ही सोना पड़ेगा।

उदयसिंह : (रूखे स्वर में) तुम्हें तलवार से डर लगता है ?

पन्ना : तलवार से डर! चित्तौड़ में तलवार से कोई नहीं डरता, कुँवर! जैसे लता में फूल खिलते हैं वैसे ही यहाँ वीरों के हाथों में तलवार खिलती है।

उदयसिंह : (उसी तरह रूखे स्वर में) अब मेरा मन बहलाने लगीं। तुम नाच देखने नहीं चलती, तो मैं अकेला ही चला जाऊँगा। मैं जाता हूँ। (जाने को उद्यत होता है)।

पन्ना : नहीं कुँवर! तुम कभी रात में अकेले नहीं जाओगे। चारो तरफ जहरीले सर्प घूम रहे हैं। किसी समय भी तुम्हें डस सकते हैं।

उदयसिंह : सर्प! कैसे सर्प ?

पन्ना : तुम नहीं समझोगे, कुँवर! जाकर सो जाओ। थक गए होगे। भोजन के लिए मैं जगा लूँगी।

उदयसिंह : नहीं माँ, आज न भोजन करूँगा और न अपनी शय्या पर ही सोऊँगा। (प्रस्थान के लिए उद्यत)

पन्ना : (रोकते हुए) सुनो, सुनो कुँवर!

(उदयसिंह का प्रस्थान)

पन्ना : चले गए! कुँवर का रूठना भी मुझे अच्छा लगता है। मना लूँगी। नाच, गान, दीपदान इसी से चित्तौड़ की रक्षा होगी ? चित्तौड़ में यह बहुत हो चुका। बहुत हो चुका। और अब तो बनवीर का राज्य है।

(नूपुर-नाद करते हुए एक किशोरी का प्रवेश)

सोना : धाय माँ को प्रणाम।

पन्ना : कौन ?

सोना : मैं हूँ सोना। रावल सरूपसिंह की लड़की। कुँवर जी कहाँ हैं ?

पन्ना : वे थक गए हैं। सोना चाहते हैं।

सोना : सोना चाहते हैं। तो मैं भी तो सोना हूँ।

(अट्टहास)

पन्ना : चुप रह सोना! कुँवर रूठकर चले गए हैं। तुम लोग कुँवर को नाच-गाने की ओर खींचना चाहती हो।

सोना : क्या तुलजा भवानी के सामने नाचना कोई बुरी बात है ? आज हम लोगों ने दीपदान किया और मनभर नाचा, यों (नाचती है)। कुँवर जी भी तो बड़ी देर तक हमारा नाच देखते रहे। मैं भी उनको देखकर बहुत नाची। उनको हमारा नाच बहुत अच्छा लगा! मुझे भी उनको देखकर बहुत अच्छा लगा! देखों, पैरों की यह ताल (नुपूर की झनकार)।

पन्ना : बस, बस, सोना। अगर तू रावल जी की लड़की न होती तो ...

सोना : कटार भोंक देतीं! कटार! (अट्टहास करती है) धाय माँ, तुमने उदयसिंह के सामने तो अपने पुत्र चंदन को भी भुला दिया।

पन्ना : रहने दे। जानती नहीं बनवीर का राज्य है।

सोना : ओहो, बनवीर! उन्हें श्री महाराज बनवीर कहो। हमारे लिए वे एक रेशम की झूल लाए थे। उसे सिर से ओढ़कर नाचने से ऐसा लगता था, जैसे मकड़ी के जाले के आर-पार चंद्रमा की किरणें थिरक रही हैं। हाँ...

पन्ना : बहुत नाचती हो। बनवीर की तुम पर बड़ी कृपा हैं।

सोना : द्रौपदी के चीर की तरह! आज प्रातःकाल उन्होंने मुझे बुलाया और कहा ... धाय माँ! तुम बुरा तो नहीं मानेगी ?

पन्ना : मैं क्यों बुरा मानूँगी ?

सोना : उन्होंने कहा, महल में धाय माँ अरावली पहाड़ बनकर बैठ गई हैं। अरावली पहाड़! (हँसती है) तो तुम लोग बनास नदी बनकर बहो न! खूब नाचो, गाओ। यों आज कोई उत्सव का दिन नहीं था, फिर भी उन्होंने कहा मेरे बनवाए हुए मयूर-पक्ष कुंड में दीपदान करो। मालूम हो, जैसे मेघ पानी-पानी हो गए हों और बिजलियाँ टुकड़े-टुकड़े हो गई हों।

पन्ना : बड़ी उमंग में हो आज!

सोना : दीपकों के साथ उमंग भी लौ देने लगी है, धाय माँ! सारा जीवन ही एक दीपावली का त्योहार बन गया है।

पन्ना : तो यही त्योहार मना रही हो तुम ?

सोना : मैं ही क्या सारे नगर-निवासी यह त्योहार मना रहे हैं। नहीं मना रही हो, तो तुम! धाय माँ, तुम पहाड़ बनने से क्या होगा ? राजमहल पर बोझ बनकर रह जाओगी बोझ! और नदी बनो तो तुम्हारा बहता हुआ बोझ, पत्थर भी अपने सिर पर धारण करेंगे, आनंद और मंगल तुम्हारे किनारे होंगे, जीवन का प्रवाह होगा, उमंगों की लहरें होंगी जो उठने में गीत गाएंगी, गिरने में नाच नाचेंगी।

पन्ना : बनवीर के अनुग्रह ने तुम्हें पागल बना दिया है सोना!

सोना : धाय माँ! पागल कौन नहीं ? महाराजा विक्रमादित्य अपने सात हजार पहलवानों के साथ पागल हैं। मल्ल-क्रीड़ा ही तो उनका पागलपन है। महाराज बनवीर, महाराणा विक्रमादित्य की आत्मीयता में पागल हैं। सारा नगर आज के त्योहार में पागल है। तुम कुँवर उदयसिंह के स्नेह में पागल हो और मैं ? (हँसकर) मेरी कुछ न पूछों, धाय माँ मैं तो इन सबके पागलपन में पागल हूँ। तुम चाहे जो कहो! हाँ, तो कुँवर उदयसिंह कहाँ हैं ?

पन्ना : कुँवर उदयसिंह को छोड़ो, सोना! वे बहुत थक गए हैं। अब सो रहे होंगे। तुम जाओ। यहाँ कहीं तुम्हारा पागलपन कम न हो जाए।

सोना : मेरा पागलपन ? धाय माँ, पागलपन कहीं कम होता है ? पहाड़ बढ़कर कभी छोटे हुए हैं? नदियाँ आगे बढ़कर कभी लौटी हैं ? फूल खिलने के बाद कभी कली बने हैं ? सब आगे बढ़ते हैं। नहीं बढ़ती हो तो सिर्फ तुम। सदा एक-सी।

पन्ना : सोना! मुझे किसी से ईर्ष्या नहीं है। मैं जैसी हूँ अच्छी हूँ। राजसेवा में जीवन जा रहा है – यही मेरे भाग्य की बात है।

सोना : भाग्य ! भाग्य तो सबके होता है, धाय माँ! ये नुपूर मेरे पैरों में पड़े हैं तो इनका भी भाग्य है। मेरे पैरों की गति में गीत गाते हैं, तो वह भी इनका भाग्य है, मेरे आगमन का संदेश पहले ही पहुँचा देते हैं, तो वह भी इनका भाग्य है। और जब मेरे पैर रुक जाते हैं तो ये मौन हो जाते हैं, वह भी इनका भाग्य है। भाग्य तो सबके होता है, धाय माँ! तुम नगर के उत्सव में भाग नहीं ले रही हो, न लो। महाराज बनवीर का साथ नहीं दें रही हो, न दो! मैं कौन होती हूँ बीच में बोलनेवाली!

पन्ना : तो क्या मेरे उत्सव में जाने और न जाने का संबंध बनवीर की इच्छा से है ?

सोना : कुँवर को ही भेज देती।

पन्ना : कैसे भेज देती ? इतने आदमियों के बीच उसे कैसे भेज देती ? महाराणा साँगा के वंश के एक वही तो उजाले हैं। महाराणा रतनसिंह तीन ही वर्ष राज करके सूर्यलोक चले गए। विक्रमादित्य भी बनवीर की कूटनीति से अधिक दिनों तक ...

सोना : धाय माँ, तुम विद्रोह की बात करती हो।

पन्ना : आँधी में आग की लपटें तेज ही होती हैं, सोना! तुम भी उसी आँधी में लड़खड़ाकर गिरोगी। तुम्हारे ये सारे नूपुर बिखर जाएँगे। न जाने किस हवा का झोंका तुम्हारे इन गीत की लहरों को निगल जाएगा। चित्तौड़ रास-रंग की भूमि नहीं है, जौहर की भूमि है। यहाँ आग की लपटें नाचती हैं, सोना जैसी रावल की लड़कियाँ नहीं।

सोना : (क्रोध से चीखकर) धाय माँ!

पन्ना : तोड़ो ये नूपुर! यहाँ का त्योहार आत्म-बलिदान है। यहाँ का गीत मातृभूमि की वेदना का गीत है। उसे सुनो और समझो।

सोना : (शांत स्वर में) समझ लिया, धाय माँ!

पन्ना : तो यहाँ से जाओ।

(सोना का धीरे-धीरे प्रस्थान। उसके नूपुर धीरे-धीरे बजते हुए दूर तक सुन पड़ते हैं।)

पन्ना : अंधेरी रात! यह रास-रंग!! नगर ने सब लोगो का जमाव!!! कुँवर उदयसिंह के लिए बुलावा!!! यह सब क्या है ?

चंदन : (दूर से पुकारते हुए) माँ! माँ!!

पंन्ना : क्या, मेरे लाल ?

चंदन : कुँवर जी कहाँ हैं, माँ!

पन्ना : रूठकर सो गए हैं ?

चंदन : उन्होंने भोजन कर लिया ?

पन्ना : नहीं! तुम भोजन कर लो। मैं थोड़ी देर बाद उन्हें उठाकर बहलाकर भोजन करा दूँगी।

चंदन : मुझे अकेले भोजन करना अच्छा न लगेगा, माँ!

पन्ना : भोजन कर लो मेरे चंदन! मेरे लाल! सज्जा ने तुम्हारे लिए अच्छा भोजन बनाया है। तुम्हें अच्छी-अच्छी बातें सुनाती हुई भोजन करा देगी। मैं भी अभी आती हूँ। तुम्हारी माला टूट गई थी उसी को ठीक कर रही हूँ। बस, थोड़े दाने और रह गए हैं।

चंदन : माँ, कल कुँवर जी की माला को ठीक कर देना। वह भी टूट रही है। सोना ने उसे पकड़कर खींच दिया था।

पन्ना : अच्छा चंदन! वह भी ठीक कर दूँगी।

(चंदन का प्रस्थान)

(एकाएक घर की कुछ चीजों के गिरने की धमक! शीघ्रता से सामली का प्रवेश)

सामली : (चीखकर पुकारती हुई) धाय माँ, धाय माँ!

पन्ना : कौन, कौन सामली ?

सामली : (बिलखते हुए) धाय माँ, धाय माँ! कुँवर जी कहाँ हैं ? कुँवर जी कहाँ हैं?

पन्ना : क्यों, कुँवर जी को क्या हुआ ?

सामली : उनका जीवन संकट में है।

पन्ना : कहाँ! कैसे! यह तुम क्या कह रही हो ?

सामली : उनका जीवन बचाओं, धाय माँ!

पन्ना : (चीखकर) सामली! कहाँ हैं कुँवर जी ?

(अंदर की तरफ भागती है)

सामली : (बिलखते हुए) हाय ! सर्वनाश हो रहा है। क्या मेवाड़ को ऐसे ही दिन देखने थे ? हाय ! क्या हो रहा है ? तुलजा भवानी ! तुम चित्तौड़ की देवी हो। कैसे कहूँ कि तुम्हारे त्रिशूल में अब शक्ति नहीं रही। मेवाड़ का भाग्य ...

पन्ना : (फिर प्रवेश कर) सो रहा है। मेरा कुँवर सो रहा है कहीं तो कुछ नहीं हुआ। कुँवर जी रूठ गए थे, वे तलवार लिए हुए भूमि पर ही सो गए। तलवार उनके हाथों से खिसक गई है, पर वे शांति से सो रहे हैं। मेरे कुँवर को कुछ नहीं हुआ।

सामली : कुँवर जी अच्छे हैं। तुलजा भवानी कुशल करें। पर धाय माँ! महाराणा विक्रमादित्य जी की हत्या हो गई।

पन्ना : (चीखकर) महाराणा की हत्या हो गई ? किसने की ?

सामली : बनवीर ने। महाराणा सो रहे थे। उसने अवसर पाकर उनकी छाती में तलवार भोंक दी।

पन्ना : (चीखकर) हाय ! महाराणा विक्रमादित्य जी ! (सिसकने लगती है।)

सामली : बनवीर ने नगर भर में आज नाच-गाने का त्योहार मनवाया जिससे नगर-निवासियों का ध्यान नाच-रंग में ही रहे। मौका देखकर वह राजमहल गया। अंतःपुर में वह आता-जाता था। किसी ने रोका नहीं, उसने महाराणा के कमरे में जाकर उनकी हत्या कर दी। (सिसकियाँ लेने लगती है।)

पन्ना : (स्थिर होकर) आज कुसमय रास-रंग की बात सुनकर मेरे मन में शंका हुई थी, इसलिए मैंने कुँवर जी को वहाँ जाने से रोक दिया था। संभव था कुँवर वहाँ जाते और बनवीर अपने सहायकों से कोई कांड रच देता।

सामली : इसलिए मैं दौड़ी आई हूँ, धाय माँ ! लोगों ने बनवीर को कहते सुना है कि वह कुँवर उदयसिंह को भी सिंहासन का अधिकारी समझकर जीवित रहने नहीं देगा। वह निष्कंटक राज करेगा, धाय माँ।

पन्ना : विलासी और अत्याचारी राजा कभी निष्कंटक राज्य नहीं कर सकता।

सामली : लेकिन रक्त से भींगी तलवार लेकर वह सीना ताने हुए अपने महल में गया है।

पन्ना : लोगों ने उसे पकड़ा नहीं ? सैनिक चुपचाप देखते ही रहे ?

सामली : सैनिकों को उसने अपनी तरफ मिला लिया है। लोग उससे डरते हैं। महाराणा विक्रमादित्य का राज्य भी तो ऐसा नहीं था कि लोग उनसे प्रेम रखते। उनके पहलवानों की सहायता से राज्य नहीं चल सकता। सभी सामंत महाराणा से असंतुष्ट थे।

पन्ना : अब क्या होगा ?

सामली : थोड़ी देर बाद ही वह कुँवर जी को मारने आएगा। आज की रात बहुत अंधेरी है। आज की रात में ही वह अपने को पूरा महाराणा बना लेना चाहता है। किसी तरह से भी हो कुँवर जी की रक्षा होनी चाहिए, धाय माँ !

पन्ना : कुँवर जी की रक्षा ... (सोचते हुए) कुँवर जी की रक्षा ! अवश्य होगी ... अवश्य होगी। अब मेवाड़ का उत्ताराधिकारी एक यही तो राजपूत रक्त है। दासी-पुत्र बनवीर को चित्तौड़ सहन नहीं कर सकेगा।

सामली : यह तो आगे की बात है पर तुम कुँवर जी की रक्षा किस तरह करोगी ?

पन्ना : मै इस अँधेरी रात में ही उसे लेकर कुंभलगढ़ भाग जाऊँगी।

सामली : और चंदन कहाँ रहेगा ?

पन्ना : जहाँ भगवती तुलजा उसे रखेगी। मेरे महाराणा का नमक मेरे रक्त से भी महान् है। नमक से रक्त बनता है, रक्त से नमक नहीं।

सामली : धन्य हो, धाय माँ ! पर तुम नहीं भाग सकोगी। तुम महलों से निकल भी नहीं सकोगी। आते समय मैंने देखा था कि बनवीर के सैनिक तुम्हारा महल घेरने को आ रहे थे। एक ओर से तो तुम्हारा महल घिर ही चुका था।

पन्ना : हा ! भगवान् एकलिंग ! अब क्या होगा ?

सामली : जैसे भी हो कुँवर जी की रक्षा तुम्हें करनी ही है।

पन्ना : मुझे सैनिकों की सहायता नहीं मिल सकती ?

सामली : सैनिक तो उसके हैं धाय माँ !

पन्ना : और सामंत ?

सामली : उनमें इतना साहस नहीं है।

पन्ना : (जोर से) दरवाजे पर कौन है ?

(कीरत बारी का प्रवेश)

कीरत : अन्नदाता ! कीरत बारी हौं। धाय माँ के चरन लागौं।

पन्ना : कीरत ! तुम हो ? बाहर तो कोई नहीं है ?

कीरत : अन्नादाता! बाहर सिपाहियों का डेरा लग रहा है। जान नहीं पड़ता अन्नदाता कि आधी रात को क्या हो रहा है। पेड़ों में किसी का भी पैसारा नहीं हो पाता। मैं तो बारी हूँ, इससे कोई कुछ बोला नहीं।

पन्ना : तो तुम बेखटके चले आए ?

कीरत : अन्नदाता! मैं तो जूठी पत्तल उठाता हूँ, कोई माल-मत्ता तो मेरे पास नहीं। टोकरी है और उसमें पत्ते हैं। कुँवर जू ने ब्यालू कर ली धाय माँ ? मैं जूठन पा लूँ ?

पन्ना : नहीं।

कीरत : कुँवर जू जुग-जुग जियें धाय माँ ! जब से कुँवर जू बूँदी से आए हैं तब से सगर महल में उजियारा फैल गया है। राणा विक्रमादित्य जब हर-भजन करेंगे तो धाय माँ! अपना चौंर छत्तर कुँवर जू को ही तो सौपेंगे। सच जानो धाय माँ! मै तो उनके लिए अपनी जान तक हाजिर कर सकता हूँ। (ठहरकर) धाय माँ कुछ सोच रही हैं ?

पन्ना : (चौंककर) ऐं ! हाँ, मैं सोच रही हूँ। (सामली से) तुम बाहर जाकर देखो सिपाही कहाँ-कहाँ खड़े हैं और कितने सिपाही हैं?

सामली : बहुत अच्छा, धाय माँ ! मैं जाती हूँ।

(प्रस्थान)

पन्ना : तो कीरत ! तुम कुँवर जी को बहुत प्यार करते हो ?

कीरत : अन्नदाता ! प्यार कहने में जबान पर कैसे आवे ? वो तो दिल की बात है। मौके पे ही देखा जाता है और कहने को तो मैं कह चुका हूँ कि उनके लिए अपनी जान तक हाजिर कर सकता हूँ।

पन्ना : तो वह मौका आ गया है, कीरत।

कीरत : मौका ! कैसा मौका ?

पन्ना : कुँवर जी को बचाने का।

कीरत : कौन से सिर पै भैरू बाबा की आँख चढ़ी है जो कुँवर जी का बाल बाँका कर सके ? और कीरत के रहते ? धाय माँ, हँसी तो नहीं कर रही हैं ? अन्नदाता!

पन्ना : नहीं कीरत, हँसी का समय नहीं है। कुँवर जी के प्राण संकट में हैं।

कीरत : हुकुम दें, अन्नदाता।

पन्ना : अच्छा तो सुनो। तुम बारी हो, तुम्हें बाहर जाने से कोई नहीं रोकेगा। तुम तो टोकरी में जूठी पत्तल उठा कर जाते ही हो।

कीरत : ठीक कहती हैं, अन्नदाता। आते वक्त भी किसी ने नहीं रोका।

पन्ना : तो तुम कुँवर जी को टोकरी में लिटाकर उन पर गीली पत्तलें डालकर महल से बाहर निकल जाओ।

कीरत : वाह ! अन्नदाता ने खूब सोचा ! मैं ऐसे निकल जाऊँगा कि सिपाही लोग मुँह देखते ही रह जाएँगे। तो कुँवर जी कहाँ हैं ?

पन्ना : सो रहे हैं। आज भूमि पर ही सो गए। उन्हें धीरे से उठाकर अपनी टोकरी में सुला लेना। वे जागने न पाएं।

कीरत : बहुत अच्छा अन्नदाता ! कुँवर जी कहाँ हैं ?

पन्ना : मेरे कमरे में नीचे ही सो गए हैं। तुम्हारी टोकरी तो काफी बड़ी है।

कीरत : अन्नदाता ! आपके जस ने ही तो मेरी टोकरी बड़ी कर दी है। सारे राजमहल की पत्तलें छोटी टोकरी में कैस आ सकती हैं ? और अन्नदाता ! आज तो बनवीर के साथ बहुत सामंतों ने खाया है। मैंने भी सोचा आज बड़ी टोकरी ले चलूँ सो वो ही लाया हूँ।

पन्ना : और हाँ, कुँवर जी को लेकर तुम बेरिस नदी के किनारे मिलना ! वहाँ जहाँ श्मशान है।

कीरत : ठीक है अन्नदाता ! वहीं मिलूँगा। वहाँ मुझ पै किसी भी आदमी की नजर न पड़ेगी।

पन्ना : तो जाओ कीरत ! आज तुम-जैसे एक छोटे आदमी ने चित्तौड़ के मुकुट को सँभाला है। एक तिनके ने राजसिंहासन को सहारा दिया है। तुम धन्य हो।

कीरत : अन्नदाता ! धन्य तो आप हैं कि मुझको आपने ऐसी सेवा करने का काम सौंपा है। तो मैं चलूँ।

(सामली का प्रवेश)

सामली : धाय माँ ! महल चारों तरफ से सिपाहियों से घिर गया है। उत्तर की तरफ ही सात सिपाही हैं। बाकी तीनों तरफ बीस-बीस सिपाही पहरा दे रहे हैं। शायद उत्तर की तरफ के सिपाही बनवीर को लेने गए हैं।

पन्ना : कोई चिंता की बात नहीं, सामली ! तू यहीं ठहरना मैं अभी आती हूँ। (कीरत से) चलो कीरत !

(दोनों का प्रस्थान)
(पन्ना का प्रवेश)

पन्ना : अब ठीक है। कुँवर की रक्षा हो गई।

सामली : पर एक बात है, धाय माँ !

पन्ना : क्या ?

सामली : बनवीर यहाँ जरूर आएँगे। वे तुम्हारे महल में कुँवर जी की खोज करेंगे। जब वे कुँवर जी को न पाएँगे और तुमसे पूछेंगे तो तुम क्या उत्तर दोगी?

पन्ना : कह दूँगी कि मैं नहीं जानती।

सामली : इससे वे नहीं मानेंगे। क्रोध में आकर अगर उन्होंने तुम्हारे ऊपर तलवार चला दी तो कुँवर जी तुम्हारे बिना कैसे जिएँगे ?

पन्ना : मुझे उनकी चिंता नहीं है, सामली !

सामली : पर चिंता कुँवर जी की है। तुम्हारे बिना वे भी तो जीवित नहीं रहेंगे। फिर तुम्हारा बलिदान चित्तौड़ के किस काम आएगा ?

पन्ना : सचमुच कुँवर जी मेंरे बिना नहीं जिएँगे। थोड़ी-सी बात पर तो रूठ जाते हैं। मुझे न पाकर उनका क्या हाल होगा ?

सामली : किसी तरह बनवीर को धोखा नहीं दे सकती ?

पन्ना : दे सकती हूँ ?

सामली : किस तरह ?

पन्ना : कुँवर जी की शय्या पर किसी और को सूला दूँगी। वह क्रोध में अंधा रहेगा ही। पहचान भी नहीं सकेगा कि वह कौन सोया है ?

सामली : तो कुँवर जी की शय्या पर किसे सुला दोगी ?

पन्ना : किसे सुला दूँगी ? (सोचकर) सामली मेरे हृदय पर वज्र गिर रहा है। मेरी आँखों में प्रलय का बादल घुमड़ रहा है। मेरे शरीर के एक-एक रोम पर बिजली तड़प रही है।

सामली : धाय माँ सँभल जाओ ! ऐसी बातें न कहो। कुँवर जी की शय्या पर ...

पन्ना : सुला दूँगी। उसी को ! उसी को सुला दूँगी जो मेरी आँखों का तारा है ... चंदन ... चंदन को सुला दूँगी सामली ! (सिसकियाँ) चंदन को सुला दूँगी। उस नन्हें-से लाल को हत्यारे की तलवार के नीचे रख दूँगी।

सामली : धाय माँ ! ऐसा मत कहो। ऐसा मैं नहीं सुन सकूँगी।

(प्रस्थान)

पन्ना : चली गई। कहती हैं, ऐसा मैं नहीं सुन सकूँगी। जो मुझे करना है, वह सामली सुन भी न सकेगी। भवानी ! तुमने मेरा हृदय को कैसा कर दिया ! मुझे बल दो कि मैं राजवंश की रक्षा में अपना रक्त दे सकूँ। अपने लाल को दे सकूँ। यही राजपूतनी का व्रत है। यही राजपूतनी की मर्यादा है। यही राजपूतनी का धर्म है। मेरा हृदय वज्र का बना दो ! माता के हृदय के स्थान पर पत्थर बना दो जिससे ममता को स्रोत बंद हो जाए। भवानी ! मैं चित्तौड़ की सच्ची नारी बनूँ। (नेपथ्य में चंदन का स्वर माँ! ... माँ! ... माँ!)

(चंदन का प्रवेश)

चंदन : माँ! देखो, मेरे पैर में चोट लग गई। यह रक्त निकल रहा है।

पन्ना : कहाँ रक्त निकल रहा है ? लाओ, देखूँ मेरे लाल ! ओहो ! अँगूठे में यह चोट कैसे लगी? रक्त निकल रहा है ? कितना रक्त निकल रहा है। लाओ, इसे बाँध दूँ। (अपने साड़ी से पल्लू का टुकड़ा फाड़ती है।) पैर सीधा करो ! हाँ ठीक ... इसे बाँध देती हूँ। (बाँधते हुए) यह चोट कैसे लगी, लाल?

चंदन : मैं जैसे ही भोजन करके उठा माँ, सज्जा ने कहा कि महल के चारों तरफ सिपाही इकट्ठे हो रहे हैं। मैं देखने के लिए ऊपर के झरोखे में चढ़ गया। अँधेरे में कुछ दिखाई नहीं दिया। जैसे ही मैं नीचे कूदा एक टूटा हुआ शीशा अँधेरे में चुभ गया। कोई बात नहीं है माँ, रक्त तो निकला ही करता है। पर ये सिपाही महल के चारों तरफ क्यों इकट्ठे हो रहे हैं?

पन्ना : आज नाच-रंग का दिन है न ! वही सब देखने के लिए आए होंगे या फिर सोना ने उन्हें बुलाया होगा। वह नीचे नाच रही होगी।

चंदन : माँ ! सोना अच्छी लड़की नहीं है। मैं कल उससे कहूँगा माँ, कि कुँवर जी को अपना नाच न दिखाया करे। उनका मन आखेट करने में नहीं लगता।

पन्ना : मैं भी उसे समझा दूँगी, चंदन !

चंदन : कुँवर जी कहाँ हैं, माँ ! आज भोजन में भी साथ नहीं चले।

पन्ना : कहीं सो रहे होंगे।

चंदन : तब से सो रहे हैं ? माँ, कुँवर जी को ज्यादा नींद क्यों आती है ? मैं देखूँ कहाँ सो रहे हैं।

पन्ना : बुरा मानकर कहीं सो रहे होंगे।

चंदन : सोना ने ही उन्हें बुरा मानना सिखला दिया माँ ! नहीं तो कुँवर जी पहले कभी बुरा नहीं मानते थे। खेल.खेल मे भी बुरा नहीं मानते थे। साथ खेलते थे, साथ खाते थे। आज अकेले कुछ खाया भी नहीं गया माँ।

पन्ना : तो चलो चंदन ! मैं तुम्हें जी भर के खिला दूँ।

चंदन : अब कुँवर जी के साथ ही कल खाऊँगा, माँ कल हम दोनों साथ बैठेंगे ... तुम प्रेम से परोस-परोस-कर खिलाना। कल खूब खाऊँगा, माँ ! कुँवर जी से भी ज्यादा। कहते हैं कि मैं चंदन से ज्यादा खाता हूँ। अब कल से यह कहना भूल जाएँगे। (हँसता है) क्यों माँ?

पन्ना : ठीक है, लाल !

चंदन : माँ ! अच्छी तरह से क्यों नहीं बोलती ? और तुम्हारी आँखें ... तुम्हारी आँखों में पानी कैसा? माँ! ये तुम्हारी आँखों में ...

पन्ना : कहाँ चंदन ! पानी कहाँ ? और तुम्हारे अँगूठे से रक्त की धार बहे, मेरी आँखों से एक बूँद पानी भी न निकले ?

चंदन : ओह ! माँ, तुम तो बातें करने में बड़ी अच्छी हो। जब मैं बड़ा होकर बहुत-सी जागीरें जीतूँगा, माँ ! तो मैं तुम्हारे लिए एक मंदिर बनवाऊँगा। देवी के स्थान पर तुमको बिठलाऊँगाा और तुम्हारी पूजा करूँगा। तुम अपनी पूजा करने दोगी ?

पन्ना : तुझसे मुझे ऐसी ही आशा है, चंदन। अब बहुत बातें न करो, चंदन। रात अधिक हो रही है, सो जाओ।

(कुछ आहट होती है)

चंदन : माँ ! माँ, देखो उस दरवाजे से कौन झाँक रहा है ?

पन्ना : कीरत बारी होगा। तुम्हारा भोजन उठाने आया होगा। मैं देखती हूँ। (उठकर देखती है)

चंदन : कोई और हो तो मैं अपनी तलवार लाऊँ !

पन्ना : (लौटती हुई) कोई नहीं है। महल में किसका डर है ? लाल ! तुम सो जाओ।

चंदन : कहाँ सोऊँ ! सज्जा तो अभी रसोईघर में ही होगी। मेरी शय्या ठीक न की होगी।

पन्ना : तो ... तो ... तुम कुँवर जी की शय्या पर सो जाओ। शय्या ठीक होने पर तुम्हें उस पर लिटा दूँगी।

चंदन : तुम बहुत अच्छी हो, माँ ! आज कुँवर जी की शय्या पर लेटकर देखूँ ! अब तो मैं भी राजकुमार हो गया। (एकाएक स्मरण कर) पर मेरी माला ! राजकुमार के गले में माला होती है न ! तुमने मेरी टूटी माला गूँथ दी ?

पन्ना : नहीं गूँथ पायी, लाल। सामली आ गई थी।

चंदन : कल गूँथ देना। भूलना नहीं माँ ! (शय्या पर लेटता है) आहा माँ ! कितनी नरम शय्या है। जी होता है, सदा इसी पर सोता रहूँ।

पन्ना : (चीखकर) चंदन।

चंदन : क्या हुआ माँ !

पन्ना : कुछ नहीं ... कुछ ... नहीं। आज मेरा जी कुछ अच्छा नहीं है। कभी-कभी कलेजे में शूल-सी उठती है। तुम सो जाओ तो मैं भी सो जाऊँगी।

चंदन : मैं किसी वैद्य के यहाँ जाऊँ, माँ ?

पन्ना : नहीं, वैद्य के पास इसकी दवा नहीं है। यह आप-से-आप उठती है और आप-से-आप शांत हो जाती है। तुम सो जाओ ... मैं भी कुँवर को खिलाकर जल्दी सो जाऊँगी।

चंदन : (चौकंकर) माँ, एक काली छाया मेरे सिर के पास आई, उसने मुझे मारने को तलवार उठाई? माँ वह काली छाया ... काली छाया ...

पन्ना : मैं तो तुम्हारे पास बैठी हूँ लाल ! यहाँ कौन-सी काली छाया आएगी ?

चंदन : कोई छाया नहीं आएगी माँ ! पर न जाने क्यों नींद नहीं आ रही है। तुम मुझे कोई गीत सुना दो, सुनते-सुनते सो जाऊँ।

पन्ना : अच्छी बात है, मेरे लाल ! मैं गीत ही गाऊँगी। अपने लाल को सुला दूँ।

(करुण स्वर से गीत गुनगुनाती है)

उड़ जा रे पंखेरूआ, साँझ पड़ी।
चार पहर बाटड़ली जोही मेड़्याँ खड़ी ए खड़ी।
उड़ जा पंखेरूआ, साँझ पड़ी। डबडब भरिया नैन दिरिघड़ा
लग रई झड़ी ए झड़ी। उड़ जा रे पंखेरूआ, साझ पड़ी।।

तेरी फिकर हूँ भई दिवानी। मुसकल घड़ी ए घड़ी। उड़ जा पंखेरूआ...।।

(धीरे-धीरे गाना समाप्त होता है)

पन्ना : (फिर पुकारती है) चंदन !

(चंदन के न बोलने पर पन्ना हटकर जोर से सिसकी लेती है)

पन्ना : मेरा लाल सो गया। मैंने अपने लाल को ऐसी निद्रा में सुला दिया कि अब यह न उठेगा। (सिसकियाँ लेती हैं) ओह पन्ना ! तूने अपने भोले बच्चे के साथ कपट किया है ! तूने अंगारों की सेज पर अपने फूल-से लाल को सुला दिया है। तू सर्पिणी है। सर्पिणी जो अपने ही बच्चे को खा डालती है। जान-बूझकर अपने पुत्र की हत्या कराने जा रही है। हाय! अभागिन माँ ! संसार में तेरा भी जन्म होने को था ! (सिसकियाँ लेती है। फिर चंदन को संबोधित करते हुए) लाल ! तुम्हारी माला मैं नहीं गूँथ सकी। तुम्हारा जीवन अधूरा होने जा रहा है तो माला कैसे पूरी होती ? (सिसकियाँ) आज तुम भूखे ही रह गए मेरे लाल! आज अंतिम दिन मैं तुम्हें अपने हाथों से भोजन भी न करा सकी। तुम क्या जानो कि कल तुम और कुँवर

साथ-साथ कैसे भोजन करोगे ! कहते थे कल तुम परोसकर खिलाना। मैं अब किसे खिलाऊँगी, चंदन ! (सिसकियाँ) तुम्हारे अँगूठे से रक्त की धारा बही। अब हृदय से रक्त की धारा बहेगी तो मैं कैसे रोक सकूँगी ! मेरे लाल ! मेरे चंदन ! जाओ, यह रक्त-धारा अपनी मातृभूमि पर चढ़ा दो। आज मैंने भी दीपदान किया है। दीपदान ! अपने जीवन का दीप मैंने रक्त की धारा पर तैरा दिया है। ऐसा दीपदान भी किसी ने किया है ! एक बार तुम्हारा मुख देख लूँ। कैसा सुंदर और भोला मुख है ! (सिसकियाँ लेती है।)

(एकाएक भड़भड़ाहट की आवाज होती है। हाथ में तलवार लिये बनवीर आता है।)

बनवीर : (मद्य पीने से उसके शब्द लड़खड़ा रहे हैं) पन्ना !

पन्ना : महाराज बनवीर !

बनवीर : सारे राजपूताने में एक ही धाय माँ है पन्ना ! सबसे अच्छी ! मैं ऐसी धाय माँ को प्रणाम करने आया हूँ। (रुककर) ऐं, धाय माँ की आँखों में आँसू !

पन्ना : नहीं ... आँसू नहीं हैं। आज मेरे कुँवर बिना भोजन किए ही सो गए।

बनवीर : आज के दिन भोजन नहीं किया ? अरे, आज तो उत्सव का दिन है। आनंद का दिन है (अट्टहास करता है) मेरे महल में तीन सौ सामंतों ने भोजन किया। आज कीरत की टोकरी देखतीं। भोजन उठाते-उठाते वह जिंदगी भर के लिए थक गया होगा। (हँसता है) जिंदगी भर के लिए ! तो कहाँ हैं कुँवर उदयसिंह? मैं उन्हें अपने हाथ से भोजन करा दूँ।

पन्ना : कुँवर सो गए हैं। वे किसी के हाथ से भोजन नहीं करते, मैं ही उन्हें खिला दूँगी।

बनवीर : धाय माँ हो न ! पन्ना ! आज तुमने सोना का नाच नहीं देखा ! ओह ! कितना अच्छा नाचती है। मैंने उससे कह दिया था कि वह कुँवर उदयसिंह को और धाय माँ को अपना नाच दिखला दे।

पन्ना : वह आई थी। शायद तुम्हीं ने उसे भेजा था, पर कुँवर जी का जी अच्छा नहीं था, इसलिए मैंने उन्हें नहीं भेजा !

बनवीर : जी अच्छा नहीं था, और आज का दीपदान भी तुमने नहीं देखा।

पन्ना : मेरे लिए देखने की बात नहीं है, करने की बात है।

बनवीर : ठीक है, धाय माँ तो मंगल-कामनाओं की देवी है। वे दीपदान करके चित्तौड़ का कल्याण करेंगी। मैं भी चित्तौड़ का कल्याण करूँगा। एक बात और कहूँ, पन्ना ! मैं तुम्हें मारवाड़ में एक जागीर देना चाहता हूँ। वहाँ तुम्हारे लिए तुलजा भवानी का मंदिर बनेगा। मंदिर! सारे लोग तुम्हे इतनी श्रद्धा से देखेंगे कि तुलजा भवानी में और तुममें कोई भी अंतर न होगा। तुम्हीं देवी के उस मंदिर मे रहोगी। लोग तुम्हारी पूजा करेंगे।

पन्ना : (चीखकर) बनवीर !

बनवीर : (अट्टहास कर) महाराज बनवीर नहीं कहा ! मेरे कहने भर से तुम देवी हो गई। महाराज बनवीर को बनवीर कहने लगी ! (हँसता है) देवी को प्रणाम। देखो। अब तुम्हें मोह-ममता से दूर रहना होगा। तुम कुँवर उदयसिंह को मुझे दे दोगी और मैं उसे यह तलवार दूँगा।

(तलवार खींच लेता है)

पन्ना : ऐं, यह तलवार ! इस पर रक्त क्यों लगा है ?

बनवीर : रक्त तो तलवार की शोभा है, पन्ना ! वह अनंत सुहाग से भरी है। यह तो उसके सिंदूर की रेखा है। बिना रक्त के तलवार भी कभी तलवार कहला सकती है ?

पन्ना : यह तलवार म्यान में रख लो, महाराज !

बनवीर : क्या तुम्हें भय लगता है। चित्तौड़ में तलवार से किसी को भय नहीं लगता। धाय माँ होने पर तुममें इतनी ममता भर गई कि तलवार नहीं देख सकती? पन्ना ! तलवारें आसानी से म्यान के भीतर नहीं जातीं।

पन्ना : आधी रात हो चुकी है, महाराज बनवीर ! विश्राम करो।

बनवीर : विश्राम मैं करूँ ? बनवीर ! जिसे राजलक्ष्मी को पाने के लिए दूर तक की यात्रा करनी है। मैं अपने साथ कुँवर उदयसिंह को भी ले जाना चाहता हूँ।

पन्ना : यह नहीं होगा ... यह नहीं होगा, महाराज बनवीर।

बनवीर : जागीर नहीं चाहतीं ?

पन्ना : नहीं।

बनवीर : तो उदयसिंह के बदले जो माँगो दिया जाएगा।

पन्ना : राजपूतानी व्यापार नहीं करती, महाराज ! वह या तो रणभूमि पर चढ़ती है या चिता पर।

बनवीर : दो में से किसी पर भी तुम नहीं चढ़ सकोगी। तुम्हारा महल सैनिकों से घिरा है।

पन्ना : सैनिकों को किसने आज्ञा दी ? महाराज विक्रमादित्य ...

बनवीर : (बीच में ही) वे अब इस संसार में नहीं हैं। पन्ना ! उन्होंने रक्त की नदी पार कर ली है। उसी रक्त की लहर मेरी तलवार पर है।

पन्ना : ओह बनवीर ! हत्यारा बनीवर !

बनवीर : महाराणा बनवीर को हत्यारा बनवीर नहीं कह सकती, पन्ना! हत्यारा बनवीर कहने वाली जीभ काट ली जाएगी।

पन्ना : तो लो मेरी जीभ काट लो और यहाँ से चले जाओ। महाराणा विक्रमादित्य ...।

बनवीर : बार-बार विक्रमादित्य का नाम क्यों लेती हो ? प्रेतों और पिशाचों को वह नाम लेने दो। यदि मेरा नाम लेना है तो जय-जयकार के साथ नाम लो।

पन्ना : धिक्कार है बनवीर ! तुम्हारी माँ ने तुम्हें जन्म देते ही क्यों न मार डाला।

बनवीर : चुप रह धाय ! कहाँ है उदयसिंह ?

पन्ना : तू उदयसिंह को छू भी नहीं सकता। नीच ! नारकी ! महाराणा विक्रमादित्य की हत्या के बाद तू उदयसिंह को देख भी नहीं सकता।

बनवीर : मैं नहीं देखूँगा, मेरी तलवार देखेगी। विक्रम के रक्त से सनी हुई तलवार अब उदयसिंह के रक्त से धोई जाएगी।

पन्ना : ओह क्रूर बनवीर ! तुम तो उदयसिंह के संरक्षक थे। रक्षा के बदले क्या तुम उसकी हत्या करोगे ? नहीं-नहीं, यह नहीं हो सकता, यह नहीं हो सकता है। महाराज बनवीर ! तुम राज्य करो चित्तौड़ पर, मेवाड़ पर, सारे राजपूताने पर राज्य करो, पर कुँवर उदयसिंह को छोड़ दो। मैं उसे लेकर संन्यासिनी हो जाऊँगी। तीर्थ में वास करूँगी। तुम्हारा मुकुट तुम्हारे माथे पर रहे, पर मेरा कुँवर भी मेरी गोद में रहे। बनवीर ! महाराज बनवीर मुझे यह भिक्षा दे दो।

बनवीर : दूर हट दासी ! यह नाटक बहुत देख चुका हूँ। उदयसिंह की हत्या ही तो मेरे राजसिंहासन की सीढ़ी होगी। जब तक वह जीवित है तब तक सिंहासन मेरा नहीं होगा। तू मेरे सामने से दूर हट जा।

पन्ना : मैं नहीं हटूँगी ! अपने कुँवर की शय्या से दूर नहीं हटूँगी।

बनवीर : उदयसिंह को सुला दिया है, जिससे उसे मरने का कष्ट न हो। उसका मुख ढक दिया है। वाह री धाय माँ ! बालक के मरने में भी ममता का ध्यान रखती है। (तीव्रता से) शय्या से दूर हट, पन्ना! मैं उसे चिर निद्रा में सुला दूँ।

पन्ना : (साहस से) नहीं, ऐसा नहीं होगा, क्रूर, नराधम, नारकी ! ले, मेरी कटार का प्रसाद ले। (आक्रमण करती है, उसकी चोट बनवीर की ढाल पर सुन पड़ती है।)

बनवीर : (क्रूर अट्टहास करता है) ह ह ह ह ! दासी क्षत्राणी ! कर लिया कटार का वार ? यह कटार मेरे हाथ में है। अब किससे वार करेगी। अब तुझे भी समाप्त कर दूँ ? लेकिन स्त्री पर हाथ नहीं उठाऊँगा।

पन्ना : अबोध सोते हुए बालक पर हाथ उठाते हुए तेरा हृदय तुझे नहीं धिक्कारता? पापी!

बनवीर : (शय्या के समीप जाकर) यही है, यही है मेरे मार्ग का कंटक। आज मेरे नगर में स्त्रियों ने दीपदान किया है। मैं भी यमराज को इस दीपक का दान करूँगा। यमराज ! लो इस दीपक को। यह मेरा दीपदान है। **(तलवार से उदय के धोखे में चंदन पर जोर से तलवार का प्रहार करता है। पन्ना जोर से चीखकर मूर्च्छित हो जाती है। कमरे में मंद लौ से दीपक जलता रहता है।)**

सारांश

'दीपदान' डॉ0 रामकुमार वर्मा द्वारा रचित एक प्रसिद्ध एकांकी है। 'दीपदान' एकांकी की कथा चित्तौड़ की एक ऐतिहासिक घटना पर आधारित है, जिसमें राष्ट्र–प्रेम, त्याग और बलिदान का अभूतपूर्व संयोग पन्ना के चरित्र के माध्यम से किया गया है। यह राजा विक्रमादित्य के छोटे बेटे कुँवर उदय सिंह के विख्यात ऐतिहासिक इतिवृत्त पर आधारित है। यह एक चरित्र प्रधान एकांकी है। इसमें पन्ना धाय के चरित्र का उद्घाटन करना ही प्रमुख उद्देश्य है। पन्ना चित्तौड़ के महाराजा सांगा के सबसे छोटे पुत्र कुँवर उदयसिंह की धाय माँ है। इस एकांकी के सहायक पात्रों में – कुँवर उदय सिंह, सोना, चंदन, सामली, कीरत और बनवीर हैं।

चित्तौड़गढ़ के महाराणा राणा संग्रामसिंह के निधन के बाद उनका पुत्र कुँवर उदयसिंह कुल और राजपरंपरा के अनुसार सिंहासन के उत्तराधिकारी थे। पर वह अभी मात्र 14 वर्ष

के थे, इसलिए महाराणा सांगा के छोटे भ्राता पृथ्वीराज और दासी पुत्र के बनवीर को राज्य की देखभाल के लिए नियुक्त किया जाता है। धीरे-धीरे बनवीर राज्य को पूरी तरह से अपने आधिपत्य में लेकर निष्कंटक राज्य करने की योजना बुनने लगता है। दीपदान आयोजन का बहाना लेकर वह नृत्य का आयोजन कराता है और प्रजाजनों, सामंतों तथा महल के लोगों को इस उत्सव में व्यस्त कर कुँवर उदयसिंह की हत्या की योजना बनाता है। कुँवर उदयसिंह का पालन-पोषण करने वाली पन्ना-धाय चित्तौड़ के राजमहल में बैठी कुँवर की प्रतीक्षा करती है। उदयसिंह तुलाजा भवानी के मंदिर से नृत्य देखकर आने के बाद पुनः पन्ना धाय से नृत्य देखने को चलने के लिए कहते हैं। परंतु कुँवर की देखभाल करने वाली पन्ना को बनवीर के षड्यंत्र का पता चल जाता है। वह बनवीर द्वारा कुँवर को दुबारा नृत्य देखने के लिये बुलाने आयी सरूप सिंह की पुत्री सोना, जो कि कुँवर के साथ खेला करती थी, उसे भी टाल देती है। वह वहाँ कुँवर को नहीं भेजती। सामली नामक दासी से पन्ना को सूचना मिलती है कि बनवीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी है और कुँवर की हत्या के लिए आ रहा है। दासी से यह बात सुनकर पन्ना व्याकुल हो जाती है और कुँवर को बचाने का मार्ग सोचने लगती है, इतने में जूठी पत्तलें उठाने वाला कीरत बारी वहाँ आ जाता हैं। पन्ना उसे विश्वास में लेकर अत्यंत सावधानी तथा चतुराई पूर्वक कुँवर को बारी कीरत के टोकरे में छिपाकर राजभवन से बाहर भेज देती है तथा कुँवर की शैय्या पर अपने इकलौते पुत्र चंदन को सुला देती है। इस प्रकार उदयसिंह की रक्षा के लिए वह अपने पुत्र का बलिदान देने को तैयार हो जाती है।

उसी समय कुँवर को मारने के उद्देश्य से बनवीर कक्ष में प्रवेश करता है। बनवीर विभिन्न प्रलोभनों द्वारा पन्ना को भी अपने षड़यंत्र में सम्मिलित करने का निष्फल प्रयास करता है। पन्ना उसे धिक्कारती है। क्रोधित बनवीर सैय्या पर सोए चंदन को उदय सिंह समझकर तलवार से हत्या कर देता है। एकांकी यही समाप्त हो जाता है। इस प्रकार पन्ना ने अपने पुत्र का बलिदान देकर यह सिद्ध कर दिया कि राष्ट्रहित के समक्ष व्यक्तिगत एवं पारिवारिक हित का बलिदान, त्याग करना पड़ता है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए—

1. 'दीपदान' एकांकी के लिए इसके अतिरिक्त और कौन सा शीर्षक सबसे उपयुक्त हो सकता है :

   (क) हत्यारा बनवीर (ख) राष्ट्र सेवा और त्याग

   (ग) स्वामिभक्ति (घ) पुत्र का बलिदान

2. कीरत उदयसिंह को टोकरी में छिपाकर बाहर ले आता है क्योंकि :
(क) उसे इसके बदले में पुरस्कृत होना है।
(ख) वह कुँवर से स्नेह रखता है।
(ग) वह राष्ट्र की भावना से प्रेरित है।
(घ) पन्ना के आदेश को अपना धर्म समझता है।

3. मेरे लिए दीपदान देखने की बात नहीं है, करने की बात है' यह संवाद पन्ना ने किससे कही ?
(क) दीपक (ख) बनवीर (ग) चंदन (घ) उदयसिंह

4. 'दीपदान' एकांकी के कुल पात्रों की संख्या कितनी है ?
(क) पाँच (ख) सात (ग) आठ (घ) नौ

5. दीपदान महोत्सव के आयोजन का प्रयोजन क्या है?
(क) बनवीर विलासी और नृत्य प्रेमी था।
(ख) बनवीर उदयसिंह की हत्या करना चाहता था।
(ग) बनवीर तुलजा भवानी को प्रसन्न करना चाहता था।
(घ) प्रजा का मनोरंजन करना चाहता था।

6. पन्ना उदय सिंह की शय्या पर चंदन को सुला देती है, क्योंकि वह :
(क) उदय सिंह की रक्षा करना चाहती थी।
(ख) चंदन से प्रेम नहीं करती थी।
(ग) बनवीर के षडयंत्र में सहयोगी थी।
(घ) सामली पन्ना से ऐसा करने को कहती है।

7. कुँवर उदयसिंह को लेकर पन्ना कीरत बारी को कहाँ मिलने को कहती है?
(क) बनास नदी (ख) कुंभलगढ़ (ग) बेरिस नदी (घ) मारवाड़

8. दीपदान एकांकी के रचनाकार कौन हैं?
(क) विष्णु प्रभाकर (ख) जगदीशचंद्र माथुर
(ग) उदयशंकर भट्ट (घ) रामकुमार वर्मा

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'दीपदान' एकांकी का प्रमुख पात्र कौन है और क्यों ?
2. 'दीपदान' एकांकी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
3. 'दीपदान' उत्सव को क्यों आयोजित किया गया और किसने कराया?
4. उदय और सोना के हठ के बाद भी पन्ना दीपदान उत्सव देखने क्यों नहीं जाती ? कारण स्पष्ट कीजिए।

5. बनवीर उदयसिंह की हत्या क्यों करना चाहता था ?
6. बनवीर द्वारा रचे गए षड़यंत्र का आभास पन्ना को कैसे हो जाता है ?
7. उदयसिंह को बचाने के बारे में पन्ना किन-किन उपायों पर विचार करती है ?
8. इस एकांकी मे कीरत बारी के योगदान का उल्लेख कीजिए।
9. पन्ना शैय्या पर उदयसिंह के स्थान पर चंदन को क्यों सुला देती है ?
10. 'दीपदान' एकांकी का कथानक संक्षेप में लिखिए।
11. 'दीपदान' एकांकी के प्रमुख पात्र अथवा पन्ना धाय की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
12. 'दीपदान' एकांकी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
13. डॉ0 रामकुमार वर्मा का जीवन परिचय देते हुए उनकी कृतियों की विवेचना कीजिए।
14. 'दीपदान' एकांकी के आधार पर सोना का चरित्र–चित्रण कीजिए।
15. एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'दीपदान' एकांकी पूरी तरह खरा उतरता है – स्पष्ट कीजिए।
16. 'दीपदान' एकांकी के आधार पर बनवीर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

■

उपेंद्रनाथ 'अश्क'

(सन् 1910–1996 ई.)

सुप्रसिद्ध एकांकीकार, नाटककार, उपन्यासकार उपेंद्रनाथ 'अश्क' का जन्म **सन् 1910 ई.** में **जालंधर**, पंजाब के एक मध्यवर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता पंडित माधोराम स्टेशन मास्टर थे। सन् 1927 ई. में जालंधर से मैट्रिक और वहीं के डी. ए. वी. कालेज से उन्होंने सन् 1931 ई. में बी. ए. की परीक्षा पास की। बी0 ए0 पास करते ही वे अपने ही स्कूल में अध्यापक हो गए, पर सन् 1933 ई. में उसे छोड़ दिया और जीविकोपार्जन हेतु साप्ताहिक पत्र **भूचाल** का संपादन किया। सन् 1934 ई. में सब अचानक छोड़कर लॉ कालेज में प्रवेश लिया और सन् 1936 ई. में कानूनविद् बन गए। माँ की मृत्यु उनके बचपन में ही हो गई थी। पालन–पोषण पिता जी एवं दादी ने किया। 13 वर्ष की उम्र में ही वसंती देवी से उनका विवाह कर दिया गया।

उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने अपना साहित्यिक जीवन उर्दू लेखक के रूप में शुरू किया था, किंतु बाद में वे हिंदी लेखक के रूप में जाने गए। सन् 1932 ई. में मुंशी प्रेमचंद की सलाह पर वह हिंदी को अधिक प्रश्रय देने लगे। सन् 1933 ई. में उनका दूसरा कहानी संग्रह 'औरत की फितरत' प्रकाशित हुआ। वह सन् 1941-44 तक ऑल इंडिया रेडियों में नाटककार और सलाहकार के रूप में कार्यरत रहे। मुंबई प्रवास के दौरान उन्होंने फिल्मों की पटकथाएँ, कहानियाँ, संवाद एवं गीत लिखे, तीन फिल्मों में कार्य भी किया, किंतु चमकदार जीवन-शैली उन्हें रास नहीं आई। **सन् 1996 ई.** में उनका देहावसान हो गया।

उपेंद्रनाथ 'अश्क' ने प्रायः साहित्य की सभी विधाओं में लिखा है, लेकिन उनकी मुख्य पहचान एक कथाकार के रूप में ही है। हिंदी-उर्दू प्रेमचंदोत्तर साहित्य में उनका विशिष्ट स्थान है। समाजवादी परंपरा का जो रूप अश्क के उपन्यासों में मिलता है, वह उन चरित्रों के द्वारा उत्पन्न होता है जिन्हें उन्होंने अपनी अनुभव-दृष्टि और अद्भुत वर्णन–शैली द्वारा प्रस्तुत किया है। काव्य, नाटक, आलोचना, संस्मरण एकांकी, कहानी, निबंध आदि क्षेत्रों में उन्होंने खूब रचनात्मक सक्रियता दिखाई।

कृतियाँ :

नाटक : जय पराजय, पैंतरे, अंजो दीदी, कैद और उड़ान, अलग-अलग रास्ते, छठा बेटा, स्वर्ग की झलक आदि।

एकांकी : पर्दा उठाओ-पर्दागिराओ, चरवाहें, साहब को जुकाम है, पापी, लक्ष्मी का स्वागत, देवताओं की छाया में, सूखी डाली, तौलिये आदि।

उपन्यास : गिरती दीवारें, गर्म राख, शहर में घूमता आइना आदि।

काव्य संग्रह : सड़कों पर ढले साए, दीप जलेगा, बरगद की बेटी आदि।

संस्मरण : मंटो मेरा दुश्मन, रेखाएँ और चित्र आदि।

'अश्क' की लेखनी प्रौढ़ और विस्तृत भावभूमि से परिपूर्ण है। 'अश्क' के नाटक और एकांकी मुख्यतः सामाजिक है। वस्तु–चित्रण में उनकी दृष्टि यथार्थवादी है। हिंदी में कहा जा सकता है कि यथार्थवादी एकांकियों के सूत्रधार 'अश्क' ही हैं। उन्होंने मध्यमवर्गीय जीवन को गहराई और अति सूक्ष्म रूप से चित्रित किया है। सामाजिक और व्यक्तिगत दुर्बलताओं पर कटाक्ष करने वाले व्यंग्य और प्रहसन भी उन्होंने लिखे। इनमें विषय तथा कलागत– दोनों ही दृष्टियों से वैविध्य देखने को मिलता है। इन्होंने आधुनिक भारतीय समाज की समस्याओं को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया है, जिसके कारण उनके एकांकी आधुनिक हिंदी एकांकी जगत में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

■

लक्ष्मी का स्वागत

पात्र-परिचय

रोशन : एक शिक्षित युवक

सुरेंद्र : रोशन का मित्र

भाषी : रोशन का छोटा भाई

पिता : रोशन का पिता

माँ : रोशन की माता

अरुण : रोशन का बीमार बच्चा

डॉक्टर

स्थान : जालंधर के एक निम्नमध्यवर्गीय मुहल्ले में एक मकान का दालान

समय : नौ-दस बजे सुबह।

(दालान में सामने की दीवार से मेज लगी है, जिसके इस ओर एक पुरानी कुर्सी पड़ी है, मेज पर बच्चों की किताबें बिखरी पड़ी हैं। दीवार के दाएं कोने में एक खिड़की है, जिस पर मामूली छींट का पर्दा लगा है; बाए कोने में एक दरवाजा है, जो सीढ़ियों में खुलता है। दाई दीवार में एक दरवाजा है, जो उस कमरे में खुलता है, जहाँ इस समय रोशन का बच्चा अरुण बीमार पड़ा है। दीवारों पर बिना फ्रेम की सस्ती तस्वीरें कीलों से जड़ी हुई हैं। छत पर कागज का एक पुराना फ़ानूस लटक रहा है। पर्दा उठने पर सुरेंद्र खिड़की से बाहर की ओर देख रहा है। बाहर मूसलधार वर्षा हो रही है। हवा की सायँ-सायँ और वर्षा के थपेड़े सुनायी देते हैं। कुछ क्षण बाद वह खिड़की का पर्दा छोड़कर कमरे में घूमता है। फिर जाकर खिड़की के पास खड़ा हो जाता है और पर्दा हटाकर बाहर देखता है। बीमार के कमरे से रोशनलाल प्रवेश करता है।)

रोशन : **(दरवाजे को धीरे से बंद करके)** डॉक्टर अभी नहीं आया ?

सुरेंद्र : नहीं।

रोशन : वर्षा हो रही है ?

सुरेंद्र : मूसलधार! जल-थल एक हो रहे हैं।

रोशन : शायद ओले पड़ रहे हैं।

सुरेंद्र : हाँ, ओले भी पड़ रहे हैं।

रोशन : भाषी पहुँच गया होगा ?

सुरेंद्र : हाँ, पहुँच ही गया होगा। यह वर्षा और ओले! नदियाँ बह रही होंगी बाजारों में।

रोशन : पर अब तक आ जाना चाहिए था उन्हें। **(स्वयं बढ़कर खिड़की के पर्दे को हटाकर देखता है, फिर पर्दा छोड़कर वापस आ जाता है – घुटे-घुटे स्वर में)** अरुण की तबीयत गिर रही है।

सुरेंद्र : **(चुप)।**

रोशन : **(उसी आवाज में)** उसकी साँस जैसे हर घड़ी रुकती जा रही है; उसका गला जैसे बंद होता जा रहा है; उसकी आँखें खुली हैं, पर वह कुछ कह नहीं सकता; बेहोश-सा, असहाय-सा, चुपचाप टुकुर-टुकुर तक रहा है। आँखें लाल और शरीर गर्म। सुरेंद्र, जब वह साँस लेता है तो उसे बड़ा ही कष्ट होता है। **(दीर्घ निःश्वास छोड़ता है।)** न जाने क्या होने को है सुरेन्द्र!

सुरेंद्र : हौसला करो! अभी डॉक्टर आ जाएगा। देखो, दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी है।

(दोनों कुछ क्षण तक सुनते हैं। हवा की साँय-साँय।)

रोशन : नहीं, कोई नहीं, हवा है।

सुरेंद्र : **(सुनकर)** यह देखो, फिर किसी ने दस्तक दी!

(रोशन बढ़कर खिड़की से देखता है, फिर वापस आ जाता है।)

रोशन : सामने के मकान का दरवाजा खटखटाया जा रहा है।

(बेचैनी से कमरे में घूमता है। सुरेंद्र कुर्सी से पीठ लगाये छत में हिलते हुए फानूस को देख रहा है।)

रोशन : **(घूमते हुए जैसे अपने-आप)** यह मामूली बुखार नहीं। गले की यह तकलीफ साधारण नहीं। **(सहसा सुरेंद्र के पास रुककर)** मेरा दिल डर रहा है सुरेंद्र, कहीं अपनी माँ की तरह अरुण भी मुझे धोखा न दे जाएगा! **(गला भर आता है)** तुमने उसे नहीं देखा, साँस लेने में उसे कितना कष्ट हो रहा है!

(हवा की सायँ-सायँ और वर्षा के थपेड़े।)

रोशन : यह वर्षा, यह आँधी, ये मेरे मन में हौल पैदा कर रहे हैं। कुछ अनिष्ट होने को है। प्रकृति का यह भयानक खेल, मौत की आवाजें ...

(बिजली जोर से कड़क उठती है। बादल गरजते हैं और मकानों के किवाड़ खड़खड़ा उठते हैं।)

माँ : **(रसोईघर से)** रोशी, दरवाजा खोल आओ। देखो, शायद डॉक्टर आया है।

(रोशन सुरेंद्र की ओर देखता है।)

सुरेंद्र : मैं जाता हूँ अभी।

(तेजी से जाता है। रोशन बेचैनी से कमरे में घूमता है। सुरेंद्र के साथ डॉक्टर और भाषी प्रवेश करते हैं। भाषी के हाथ में इंजेक्शन का सामान है।)

डॉक्टर : क्या हाल है बच्चे का ?

(बरसाती उतारकर खूँटी पर टाँगता है और रूमाल से मुँह पोंछता है।)

रोशन : आपको भाषी ने बताया होगा डॉक्टर साहब! मेरा तो जैसे हौसला टूट रहा है। कल सुबह उसे कुछ बुखार हुआ, साँस कष्ट से आने लगी, लेकिन आज तो वह अचेत-सा पड़ा, जैसे अंतिम साँसों को जाने से रोक रखने की मजबूर कोशिश कर रहा हो।

डॉक्टर : चलो, देखता हूँ।

(सब बीमार के कमरे में चले जाते हैं। बाहर दरवाजे के खटखटाने की आवाज आती है। माँ तेजी से प्रवेश करती है।)

माँ : भाषी! भाषी!

(बीमार के कमरे से भाषी आता है।)

माँ : देखो भाषी, बाहर कौन दरवाजा खटखटा रहा है। **(आँखों में चमक आ जाती है)** मेरा तो ख्याल है, वही लोग आए हैं। मैंने रसोईघर की खिड़की से देखा है। टपकते हुए छाते लिए और बरसातियाँ पहने ...

भाषी : वह कौन ?

माँ : वही, जो सरला के मरने पर अपनी लड़की के लिए कह रहे थे। बड़े भले आदमी हैं। सुनती हूँ, सियालकोट में उनका बड़ा काम है। इतनी वर्षा में भी ...

(जोर-जोर से कुंडी खटखटाने की निरंतर आवाज! भाषी भागकर जाता है,

माँ खिड़की में जा खड़ी होती है। बीमार के कमरे का दरवाजा खुलता है, सुरेंद्र तेजी से प्रवेश करता है।)

सुरेंद्र : भाषी कहाँ है ?

माँ : बाहर कोई आया है, कुंडी खोलने गया है।

(फिर तेजी से वापस चला गया है। माँ एक बार पर्दा उठाकर खिड़की से झाँकती है, फिर खुशी-खुशी कमरे में टहलती है। भाषी प्रवेश करता है।)

माँ : कौन हैं ?

भाषी : शायद वही हैं। नीचे बैठा आया हूँ, पिता जी के पास। तुम चलो।

माँ : क्यों ?

भाषी : उनके साथ एक औरत भी है।

(माँ जल्दी-जल्दी चली जाती है। सुरेंद्र कमरे का दरवाजा जरा-सा खोलकर देखता है और आवाज देता है ...)

सुरेंद्र : भाषी!

भाषी : हाँ!

सुरेंद्र : इधर आओ!

(भाषी कमरे में चला जाता है। कुछ क्षण के लिए मौन छा जाता है। केवल बाहर मेंह बरसने और हवा के थपेड़ों से किवाड़ों के खड़खड़ाने का शोर कमरें में आता है। हवा से फानूस सरसराता है। कुछ क्षण बाद डॉक्टर, सुरेंद्र, रोशन और भाषी बाहर आते हैं।)

रोशन : अब बताइए डॉक्टर साहब!

डॉक्टर : **(अत्यधिक गंभीरता से)** बच्चे की हालत नाजुक है।

रोशन : बहुत नाजुक है ?

डॉक्टर : हाँ!

रोशन : कुछ नहीं हो सकता ?

डॉक्टर : भगवान के घर कुछ कमी नहीं, पर आपने बहुत देर कर दी। डिफ्थीरिया[1] में फौरन डॉक्टर को बुलाना चाहिए।

---

1. डिफ्थीरिया– गले का संक्रामक रोग, जिसमें साँस बंद हो जाने से मृत्यु को जाती है।

रोशन : हमें मालूम नहीं हुआ डॉक्टर साहब। कल साँझ को इसे बुखार हो आया, गले में भी तकलीफ महसूस हुई; मैं डॉक्टर जीवाराम के पास ले गया – वही, जो हमारे बाजार में हैं – उन्होंने गले में आयोडीन-ग्लिसरीन पेंट कर दी और फीवर-मिक्सचर बना दिया। दो खुराकें दीं, इसकी हालत तो पहले से भी खराब हो गई। शाम को यह कुछ अचेत-सा हो गया। मैं भागा-भागा आपके पास गया, पर आप मिले नहीं, तब रात को भाषी को भेजा, फिर भी आप न मिले और फिर यह झड़ी लग गई – ओले, आँधी और झक्कड़! जैसे प्रलय के बाँध टूट गए हों।

(बाहर हवा की साँय-साँय सुनाई देती है। डॉक्टर सिर नीचा किए खड़ा हैं। रोशन उत्सुक दृष्टि से उनकी ओर ताक रहा है। सुरेंद्र मेज के एक कोने पर बैठा छत की ओर जोर-जोर से हिलते फानूस को देख रहा है।)

डॉक्टर : **(सिर उठाता है)** मैंने इंजेक्शन दे दिया है। भाषी ने जो लक्षण बताए थे, उन्हें सुनकर मैं बचाव के तौर पर इंजेक्शन का सामान ले आया था और मेरा ख्याल ठीक निकला। भाषी को मेरे साथ भेज दो, मैं इसे नुस्खा लिख देता हूँ , यहीं बाजार से दवाई बनवा लेना, मेरी जगह तो दूर है। पंद्रह-पंद्रह मिनट के बाद गले में दवाई की दो-चार बूँदे और एक घंटे में मुझे सूचित करना। यदि एक घंटे तक यह ठीक रहा तो मैं एक इंजेक्शन और दे जाऊँगा। कोई दूसरा इलाज भी तो नहीं।

रोशन : **(आवाज भर आती है)** डॉक्टर साहब!

डॉक्टर : घबराने से काम न चलेगा, सावधानी से उसकी देखभाल करो, शायद...

रोशन : मैं अपनी ओर से कोई कसर न उठा रखूँगा डॉक्टर साहब! सुरेंद्र, देखो तुम मेरे पास रहना, जाना नहीं। यह घर इस बच्चे के लिए वीराना है। ये लोग उसकी जिंदगी नहीं चाहते, बड़ा रिश्ता पाने के रास्ते में इसे रोड़ा समझते हैं। इसकी मौत चाहते हैं ...

सुरेंद्र : क्या कहते हो रोशन ...

डॉक्टर : रोशनलाल! ...

रोशन : आप नहीं जानते डॉक्टर साहब, ये सब लोग पत्थर-दिल है। आपको मालूम नहीं। इधर मैं अपनी पत्नी का दाह-कर्म करके लौटा था, उधर ये दूसरी जगह शादी के लिए शगुन लेने की सोच रहे थे।

सुरेंद्र : यह तो दुनिया की रीत है भाई!

रोशन : दुनिया की रीत – निष्ठुर ... निर्मम ... क्रूर! नहीं जानती कि जो मर जाती है, वह भी किसी की लड़की होती है, किसी के लाड़-प्यार में पली होती है, फिर ... **(डॉक्टर को जाने के लिए उद्यत देखकर)** आप जा रहे हैं डॉक्टर साहब! **(भाषी से)** देखो भाषी, जल्दी आना। बस, जैसे यहीं खड़े हो।

(डॉक्टर और भाषी चले जाते हैं।)

रोशन : सुरेंद्र, क्या होने को है ? क्या अरुण भी मुझे सरला की तरह दगा दे जाएगा! मैं तो उसे देखकर सरला का दु:ख भूल चुका था लेकिन अब ...अब... **(हाथों से चेहरा छिपा लेता है।)**

सुरेंद्र : **(उसे धकेलकर कमरे की ओर ले जाता हुआ)** पागल न बनो! चलो! उसके घर में क्या कमी है ? वह चाहे तो मुर्दों में जान आ जाए! मरणासन्न उठ खड़े हों।

रोशन : **(भर्राए गले से)** मुझे उस पर कोई विश्वास नहीं रहा। उसका कोई भरोसा नहीं – कैलास और क्रूर! उसका काम सते हुओं को और सताना है, जले हुओं को और जलाना है।

सुरेन्द्र : दीवाने न बनो, चलो, उसके सिरहाने चलकर बैठो! मैं देखता हूँ, भाषी अभी क्यों नहीं आया।

(उसे दरवाजे के अंदर घकेल कर मुढता है। दाईं ओर के दरवाजे से माँ प्रवेश करती है।)

माँ : किधर चले ?

सुरेंद्र : जरा भाषी को देखने जा रहा था।

माँ : क्या हाल है अरुण का ?

सुरेंद्र : उसकी हालत खराब हो रही है।

माँ : हमने तो बाबा, बोलना ही छोड़ दिया है। ये डॉक्टर जो न करें, थोड़ा है। बहू के मामले में भी तो यही बात हुई थी। अच्छी-भली हकीम की दवा चल रही थी। आराम हो रहा था। जिगर का बुखार ही तो था, दो-दो बरस भी रहता है, पर यह डॉक्टरों को लाये बिना न माना और उन्होंने दे दिया दवा का फतवा! हमने तो भाई इसीलिए कुछ कहना-सुनना ही छोड़ दिया है। आखिर मैंने भी तो पाँच-पाँच बच्चे पाले हैं। बीमारियाँ हुई, कष्ट हुए, कभी डॉक्टरों के पीछे भागी-भागी नहीं फिरी। क्या बातया डॉक्टर ने?

सुरेंद्र : डिप्थीरिया।

माँ : क्या!

सुरेंद्र : बड़ी भयानक बीमारी है माँ जी! अच्छा-भला आदमी चंद घंटों के अंदर खत्म हो जाता है।

माँ : राम-राम! तुम लोगो ने क्या कुछ-का-कुछ बना डाला। उसे जरा बुखार है, छाती जम गई होगी, बस, मैं घुट्टी दे देती तो ठीक हो जाता, पर मुझे कोई हाथ लगाने दे तब न! हमें तो वह कहता है, बच्चे से प्यार ही नहीं।

सुरेंद्र : नहीं-नहीं, यह कैसे हो सकता है! आपसे ज्यादा वह किसे प्यारा होगा!

(चलने को उद्यत होता है।)

माँ : सुनो!

(सुरेंद्र रुक जाता है।)

माँ : मैं तुमसे एक बात करने आई थी, तुम उसके मित्र हो न, उसे समझा सकते हो।

सुरेंद्र : कहिए ?

माँ : आज वे फिर आए है।

सुरेंद्र : वे कौन ?

माँ : वे सियालकोट के व्यापारी हैं। जब सरला का चौथा हुआ था तो उस दिन रोशी के लिए अपनी लड़की का शगुन लेकर आए थे। पर उसे न जाने क्या हो गया है, किसी की सुनता ही नहीं, सामने ही न आया। हारकर बेचारे चले गये। रोशी के पिता ने उन्हें एक महीने बाद आने को कहा था, सो पूरे एक महीने बाद वे आए हैं।

सुरेंद्र : माँजी...

माँ : तुम जानते हो बच्चा, दुनिया जहान का यह कायदा है। गिरे हुए मकान की नींव पर ही दूसरा मकान खड़ा होता है। रामप्रताप को ही देख लो, अभी दाह-कर्म-संस्कार के बाद नहाकर साफा भी न निचोड़ा था कि नकोदर वालों ने शगुन दे दिया, एक महीने के बाद ब्याह हो गया और अब तो सुनते हैं, बच्चा भी होने वाला है।

सुरेंद्र : माँजी, रामप्रताप और रोशन में कुछ फर्क है।

माँ : यही न, कि वह माँ-बाप का आज्ञाकारी है और यह पढ़-लिखकर हमारी बात काटना सीख गया है। बेटा, अभी तो चार नाते आते हैं, फिर देर हो गई तो इधर कोई मुँह भी न करेगा। लोग सौ-सौ बातें बनाएंगे, सौ-सौ लांछन लगाएंगे। और फिर कौन ऐसा क्वाँरा है...

सुरेंद्र : माँजी, तुम्हारा रोशन बिन ब्याहा न रहेगा, इसका मैं विश्वास दिलाता हूँ।

माँ : यह ठीक है बेटा, पर अब ये भले आदमी मिलते हैं, घर अच्छा है, लड़की अच्छी है, सुशील है, सुंदर है, पढ़ी-लिखी है। और सबसे बढ़कर यह है कि ये लोग बड़े अच्छे हैं। लड़की की बड़ी बहन से अभी मैंने बाते की हैं। ऐसी सलीके वाली है कि क्या कहूँ। बोलती है तो मुँह से फूल झड़ते हैं। जिसकी बड़ी बहन ऐसी है, वह कैसे न अच्छी होगी।

सुरेंद्र : माँजी, अरुण की हालत नाजुक है। जाकर देखो तो मालूम हो।

माँ : बेटा, अब ये भी इतनी दूर से आए हैं – इस आँधी और तूफान में। कैसे इन्हें निराश लौटा दें?

सुरेंद्र : तो आखिर आप मुझसे क्या चाहती हैं ?

माँ : तुम्हारा वह दोस्त है, उससे जाकर कहो कि जरा दो-चार मिनट जाकर उनसे बात कर ले। जो कुछ वे पूछते हों, उन्हें बता दे, इतने में मैं लड़के के पास बैठती हूँ।

सुरेंद्र : मुझसे यह नहीं हो सकता माँजी! बच्चे की हालत ठीक नहीं, बल्कि चिंताजनक हैं। आप नहीं जानतीं, वह उसे कितना प्यार करता है। भाभी के बाद उसका सब ध्यान उसी में सिमट आया है। और इस समय, जब बच्चे की हालत नाजुक है, मैं उससे यह कैसे कहूँ ?

(बीमार के कमरे का दरवाजा खुलता है। रोशन प्रवेश करता है – बाल बिखरे हुए, चेहरा उतरा हुआ, आँखें फटी-फटी-सी!)

रोशन : सुरेंद्र, तुम अभी यहीं खड़े हो ? भगवान के लिए जाओ जल्दी, जाओ! मेरी बरसाती ले जाओ, नीचे से छाता ले जाओ। देखो, भाषी अभी आया क्यों नहीं! अरुण तो...

भाषी : **(सीढ़ियो से)** मैं आ गया भाई साहब!

(भाषी दवाई की शीशी लिए हुए आता है। सुरेंद्र और भाषी बीमार के कमरे में आते है। माँ रोशन के समीप आती है।)

माँ : क्या बात है, घबराए हुए क्यों हो ?

रोशन : माँ, उसे डिप्थीरिया हो गया है!

माँ : मुझे सुरेंद्र ने बताया। **(असंतोष से सिर हिलाकर)** तुम लोगों ने मिल-मिलाकर...

रोशन : क्या कह रही हो ? तुम्हें अगर खुद किसी बात का पता नहीं तो दूसरों को तो कुछ करने दो।

माँ : चलो, मैं चलकर देखती हूँ। **(बढ़ती है।)**

रोशन : **(रास्ता रोकता है)** नहीं, तुम मत जाओ। उसे बेहद तकलीफ है, साँस उसे मुश्किल से आती है, उसका दम उखड़ रहा है, तुम कोई घुट्टी-बुट्टी की बात करोगी। **(जाना चाहता है।)**

माँ : सुनो!

(रोशन मुड़ता है। माँ असमंजस में है।)

रोशन : कहो!

माँ : **(चुप)**

रोशन : जल्दी कहो, मुझे जाना है।

माँ : वो फिर आए हैं।

रोशन : वो कौन ?

माँ : वही सियालकोट वाले!

रोशन : **(क्रोध से)** उनसे कहो – जहाँ से आए हैं, वही चले जाए। **(जाना चाहता है।)**

माँ : रोशी!

रोशन : मैं नही जानता, मैं पागल हूँ या आप! क्या आप लोग मेरी सूरत नहीं देखते? क्या आपको इस पर कुछ लिखा दिखाई नहीं देता ? शादी, शादी, शादी! क्या शादी ही दुनिया में सब-कुछ है! घर में बच्चा मर रहा है और तुम्हें शादी की सूझ रही है। आखिर आप लोगों को हो क्या गया है ? क्या वह मेरी पत्नी न थी, क्या वह...

माँ : शोर मत मचाओ! हम तुम्हारे ही लाभ की बात कर रहे हैं, रामप्रताप...

रोशन : **(चीखकर)** तुम रामप्रताप को मुझसे मिलाती हो! अनपढ़, अशिक्षित, गँवार! उसके दिल कहाँ है ? महसूस करने का माद्दा कहाँ है ? वह जानवर है।

माँ : तुम्हारे पिता ने भी तो पहली पत्नी के मृत्यु के दूसरे महीने ही विवाह कर लिया था।

रोशन : वो...माँ, जाओ, मैं क्या कहने लगा था।

(तेजी से मुड़कर कमरे में चला जाता है, दरवाजा खट् से बंद कर लेता है। हाथ में हुक्का लिए खँखारते-खँखारते रोशन के पिता प्रवेश करते हैं।)

पिता : क्या कहता है रोशन ?

माँ : वह तो बात भी नहीं सुनता, जाने बच्चे की तबीयत बहुत खराब है।

पिता : **(खँखार कर)** एक दिन में ही इतनी क्या खराब हो गई ? मैं जानता हूँ, यह सब बहानेबाजी है। (जोर से आवाज देते हैं) रोशी!

(खिड़कियों पर वायु के थपेड़ों की आवाज!)

पिता : **(फिर आवाज देता है)** रोशी!

(रोशन दरवाजा खोलकर झाँकता है। चेहरा पहले से भी उतरा हुआ है। आँखें रुआँसी और निगाहों में करुणा।)

रोशन : **(अत्यंत थके स्वर से)** धीरे बोलें आप, क्या शोर मचा रहे हैं!

पिता : इधर आओ!

रोशन : मेरे पास वक्त नहीं है!

पिता : **(चीखकर)** वक्त नहीं ?

रोशन : धीरे बोलें आप!

पिता : मैं कहता हूँ, इतनी दूर से आए हैं, तुम्हे देखना चाहते हैं, तुम जाकर उनसे जरा एक-दो मिनट बात कर लो।

रोशन : मैं नहीं जा सकता!

पिता : नहीं जा सकता!

रोशन : नहीं जा सकता!

पिता : तो मैं शगुन ले रहा हूँ! इस वर्षा, आँधी और तूफान में, उन्हें अपने घर से निराश नहीं लौटा सकता। घर आई लक्ष्मी का निरादर नहीं कर सकता।

रोशन : हाँ, हाँ! आप जाइए! **(रोने की तरह रोशन हँसता है।)** लक्ष्मी का स्वागत कीजिए। **(खट से दरवाजा बंद कर लेता है।)**

पिता : **(रोशन की माँ से)** इस एक महीने में हमने कितनों को इनकार नहीं किया, लेकिन इनको कैसे ना कर दें? सियालकोट में इनकी बड़ी भारी फर्म है। मैंने महीने भर में अच्छी तरह पता लगा लिया है। हजारों का तो इनके यहाँ लेन-देन है।

माँ : बहू की बीमारी का पूछते होंगे ?

पिता : उन्हें शक था, पर मैंने कह दिया, जिगर का बुखार था, बिगड़ गया।

माँ : बच्चे को पूछते होगें।

पिता : हाँ, पूछते थे। मैंने कह दिया कि बच्चा है, पर माँ की मृत्यु के बाद उसकी हालत ठीक नहीं रहती, परमात्मा ही मालिक है।

माँ : तो आप हाँ कर दें।

पिता : हाँ, मैं तो शगुन ले लूँगा।

(चले जाते हैं। हुक्के की आवाज दूर होते-होते गुम हो जाती है। माँ खुशी-खुशी कमरे में घूमती है। भाषी आता है और तेजी से निकल जाता है।)

माँ : भाषी!

पिता : मैं डॉक्टर के यहाँ जा रहा हूँ।

(तेजी से चला जाता है। बीमार के कमरे से सुरेंद्र निकलता है।)

सुरेंद्र : **(भरी हुई आवाज में)** माँजी...

माँ : **(घबराए स्वर में)** क्या बात है ? क्या बात है ?

सुरेंद्र : दाने लाओ और दिए का प्रबंध करो।

माँ : क्या ?

(आँखें फाड़े उसकी ओर देखती रह जाती है – हवा की सायँ-सायँ।)

सुरेंद्र : अरुण इस संसार से जा रहा है।

(फानूस टूटकर धरती पर गिर पड़ता है। माँ भागकर दरवाजे पर जाती है।)

माँ : रोशी, रोशी!

(दरवाजा अंदर से बंद है।)

माँ : रोशी, रोशी!

रोशन : **(कमरे के अंदर से भर्राए हुए स्वर में)** क्या बात है ?

माँ : दरवाजा खोलो!

रोशन : तुम लक्ष्मी का स्वागत कर आओ!

माँ : रोशी...

रोशन : **(चुप)**

माँ : रोशी!

(सीढ़ियों से रोशन के पिता के हुक्का पीने और खँखारने की आवाज आती है।)

पिता : **(सीढ़ियों से ही)** रोशन की माँ, बधाई हो!

(पिता का प्रवेश! माँ उनकी ओर मुड़ती है।)

पिता : बधाई हो, मैंने शगुन ले लिया।

(कमरे का दरवाजा खुलता है, मृत बालक का शव लिए रोशन आता है।)

रोशन : हाँ, नाचो, गाओ, खुशियाँ मनाओ!

पिता : हैं। मर गया!! (हाथ से हुक्का गिर पड़ता है और मुँह खुला रह जाता है।

माँ : मेरा लाल! (चीख मारकर सिर थामे धम से बैठ जाती है।)

सुरेंद्र : माँ जी, जाकर दाने लाओ और दिए का प्रबंध करो।

(पर्दा गिरता है)

सारांश

''लक्ष्मी का स्वागत'' एकांकी उपेंद्रनाथ 'अश्क' द्वारा लिखित सामाजिक विद्रूपताओं पर चोट करने वाली एक सशक्त रचना है। इस एकांकी की कथावस्तु पारिवारिक होते हुए भी दूषित सामाजिक मान्यताओं की ओर संकेत करती है और आज के मनुष्य की धन-लोलुपता, स्वार्थ-भावना, हृदयहीनता तथा क्रूरता का यथार्थ रूप प्रस्तुत करती है। 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी का सारांश निम्नवत् है –

जिला जालंधर के इलाके में मध्यम श्रेणी के मकान के दालान में सुबह के नौ-दस बजे बाहर मूसलाधार वर्षा हो रही है। मध्यम श्रेणी परिवार के सदस्य रोशन अपने पुत्र अरुण की बढ़ती बीमारी से बहुत दुःखी है। वह बार-बार अपने पुत्र की नाजुक स्थिति को देखकर घबरा जाता है। उसकी पत्नी सरला का देहांत एक माह पूर्व हो चुका है। उसके आघात से अभी वह उबर भी नहीं पाता कि उसका पुत्र डिप्थीरिया (गले का संक्रामक

रोग) से पीड़ित हो गया। उसकी स्थिति प्रतिक्षण बिगड़ती जा रही है। रोशन अपने भाई-भाषी को डाक्टर लाने के लिए भेजता है। उसका मित्र सुरेंद्र उसे हिम्मत बँधाता है। बाहर का मौसम देखकर रोशन का मन डरा हुआ है। वह सुरेंद्र से कहता है– ''मेरा दिल डर रहा है सुरेंद्र, कहीं अपनी माँ की तरह अरुण भी मुझे धोखा न दे जाएगा ?'' डाक्टर आकर अरुण की स्थिति चिंताजनक बताता है और लगातार दवा देते रहने को कहता है। इसी बीच सियालकोट के व्यापारी रोशन के लिए रिश्ता लेकर आते हैं। परंतु सुरेंद्र अरुण की बीमारी के कारण असमर्थता जताता है। रोशन की माँ पुनर्विवाह का समर्थन करती है और उसे रामप्रसाद एवं उसके पिता का उदाहरण देती है। तभी रोशन के पिता आते हैं और अरुण की बीमारी को बहानेबाजी बताते हैं क्योंकि सियालकोट वालों से रोशन मिलना नहीं चाहता। रोशन के मिलने से इंकार करने पर पिता शगुन लेने को कहता है कि मैं घर में आई लक्ष्मी का निरादर नहीं कर सकता। रोशन का पिता उसकी माँ से कहता है कि मैनें पता लगा लिया है कि सियालकोट में इनकी बड़ी फर्म है, इनके यहाँ हजारों का लेन-देन है। रोशन के पिता शगुन लेने चले जाते हैं और सुरेंद्र रोशन की माँ से दीए का प्रबंध करने को कहता है क्योंकि अरुण संसार से जा रहा है। फानूस टूटकर गिर जाता है। अंत में रोशन के पिता शगुन लेकर माँ को बधाई देने के लिए आते हैं। इसी समय अरुण संसार से विदा लेता है और रोशन मृत बालक का शव लिए आता है। रोशन के पिता के हाथ से हुक्का गिर जाता है और माँ चीखें मार धम्म से सिर थाम बैठ जाती हैं। सुरेंद्र के संवाद –'माँजी, जाकर दाने लाओ और दिए का प्रबंध करो'' के साथ एकांकी समाप्त हो जाता है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. रोशन का पुत्र किस रोग से ग्रस्त है ?

   (क) मलेरिया (ख) तपेदिक (ग) डिप्थीरिया (घ) पेचिश

2. रोशन दूसरे विवाह के लिए तैयार नहीं था क्योंकि :

   (क) उसके माता-पिता बीमार थे।

   (ख) उसका पुत्र बीमार था।

   (ग) वह अपनी पत्नी से अगाध प्रेम करता था।

   (घ) घर आती लक्ष्मी से उसे कोई मोह नहीं था।

3. रोशन के माता-पिता उसकी दूसरी शादी करना चाहते थे, क्योंकि :

   (क) अच्छा खासा दहेज मिले (ख) बीमार बच्चे की देखभाल हो सके

   (ग) मान-सम्मान मिले (घ) इनमें से कोई नहीं।

4. रोशन की माँ के कहने पर भी सुरेन्द्र, रोशन से उसके पुनर्विवाह की बात नहीं करता; क्योंकिः
   (क) वह स्वयं अपना विवाह करना चाहता है।
   (ख) वह नहीं चाहता कि रोशन का पुनर्विवाह रहो।
   (ग) सुरेन्द्र अपने मित्र के दद्र को समझता है।
   (घ) उपर्युक्त सभी विकल्प सत्य
5. सियालकोट के व्यापारी रोशन के लिए किस दिन पहली बार अपनी लड़की का शगुन लेकर आए थेः
   (क) पिछले मंगलवार को (ख) जब सरला का चौथा हुआ था
   (ग) फूलेय दूज के दिन (घ) उपर्युक्त सभी विकल्प सत्य।
6. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के एकांकीकार का नाम :
   (क) विष्णु प्रभाकर (ख) उपेन्द्रनाथ 'अश्क'
   (ग) उदयशंकर भट्ट (घ) सेठ गोविंद दास।
7. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी की भूमिका किस स्थान से संबंधित है –
   (क) चण्ड़ीगढ़ (ख) पटियाला (ग) सियालकोट (घ) लुधियाना

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. रोशन का पुत्र के बीमार पड़ने पर मनःस्थिति क्या है ?
2. अरुण किस बीमारी से ग्रस्त है और उसका दुष्परिणाम क्या है ?
3. रोशन अरुण को किस-किस डाक्टर से दवा दिलाता है ?
4. रोशन अपने पिता के कहने पर भी लड़की वालों से आकर क्यों नहीं मिलना चाहता ? स्पष्ट कीजिए।
5. 'लक्ष्मी का स्वागत' भावना प्रधान, मर्मस्पर्शी, सामाजिक एकांकी है। इस कथन पर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।
6. "गिरे हुए मकान की नींव पर ही दूसरा मकान खड़ा होता है।" इस कथन का क्या आशय है?
7. 'लक्ष्मी का स्वागत' में रोशन के पिता के विचारों से अपनी सहमति या असहमति पर टिप्पणी लिखिए।
8. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
9. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी में एकांकीकार के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।
10. उपेंद्रनाथ 'अश्क' का संक्षिप्त जीवन परिचय देते हुए उनके साहित्यिक अवदानों का उल्लेख कीजिए।
11. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी के प्रमुख पात्र के चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
12. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी में रोशन के मित्र सुरेंद्र के चरित्र की विशेषताओं का उद्घाटन कीजिए।
13. 'लक्ष्मी का स्वागत' एकांकी में रोशन की माँ का चरित्रांकन कीजिए।

■

विष्णु प्रभाकर

(सन् 1912–2009 ई.)

विष्णु प्रभाकर का जन्म सन् **1912** ई. में उत्तर प्रदेश के **मुजफ्फरपुर** जिले के मीरापुर गाँव में हुआ था। उनके पिता का नाम दुर्गाप्रसाद तथा माता महादेवी थीं, जिन्होने अपने समय में पर्दा-प्रथा का विरोध किया था। पत्नी का नाम सुशीला था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा मीरापुर में हुई। सन् 1929 ई. में हिसार के सी0 ए0 वी0 हाईस्कूल से उन्होंने मैट्रिक पास की। आर्थिक स्थिति ठीक न होने के कारण आगे की शिक्षा पूर्ण नहीं कर पाए। गृहस्थी चलाने के लिए चतुर्थ श्रेणी में 18 रुपए महीने पर उन्होंने सरकारी नौकरी कर ली। मेधावी और प्रखर विष्णु जी ने पुनः पढ़ाई आरंभ की। हिंदी में प्रभाकर व हिंदी भूषण की उपाधि के साथ संस्कृत में प्रज्ञा और अंग्रेजी में बी0 ए0 की डिग्री प्राप्त की। हिंदी में उनकी पहली कहानी सन् 1931 में छपने के साथ ही लेखन का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह आठ दशकों तक निरंतर सक्रिय रहा। सन् 1938 ई. में 'हंस' पत्रिका का एकांकी विशेषांक प्रकाशित हुआ। उससे प्रेरित होकर उन्होंने सन् 1939 ई. में प्रथम एकांकी 'हत्या के बाद' लिखा। उनके विचारों पर महात्मा गाँधी के दर्शन और सिद्धान्तों का गहरा प्रभाव पड़ा। वे सन् **2009** ई. में गोलोकवासी हुए।

विष्णु प्रभाकर कभी एक विधा में बँधकर नहीं रहे। उनके लिखे उपन्यास, नाटक, कहानी, जीवनी, रेडियो रूपक और रिपोर्ताज हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। आपकी एकांकियों में सामाजिक, ऐतिहासिक और राजनैतिक समस्याएं समाहित हैं। शरतचन्द्र की जीवनी लिखने की प्रेरणा मिलने के बाद शरतचन्द्र को जानने के लिए सभी जीवन स्रोतों तक गए। बांग्ला भी सीखी और जब यह जीवनी छपी तो धूम मच गई। 'आवारा मसीहा' उनकी पहचान का पर्याय बना।

कृतियाँ

नाटक : नवप्रभात, चंद्रधर, होरी, डॉक्टर, टूटते परिवेश, केरल का क्रान्तिवीर, युगे–युगे क्रांति आदि।

एकांकी : प्रकाश और परछाई, इंसान, दस बजे रात, ये रेखाएँ ये दायरे, सीमा रेखा, स्वराज्य की नींव, वापसी, लिपस्टिक की मुस्कान आदि

उपन्यास : तट के बंधन, स्वप्नमयी आदि।

कहानी : धरती अब भी घूम रही है, खंडित पूजा आदि।

स्वदेश-प्रेम, राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक-सुधार का स्वर सदैव ही आपकी रचनाओं में मुखरता से प्रकट हुआ है। विष्णु प्रभाकर हिंदी के नये एकांकीकारों के पथ प्रदर्शक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने आदर्शवादी, नैतिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक एकांकियों की रचना की। अपने एकांकियों में वर्तमान सामाजिक व्यवस्था का यर्थाथ चित्र प्रस्तुत करते हैं। इनकी एकांकियों में पात्रों का चरित्रांकन मनौवैज्ञानिक आधार पर किया गया है। उन्होंने साहित्य की सभी विधाओं में अपनी लेखनी चलाकर हिंदी साहित्य को समृद्धि प्रदान की।

■

सीमा–रेखा

पात्र–परिचय

- लक्ष्मीचंद्र
- शरतचंद्र
- सुभाषचंद्र
- कैप्टन विजय
- तारा, अन्नपूर्णा, सविता, उमा

(दूसरे भाई, उपमंत्री शरतचंद्र का ड्राइंगरूम। आयु 52 वर्ष। आधुनिक पर सादगी की छाप। दीवार पर गाँधी जी का तैल-चित्र है। दो-चार चित्र तिपाइयों पर भी हैं। पुस्तकें काफी हैं। बीचोबीच एक सोफा-सेट है। उधर की ओर सामने दो द्वार हैं, जो बाहर बरामदे में खुलते हैं। उसके पार सड़क है। पूर्व और पश्चिम के द्वार घर के अंदर जाते हैं। सोफे व मेजों के आस-पास कुर्सियाँ हैं। पर्दा उठने पर मंच खाली है। दो क्षण बाद शरतचंद्र तेजी से आते हैं। बेहद परेशान हैं, कई क्षण बेचैनी में घूमते हैं। फिर टेलीफोन उठा लेते हैं। नंबर मिलाते हैं।)

शरत : हलो, मैं शरत बोल रहा हूँ। विजय का कुछ पता लगा ? ... क्या ... क्या अभी तक नहीं लौटा? झगड़ा बढ़ गया है। क्या ? गोली ... गोली चलानी पड़ी। भीड़ बैंक के पास बेकाबू हो गई थी। बैंक को लूटा ? नहीं ... कहीं और लूटमार हुई ? नहीं ...कोई घायल ? अभी कुछ पता नहीं। ओह, देखो, अभी पता करके बताओ। विजय आए तो मुझे टेलीफोन करने को कहो ... तुरन्त ... समझे, मैं घर पर ही हूँ। (दूसरा नंबर मिलाना चाहते हैं कि उनकी पत्नी अन्नपूर्णा घबराई हुई बाहर से आती है।)

अन्नपूर्णा : आपने कुछ सुना है ?

शरत : हाँ, सुना है गोली चल गई।

अन्नपूर्णा : अपने राज में भी गोली चलती है ?

शरत : अपना राज समझता कौन है ? जब तक अपना राज नहीं समझेंगे, तब तक गोली चलेगी ही। लेकिन, तुम कहाँ गई थी ?

अन्नपूर्णा : जीजी के पास ! रास्ते में सुना रामगंज में गोली चल गई। बाजार बंद हो रहे हैं, भय छाया हुआ है, लोग सरकार को गालियाँ दे रहे हैं।

शरत : **(चोंगा रखकर आगे आ जाते हैं।)** सरकार को गाली ही दी जाती है। गोली चली तो गाली देते हैं, बैंक लुट जाता तब भी गाली ही देते।

अन्नपूर्णा : बैंक ! कौन-सा बैंक लुट रहा था, बैंक से तो कुछ झगड़ा नहीं था, कल आपके पीछे कुछ विद्यार्थी बसवालों से झगड़ पड़े थे और आप जानते हैं कि विद्यार्थी ...

शरत : **(एकदम)** कि विद्यार्थी कानून की चिंता नहीं करते। बच्चे हैं, अल्हड़ हैं ... (तेज होकर) यह भी कोई बात है ? लोग पागल हो जाते हैं। कानून अपने हाथ में ले लेते हैं। गोली चली है तो जरूर कोई कारण रहा होगा। कुछ लोगों ने बैंक पर धावा बोला होगा। पुलिस पर पत्थर फेंके होंगे।

(सविता का प्रवेश-चौथा भाई, जन-नेता सुभाषचंद्र की पत्नी, आयु पैंतीस वर्ष)

सविता : फेंके होंगे तो इसका यह अर्थ नहीं कि पत्थर के जवाब में गोली चला दी जाय। गोली उन्हें आत्मरक्षा के लिए नहीं दी जाती है।

अन्नपूर्णा : सविता, तुम कहाँ से आ रही हो ?

(लक्ष्मीचंद्र का प्रवेश, व्यापारी, सबसे बड़े भाई, आयु 60 वर्ष)

शरत : तुम क्या कह रही हो ?

सविता : मैं ठीक कह रही हूँ ...

लक्ष्मी : तुम बिल्कुल गलत कह रही हो। पुलिस गोली न चलाती तो बैंक लुट जाता, बाजार लुट जाता, चारों ओर लूटमार मच जाती। शासन की जड़ें हिल जातीं।

सविता : शासन की जड़ें हिलती या न हिलतीं, दादा जी, पर आपकी जड़ें जरूर हिल जातीं। आपका व्यापार ठप्प हो जाता। आपका नुकसान होता...

लक्ष्मी : हाँ, मेरा नुकसान होता। मैं सरकार की प्रजा हूँ। प्रजा की रक्षा करना सरकार का फर्ज है...

सविता : यानी सरकार की पुलिस आपकी रक्षा के लिए है।

लक्ष्मी : हाँ, मेरी रक्षा करने के लिए हैं

सविता : केवल आपकी...?

अन्नपूर्णा : न, न, सविता। इनका मतलब केवल अपने से नहीं है। भीड़ इनका ही नुकसान करके न रह जाती। वह सारे शहर को बर्बाद कर देती।

सविता : भीड़ में इतनी शक्ति है जीजी!

शरत : भीड़ में कितनी शक्ति है, सवाल यह नहीं है।

सविता : तो क्या है ?

शरत : सवाल यह है कि क्या भीड़ को कानून अपने हाथ में लेने का अधिकार है ? मैं समझता हूँ, उसे यह अधिकार नहीं है।

सविता : और यदि वह लेते हैं तो...

शरत : तो वह विद्रोह है और विद्रोह को दबाने का सरकार को पूरा-पूरा अधिकार है।

सविता : लेकिन विद्रोह क्यों किया गया है, यह देखना क्या सरकार का कर्त्तव्य नहीं है ?

(टेलीफोन की घंटी बजती है। शरत एकदम चोंगा उठाते हैं। सब उनके पास आते हैं।)

शरत : हलो...हाँ, मैं ही हूँ...क्या स्थिति अभी काबू में नहीं है ? लूटमार तो नहीं हुई है न ? अच्छा...घायल कितने हुए ?...पाँच वहीं मर गए। बीस घायल अस्पताल में हैं...मैं अभी आता हूँ। अभी...

(टेलीफोन का चोंगा रखकर तेजी से जाने को मुड़ते हैं।)

अन्नपूर्णा : **(एकदम)** नहीं, नहीं आप ऐसे नहीं जा सकते।

लक्ष्मी : हाँ, पहले फोन करके पुलिस बुला लो।

सविता : पुलिस क्या करेगी ? चलिए, मैं चलती हूँ।

शरत : आप चिंता न करें। पुलिस की गाड़ी बाहर खड़ी है।

सविता : **(व्यंग्य से)** जरूर होगी। जनता के नेता अब पुलिस की गाड़ी में ही जा सकते हैं। (आवेश में) जिन्होंने जनता का नेतृत्व किया, जनता के आगे होकर गोलियाँ खायीं, जो एक दिन जनता की आँखों के तारे थे वे ही आज पुलिस के पहरे में जनता से मिलने जाते हैं।

(शरत तिलमिलाकर कुछ कहना चाहते हैं कि तभी तीसरे भाई विजय, पुलिस कप्तान, आयु 48 वर्ष, पूरी वर्दी में प्रवेश करते हैं।)

लक्ष्मी : **(एकदम)** विजय!

सविता : कप्तान साहब, आप यहाँ!

अन्नपूर्णा : विजय, अब क्या हाल है ?

शरत : विजय, तुमने यह क्या कर डाला ? तुमने गोली क्यों चलाई ? तुम्हें सोचना चाहिए था कि...

लक्ष्मी : विजय ने जो कुछ किया सोच-समझकर किया है और ठीक किया है।

अन्नपूर्णा : हाँ, बिन सोचे-समझे कोई काम कैसे किया जा सकता है, सोचा तो होगा ही पर...

शरत : नहीं, नहीं, यह बहुत बुरा हुआ। जानते नहीं, अब जनता का राज है और जनता के राज में, जनतंत्र में जनता की प्रतिष्ठा होती है।

विजय : लेकिन गुंडों की नहीं।

सविता : वे गुंडे हैं।

लक्ष्मी : हाँ, वे गुंडे हैं। दंगा करनवाले गुण्डे होते हैं, शोहदे होते हैं।

शरत : नहीं, भैया! वह सब गुंडे नहीं होते। हाँ, गुंडों के बहकावे में जरूर आ जाते हैं।

सविता : यह भी खूब रही। जनता कुछ गुंडों के बहकावे में आ जाय और आप लोगों की, जो कल तक उनके सब-कुछ थे, कोई बात न सुनें।

शरत : **(तिलमिलाकर)** सविता...सविता...

सविता : सुनिए, भाई साहब! बात यह है कि आप आपना संतुलन खो बैठे हैं। आप निरंकुश होते जा रहे हैं। आप अपने को केवल शासक मानने लगे हैं। आप भूल गए हैं कि जनता राज में शासक कोई नहीं होता। सब सेवक होते हैं।

विजय : **(थका-सा)** सेवक होते हैं तो क्या सेवक मर जाने के लिए हैं ?

सविता : हाँ, मर जाने के लिए ही हैं। कोई मरकर देखे तो...

लक्ष्मी : सविता, बहू! तुम बहुत ही आगे बढ़ रही हो। स्वतंत्रता का युग है तो इसका यह मतलब नहीं कि बड़े-छोटे का विचार न किया जाय।

अन्नपूर्णा : हाँ, सविता! तुम्हें इतना तेज नहीं होना चाहिए।

सविता : मैं क्षमा चाहती हूँ। आप सब मुझसे बड़े हैं। आपका अपमान मैं कभी नहीं कर सकती, ऐसा सोच भी नहीं सकती। पर इस नाते-रिश्ते से ऊपर भी तो हम कुछ हैं। हम स्वतंत्र भारत की प्रजा हैं, हम एक स्वतंत्र देश के नागरिक हैं। हम इन्सान हैं।

विजय : इन्सान हैं तो सभी हैं। स्वतंत्र देश के नागरिक हैं तो सभी हैं। कानून सब पर लागू होता है।

लक्ष्मी : बेशक सब पर लागू होता है। सब इन्सान हैं।

सविता : बेशक सब समान है। दादा जी, पर जिन पर व्यवस्था और न्याय की जिम्मेदारी है, उनका दायित्व अधिक है।

शरत : जरूर है, इसीलिए मुझे जाना है। लेकिन जाने से पहले मैं जानना चाहूँगा विजय कि आखिर बात कैसे बढ़ गई ?

विजय : मैं तो वहाँ था नहीं। कल के झगड़े के बारे में आप जानते ही हैं। आज फिर विद्यार्थियों ने प्रदर्शन किया। डिपों पर हमला किया। वहाँ से वे बैंक के पास आए...

शरत : क्या उन्होंने बैंक पर हमला किया ?

विजय : कर सकते थे। शायद वे यही चाहते थे।

शरत : कौन विद्यार्थी...

विजय : यह तो नहीं कह सकता। भीड़ में केवल विद्यार्थी ही नहीं थे। शरारती लोग ऐसे अवसरों की ताक में रहते हैं। पुलिस ने भीड़ को रोका तो इन्होंने पत्थर फेंके...

अन्नपूर्णा : पुलिस पर पत्थर फेंके ?

लक्ष्मी : तब तो जरूर उनका इरादा बैंक लूटने का था।

शरत : क्या पुलिसवालों को चोटें आईं ?

विजय : जी हाँ, दस-बारह सिपाही घायल हो गए। एक इन्स्पेक्टर का सिर फूट गया।

सविता : बस ?

लक्ष्मी : तुम चाहती थी कि वे सब मर जाते।

(चौथे भाई सुभाषचंद्र का प्रवेश-जन-नेता, आयु 44 वर्ष)

सुभाष : हाँ, वे सब मर जाते तो ठीक होता।

शरत : सुभाष ?

अन्नपूर्णा : सुभाष, यह तुम क्या कह रहे हो ?

लक्ष्मी : तुम तो कम्युनिस्ट हो गए हो और अपनी बहू को भी तुमने ऐसा ही बना दिया **(बाहर शोर उठता है।)**

सुभाष : दादा जी! मैं न कभी कम्युनिस्ट था, न हूँ और न कभी बनूँगा, पर मैं स्वतंत्र भारत में गोली चलाना जुर्म मानता हूँ।

लक्ष्मी : चाहे जनता कुछ भी करे। उसे सब अधिकार है।

सुभाष : बेशक है। उसी ने इन लोगों के **(शरत की ओर इशारा करता है)** हाथ में शासन की बागडोर सौंपी है।

शरत : किसलिए सौंपी है ? रक्षा के लिए या बर्बादी के लिए ?

(बाहर शोर तेज होता है। सविता चौंकती है। धीरे-से बोलती है और बाहर जाती है। शेष लोग तेज-तेज बोलते रहते हैं।)

सविता : **(अलग से)** यह शोर कैसा है देखूँ तो ... **(खिसक जाती है।)**

सुभाष : **(शरत की बात का उत्तर देते हुए)** रक्षा के लिए।

शरत : लेकिन जब जनता स्वयं नाश करने पर तुल जाय तो क्या हमें उसे ऐसा करने देना चाहिए।

सुभाष : नहीं।

विजय : **(एकदम)** यही तो हमने किया है।

लक्ष्मी : और ठीक किया है।

शरत : और ऐसा करने का उन्हें अधिकार है। वे हैं ही इसीलिए। तुम भी इसे मानते हो तो फिर कहना क्या चाहते हो ?

सुभाष : यही कि हमें राज्य की रक्षा करते-करते प्राण दे देने चाहिए, प्राण लेने नहीं चाहिए। हमें देने का ही अधिकार है, लेने का नहीं ?

शरत : सुभाष ! यह कोरा आदर्शवाद है।

सुभाष : कर्त्तव्य का पालन करते हुए मरना यदि आदर्शवाद है तो मैं कहूँगा कि विश्व के प्रत्येक नागरिक को ऐसा ही आदर्शवादी होना चाहिए।

शरत : सुभाष, तुम केवल बोलना जानते हो।

सुभाष : आपसे ही सीखा है, भाई साहब।

विजय : लेकिन जिम्मेदारी सँभालना नहीं सीखा।

सुभाष : वह भी सीखा है। मैं जनता से प्रतिज्ञा करके आया हूँ, आज शाम तक गोली चलाने वाले कप्तान-पुलिस को मुअत्तिल कराके छोड़ूँगा।

अन्नपूर्णा : क्या ..... क्या कहा तुमने ?

लक्ष्मी : अपने ही घर में तुम अपनों के दुश्मन बनकर आए हो।

सुभाष : अपना-पराया मैं कुछ नहीं जानता। मैं जनता का प्रतिनिधि हूँ। मैं माननीय उपमंत्री श्री शरतचंद्र को बताने आया हूँ कि उनके एक अधिकारी ने निहत्थी जनता पर गोली चलाकर जो बर्बर काम किया है, उसकी जाँच करवानी होगी, और जब तक वह जाँच पूरी नहीं, होती, तब तक गोली चलाने से संबंधित सब व्यक्तियों को मुअत्तिल करना होगा।

शरत : यह किसकी माँग है ?

सुभाष : उस जनता की, जिसने आपको गद्दी सौंपी है, जिससे आज आप दूर भागते हैं, डरते हैं।

शरत : मैं डरता हूँ ?

सुभाष : हाँ, आप डरते हैं, यदि न डरते तो घर में छिपकर बैठे रहने के बजाय जनता के पास जाते। तब यह नौबत न आती, गोली न चलती, निर्दोष-निहत्थे नागरिक न मरते।

शरत : लेकिन तुम भी तो जनता के नेता हो, तुमने कौन-सा तीर मार लिया ?

सुभाष : मैंने क्या किया है, यह मेरे मुँह से सुनकर क्या करेंगे, पर इतना कह देता हूँ कि जनता संयत न रहती तो कप्तान विजयचंद्र यहाँ बैठे दिखाई न देते। इनसे पूछिए तो क्या इन्हें बन्दूकें इसलिए दी गई हैं कि जरा-सा पत्थर आ लगे तो जनता को गोली से भून दें ...

लक्ष्मी : गोली न चलती तो .....

सुभाष : **(एकदम)** दादा जी, आप न बोलें। आप व्यापारी हैं। आपका सिद्धांत आपका स्वार्थ है ......

लक्ष्मी : **(एकदम आवेश में)** मैं तो स्वार्थी हूँ, पर तुम अपनी कहो। तुम्हारी नेतागिरी भी तो मुझ स्वार्थी के पैसे से ही चलती है।

सुभाष : ठीक है, उतना पैसा सार्थक होता है ... पर आप यह क्यों भूल गए कि उस दिन जब कुछ व्यापारी पकड़े गए थे, तो आपने विजय भैया को कितना कोसा था।

लक्ष्मी : और आज तुम कोस रहे हो। क्योंकि तुम मंत्री नहीं हो, विरोधी दल के हो।

सुभाष : हाँ, मैं विरोधी दल का हूँ, लेकिन दादा जी ! मैं आपसे बातें नहीं कर रहा।

लक्ष्मी : **(क्रोध में)** तो मैं ही कब तुमसे बातें कर रहा हूँ, वाह ! **(तेजी से अंदर जाते हैं।)**

अन्नपूर्णा : दादा जी, दादा जी ... **(पीछे-पीछे जाती है, विजय भी जाते हैं।)**

सुभाष : मैं माननीय उपमंत्री महोदय से पूछता हूँ कि ...

शरत : **(एकदम)** और मैं तुमसे पूछता हूँ कि क्या जनता के राज में भी सड़कों पर प्रदर्शन होने चाहिए, भीड़ को कानून हाथ में लेना चाहिए ?

सुभाष : जब तक सरकार और उसके अधिकारी ठीक आचरण नहीं करेंगे तब तक जनता प्रदर्शन करती ही रहेगी, कानून हाथ में लेती रहेगी। भाई साहब, इस नौकरशाही ने शासन की इस भूख ने आपको जनता से दूर कर दिया है।

शरत : सुभाष, तुम बार-बार एक ही बात की रट लगाए जा रहे हो।

सुभाष : मैं ठीक कह रहा हूँ। जनता सरकार के ढाँचे को उतना महत्त्व नहीं देती, जितना अधिकारियों की ईमानदारी और हमदर्दी को। आप चलिए मेरे साथ ... **(सहसा शोर बढ़ता है।)**

शरत : **(एकदम)** हाँ, चलूँगा, मुझे तो कभी का चले जाना था, पर ... यह शोर कैसा ?

सुभाष : अवश्य कोई बात है। देखूँ ... **(सुभाष जाने को मुड़ता है, तभी लक्ष्मीचंद्र की पत्नी तारा देवी विक्षिप्त-सी वहाँ आती हैं।)**

तारा : **(पागल-सी)** विजय कहाँ हैं ? **(चारों तरफ देखती है।)**

सुभाष : भाभी जी, क्या बात है ?

तारा : मैं पूछती हूँ, विजय कहाँ है। उसका मनचाहा हो गया। उसकी गोली अरविंद के सीने से पार हो गई ...

शरत : **(एकदम)** भाभी !

सुभाष : भाभी, तुम क्या कह रही हो ?

(सविता का प्रवेश)

सविता : भाभी ठीक कह रही हैं। अरविंद जनता की सरकार की गाली का शिकार हो गया।

(लक्ष्मीचंद्र, विजय, अन्नपूर्णा का प्रवेश)

लक्ष्मी : कौन गोली का शिकार हो गया ?

सविता : अरविन्द !

लक्ष्मी : **(काँपकर)** क्या ... क्या अरविंद मर गया ?

तारा : हाँ, गोली उसके सीने से पार हो गई। वह मर गया।

(सब हक्के-बक्के रह जाते हैं। पागल-से देखते हैं। लक्ष्मीचंद्र सोफे पर गिर पड़ते हैं। विजय दोनों हाथों से मुँह ढक लेते हैं। अन्नपूर्णा पागल-सी तारा को सँभालती है।)

अन्नपूर्णा : अरे, मेरे अरविंद को किसने मार डाला, नाश हो जाय इस पुलिस का ! बिना गोली कोई बात नहीं करता। अरे विजय, यह तुमने क्या किया ?

विजय : **(पागल-सा)** ओह ! यह क्या हुआ ? अरविंद वहाँ क्यों गया था ?

(टेलीफोन की घंटी बजती है, सविता उठाती है।)

सविता : हलो, जी हाँ हैं। **(विजय से)** कप्तान साहब, आपका फोन है।

(चोंगा पटककर तेजी से किसी की ओर देखे बिना भागती है।)

विजय : **(फोन लेकर)** जी हाँ, क्या ... भीड़ बेकाबू हो गई है, टेलीगंज में ... हाँ, अभी आया।

सुभाष : मै भी जाता हूँ कहीं कुछ हो न जाय। **(जाता है)**

शरत : मैं भी चलता हूँ। **(मुड़ता है, पर जब तारा बोलती है तो ठिठक जाता है।)**

अन्नपूर्णा : तारा भाभी जी! अंदर चलें। **(उठाती है।)**

तारा : **(पूर्ववत्)** सब जाओ, पर अरविंद क्या आएगा ? उसने किसी का क्या बिगाड़ा था। वह चिल्लाया– मैं दंगा नहीं करता, मैं बाजार जाता हूँ ... **(विक्षुब्ध हो जाती है।)**

लक्ष्मी : पर मदांध पुलिसवालों ने एक न सुनी। पुलिस को अपनी जान इतनी प्यारी है कि एक दस वर्ष के बच्चे से भी उन्हें डर लगा ......

सविता : **(जाते-जाते)** किसी ने उसकी आवाज नहीं सुनी। किसी ने उसकी ओर नहीं देखा।

लक्ष्मी : सब अंधे हैं। ताकत के अंधे ! जो सामने आता है उसे कुचल देना चाहते हैं ! चाहे वह धूल हो, चाहे पत्थर ...

शरत : **(जाता हुआ व्यथा से)** ओह, यह क्या हो रहा है ? यह क्या हुआ ?

लक्ष्मी : वही हुआ जो विजय चाहता था, जो तुम चाहते थे।

शरत : **(एकदम)** दादा जी ...

लक्ष्मी : **(पूर्ववत्)** तुमने मेरा घर बरबाद कर दिया। मेरे बच्चे को मार डाला। तुम सब हत्यारे हो ...।

शरत : दादा जी, ओह मैं क्या कहूँ ...

लक्ष्मी : **(पूर्ववत्)** जब पैसे की जरूरत होती है तो मेरे पास भाग आते हो। टैक्स माँगते हो, दान माँगते हो, व्यापार में पैसा लगाने को कहते हो और ... मुझी पर गोली चलाते हो ...

शरत : दादा जी, गोली उन्होंने जान-बूझकर नहीं चलाई। अरविंद तो बच्चा था। उससे किसी का क्या वैर था ?

लक्ष्मी : वैर क्यों नहीं था। वह जनता के शत्रु ! मैं अभी जाकर विजय से पूछता हूँ ... **(जाने को उठते हैं।)**

(सविता आती है)

सविता : अभी रुकिये, दादा जी ! भाभी जी को दौरा पड़ गया है ... **(टेलीफोन की घंटी बजती है, उठाती हैं)** हलो, जी हाँ **(शरत से)** आपका फोन है।

शरत : **(फोन लेकर)** हलो, जी हाँ। क्या ... मंत्रिमंडल की बैठक हो रही है, मुझे भी बुलाया है। मैं अभी आया।

(शरत फोन रखकर जाने को मुड़ते हैं। तभी सुभाष का तेजी से प्रवेश)

सुभाष : भाई साहब ! आपको अभी चलना है।

शरत : मैं चल ही रहा हूँ। मंत्रिमंडल की बैठक हो रही है।

सुभाष : वहाँ नहीं आपको मेरे साथ चलना है। आपको जनता के पास चलना है। जनता में बड़ी उत्तेजना है। विद्यार्थी पीछे रह गए, दूसरे समाजद्रोही तत्त्व आगे आ गए हैं और विजय ने गोली चलाने से इन्कार कर दिया है।

शरत : **(पागल-सा)** विजय ने गोली चलाने से इन्कार कर दिया ?

सुभाष : जी हाँ।

शरत : वह कहाँ है ?

सुभाष : भीड़ के सामने !

शरत : वह भीड़ के सामने है। **(एकदम दृढ़ होकर)** चलो, सुभाष, मैं देखता हूँ जनता क्या चाहती है ?

(दोनों जाते हैं)

सविता : मैं भी चलती हूँ।

लक्ष्मी : मैं भी चलता हूँ।

सविता : नहीं-नहीं, आप ठहरें। आप भाभी जी को सँभालें। **(जाती है।)**

(तभी अन्नपूर्णा आती है।)

अन्नपूर्णा : क्या हुआ दादा जी, सब कहाँ गए ?

लक्ष्मी : सब गये। सुभाष आया था। कहता था, विजय ने गोली चलाने से इन्कार कर दिया। अब ... अब तो इन्कार करना ही था। वे तो मेरे बच्चे को मारना चाहते थे ...

अन्नपूर्णा : नहीं-नहीं, दादा जी यह बात नहीं थी।

लक्ष्मी : यह बात कैसे नहीं थी ? मैं उन सबको जानता हूँ। वे मेरे पैसे से आगे बढ़े और मुझी को बरबाद कर दिया। मैं पूछता हूँ, उन्होंने पहले ही गोली चलाने से इन्कार क्यों न किया। क्योंकि ... क्योंकि ...

अन्नपूर्णा : नहीं दादा जी ! नहीं ...

लक्ष्मी : **(आवेश में)** ये मेरे छोटे भाई ... एक ने मुझे स्वार्थी और देशद्रोही कहा, दूसरे ने मेरे बेटे को मार डाला। मेरे मासूम बच्चे को मार डाला ... **(रोकर गिर पड़ते हैं।)**

अन्नपूर्णा : **(सँभालती हुई)** दादा जी, दादा जी ! ओह, यह एक ही घर में क्या होने लगा। भाई-भाई में मनमुटाव! **(एकदम)** नहीं, नहीं, यह नहीं होगा। दादा जी, आप गलत समझ रहे हैं ...

लक्ष्मी : **(आँखें खोलकर)** मैं गलत समझ रहा हूँ ... मैं गलत समझ रहा हूँ। अरविंद मेरे बच्चे ! तू चला गया, मैं तुझसे दो बातें भी न कर सका, तू तो भीड़ में भी नहीं था ! अरविंद ...

(तारा का प्रवेश)

तारा : अरविंद ! क्या अरविंद आया है ? कहाँ है ?

(अन्नपूर्णा तारा को पकड़ी है।)

अन्नपूर्णा : भाभी जी, भाभी जी, आप क्यों उठ आईं ? हम अभी अस्पताल चलते हैं। आप अपने को सँभालिए। **(अन्नपूर्णा तारा को अंदर ले जाती है लक्ष्मीचंद्र भी जाते हैं तभी अस्त-व्यस्त परेशान सविता का प्रवेश।)**

सविता : **(बोलती जाती है)** अद्‌भुत दृश्य था, अपार भीड़ थी, उनके आगे खड़े थे कप्तान भैया, दूर से देख सकी। किसी ने पास जाने ही नहीं दिया। एक रेला आया और मैं पीछे आ पड़ी।

(अन्नपूर्णा आती है।)

अन्नपूर्णा : तुम आ गई। वे लोग वहाँ हैं ? सुभाष कहाँ है ?

सविता : कुछ पता नहीं, मुझे किसी का कुछ पता नहीं। मैं आगे नहीं बढ़ सकी और वे दोनों आगे बढ़ते चले गए। एक बार भीड़ के बीच में सबको देखा, फिर उस ज्वार-भाटा में सब-कुछ छिप गया। **(टेलीफोन की घंटी बजती है, उठाती है।)** हलो, जी वे तो गए। जी हाँ, भीड़ में जाते मैंने देखा था। जी हाँ। **(फोन रखती है।)** मंत्रिमंडल की बैठक में शरत भाई साहब का इंतजार हो रहा है। वे अभी तक पहुँचे ही नहीं ? मैं कहती हूँ ये लोग मंत्रिमंडल की बैठक क्यों कर रहे हैं ? जो लोग विदेशियों की गोलियों से नहीं डरे, वे अपने ही बच्चे और भाइयों से क्यों डरते हैं ? जनता में क्यों नहीं आते?

अन्नपूर्णा : क्योंकि शासन भीड़ में आकर नहीं चलाया जाता। आखिर जनतंत्र भी तो कानून का राज है।

सविता : है, पर ... **(एकदम)** नहीं, अब बहस करने का समय नहीं। सोचने और काम करने का समय है। बेचारा अरविंद ! उसकी मौत क्यों हुई ? जन-राज्य में एक निर्दोष, निरीह बालक की हत्या क्यों हुई ? **(टेलीफोन की घंटी फिर बजती है। उठाकर)** हलो, क्यों ... हाँ, हाँ कप्तान साहब तो कभी के चले गए। क्या, उनका पता नहीं मिल रहा। नहीं वे ... वे भीड़ के सामने थे। मैंने देखा था। जी हाँ, मैंने देखा था। उधर का क्या हाल है ? ठीक नहीं। उनके हुक्म के बिना कुछ नहीं कर सकते ... हाँ, हाँ, आए तो कह दूँगी ... क्या ... कोई आया है। हाँ, हाँ पूछिए ... हलो ... हलो ... हलो ... **(फोन रखकर)** कनेक्शन काट दिया ... अवश्य कोई बात है ! **(जाने को मुड़ती है।)** मैं जाती हूँ ......

अन्नपूर्णा : सविता ! तुम न जाओ ! ठहरो तो, सविता ... **(सविता नहीं रुकती)** गई।

लक्ष्मी : **(आकर)** कौन गई ? क्या बात है ?

अन्नपूर्णा : जरूर कोई बात है। सविता टेलीफोन में कह रही थी, पता नहीं किसी ने क्या कहा, भागी चली गई।

लक्ष्मी : तो मैं भी जाता हूँ। अरविंद को भी लाना है। **(गला रुँध जाता है, तेजी से जाते हैं।)**

अन्नपूर्णा : दादा जी ! अभी रुकिए। किसी को आ जाने दीजिए।

लक्ष्मी : घबराओ नहीं, मैं बच्चा नहीं हूँ **(जाते हैं।)**

(दूसरे द्वार से विजय की पत्नी उमा, आयु 42 वर्ष, पागलों की तरह आती है।)

उमा : जीजी, सब कहाँ हैं ?

अन्नपूर्णा : मुझे पता नहीं। यहाँ से तो कभी के गए। क्या तुझे सविता नहीं मिली।

उमा : मुझे कोई नहीं मिला। अरविंद की खबर सुनकर भागी आ रही हूँ, जीजी ... जीजी, मैं भाभी जी को कैसे मुँह दिखाऊँगी ? मैं मर क्यों न गई ?

अन्नपूर्णा : **(शून्यवत्)** न जाने क्या होने वाला है। एक ही घर के लोग एक-दूसरे को खा रहे हैं। **(बाहर भीड़ का शोर)** यह क्या ?

लोग इधर आ रहे है

उमा : **(द्वार पर जाकर देखती है, चीख पड़ती है। जीजी ... ई...।)**

अन्नपूर्णा : क्या हुआ, उमा ? **(उठकर तेजी से आगे बढ़ती है।)**

(तभी घायल शरत वहाँ आते हैं। मुख पर घाव है। एक हाथ बँधा है।)

अन्नपूर्णा : **(काँपकर)** आप! यह क्या हुआ ?

शरत : वही जो होना चाहिए था। विजय भीड़ में कुचला गया, पर उसने गोली नहीं चलाई।

उमा : कुचले गए, कौन ?

शरत : विजय कुचला गया। चला गया।

उमा : **(चीखकर)** भाई साहब, वे कहाँ हैं ? **(भागती है।)**

अन्नपूर्णा : **(शरत से)** यह तुम क्या कह रहे हो ?

शरत : भीड़ संतुलन खो बैठी थी। विवेक खो बैठी थी। वह चिल्लाती रही–'अरविंद कहाँ है ? अरविंद को लौटाओ।' और विजय भीड़ के सामने अड़ा रहा। चिल्लाता रहा –'मुझसे अरविंद का बदला लो। मैंने अरविंद को मारा है। तुम मुझे मार डालो!'

उमा : और भीड़ ने उन्हें मार डाला ?

शरत : पता नहीं किसने मार डाला–उनके गिरते ही भीड़ पर जैसे अंकुश लग गया, पर...पर...पर जब वहाँ शांति हुई तो विजय और सुभाष दोनों कुचले हुए पड़े थे।

उमा : सुभाष भी...

अन्नपूर्णा : सुभाष भी कुचला गया। हाय...

शरत : हाँ, सुभाष भी कुचला गया। लेकिन खबरदार, जो उनके लिए रोए। रोने से उन्हें दुःख होगा। उन्होंने प्राण दे दिए, पर शासन और जनता का संतुलन ठीक कर दिया। वे शहीद हो गए, पर दूसरों को बचा गए। नगर में अब बिल्कुल शांति है। सब मौन सगर्व बलिदानों की चर्चा कर रहे हैं। सब शोक-संतप्त हैं। **(बाहर देखकर)** लो, वे आ गए। रोना मत-रोना मत **(आगे बढ़कर)** हाँ वहीं लिटा दो। **(तभी लक्ष्मीचंद्र और सविता के साथ पुलिस तथा दूसरे अधिकारियों का प्रवेश)**। धीरे-धीरे वे विजय, सुभाष और अरविंद की लाशें बराबर के कमरे में लाकर रखते हैं। एक भयंकर सन्नाटा छाया रहता है। सविता का मुख पत्थर की तरह कठोर है। लक्ष्मीचंद्र तूफान की तरह काँप रहे हैं। शरत दृढ़ता से प्रबंध में लगे हैं। उमा तेजी से बढ़ती है। बराबर के कमरे में झाँककर जोर की चीख मारती है।)

उमा : माँ जी-ई यह क्या हुआ ?

(तारा अंदर से आती है।)

तारा : कैसा शोर है, अन्नपूर्णा ? अरविंद आ गया ? कहाँ है!

शरत : भाभी, यह देखो, कमरे में तीनों लेटे हैं। कभी नहीं उठेंगे। ये अरविंद और सुभाष हैं – यह जनता की क्षति है और इधर यह विजय है – यह सरकार की क्षति है।

अन्नपूर्णा : **(रोकर)** यह तुम कैसे बावलों की-सी बातें करते हो। यह सब मेरे घर की क्षति है।

सविता : **(उसी तरह पत्थरवत्)** नहीं, जीजी! यह उनकी नहीं, सारे देश की क्षति है, देश क्या हमसे और हम क्या देश से अलग हैं ?

शरत : तुमने ठीक कहा, सविता। यह हमारे देश की क्षति है। जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती।

(पर्दा गिरता है।)

सारांश

विष्णु प्रभाकर द्वारा लिखित एकांकी 'सीमा-रेखा' राष्ट्रीय चेतना प्रधान एकांकी है। इसकी कथावस्तु आज के लोकतंत्र की विसंगतियों से प्रेरित है। राष्ट्रीय चेतना के अभाव में आंदोलन व राष्ट्रीय संपत्तियों पर अपने आक्रोश को निकालना, क्षति पहुँचाना एक समस्या, चिंता का विषय बन चुकी है। कथानक का संगठन एक ही परिवार के चार भाइयों के स्वार्थपरक संघर्ष से हुआ है। चार भाइयों के संघर्ष के रूप में स्वतंत्र भारत के चार वर्गो के प्रतिनिधियों के द्वंद को प्रस्तुत किया है। एकांकी में भिन्न घटनाओं के क्रम में इस बात को भी सिद्ध किया है कि सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती है। एकांकी की कथावस्तु निम्नवत् है—एकांकी की आरंभ उपमंत्री शरतचंद्र की बैठक से होता है। जहाँ उन्हें टेलीफोन पर शहर में झगड़े व पुलिस द्वारा उग्र भीड़ पर गोली चलाने की सूचना मिलती है। तभी उनकी पत्नी अन्नपूर्णा बाहर से घबराई हुई आती है।

उपमंत्री शरतचंद्र पुलिस द्वारा गोली चलाने का कोई ठोस कारण बताते हुए इसका समर्थन करते हैं। चौथे भाई सुभाष की पत्नी सविता पुलिस के इस कृत्य को अनुचित बताती है परंतु शरतचंद्र के बडे भाई लक्ष्मीचंद्र पुलिस के इस कार्य को उचित बताते हैं। दूरभाष पर शरतचंद्र को सूचना मिलती है कि गोलीबारी में 20 लोग घायल हुए हैं और पाँच लोग मारे गए हैं। घायलों को अस्पताल पहुँचा दिया गया है। तभी पुलिस कप्तान विजय जो कि शरतचंद्र और लक्ष्मीचंद्र का भाई है, वहाँ अपने कार्य को उचित ठहराता है। क्योंकि जनता को कानून अपने हाथ में लेने का अधिकार नहीं है। इसी बीच सुभाष वहाँ आता है वह एक जननेता है और उक्त तीनों का भाई भी। वह पुलिस द्वारा की गई बर्बरता की निंदा करता है और स्वतंत्र भारत में गोली चलाना जुर्म मानता है। वह उपमंत्री शरतचंद्र से निवेदन करता है कि इस घृणित कार्य के लिए उत्तरदायी पुलिस अधिकारी को दंड मिले व इसकी निष्पक्ष जाँच कराई जाए। सुभाष व सविता पुनः कहते हैं कि जनतंत्र का अर्थ ही जनता का राज्य है।

तभी वहाँ लक्ष्मीचंद्र की पत्नी तारा विक्षिप्त अवस्था में आती हैं और सूचना देती है कि उसका पुत्र अरविंद पुलिस की गोली का शिकार हो गया है। अब लक्ष्मीचंद्र इसे पुलिस की क्रूरता बताते है और विजय पागल सा हो जाता है। तभी भीड़ के अनियंत्रित होकर

आगे बढ़ने की सूचना मिलती है। विजय, शरतचंद्र, और सुभाष भीड़ को नियंत्रित करने के लिए जाते है। विजय अनियंत्रित भीड़ पर गोली चलाने से इंकार कर देता है तथा सुभाष, शरतचंद्र को भीड़ को समझाने के लिए बुलाता है, शरत और सुभाष दोनों उसके साथ जाते हैं और सविता भी साथ में जाती है।

सविता अन्नपूर्णा से कहती है कि सरकार के लोगों को मंत्री मंडल की बैठक करने के बजाय जनता के बीच जाना चाहिए। विजय की पत्नी उमा अरविंद की मृत्यु पर दुःखी होती है। विजय के अनियंत्रित भीड़ पर गोली न चलाने के परिणामस्वरुप विजय व सुभाष असामाजिक तत्वों के हमले में कुचलकर मारे जाते हैं और शरतचंद्र घायल हो जाते हैं। समस्त वातावरण कारुणिक हो उठता है। भीड़ शांत है, तीनों के शव बैठक में लाकर रख दिए जाते है।

शरतचंद्र, अरविंद व सुभाष को जनता की क्षति व विजय को सरकार को क्षति बताते है। अन्नपूर्णा इस घटना को अपने घर की क्षति बताती है। इसपर सविता इसे देश की क्षति बताती है। वह कहती है–''देश क्या हमसे और हम क्या देश से अलग हैं।''

शरतचंद्र उसकी बात का समर्थन करते हुए कहते हैं कि वास्तव में यह सारे देश की क्षति है। जनतंत्र में सरकार और जनता के बीच कोई विभाजक रेखा नहीं होती है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प का चयन कीजिए–

1. अन्नपूर्णा पुलिस द्वारा किए गए कृत्य का समर्थन करती है :
   (क) वह अराजकता पसंद नहीं करती।
   (ख) पुलिस कप्तान विजय उसके पति का छोटा भाई है।
   (ग) वह व्यापारी वर्ग से संबंध रखती है,
   (घ) जिसका सुरक्षा पुलिस ही कर सकती है।
2. विजय अनियंत्रित भीड़ पर गोली नहीं चलाता क्योंकि–
   (क) वह अरविंद की मृत्यु से आहत था।
   (ख) वह अरविंद की मृत्यु का प्रायश्चित करना चाहता था।
   (ग) शरतचंद्र ने उसे किसी प्रकार की जन-हानि करने से मना किया था।
   (घ) भीड़ पर गोली चलाने का सरकारी आदेश विजय के पास नहीं था।
3. इस एकांकी में उठाई गई समस्या किससे संबंधित है :
   (क) देश से (ख) सरकार से (ग) परिवार से (घ) इन सभी से

4. इस एकांकी का शीर्षक 'सीमा-रेखा' है; क्योंकि :
   (क) चारों भाईयों के स्वार्थ की अलग-अलग सीमा-रेखा है।
   (ख) गोली कांड और हत्या अधिकार और अराजकता की सीमा-रेखा है।
   (ग) जनतंत्र में जनता और सरकार के बीच सीमा-रेखा नहीं होती है।
   (घ) उपर्युक्त सभी कथन सत्य हैं।
5. इस एकांकी में चारों भाइयों और उनकी पत्नियों के विचार एक दूसरे से सर्वथा भिन्न है; क्योंकि :
   (क) उनमें आपस में प्रेम नहीं है।
   (ख) वे एक दूसरे का विरोध करते हैं।
   (ग) सभी स्वतंत्र चिंतन में विश्वास करते हैं।
   (घ) कार्य के अनुरूप इनके स्वार्थ अलग-अलग हैं।
6. 'सीमा-रेखा' एकांकी के रचनाकार हैं :
   (क) उपेंद्रनाथ 'अश्क' (ख) विष्णु प्रभाकर (ग) डा0 रामकुमार वर्मा (घ) उदयशंकर भट्ट
7. 'सीमा-रेखा' एकांकी में सबसे बड़े भाई का क्या नाम है ?
   (क) अरविंद (ख) शरतचंद्र (ग) विजय (घ) लक्ष्मीचंद्र
8. 'सीमा-रेखा' में वर्णित परिवार के जिस बच्चे अरविंद की हत्या हुई, उसकी उम्र क्या थी ?
   (क) 15 (ख) 10 (ग) 8 (घ) 12

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'सीमा-रेखा' एकांकी में कौन-सी सीमा-रेखा दर्शाई गई है ?
2. 'सीमा-रेखा' एकांकी का मूल उद्देश्य लिखिएं।
3. विजय अनियंत्रित भीड़ पर गोली क्यों नहीं चलवाता है ?
4. अन्नपूर्णा पुलिस द्वारा गोली चलाया जाना क्यों उचित मानती है ?
5. 'सीमा-रेखा' शीर्षक को सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
6. आज की राजनीति और राजनीतिज्ञों के लिए 'सीमा-रेखा' में क्या संदेश है ?
7. 'भीड़ को कानून अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए'—यह किसका कथन है? इस कथन की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।
8. विष्णु प्रभाकर के जीवन और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।
9. कथा-संगठन की दृष्टि से ''सीमा-रेखा'' एकांकी की समीक्षा कीजिए।
10. 'सीमा-रेखा' एकांकी में एकांकीकार के मूल उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
11. ''सीमा-रेखा'' एकांकी की कथावस्तु संक्षेप में लिखिएं।
12. 'सीमा–रेखा' एकांकी के माध्यम से जनता और सरकार के संबंध को बताइए।

■

संस्कृत-खंड

संस्कृत

प्रथमः पाठः

वन्दना

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि।
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि।
बलमसि बलं मयि धेहि।
ओजोऽसि ओजो मयि धेहि।।1।।
असतो मा सद् गमय,
तमसो मा ज्योतिर्गमय,
मृत्योर् मामृतं गमय।।2।।
यतो यतः समीहसे,
ततो नोऽभयं कुरु,
शन्नः कुरु प्रजाभ्यो–
ऽभयं नः पशुभ्यः।।3।।
नमो ब्रह्मणे त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि।
त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि।
ऋतं वदिष्यामि सत्यं वदिष्यामि।
तन्मामवतु तद् वक्तारमवतु।
अवतु माम्, अवतु वक्तारम्।।4।।
सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं,
सत्यस्य योनिं निहितं च सत्ये।
सत्यस्य सत्यम् ऋतसत्यनेत्रं,
सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्नाः।।5।।

शब्दार्थ

तेजोऽसि = (तेजः + असि) तेज स्वरूप हो। **मयि** = मुझमें। धेहि = धारण कराओ। **वीर्यमसि** = पराक्रम स्वरूप हो। **बलमसि** = बलरूप हो। **ओजोऽसि** = ओजवान (प्राणशक्ति–सम्पन्न) हो। **असतः** = अशुभ से बुरे कार्यों से। **मा** = मुझे। **सद्** = शुभ की ओर, अच्छे कार्यों की ओर। **गमय** = ले चलो। **तमसः** = अन्धकार से, अज्ञान से। **ज्योतिः** = प्रकाश की ओर, ज्ञान की ओर। **मृत्योः** = मृत्यु से। **अमृतं** = अमरत्व की ओर। **यतो यतः** = जिस-जिस से। **समीहसे** = चाहते हो, इच्छा करते हो। **ततः** = उससे। **नोऽभयं कुरु** = (नः + अभयं) हमें निडर बनाओ, हमें भयरहित बनाओ। **शन्नः** = (शम् + नः) हमारा कल्याण। **प्रजाभ्यः** = प्रजा के लिए। **पशुभ्यः** = पशुओं के लिए। **नमो** = (नमः) नमस्कार है। **ब्रह्मणे** = ब्रह्म के लिए। **त्वमेव** = (त्वम् + एव) तुम ही। **प्रत्यक्षं** = साक्षात्। **ब्रहमासि** = (ब्रह्म + असि) ब्रह्म हो। **त्वामेव** = (त्वाम् + एव) तुमको ही। **वदिष्यामि** = कहूँगा। **ऋतं** = सत्य, यथार्थ। **तन्मामवतु** = (तद् + माम् + अवतु) वह मेरी रक्षा करे। **सत्यव्रतं** = सत्य प्रतिज्ञा वाले, सत्यव्रती। **सत्यपरं** = सत्य में लगे रहने वाले। **त्रिसत्यं** = तीनों कालों (भूत, वर्तमान और भविष्य) में सत्य, त्रिकालाबाधित सत्य। **सत्यस्य योनिं** = सत्य का उत्पत्ति स्थल। **निहितं** = स्थित। **ऋतसत्यनेत्रं** = ऋत एवं सत्य रूप नेत्रवाले। **ऋत** = उचित, निश्चित नियम, नैतिक व्यवस्था। **सत्यात्मकं** = सत्यस्वरूप। **शरण** = शरण में। **प्रपन्ना** = प्राप्त हुए हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित पद्यों (श्लोकों) का सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

(क) **तेजोऽसि .... ओजो मयि धेहि।।**

(ख) **असतो मा .... मामृतं गमय।।**

(ग) **यतो यतः .... नः पशुभ्यः।।**

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए –

(क) तेजविषये भक्तस्य का इच्छा अस्ति ?

(ख) भक्तः कुत्र गन्तुं वाच्छति ?

(ग) भक्तः ईश्वरं किं याचते ?

(घ) ऋतं कः वदिष्यति ?

(ङ) ईश्वरस्य के नेत्रे स्तः ?

व्याकरण–बोध के प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि–विच्छेद कीजिए एवं सन्धि नाम लिखिए–

	शब्द	सन्धि-विच्छेद	सन्धि-नाम
(क)	तेजोऽसि	तेजो + असि	पूर्वरूप
(ख)	ओजोऽसि	—	—
(ग)	मामृतम्	—	—
(घ)	जोतिर्गमय	—	—
(ङ)	सत्यात्मकम्	—	—

2. निम्नलिखित शब्दों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–

	शब्द	विभक्ति	वचन
(क)	मा	द्वितीया	एकवचन
(ख)	पशुभ्यः	—	—
(ग)	ब्रह्मणे	—	—
(घ)	सत्ये	—	—
(ङ)	त्वाम्	—	—

■

द्वितीयः पाठः

सदाचारः

(उत्तम आचरण)

सतां सज्जनानाम् आचारः सदाचारः। ये जनाः सद् एव विचारयन्ति, सद् एव आचरन्ति च, ते एव सज्जनाः भवन्ति। सज्जनाः यथा आचरन्ति तथैवाचरणं सदाचारः भवति। सदाचारेणैव सज्जनाः स्वकीयानि इन्द्रियाणि वशे कृत्वा सर्वैः सह शिष्टं व्यवहारं कुर्वन्ति।

विनयः हि मनुष्याणां भूषणम्। विनयशीलः जनः सर्वेषां जनानां प्रियः भवति। विनयः सदाचारात् उद्भवति। सदाचारात् न केवलं विनयः अपितु विविधाः अन्येऽपि सद्गुणाः विकसन्ति; यथा-धैर्यम्, दाक्षिण्यम्, संयमः, आत्मविश्वासः, निर्भीकता। अस्माकं भारतभूमेः प्रतिष्ठा जगति सदाचारादेव आसीत्। पृथिव्यां सर्वमानवाः स्वं स्वं चरित्रं भारतस्य सदाचार-परायणात् जनात् शिक्षेरन्। भारतभूमिः अनेकेषां सदाचारिणां पुरुषाणां जननी। एतेषां महापुरुषाणाम् आचारः अनुकरणीयः।

सदाचारः नाम नियमसंयमयोः पालनम्। इन्द्रियसंयमः सदाचारस्य मूले तिष्ठति। इन्द्रियसंयमः युक्ताहारविहारेण युक्तस्वप्नावबोधेन च सम्भवति। किं युक्तं किम् अयुक्तम् इति सदाचारेण निर्णेतुं शक्यते।

ये केऽपि पुरुषाः महान्तः अभवन् ते संयमेन सदाचारणैव उन्नतिं गताः। यः जनः नियमेन अध ीते, यथासमयं शेते, जागर्ति, खादति, पिबति च सः निश्चयेन अभ्युदयं गच्छति। सदाचारस्य महिमा शास्त्रेषु अपि वर्णितः–

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः।
श्रद्धालुरनसूयश्च शतं वर्षाणि जीवति।।
आचाराल्लभते ह्यायुराचाराल्लभते श्रियम्।
आचाराल्लभते कीर्तिम् आचारः परमं धनम्।।

अतएव सदाचारः सर्वथा रक्षणीयः। महाभारते अपि सत्यम् एव उक्तं यत् अस्माभिः सदा चरित्रस्य रक्षा कार्या, धनं तु आयाति याति च, चरित्रं यदि नष्टं स्यात् तर्हि सर्वं विनष्टं भवति।

सर्वलक्षणहीनोऽपि यः सदाचारवान् नरः।
वृत्तं यत्नेन संरक्षेत्, वित्तमायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणो, वृत्ततस्तु हतो हतः।।

शब्दार्थ

सतां = श्रेष्ठ। **सज्जनानाम्** = सज्जनों का। **आचारः** = आचरण, व्यवहार। **सदाचारः** = श्रेष्ठ आचरण। **ये जनाः** = जो लोग। **सद् एव** = अच्छा ही, श्रेष्ठ ही, शुभ ही। **विचारयन्ति** = विचार करते हैं। **वदन्ति** = बोलते हैं। **आचरन्ति** = आचरण करते हैं। **यथा** = जैसा। **तथैवाचरणं** = (तथा + एव + आचरणं) वैसा ही आचरण। **सदाचारेणैव** = (सदाचारेण + एव) सदाचार से ही। **स्वकीयानि** = अपनी। **इन्द्रियाणि** = इन्द्रियों (आँख, कान, नासिका, जिह्वा, त्वचा) को। **वशे कृत्वा** = वश में करके। **सर्वैःसह** = सबके साथ। **शिष्टं** = अच्छा, शालीन। **विनयः** = विनम्रता। **हि** = निश्चय ही। **भूषणम्** = आभूषण। **सर्वेषां जनानां** = सभी लोगों का। **सदाचारात्** = सदाचार से। **उद्भवति** = उत्पन्न होती है। **विविधा** = अनेक। **अन्येऽपि** = दूसरे भी। **विकसन्ति** = विकसित होते हैं। **दाक्षिण्यं** = उदारता, शालीनता। **निर्भीकता** = निडरता। **अस्माकं** = हमारी। **प्रतिष्ठा** = सम्मान। **जगति** = संसार में। **पृथिव्यां** = पृथ्वी पर। **सदाचार-परायणात् जनात्** = सदाचार-परायण लोगों से, सदाचार का पालन करने वाले लोगों से। **शिक्षेरन्** = सीखना चाहिए। **जननी** = माता। **एतेषां** = इनका। **अनुकरणीयः** = (अनु + कृ + अनीयर्) अनुकरणीय है, अनुकरण करने योग्य है। **नियमसंयमः** = नियम और संयम का। **इन्द्रियसंयमः** = इन्द्रियों का संयम, इन्द्रियों को वश में रखना। **मूले** = मूल में, जड़ में। **तिष्ठति** = स्थित है। **युक्ताहारविहारेण** = उचित आहार-विहार से, उचित भोजन और आचरण से। **युक्तस्वप्नावबोधेन** = उचित सोने और जागने से अर्थात् समय पर सोने और जागने से। **निर्णेतुं शक्यते** = निर्णय किया जा सकता है। **ये केऽपि** = जो कोई भी। **महान्तः** = महान। **गताः** = प्राप्त हुए। **अधीते** = पढ़ता है। **शेते** = सोता है। **जागर्ति** = जागता है। **पिबति** = पीता है। **अभ्युदयं** = उन्नति को। **सर्वलक्षणहीनोऽपि** = (सर्वलक्षणहीनः अपि) सभी शुभ लक्षणों (गुणों) से रहित होते हुए भी। **श्रद्धालुः** = श्रद्धालु है, ईश्वर एवं बड़ों के प्रति श्रद्धा रखता है। **अनसूयः** = ईर्ष्या न करने वाला। **लभते** = प्राप्त करता है। **ह्यायुः** = (हि + आयुः) निश्चय ही आयु। **श्रियम्** = लक्ष्मी, धन-सम्पत्ति। **कीर्तिम्** = यश। **परमं धनम्** = सर्वश्रेष्ठ धन। **सर्वथा** = सभी प्रकार से। **रक्षणीयः** = रक्षा करने योग्य है। **कार्या** = करनी चाहिए। **तर्हि** = तो। **वृत्तं** = चरित्र। **यत्नेन** = प्रयत्नपूर्पक। **संरक्षेत्** = रक्षा करनी चाहिए। **वित्तम्** = धन। **आयाति** = आता है। **याति** = जाता है, चला जाता है। **अक्षीणः** = नष्ट नहीं हुआ। **वित्ततः** = धन से। **क्षीणः** = नष्ट। **वृत्ततः** = चरित्र से। **तु** = तो। **हतः** = मारा गया।

अभ्यास

1. निम्नलिखित अवतरणों का हिन्दी में सन्दर्भसहित अनुवाद कीजिए –

(क) **सतां सज्जनानाम् .... व्यवहारं कुर्वन्ति।**

(ख) **विनयः हि .... आचारः अनुकरणीयः।**

(ग) **सदाचारः नाम .... निर्णेतुं शक्यते।**

(घ) **ये केऽपि .... अभ्युदयं गच्छति।**

(ङ) **सर्वलक्षणहीनोऽपि .... वर्षाणि जीवति।।**

(च) **आचाराल्लभते .... परमं धनम्।।**

(छ) **वृत्तं यत्नेन .... हतो हतः।।**

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए –

(क) सदाचारस्य अभिप्रायः कोऽस्ति ?

(ख) के जनाः सज्जनाः भवन्ति ?

(ग) सज्जनानाम् आचारः कः ?

(घ) सज्जनाः सर्वैः सह कीदृशं व्यवहार कुर्वन्ति ?

(ङ) कः मनुष्याणां भूषणम् अस्ति ?

(च) वियनः कस्मात् उद्भवति ?

(छ) सदाचारात् के सद्गुणाः विकसन्ति ?

(ज) भारतभूमिः केषां पुरुषाणां जननी ?

(झ) इन्द्रियसंयमः कस्य मूले तिष्ठति ?

(ञ) किं युक्तं किम् अयुक्तम् इति केन निर्णेतुं शक्यते ?

(ट) सदाचारवान् नरः कति वर्षाणि जीवति ?

(ठ) आयुः कस्मात्, लभते ?

(ड) कीर्तिं कस्मात् लभते ?

(ढ) कः परमं धनम् ?

(ण) किम् यत्नेन संरक्षेत् ?

(त) किम् आयाति याति च ?

व्याकरण–बोध के प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि–विच्छेद कीजिए एवं सन्धि का नाम लिखिए–

	शब्द	सन्धि–विच्छेद	सन्धि–नाम
(क)	तथैव	तथा + एव	वृद्धि
(ख)	अन्येऽपि	—	—
(ग)	युक्ताहारः	—	—
(घ)	केऽपि	—	—
(ङ)	हीनोऽपि	—	—

2. निम्नलिखित शब्दों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–

	शब्द	विभक्ति	वचन
(क)	सज्जनानाम्	षष्ठी	बहुवचन
(ख)	सज्जनाः	—	—
(ग)	सदाचारेण	—	—
(घ)	सदाचारात्	—	—
(ङ)	मूले	—	—

■

तृतीयः पाठः

पुरुषोत्तमः रामः

(पुरुषों में श्रेष्ठ राम)

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो रामो नाम जनैः श्रुतः।
नियतात्मा महावीर्यो द्युतिमान् धृतिमान् वशी।।1।।
बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी श्रीमाञ्छत्रुनिवर्हणः।
विपुलांसो महाबाहुः कम्बुग्रीवो महानुः।।2।।
महोरस्को महेष्वासो गूढजत्रुररिन्दमः।
आजानुबाहुः सुशिराः सुललाटः सुविक्रमः।।3।।
समः समविभक्ताङ्गः स्निग्धवर्णः प्रतापवान्।
पीनवक्षा विशालाक्षो लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः।।4।।
धर्मज्ञः सत्यसन्धश्च प्रजानां च हिते रतः।
यशस्वी ज्ञानसम्पन्नः शुचिर्वश्यः समाधिमान्।।5।।
प्रजापतिसमः श्रीमान् धाता रिपुनिषूदनः।
रक्षिता जीवलोकस्य धर्मस्य परिरक्षिता।।6।।
रक्षिता स्वस्य धर्मस्य स्वजनस्य च रक्षिता।
वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञो धनुर्वेदे च निष्ठितः।।7।।
सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः स्मृतिमान् प्रतिभावान्।
सर्वलोकप्रियः साधुरदीनात्मा विचक्षणः।।8।।
स च नित्यं प्रशान्तात्मा मृदुपूर्वं च भाषते।
उच्चमानोऽपि परुषं नोत्तरं प्रतिपद्यते।।9।।
कदाचिदुपकारेण कृतेनैकेन तुष्यति।
न स्मरत्यपकाराणां शतमप्यात्मशक्तया।।10।।
सर्वविद्याव्रतस्नातो यथावत् साङ्गवेदवित्।
अमोघक्रोधहर्षश्च त्यागसंयमकालवित्।।11।।

शब्दार्थ

इक्ष्वाकुवंशप्रभवो = इक्ष्वाकु के वंश में उत्पन्न, इक्ष्वाकु अयोध्या में राज्य करने वाले सूर्यवंशी राजाओं का पूर्व पुरुष था। यह वैवस्वत मनु का पुत्र था और सूर्यवंशी राजाओं में सबसे प्रथम पुरुष था। **जनैः** = लोगों के द्वारा। **श्रुतः** = सुना गया। **नियतात्मा** = मन को वश में रखने वाले। **द्युतिमान्** = कान्ति (लावण्य) सम्पन्न। **धृतिमान्** = धैर्यशाली। **वशी** = इंन्दियों को वश में रखने वाले, जितेन्द्रिय। **वाग्मी** = बोलने में चतुर, चतुर वक्ता। **श्रीमान्** = शोभा समपन्न या लक्ष्मी से सम्पन्न। **शत्रुनिवर्हणः** = शत्रुओं का दमन (नाश) करने वाले। **विपुलांसः** = विशाल कन्धों (स्कन्ध प्रदेश) वाले। **महाबाहुः** = लम्बी भुजाओं वाले। **कम्बुग्रीवः** = शंख जैसी गर्दन वाले। **महाहनुः** = ऊँची (बड़ी) ठोड़ी वाले। **महोरस्कः** = (महा + उरस्कः)। विशाल (चौड़ी) छाती (वक्षस्थल) वाले। **महेष्वासः** = (महा + इष्वासः) बड़ा धनुर्धर, महान योद्धा। **गूढजत्रुः** = छिपी (मांस में दबी) हँसली (गर्दन की हड्डी) वाले। **अरिन्दमः** = शत्रुओं का दमन करने वाले। **अजानुबाहुः** = घुटनों तक लम्बी भुजाओं वाले। **सुशिराः** = सुन्दर शिरवाले। **सुललाटः** = सुन्दर मस्तक वाले। **सुविक्रमः** = महान पराक्रमी। **समः समविभक्ताङ्गः** = समान (उचित) रूप से विभक्त अंग वाले। **स्निग्ध वर्णः** = चिकने (सुन्दर) रंग (वर्ण) वाले। **पीनवक्षा** = पुष्ट (चौड़ी) छाती वाले। **विशालाक्षः** = बड़े नेत्रों वाले। **लक्ष्मीवान्** = लक्ष्मी से संयुक्त (सम्पन्न)। **शुभलक्षणः** = शुभ (अच्छे) गुणों वाले। **धर्मज्ञः** = धर्म के ज्ञाता। **सत्यसन्धः** = सत्य प्रतिज्ञा वाले। **हिते** = कल्याण (भलाई) में। **रतः** = लगे रहने वाले। **यशस्वी** = यश वाले। **शुचिः** = पवित्र। **वश्यः** = जितेन्द्रिय, इन्द्रियों को वश मे रखने वाले। **समाधिमान्** = एकाग्रचित्त, स्थिर मन वाले। **प्रजापतिसमः** = राजा के समान, ब्रह्मा के समान। **धाता** = आश्रय देने वाले, धारण करने वाले। **रिपुनिषूदनः** = शत्रुओं को नष्ट करने वाले। **जीवलोकस्य** = संसार का। **धर्मस्य** = धर्म का। **परिरक्षिता** = रक्षक, रक्षा करने वाले। **वेदवेदांगतत्त्वज्ञः** = वेद और वेदांगों के तत्त्व को जानने वाले। **धनुर्वेदे** = धनुष-विद्या में। **निष्ठितः** = निपुण, चतुर। **सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः** = सभी शास्त्रों के अर्थ के तत्त्व को जानने वाले। **स्मृतिमान्** = स्मरण शक्ति से सम्पन्न। **प्रतिभावान्** = प्रतिभाशाली, अपने ज्ञान का सदुपयोग करने वाले। **अदीनात्मा** = स्वतन्त्र, स्वाभिमानी। **विचक्षणः** = चतुर, विद्वान्। **प्रशान्तात्मा** = शान्त स्वभाव वाले, शान्त मन वाले। **मृदुपूर्वं** = मधुरता से युक्त। **उच्चमानोऽपि** = सम्माननीय व्यक्ति को भी। **परुषं** = कठोर। **नोत्तरम्** = (न + उत्तरं) उत्तर नहीं (देना)। **प्रतिपद्यते** = कहने वाले। **उपकारेण** = उपकार से। **कृतेनैकेन** = (कृतेन एकेन) किए गए एक ही। **तुष्यति** = सन्तुष्ट हो जाते हैं। **अपकाराणां** = अपकारों को, बुराईयों को। **आत्मवत्तया** = अपने प्रति। **सर्वविद्याव्रतस्नातः** = सभी विद्याओं और व्रतों में निपुण। **साङ्गवेदवित्** = वेदांगों सहित वेदों के ज्ञाता। **अमोघक्रोधहर्षः** =

जिसके क्रोध और हर्ष व्यर्थ नहीं जाते, अचूक क्रोध और हर्ष वाले। **त्याग-संयम-कालवित्** = त्याग, संयम और समय का ज्ञान रखने वाले।

अभ्यास

1. निम्नलिखित पद्यों का हिन्दी में सन्दर्भ सहित अनुवाद कीजिए –

(क) इक्ष्वाकुवंशप्रभवो .... धृतिमान् वशी।।

(ख) बुद्धिमान् .... महानुः।।

(ग) महोरस्को .... सुविक्रमः।।

(घ) समः .... लक्ष्मीवाञ्छुभलक्षणः।।

(ङ) धर्मज्ञः .... शुचिर्वश्यः समाधिमान्।।

(च) प्रजापति समः .... परिरक्षिता।।

(छ) रक्षिता .... निष्ठितः।।

(ज) सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः .... विचक्षणः।।

(झ) स च नित्यं .... प्रतिपद्यते।।

(ञ) कदाचिदुपकारेण .... शतमप्यात्मशक्तया।।

(ट) सर्वविद्याव्रतस्नातो .... त्यागसंयमकालवित्।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए –

(क) रामः कस्मिन् वंशे प्रभवः आसीत् ?

(ख) नियततात्मा कः आसीत् ?

(ग) द्युतिमान् धृतिमान् वशी कः आसीत् ?

(घ) कः बुद्धिमान् नीतिमान् वाग्मी आसीत् ?

(ङ) शत्रुनिवर्हणः कः आसीत् ?

(च) महाबाहुः कः आसीत् ?

(छ) अजानुबाहुः कः आसीत् ?

(ज) विशालाक्षः कः आसीत् ?

(झ) प्रजापतिसमः श्रीमान् कः आसीत् ?

(ञ) वेदवेदाङ्गतत्त्वज्ञः कः आसीत ?

(ट) सर्वशास्त्रार्थतत्त्वज्ञः कः आसीत् ?

(ठ) प्रशान्तात्मा कः ?

(ङ) कः एकेन उपकारेण तुष्यति ?

(ढ) कः शतम् अपकाराणां न स्मरति ?

(ण) सर्वविद्याव्रतस्नातः कः ?

(त) साङ्गवेदवित् कः ?

(थ) कः अमोघक्रोधहर्षः ?

(द) त्यागसंयमकालवित् कः ?

व्याकरण बोध के प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि–विच्छेद कीजिए एवं सन्धि का नाम लिखिए–

	शब्द	सन्धि–विच्छेद	सन्धि–नाम
(क)	नियतात्मा	नियत + आत्मा	दीर्घ
(ख)	महोरस्कः	—	—
(ग)	विशालाक्षः	—	—
(घ)	शास्त्रार्थः	—	—
(ङ)	नोत्तरम्	—	—

2. निम्नलिखित शब्दों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–

	शब्द	विभक्ति	वचन
(क)	जनैः	तृतीया	एकवचन
(ख)	महाहनुः	—	—
(ग)	धर्मस्य	—	—
(घ)	उपकारेण	—	—
(ङ)	अपकाराणाम्	—	—

चतुर्थः पाठः

सिद्धिमन्त्रः

(सफलता का मन्त्र)

रामदासः नारायणपुरे निवसति। सः नित्यं ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय नित्यकर्माणि करोति, नारायणं स्मरति, ततः परं पशुभ्यः घासं ददाति। अनन्तरं पुत्रेण सह सः क्षेत्राणि गच्छति। तत्र सः कठिनं श्रमं करोति। तस्य श्रमेण निरीक्षणेन च कृषौ प्रभूतम् अन्नम् उत्पद्यते। तस्य पशवः हृष्ट-पुष्टाङ्गाः सन्ति, गृहं च धनधान्यादिपूर्णम् अस्ति।

अत्रैव ग्रामे पैतृकधनेन धनवान् धर्मदासः निवसति। तस्य सकलं कार्यं सेवकाः सम्पादयन्ति। सेवकानाम् उपेक्षया तस्य पशवः दुर्बलाः क्षेत्रेषु च बीजमात्रमपि अन्नं नोत्पद्यते। क्रमशः तस्य पैतृकं धनं समाप्तम् अभवत्। तस्य जीवनम् अभावग्रस्तं जातम्।

एकदा वनात् प्रत्यागत्य रामदासः स्वद्वारि उपविष्टं धर्मदासं दुर्बलं खिन्नं च दृष्ट्वा अपृच्छत्, ''मित्र धर्मदास! चिराद् दृष्टोऽसि। किं केनापि रोगेण ग्रस्तः, येन एवं दुर्बलः।'' धर्मदासः प्रसन्नवदनं तम् अवदत् ''मित्र ! नाहं रुग्णः, परं क्षीणविभवः इदानीम् अन्य इव संजातः। इदमेव चिन्तयामि केनोपायेन मन्त्रेण वा सम्पन्नः भवेयम्।'' रामदासः तस्य दारिद्रयस्य कारणं तस्यैव अकर्मण्यता इति विचार्य एवम् अकथयत्, ''मित्र ! पूर्वं केनापि दयालुना साधुना मह्यम् एकः सम्पत्तिकारकः मन्त्रः दत्तः, यदि भवान् अपि तं मन्त्रम् इच्छति तर्हि तेन उपदिष्टम् अनुष्ठानम् आचरतु, मित्र ! शीघ्रं कथय तदनुष्ठानं येनाहं पुनः सम्पन्नः भवेयम्।'' रामदासः अवदत्, ''मित्र ! नित्यं सूर्योदयात् पूर्वम् उत्तिष्ठ, स्वपशूनां च उपचर्यां स्वयमेव कुरु, प्रतिदिनं च क्षेत्रेषु कर्मकाराणां कार्याणि निरीक्षस्व। अनेन तव अनुष्ठानेन प्रसन्नः सः महात्मा वर्षान्ते अवश्यं तुभ्यं सिद्धिमन्त्रं दास्यति इति।''

विपन्नः धर्मदासः सम्पत्तिम् अभिलषन् वर्षम् एकं यथोक्तम् अनुष्ठानम् अकरोत्। नित्यं प्रातः जागरणेन तस्य स्वास्थ्यम् अवर्धत्। तेन नियमेन पोषिताः पशवः स्वस्थाः सबलाः च जाताः; गावः महिष्यः च प्रचुरं दुग्धम् अयच्छन्। तदानीं तस्य कर्मकराः अपि कृषिकार्ये सन्नद्धाः अभवन्। अतः तस्मिन् वर्षे तस्य क्षेत्रेषु प्रभूतम् अन्नम् उत्पन्नम् गृहं च धनधान्यपूर्णं जातम्।

एकस्मिन् दिने प्रातः रामदासः क्षेत्राणि गच्छन् दुग्धपरिपूर्णपात्रं हस्ते दधानं प्रसन्नमुखं धर्मदासम् अवलोक्य अवदत्, ''अपि कुशलं ते, वर्धते किं तव अनुष्ठानम् ? किं महात्मानं मन्त्रार्थम्

उपगच्छाव ?'' धर्मदासः प्रत्यवदत्, ''मित्र ! वर्षपर्यन्तं श्रमं कृत्वा मया इदं सम्यग् ज्ञातं यत् 'कर्म' एव स सिद्धिमन्त्रः। तस्यैव अनुष्ठानेन मनुष्यः सर्वम् अभीष्टं फलं लभते। तस्यैव अनुष्ठानस्य प्रभावेण सम्प्रति अहं पुनः सुखं समृद्धिं च अनुभवामि।'' तत् श्रुत्वा प्रहृष्टः च रामदासः यथास्थानम् अगच्छत्। सत्यमेव उक्तम्–

उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं क्रियाविधिज्ञं व्यसनेष्वसक्तम्।
शूरं कृतज्ञं दृढ़सौहृदं च लक्ष्मीः स्वयं याति निवासहेतोः।।

शब्दार्थ

निवसति = रहता है, निवास करता है। **ब्राह्मे मुहूर्ते** = ब्रह्मबेला में, उषा काल में, सूर्योदय से पहले। **उत्थाय** = उठकर, जागकर। **ततः परं** = उसके बाद। **अनन्तरं** = तत्पश्चात्। **क्षेत्राणि** = खेतों को। **श्रमं** = परिश्रम। **निरीक्षणेन** = देखभाल करने से। **कृषौ** = कृषि में, खेती में। **प्रभूतम्** = अत्यधिक। **उत्पद्यते** = उत्पन्न (पैदा) होता है। **हृष्ट-पुष्टाङ्गाः** = स्वस्थ एवं पुष्ट शरीर वाले। **धनधान्यादिपूर्णम्** = धन-दौलत एवं अनाज से भरा हुआ। **पैतृक धनेन** = पूर्वजों के धन से। **सेवकाः** = सेवक लोग, नौकर लोग। **सम्पादयन्ति** = करते हैं। **उपेक्षया** = उदासीनता से, लापरवाही से, देखभाल न करने के कारण। **दुर्बलाः** = कमजोर। **क्षेत्रेषुः** = खेतो में। **नोत्पद्यते** = (न + उत्पद्यते) उत्पन्न नहीं होता। **अभावग्रस्तं** = अभावग्रस्त, आवश्यक वस्तुओं की कमी से युक्त। **एकदा** = एक बार, एक दिन। **वनात्** = वन से। **प्रत्यागत्य** = लौटकर। **स्वद्वारि** = अपने द्वार पर, अपने दरवाजे पर। **उपविष्टं** = बैठे हुए। **खिन्नं** = दुःखी, उदास। **दृष्ट्वा** = देखकर। **अपृच्छत्** = पूछा। **चिराद्** = बहुत दिनों बाद। **प्रसन्नवदनं** = प्रसन्न मुख वाले से। **रुग्णः** = रोगी। **क्षीणविभवः** = नष्ट ऐश्वर्य वाला, नष्ट हुई धन-सम्पत्ति वाला। **सञ्जातः** = हो गया हूँ। **केनोपायेन** = (केन + उपायेन) किस उपाय से। **मन्त्रेण तन्त्रेण वा** = मन्त्र अथवा तन्त्र से। **भवेयम्** = हो जाऊँ। **दारिद्रस्य** = दरिद्रता का, गरीबी का। **अकर्मण्यता** = कर्महीनता, निठल्लापन। **विचार्य** = सोचकर। **दयालुना साधुना** = दयालु साधु ने। **मह्यम्** = मुझे। **सम्पत्तिकारकः** = सम्पत्ति देने वाला। **तर्हि** = तो। **अनुष्ठानम्** = धार्मिक क्रिया। **आचरतु** = आचरण करो। **उपचारर्यां** = सेवा, देखभाल। **कर्मकाराणां** = सेवकों (नौकरों) के। **निरीक्षस्व** = निरीक्षण (देखभाल) करो। **वर्षान्ते** = वर्ष (साल) के अन्त में। **तुभ्यम्** = तुम्हारे लिए। **दास्यति** = देंगे। **विपन्नः** = दुःखी। **अभिलषन्** = इच्छा करता हुआ। **यथोक्तम्** = कहे अनुसार। **अवर्धत्** = बढ़ने लगा, बढ़ गया। **पोषिताः** = पालन-पोषण किए हुए। **सबलाः** = बलिष्ठ। **गावः महिष्यः च** = गायें और भैंसे। **अयच्छन्** = देने लगीं। **सन्नद्धाः** = संलग्न। **प्रभूतम्** = अधिक मात्रा में। **दुग्धपरिपूर्णपात्रं** = दूध से भरा हुआ पात्र (वर्तन)। **दधानं** = लिए हुए। **मन्त्रार्थम्** = मन्त्र-प्राप्ति के लिए। **उपगच्छाव** = पास चलें। **प्रत्यवदत्** = उत्तर दिया।

सम्प्रति = इस समय। **अनुभवामि** = अनुभव कर रहा हूँ। **प्रहृष्टः** = अत्यधिक प्रसन्न। **उत्साहसम्पन्नम्** = उत्साह से युक्त। **अदीर्घसूत्रं** = काम में देरी न करने वाले, आलस न करने वाले। **क्रियाविधिज्ञम्** = कार्य करने की विधि को जानने वाले। **व्यसनेष्वसक्तम्** = (व्यसनेषु + असक्तम्) बुरी आदतों में न लगे हुए। **शूरं** = वीर। **कृतज्ञं** = उपकार मानने वाला। **दृढ़सौहृदं** = पक्की मित्रता वाले। **निवासहेतोः** = निवास करने के लिए।

अभ्यास

1. निम्नलिखित गद्यांशों/अवतरणों की सन्दर्भ सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

(क) रामदासः .... धनधान्यादिपूर्णम् अस्ति।

(ख) अत्रैव ग्रामे .... अभावग्रस्तं जातम्।

(ग) एकदा वनात् .... सम्पन्नः भवेयम्।''

(घ) रामदासः तस्य दारिद्रयस्य .... अनुष्ठानम् आचरतु,।

(ङ) मित्र ! शीघ्रं कथय .... सिद्धिमन्त्रं दास्यति इति।''

(च) विपन्नः धर्मदासः .... धनधान्यपूर्णं जातम्।

(छ) एकस्मिन् दिने .... समृद्धिं च अनुभवामि।''

(ज) उत्साहसम्पन्नमदीर्घसूत्रं .... निवासहेतोः।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए –

(क) नारायणपुरे कः निवसति ?

(ख) कः नित्यं पुत्रेण सह क्षेत्राणि गच्छति ?

(ग) कः क्षेत्रे कठिनं श्रमं करोति ?

(घ) कस्य पशवः हृष्ट-पुष्टाङ्गाः सन्ति ?

(ङ) कस्य गृहं धनधान्यादिपूर्णम् अस्ति ?

(च) पैतृक धनेन धनवान् कः ?

(छ) धर्मदासस्य सकलं कार्यं के सम्पादयन्ति ?

(ज) कस्य क्षेत्रेषु बीजमात्रमपि अन्नं नोत्पद्यते ?

(झ) कस्य पैतृकं धनं समाप्तम् अभवत् ?

(ञ) कस्य जीवनम् अभावग्रस्तं जातम् ?

(ट) रामदासः कं दुर्बलं खिन्नं च अपश्यत् ?

(ठ) अकर्मण्यता कस्य दारिद्रयस्य कारणम् ?

(ङ) महात्मा वर्षान्ते कस्मै सिद्धिमन्त्र दास्यति ?

(ढ) कः सम्पत्तिम् अभिलषन् वर्षमेकम् अनुष्ठानम् अकरोत ?

(ण) नित्यं प्रातः जागरणेन कस्य स्वास्थ्यम् अवर्धत ?

(त) नियमेन पोषिताः कस्य पशवः स्वस्थाः सबलाः च जाताः, गावः महिष्यः च प्रचुरं दुग्धम् अयच्छन्?

(थ) 'कर्म एव स सिद्धिमन्त्रः' इति केन कं प्रति कथितम् ?

(द) लक्ष्मी निवासहेतोः कं प्रति याति ?

(ध) ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय रामदासः किं करोति ?

व्याकरण—बोध के प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए एवं सन्धि का नाम लिखिए—

	शब्द	सन्धि-विच्छेद	सन्धि-नाम
(क)	नोत्पद्यते	न + उत्पद्यते	गुण
(ख)	प्रत्यागत्य	—	—
(ग)	केनापि	—	—
(घ)	सूर्योदयात्	—	—
(ङ)	तस्यैव	—	—

2. निम्नलिखित शब्दों में विभक्ति एवं वचन लिखिए—

	शब्द	विभक्ति	वचन
(क)	नारायणपुरे	सप्तमी	एकवचन
(ख)	पुत्रेण	—	—
(ग)	तस्य	—	—
(घ)	मह्यम्	—	—
(ङ)	सूर्योदयात्	—	—

■

पञ्चमः पाठः

सुभाषितानि

(सुन्दर उक्तियाँ)

वरमेको गुणी पुत्रो न च मूर्खशतैरपि।
एकश्चन्द्रस्तमो हन्ति न च तारागणैरपि।।1।।

मनीषिणः सन्ति न ते हितैषिणः,
हितैषिणः सन्ति न ते मनीषिणः।
सुहृच्च विद्वानपि दुर्लभो नृणाम्,
यथौषधं स्वादु हितं च दुर्लभम्।।2।।

चक्षुषा मनसा वाचा कर्मणा च चतुर्विधम्।
प्रसादयति यो लोकं तं लोको नु प्रसीदति।।3।।

अक्रोधेन जयेत् क्रोधमसाधुं साधुना जयेत्।
जयेत् कदर्यं दानेन जयेत् सत्येन चानृतम्।।4।।

अकृत्वा परसन्तापमगत्वा खलमन्दिरम्।
अनुल्लङ्घ्य सतां मार्गं यत् स्वल्पमपि तद् बहु।।5।।

सत्याधारस्तपस्तैलं दयावर्तिः क्षमा शिखा।
अन्धकारे प्रवेष्टव्ये दीपो यत्नेन वार्यताम्।।6।।

त्यज दुर्जनसंसर्गं भज साधु समागमम्।
कुरु पुण्यमहोरात्रं स्मर नित्यमनित्यताम्।।7।।

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा–
स्त्रिभुवनमुपकारश्रेणिभिः प्रीणयन्तः।
परगुण-परमाणून् पर्वतीकृत्य नित्यं,
निजहृदि विकसन्तः सन्ति सन्तः कियन्तः।।8।।

शब्दार्थ

वरम् = श्रेष्ठ। **गुणी** = गुणवान्। **मूर्खशतैः** = सौ मूर्खों से। **तमः** = अन्धकार। **हन्ति** = नष्ट कर देता है। **तारागणैः** = तारागणों द्वारा। **मनीषिणः** = विद्वान्। **हितैषिणः** = हित चाहने वाले, भलाई (कल्याण) की इच्छा करने वाले। **सुहृद्** = मित्र। **नृणाम्** = मनुष्यों में। **दुर्लभः** = कठिनाई से प्राप्त। **यथौषधं** = (यथा + औषधम्) जिस प्रकार दवा। **स्वादु** = स्वादिष्ट। **हितं** = हितकारी। **चक्षुषा** = नेत्र (आँख से)। **मनसा** = मन से। **वाचा** = वाणी से। **कर्मणा** = कर्म से। **चतुर्विधम्** = चार प्रकार से। **प्रसादयति** = प्रसन्न करता है। **प्रसीदति** = प्रसन्न होता है, प्रसन्न रखता है। **अक्रोधेन** = शांति (अक्रोध) से। **जयेत्** = जीतना चाहिए। **असाधुं** = दुर्जन को, दुष्टता को। **साधुना** = सज्जनता से, सद्व्यवहार से। **कदर्यं** = कृपणता (कंजूसी) को। **अनृतम्** = झूठ (असत्य) को। **अकृत्वा** = न करके। **परसन्तापम्** = परसन्ताप, दूसरों को पीड़ा। **अगत्वा** = न जाकर। **खलमन्दिरम्** = दुष्टों के घर। **अनुल्लङ्घ्य** = बिना उल्लंघन किए, उल्लंघन न करके। **सतां मार्गः** = सत्पुरुषों (सज्जनों) के मार्ग को। **यत्** = जो। **स्वल्पमपि** = थोड़ा भी। **बहु** = बहुत। **सत्याधारः** = (सत्य + आधारः) सत्य ही जिसका आधार है, सत्य आधार वाला। **तपः** = तप, तपस्या। **तैलं** = तेल। **दयावर्तिः** = दया-रूपी बत्ती, दया बत्ती है जिसकी। **क्षमाशिखा** = क्षमा शिखा (लौ) है। **प्रवेष्टव्ये** = प्रवेश करने में। **वार्यताम्** = (वायु आदि से) बचाना चाहिए। **त्यज** = त्याग दो, छोड़ दो। **दुर्जनसंसर्गं** = दुष्टों की संगति (सम्पर्क) को। **भज** = प्राप्त करो। **साधुसमागमम्** = सज्जनों की संगति को। **कुरु** = करो। **पुण्यम्** = पुण्यशाली कार्य। **अहोरात्रं** = दिन-रात। **स्मर** = स्मरण करो। **अनित्यताम्** = (संसार की) क्षणभंगुरता, अनित्यता का। **मनसि** = मन में । **वचसि** = वाणी में। **काये** = शरीर में। **पुण्यपीयूषपूर्णाः** = पुण्यरूपी अमृत से भरा हुआ। **त्रिभुवनम्** = तीनों भुवनों (लोकों) को। **उपकारश्रेणिभिः** = निरन्तर उपकारों से। **प्रीणयन्तः** = प्रसन्न करते हुए। **परगुण-परामाणून्** = परमाणुओं के समान सूक्ष्म दूसरों के गुणों को। **पर्वतीकृत्य** = पर्वत के समान विशाल (बड़ा) करके अर्थात् बढ़ा-चढ़ाकर वर्णन करके। **निजहृदि** = अपने हृदय में। **विकसन्तः** = खिलने वाले, प्रसन्न होने वाले। **सन्तः** = सज्ज्न लोग। **कियन्तः सन्ति** = कितने हैं।

अभ्यास

1. निम्नलिखित पद्यों (श्लोकों) का सन्दर्भ–सहित हिन्दी में अनुवाद कीजिए –

(क) वरमेको गुणी .... तारागणैरपि।।

(ख) मनीषिणः सन्ति .... च दुर्लभम्।।

(ग) चक्षुषा .... नु प्रसीदति।।

(घ) अक्रोधेन जयेत् .... सत्येन चानृतम्।।

(ङ) अकृत्वा .... तद् बहु।।

(च) सत्याधारः .... वार्यताम्।।

(छ) त्यज दुजर्जनसंसर्गं .... नित्यमनित्यताम्।।

(ज) मनसि वचसि .... सन्तः कियन्तः।।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखिए –

(क) गुणी पुत्रस्य उपमा केन प्रदत्ता ?

(ख) कः एकः तमः हन्ति ?

(ग) कः मानवः दुर्लभः भवति ?

(घ) क्रोधं केन जयेत् ?

(ङ) असाधुं केन जयेत् ?

(च) कदर्यं केन जयेत ?

(छ) केन अनृतं जयेत् ?

(ज) अन्धकारे प्रवेष्टव्ये यत्नेन कः वार्यताम् ?

(झ) मानवः कं त्यजेत् कं च भजेत्।

(ञ) के मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णाः सन्ति ?

(ट) दुर्लभः मानवः कः भवति ?

(ठ) किं विधं औषधं दुर्लभम् ?

व्याकरण–बोध के प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि–विच्छेद कीजिए एवं सन्धि का नाम लिखिए–

	शब्द	सन्धि–विच्छेद	सन्धि–नाम
(क)	तारागणैरपि	तारागणैः + अपि	विसर्ग
(ख)	यथौषधम्	—	—
(ग)	चानृतम्	—	—
(घ)	तपस्तैलम्	—	—
(ङ)	सुहृच्च	—	—

2. **निम्नलिखित शब्दों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–**

	शब्द	**विभक्ति**	**वचन**
(क)	मूर्खशतैः	तृतीया	बहुवचन
(ख)	मनसा	—	—
(ग)	अन्धकारे	—	—
(घ)	काये	—	—
(ङ)	परमाणून्	—	—

■

षष्ठः पाठः

परमहंसः रामकृष्णः

(रामकृष्ण परमहंस)

रामकृष्णः एकः विलक्षणः महापुरुषः अभवत्। तस्य विषये महात्मना गान्धिना उक्तम् –

''परमहंसस्य रामकृष्णस्य जीवनचरितं धर्माचरणस्य प्रायोगिकं विवरणं विद्यते। तस्य जीवनम् अस्मभ्यम् ईश्वरदर्शनाय शक्तिं प्रददाति। तस्य वचनानि न केवलं कस्यचित् नीरसानि ज्ञानवचनानि अपितु तस्य जीवन-ग्रन्थस्य पृष्ठानि एव। तस्य जीवनम् अहिंसायाः मूर्तिमान् पाठः विद्यते।''

स्वामिनः रामकृष्णस्य जन्म बंगेषु हुगलीप्रदेशस्य कामारपुकुरस्थाने 1836 ख्रिस्ताब्दे अभवत्। तस्य पितरौ परमधार्मिकौ आस्ताम्। बाल्यकालादेव रामकृष्णः अद्‌भुतं चरित्रम् अदर्शयत्। तदानीमेव ईश्वरे तस्य सहजा निष्ठा अजायत्। ईश्वरस्य आराधनावसरे स सहजे समाधौ अतिष्ठत्।

परमसिद्धोऽपि सः सिद्धीनां प्रदर्शनं नोचितम् अमन्यत्। एकदा केनचित् भक्तेन कस्यचित् महिमा एवं वर्णितः, ''असौ महात्मा पादुकाभ्यां नदीं तरति, इति महतो विस्मयस्य विषयः।'' परमहंसः रामकृष्णः मन्दम् अहसत् अवदत् च ''अस्याः सिद्धेः मूल्यं पणद्वयमात्रम्, पणद्वयेन नौकया सामान्यो जनः नदीं तरति। अनया सिद्धया केवलं पणद्वयस्य लाभो भवति। किं प्रयोजनम् एतादृश्याः सिद्धेः प्रदर्शनेने।''

रामकृष्णस्य विषये एवंविधा बहवः कथानकाः प्रसिद्धाः सन्ति। आजीवनं सः आत्मचिन्तने निरतः आसीत्। अस्मिन् विषये तस्य अनेके अनुभवाः लोके प्रसिद्धाः।

तस्य एव वचनेषु तस्य अध्यात्मानुभवाः वर्णिताः–

(1) ''जले निमज्जिताः प्राणाः यथा निष्क्रमितुम् आकुलाः भवन्ति तथैव चेत् ईश्वर–दर्शनाय अपि समुत्सुकाः भवन्तु जनाः तदा तस्य दर्शनं भवितुम् अर्हति।''

(2) ''किमपि साधनं साधयितुं मत्कृते दिनत्रयाधिकः कालः नैव अपेक्ष्यते।''

(3) ''नाहं वाञ्छामि भौतिकसुखप्रदां विद्याम्, अहं तु तां विद्यां वाञ्छामि यया हृदये ज्ञानस्य उदयो भवति।''

अयं महापुरुषः स्वीकीयेन योगाभ्यासबलेनैव एतावान् महान् सञ्जातः। स ईदृशः विवेकी शुद्धचित्तश्च आसीत् यत् तस्य कृते मानवकृताः विभेदाः निर्मूलाः अजायन्त। स्वकीयेन आचारेण एव तेन सर्वं साधितम्।

विश्वविश्रुतः स्वामी विवेकाननदः अस्यैव महाभागस्य शिष्यः आसीत्। तेन न केवलं भारतवर्षे अपितु पाश्चात्यदेशेष्वपि व्यापकस्य मानवधर्मस्य डिण्डिमघोषः कृतः। तेन अन्यैश्च शिष्यैः जनानां कल्याणार्थं स स्थाने-स्थाने रामकृष्णसेवाश्रमाः स्थापिताः। ईश्वरानुभवः दुःखितानां जनानां सेवया पुष्यति, इति रामकृष्णस्य महान् सन्देशः।

अभ्यास

1. निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी में सन्दर्भ सहित अनुवाद कीजिए –

(क) रामकृष्णः एकः .... पाठः विद्यते।''

(ख) स्वामिनः रामकृष्णस्य .... समाधौ अतिष्ठत्।

(ग) परमसिद्धोऽपि .... सिद्धेः प्रदर्शनेने।''

(घ) तस्य एव वचनेषु .... उदयो भवति।

(ङ) अयं महापुरुषः .... सर्वं साधितम्।

(च) विश्वविश्रुतः स्वामी .... महान् सन्देशः।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) रामकृष्णः कीदृशः महापुरुषः आसीत् ?

(ख) रामकृष्णस्य विषये केन उक्तम् ?

(ग) कस्य जीवनचरितं धर्माचरणस्य प्रायोगिकं विवरणं विद्यते ?

(घ) कस्य जीवनम् ईश्वरदर्शनाय शक्तिं प्रददाति ?

(ङ) कस्य जीवनम् अहिंसायाः मूर्तिमान् पाठः विद्यते ?

(च) रामकृष्णस्य जन्म कुत्र अभवत् ?

(छ) ईश्वरस्य आराधनावसरे कः सहजे समाधौ अतिष्ठत् ?

(ज) कः सिद्धीनां प्रदर्शनं उचितं न अमन्यत् ?

(झ) रामकृष्णः कथं महान् सञ्जातः।

(ञ) कस्य कृते मानवकृताः विभेदाः निर्मूलाः अजायन्त ?

(ट) विवेकानन्दः कस्य शिष्यः आसीत् ?

(ठ) केन जनानां कल्याणार्थं स्थाने स्थाने रामकृष्णसेवाश्रमाः स्थापिताः ?

व्याकरण–बोध के प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए एवं सन्धि का नाम लिखिए–

	शब्द	सन्धि-विच्छेद	सन्धि-नाम
(क)	धर्माचरणस्य	धर्म + आचरणस्य	दीर्घ
(ख)	परमसिद्धोऽपि	—	—
(ग)	नोचितम्	—	—
(घ)	योगाभ्यासः	—	—
(ङ)	देशेष्वपि	—	—

2. निम्नलिखित शब्दों में विभक्ति एवं वचन लिखिए–

	शब्द	विभक्ति	वचन
(क)	परमहंसस्य	षष्ठी	एकवचन
(ख)	ईश्वरदर्शनाय	—	—
(ग)	पितरौ	—	—
(घ)	समाधौ	—	—
(ङ)	आचारेण	—	—

शब्दार्थ

विलक्षणः = अद्भुत (अनोखा), विशेष लक्षणों (गुणों) वाले। **तस्य** = उनके। **उक्तम्** = कहा है। **प्रायोगिकं** = व्यावहारिक, व्यवहार में लाया हुआ। **विद्यते** = है। **अस्मभ्यम्** = हमारे लिए। **ईश्वरदर्शनाय** = ईश्वर-दर्शन की, ईश्वर के साक्षात्कार की। **प्रददाति** = देता है। **कस्यचित्** = किसी के। **नीरसानि** = रस रहित, शुष्क, रूखे। **जीवनग्रन्थस्य** = जीवन-ग्रन्थ के। **पृष्ठानि** = पृष्ठ, पन्ने। **मूर्तिमान्** = साकार, साक्षात् शरीरधारी। **बंगेषु** = बंगाल प्रान्त में। **ख्रिस्ताब्दे** = ईसवी वर्ष में। **पितरौ** = माता और पिता। **आस्ताम्** = (दोनों) थे। **अदर्शयत्** = दिखाया। **तदानीमेव** = तभी से ही। **सहजा** = स्वाभाविक। **निष्ठा** = आस्था, विश्वास। **अजायत्** = उत्पन्न हुई। **समाधौ** = समाधि में। **आराधनावसरे** = पूजा के अवसर पर। **परमसिद्धोऽपि** = परमसिद्ध होते हुए भी। **सिद्धीनां** = सिद्धियों के। **प्रदर्शनं** = प्रदर्शन, दिखावा। **नोचितम्** = (न + उचितम्) उचित नहीं। **अमन्यत्** = माना। **असौ** = वह। **पादुकाभ्यां** = खड़ाऊओं से। **तरति** = पार कर लेता है। **महतो** = महान्। **विस्मयस्य** = आश्चर्य का। **मन्दम्** = धीरे से। **पणद्वयमात्रम्** = मात्र दो पैसे। **नौकया** = नाव से। **प्रयोजनम्** = तात्पर्य। **एतादृश्याः** = इस प्रकार की। **एवंविधा** = इस प्रकार के। **बहवः** = बहुत से। **कथानकाः** = कथाएँ। **आजीवनं** = जीवनपर्यन्त। **निरतः** = लगा हुआ। **अध्यात्मानुभवाः** = अध्यात्म-विषयक अनुभव। **वर्णिताः** = वर्णित हैं, कहे गए

हैं। **निमज्जिताः** = डूबे हुए। **निष्क्रमितुम्** = निकलने के लिए। **आकुलाः** = व्याकुल। **तथैव** = उसी प्रकार। **समुत्सुकाः** = उत्सुक, आतुर। **भवितुम्** = होने के लिए। **साधयितुं** = साधने के लिए। **मत्कृते** = मेरे लिए। **दिनत्रयाधिकः** = तीन दिन से अधिक। **कालः** = समय। **नैव** = नहीं। **अपेक्ष्यते** = अपेक्षित है, चाहिए। **नाहं** = (न + अहम्) मैं नहीं। **वाच्छामि** = चाहता हूँ। **भौतिकसुखप्रदां** = सांसारिक सुख देने वाली। **स्वकीयेन** = अपने। **एतावान्** = इतने, इस प्रकार के। **ईदृशः** = इस प्रकार के। **तस्य कृते** = उसके लिए। **मानवकृताः** = मानव द्वारा किए गए। **विभेदाः** = भेद-उपभेद। **निर्मूलाः** = निराधार। **अजायन्तः** = हुए। **साधितम्** = साधा, साधना की। **विश्वविश्रुतः** = विश्व प्रसिद्ध, संसार में प्रसिद्ध। **अस्यैव** = इनके ही। **पाश्चात्यदेशेष्वपि** = पश्चिमी देशों में भी। **डिण्डिमघोषः** = दुन्दुभिनाद, दुन्दुभि बजाना, उच्च स्वर में घोषणा, ढिंढोरा। **सेवया** = सेवा से। **पुष्यति** = पुष्ट होता है, फलता-फूलता है।

■

सप्तमः पाठः

कृष्णः गोपालनन्दनः

(गोपालनन्दन कृष्ण)

सुविदितमेव श्रीकृष्णः लोकोत्तरो महापुरुषः आसीत्। अयं महापुरुषः सहस्रेभ्यः वर्षेभ्यः प्राक् उत्पन्नः अद्यापि जनानां हृदयेषु विराजमानः अस्ति।

श्रीकृष्णस्य मातुलः कंसः अत्याचारी शासकः आसीत्। स पूर्वं स्वभगिन्याः देवक्याः श्रीवसुदेवेन सह विवाहम् अकरोत्, पश्चाच्च आकाशवाण्या देवकीपुत्रेण स्वमृत्युसमाचारं विज्ञाय उभावपि कारागारे न्यक्षिपत्। तत्रैव कारागारे श्रीकृष्णः जातः।

श्रीकृष्णस्य जन्म भाद्रपदमासस्य कृष्णपक्षस्य अष्टम्यां तिथौ मथुरायाम् अभवत्। मध्यरात्रे यदायं उत्पन्नः जातः तदा आकाशे घटाटोपाः मेघाः मुसलधाराः वर्षाः अकुर्वन्। तदा रात्रिः अन्धकारपूर्णा आसीत्, परं वसुदेवः पुत्रस्य रक्षार्थं सद्योजातं तम् आदाय उत्तालतरङ्गां यमुनाम् उत्तीर्य गोकुले नन्दगृहं प्रापयत्। तत्र बाल्यादेव श्रीकृष्णः जनानां हृदयवल्लभः अभवत्।

बाल्यकाले अयं स्वसौन्दर्येण बाललीलया च सर्वेषां जनानां मनांसि अहरत्। कापि गोपिका तम् अङ्के निधाय स्वगृहं नयति, अपरा तं दुग्धं पाययति, अन्या च तस्मै नवनीतं ददाति। श्रीकृष्णः प्रेम्णा दत्तं दुग्धं पिबति, नवनीतं च खादति, अवसरं प्राप्य स स्वमित्रैः गोपैः सह कस्मिंश्चिद् गृहे प्रविश्य दधि खादति, मित्रेभ्यः ददाति, अवशिष्टं दधि भूमौ पातयति यदा कदा दधिभाण्डं च त्रोटयति। एतत् सर्वं कुर्वतोऽपि तस्य शीलेन सौन्दर्येण च प्रभावितः न कोऽपि तस्मै क्रुध्यति, परं सर्वे तस्मिन् स्निह्यन्ति।

अनन्तरं श्रीकृष्णः गोपालैः सह वनं गत्वा गाः चारयति, तत्र च वेणुं वादयति, अनेन सर्वाः गावः गोपालाश्च सर्वाणि कार्याणि विहाय तस्य वेणुवादनं शृण्वन्ति। महाकविः व्यासः संस्कृतभाषायां, भक्तकविः सूरदासः हिन्दी-भाषायां तस्य बाललीलायाः अतिसुन्दरं वर्णनम् अकरोत्।

यदा अयं बालः एव आसीत् तदा कंसः तं हन्तुं क्रमशः बहून् राक्षसान् प्रेषयत्, परं श्रीकृष्णः स्वकौशलेन शौर्येण च तान् सर्वान् अहन्। स न केवलं राक्षसेभ्यः अपितु अन्याभ्यः विपद्भ्यः गोकुलवासिनो जनान् अरक्षत्। एकदा वर्षाकाले गोकुले यमुनायाः जलं वेगेन अवर्धत् तदा श्रीकृष्णः स्वप्राणान् अविगणय्य सर्वान् गोकुलनिवासिनः अरक्षत्। एवमेव सप्दीप्ते वह्नौ अयं सर्वान् पशून् गोपालान् च ततः अत्रायत्। एवं निरन्तरं गोकुलवासिनां जनानां कष्टानि निवारयन् तेषां हृदये पदमधारयत्। अतः श्रीकृष्णः बाल्यकालादेव स्वोत्तमैः गुणैः परोपकारभावनया च लोकप्रियः अभवत्।

अभ्यास

1. निम्नलिखित गद्यांशों का हिन्दी में सन्दर्भ सहित अनुवाद कीजिए –

(क) सुविदितमेव .... विराजमानः अस्ति।
(ख) श्रीकृष्णस्य मातुलः .... श्रीकृष्णः जातः।
(ग) श्रीकृष्णस्य जन्म .... हृदयवल्लभः अभवत्।
(घ) बाल्काले अयं .... तस्मिन् स्निह्यन्ति।
(ङ) अन्तरं श्रीकृष्णः .... वर्णनम् अकरोत्।
(च) यदा अयं बालः .... लोकप्रियः अभवत्।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए –

(क) लोकोत्तरः महापुरुषः कः आसीत् ?
(ख) श्रीकृष्णस्य मातुलः कः आसीत् ?
(ग) कः अत्याचारी शासकः आसीत् ?
(घ) कः स्वभगिन्याः श्रीवसुदेवेन सह विवाहम् अकरोत् ?
(ङ) देवकी कस्य भगिनी आसीत् ?
(च) कारागारे कः जातः ?
(छ) श्रीकृष्णस्य जन्म कुत्र अभवत् ?
(ज) श्रीकृष्णस्य जन्मसमये रात्रिः कीदृशी आसीत् ?
(झ) कः श्रीकृष्णं नन्दगृहं प्रापयत् ?
(ञ) सर्वाः गावः गोपालाश्च सर्वाणि कार्याणि विहाय कस्य वेणुवादनं शृण्वन्ति ?
(ट) कः संस्कृतभाषायां कृष्णस्य बाललीलायाः वर्णनम् अकरोत् ?
(ठ) श्रीकृष्णस्य बाललीलायाः वर्णनं हिन्दीभाषायां कः अकरोत् ?
(ड) गोकुलवासिनः कः अरक्षत् ?
(ढ) कः बाल्यकालादेव लोकप्रियः अभवत् ?
(ण) आकाशवाणीम् श्रुत्वा कंसः किम् अकरोत् ?

व्याकरण–बोध के प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि विच्छेद कीजिए एवं सन्धि का नाम लिखिए–

	शब्द	सन्धि-विच्छेद	सन्धि-नाम
(क)	अद्यापि	अद्य + अपि	दीर्घ
(ख)	पश्चाच्च	—	—
(ग)	कुर्वतोऽपि	—	—
(घ)	बाल्यकालादेव	—	—
(ङ)	स्वोत्तमैः	—	—

2. निम्नलिखित शब्दों में विभक्ति एवं वचन लिखिए—

	शब्द	विभक्ति	वचन
(क)	महापुरुषः	प्रथमा	एकवचन
(ख)	हृदयेषु	—	—
(ग)	कारागारे	—	—
(घ)	मनांसि	—	—
(ङ)	तस्मै	—	—

शब्दार्थ

सुविदितमेव = भली प्रकार ज्ञात ही है। **लोकोत्तरः** = अलौकिक। **सहस्रेभ्यः** = हजारों। **अद्यापि** = आज भी। **प्राक्** = पहले। **मातुलः** = मामा। **स्वभगिन्याः** = अपनी बहन का। **पश्चात्** = बाद में। **आकाशवाण्या** = आकाश वाणी के द्वारा। **स्वमृत्युसमाचारं** = अपनी मृत्यु के समाचार को। **विज्ञाय** = जानकर। **उभावपि** = (उभौ + अपि) दोनों को ही। **कारागारे** = जेल में। **न्यक्षिपत्** = डाल दिया। **जातः** = उत्पन्न हुए। **भाद्रपदमासस्य** = भादों माह के। **कृष्णपक्षस्य** = कृष्णपक्ष की। **अष्टम्यां** = अष्टमी। **तिथौ** = तिथि में। **मथुरायाम्** = मथुरा में। **अभवत्** = हुआ था। **यदायं** = जब यह। **घटाटोपाः** = घनघोर, घटाओं के समूह से। **मेघाः** = बादल। **मुसलधाराः** = मुसलाधार। **सद्योजातं** = तुरन्त उत्पन्न हुए, नवजात। **आदाय** = लेकर। **उत्तालतरङ्गां** = ऊँची लहरों (तरंगों) वाली। **उत्तीर्य** = पार करके। **प्रापयत्** = पहुँचा दिया। **हृदयवल्लभः** = हृदय के प्यारे। **अहरत्** = हर लिया। **कापि** = कोई। **अङ्के** = गोद में। **निधाय** = रखकर, उठाकर। **नयति** = ले जाती है। **अपरा** = दूसरी। **पाययति** = पिलाती है। **नवनीतं** = मक्खन। **प्रेम्णा** = प्रेम से। **दत्तं** = दिये गये। **प्रविश्य** = प्रवेश करके। **दधि** = दही। **मित्रेभ्यः** = मित्रों के लिए। **अवशिष्टं** = बचे हुए। **भूमौ** = पृथ्वी पर। **पातयति** = गिरा देते हैं। **दधिभाण्डं** = दही के बर्तन को। **त्रोटयति** = तोड़ देते हैं। **कुर्वतोऽपि** = करते हुए भी। **स्निहयन्ति** = प्रेम करते हैं। **अनन्तरम्** = इसके बाद। **सह** = साथ। **गाः** = गायों को। **वेणुं** = बाँसुरी। **वादयति** = बजाते हैं। **विहाय** = छोड़कर। **वेणुवादनं** = बाँसुरी वादन। **शृण्वन्ति** = सुनते हैं। **बाललीलायाः** = बाललीला का। **बालः एव** = बालक ही, बच्चे ही। **हन्तुं** = मारने के लिए। **बहून्** = बहुत से। **राक्षसान्** = राक्षसों को। **प्रेषयत्** = भेजा। **स्वकौशलेन** = अपनी कुशलता से, अपनी चतुराई से। **शौर्येण** = पराक्रम से। **अहन्** = मार डाला। **अन्याभ्यः विपद्भ्यः** = दूसरी विपत्तियों से। **अरक्षत्** = रक्षा की। **अवर्धत्** = बढ़ने लगा, बढ़ गया। **अविगणय्य** = परवाह न करके, चिन्ता न करके। **गोकुल निवासिनः** = गोकुलवासियों की। **संदीप्ते** = प्रज्वलित, जलती हुई। **वह्नौ** = अग्नि में। **अत्रायत्** = रक्षा की, बचाया। **निवारयन्** = दूर करते हुए। **पदमधारयत्** = (पदम् + अधारयत्) स्थान बना लिया। **स्वोत्तमैः** = (स्व + उत्तमैः) अपने उत्तम।

■

संस्कृत-हिंदी व्याकरण खंड

संस्कृत व्याकरण

सन्धि

'सन्धि' शब्द 'सम्' उपसर्ग पूर्वक 'धा' धातु में 'कि' (इ) प्रत्यय लगकर बनता है, जिसका अर्थ होता है – मेल या जोड़। सम् + धा + कि (इ)

दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं। अर्थात् निकटवर्ती दो वर्णों के मेल से जो विकार या परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

सन्धि और समास में भेद – दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते हैं अर्थात् सन्धि वर्णविधि है। दो या दो से अधिक पदों (शब्दों) के मेल को समास कहते हैं अर्थात् समास पदविधि है।

सन्धि के भेद – सन्धियाँ मुख्यतः तीन हैं–

1. अच् सन्धि (स्वर सन्धि)   2. हल् सन्धि (व्यञ्जन सन्धि)
3. विसर्ग (:) सन्धि

अच् सन्धि – अच् और स्वर पर्यायवाची हैं; क्योंकि 'अच्' एक प्रत्याहार है जिसके अन्तर्गत सभी स्वर आ जाते हैं।

दो स्वर वर्णों के मेल से जो विकार या परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं। स्वर सन्धि के आठ भेद हैं–दीर्घ, गुण, यण्, वृद्धि, अयादि, पूर्वरूप, पररूप तथा प्रकृतिभाव।

हल् सन्धि – हल् और व्यञ्जन पर्यायवाची हैं; क्योंकि 'हल्' एक प्रत्याहार है जिसके अन्तर्गत सभी व्यञ्जन आ जाते हैं।

दो व्यञ्जन वर्णों के मेल से जो विकार या परिवर्तन उत्पन्न होता है, उसे व्यञ्जन सन्धि कहते हैं। व्यञ्जन सन्धि के छः मुख्य भेद हैं–श्चुत्व, ष्टुत्व, जश्त्व, चर्त्व, अनुस्वार तथा अनुनासिक।

विसर्ग (:) सन्धि – जब विसर्ग के साथ किसी स्वर या व्यञ्जन के मिलने से जो परिवर्तन होता है, तो वह विसर्ग सन्धि कहलाता है। विसर्ग सदैव किसी न किसी स्वर के बाद ही आता है।

दीर्घ सन्धि – सूत्र – अकः सवर्णे दीर्घः।

अक् – अ इ उ ऋ लृ [इनके अन्तर्गत इनका दीर्घ (बड़ा) भी निहित है।]

सवर्ण – सजातीय

दीर्घ – आ ई ऊ ॠ ['लृ' का दीर्घ नहीं होता। इसलिए 'लृ' की दीर्घ सन्धि भी नहीं होती।]

परिभाषा – जब दो ह्रस्व या दीर्घ सवर्ण (सजातीय) स्वर वर्णों के स्थान में उनका दीर्घरूप आदेश होता है, तो उसे दीर्घ सन्धि कहते हैं।

नियम – यदि अ या आ, इ या ई, उ या ऊ, ऋ या ॠ के बाद क्रमशः अ या आ, ई या ई, उ या ऊ, ऋ या ॠ आए तो पूर्व-पर (पहले और बाद) दोनों के स्थान में उनका दीर्घ (क्रमशः आ, ई, ऊ, ॠ) हो जाता है।

इस नियम को निम्नलिखित उपनियमों के द्वारा सरलता से समझा जा सकता है–

उपनियम – (i) यदि अ या आ के बाद उसका सवर्ण (सजातीय) अ या आ आए तो पूर्व-पर (पहले-बाद) दोनों के स्थान में उनका दीर्घ (आ) हो जाता है। उदाहरण –

शब्द + अर्थः = शब्दार्थः

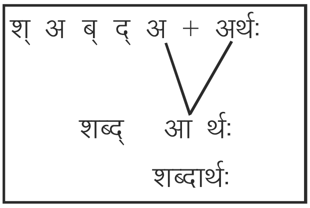

वात + आवरणम् = वातावरणम्

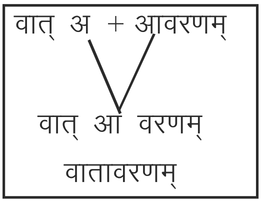

'शब्द' शब्द का अन्तिम वर्ण 'अ' है, उसके बाद 'अर्थः' का 'अ' है। दोनों हट जाएँगे। दोनों के स्थान में 'आ' हो जाएगा।

विद्या + आलयः = विद्यालयः

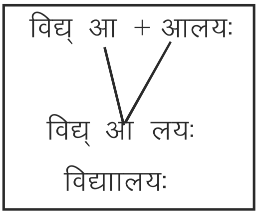

अन्य उदाहरण–

धन	+ अर्थी	=	धनार्थी	(अ + अ = आ)
पुस्तक	+ आलयः	=	पुस्तकालयः	(अ + आ = आ)
महा	+ आशयः	=	महाशयः	(आ + आ = आ)
धर्म	+ आत्मा	=	धर्मात्मा	(अ + आ = आ)
अद्य	+ अपि	=	अद्यापि	(अ + अ = आ)
धर्म	+ अन्धः	=	धर्मान्धः	(अ + अ = आ)
दैत्य	+ अरिः	=	दैत्यारिः	(अ + अ = आ)
तव	+ आकारः	=	तवाकारः	(अ + आ = आ)
परीक्षा	+ अर्थी	=	परीक्षार्थी	(आ + अ = आ)
शिक्षा	+ आलयः	=	शिक्षालयः	(आ + आ = आ)
तथा	+ अपि	=	तथापि	(आ + अ = आ)
परम	+ आत्मा	=	परमात्मा	(अ + आ = आ)
शिव	+ आलयः	=	शिवालयः	(अ + आ = आ)

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए –

शुभागमनम्, विद्याभ्यासः, महात्मा, सुरालयः, शशांकः, प्रतीक्षालयः, अनाथालयः, रामानुजः, वरुणालयः।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए –

सुख + अर्थी, पञ्च + आननम्, सिद्ध + अर्थः, राम + आश्रमः, मदिरा + आलयः, देव + अर्चनम्, सुर + अरिः, हिम + अद्रिः, राम + अवतारः, वाचन + आलयः, संग्रह + आलयः, शस्त्र + आगारः, हिम + आलयः।

उपनियम (ii)

यदि इ या ई के बाद उसका सवर्ण इ या ई आए तो पूर्व-पर (पहले + बाद) दोनों के स्थान में दोनों का दीर्घरूप ई (एकादेश) हो जाता है। जब दो के स्थान में एक का आदेश होता है, तो उसे 'एकादेश' कहा जाता है। उदाहरण –

रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः

र् अ व् ई + इन्द्रः
रव् ई न्द्रः
रवीन्द्रः

यहाँ 'रवि' शब्द का अन्तिम वर्ण 'इ' है। उसके बाद 'इन्द्रः' का 'इ' आ रहा है। नियमानुसार दोनों (इ + इ) हट जाएँगे। दोनों के स्थान पर 'ई' हो जाएगा। शब्द बनेगा–रवीन्द्रः

गिरि + ईशः = गिरीशः

गिर् इ + ईशः
गिर् ई शः
गिरीशः

अन्य उदाहरण –

गिरि + इन्द्रः = गिरीन्द्रः (इ + इ = ई)

नदी + ईशः = नदीशः (ई + ई = ई)

मही + इन्द्रः = महीन्द्रः (ई + इ = ई)

क्षिति + ईशः = क्षितीशः (इ + ई = ई)

मही + ईशः = महीशः (ई + ई = ई)

सुधी + इन्द्रः = सुधीन्द्रः (ई + इ = ई)

कपि + इन्द्रः = कपीन्द्रः (इ + इ = ई)

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए –

श्रीशः, कपीशः, मुनीन्द्रः, हरीशः, सतीशः।

2. निम्नलिखित शब्दों मे सन्धि कीजिए –

सती + इन्द्रः, सुधी + ईशः, कवि +ईश्वरः, इति + इदम्।

उपनियम (iii) यदि उ या ऊ के बाद उ या ऊ आए तो पूर्व-पर दोनों के स्थान में 'ऊ' (दीर्घ) हो जाता है। **उदाहरण –**

गुरु + उपदेशः = गुरूपदेशः

ग् उ र् उ + उपदेशः
गुर् ऊ पदेशः
गुरूपदेशः

यहाँ 'गुरु' शब्द का अन्तिम वर्ण 'उ' है। उसके बाद 'उपदेशः' का 'उ' आ रहा है। नियमानुसार दोनों (उ + उ) हट जाएँगे। दोनों के स्थान में 'ऊ' हो जाएगा।

लघु + ऊर्मिः = लघूर्मिः

लघ् उ + ऊर्मि
लघ् ऊ र्मिः
लघूर्मिः

अन्य उदाहरण–

वधू	+ उत्सवः	=	वधूत्सवः	(ऊ + उ = ऊ)
भू	+ ऊर्जा	=	भूर्जा	(ऊ + ऊ = ऊ)
भानु	+ उदयः	=	भानूदयः	(उ + उ = ऊ)
चमू	+ उर्जितम्	=	चमूर्जितम्	(ऊ + उ = ऊ)
सु	+ उक्तिः	=	सूक्तिः	(उ + उ = ऊ)
विधु	+ उदयः	=	विधूदयः	(उ + उ = ऊ)

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए –
   वधूत्सवः, गुरूपदेशः, विष्णूदयः।
2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए –
   साधु + उपदेशः, भानु + उदयः, मधु + उत्सवः, साधु + उक्तम्

उपनियम (iv) यदि ऋ या ॠ के बाद ऋ या ॠ आए तो पूर्व-पर दोनों के स्थान में दीर्घ 'ॠ' (एकादेश) हो जाता है। **उदाहरण –**

पितृ + ऋणम् = पितॄणम्

प् इ त् ऋ + ऋणम्
पित् ॠ णम्
पितॄणम्

यहाँ 'पितृ' शब्द का अन्तिम वर्ण 'ऋ' है। उसके बाद 'ऋणम्' का 'ऋ' है। नियमानुसार दोनों (ऋ + ऋ) हट जाएँगे। दोनों के स्थान पर दीर्घ 'ॠ' हो जाएगा।

होतृ + ऋकारः = होतॄकारः

होत् + ऋ + ऋकारः
होत् ॠ कारः
होतॄकारः

अन्य उदाहरण –

मातृ + ऋणम् = मातॄणम् (ऋ + ऋ = ॠ)

विशेष– 'ऌ' का दीर्घ रूप नहीं होता; इसलिए 'ऌ' की दीर्घ सन्धि भी नहीं होती।

गुण सन्धि

सूत्र– आद्‌गुणः

आद् (आत्) – अ या आ के बाद इ या ई, उ या ऊ, ऋ या ॠ, ऌ आए तो।

गुण – अ (अर्, अल्), ए, ओ – [इनकी गुण संज्ञा होती है, अर्थात् इनका नाम गुण है। इन तीनों को गुण कहा जाता है]

अ + इ	अ + उ	अ + ऋ	अ + ऌ
ए	ओ	अर्	अल्

परिभाषा – जिस सन्धि में दो वर्णों के स्थान में गुण वर्णों (अ, ए, ओ) के एकादेश का विधान किया जाता है, उसे गुण सन्धि कहते हैं। 'एकादेश' से तात्पर्य है – दो के स्थान में एक का आदेश, दो के स्थान में एक का हो जाना।

नियम–यदि अ या आ के बाद इ या ई, उ या ऊ, ऋ या ॠ अथवा ऌ आए, तो पूर्व-पर दोनों के स्थान में क्रमशः ए, ओ, अर् और अल् हो जाता है।

इस नियम को निम्नलिखित उपनियमों के द्वारा सरलता से समझा जा सकता है–

उपनियम (i) यदि अ या आ के बाद इ या ई आए तो पूर्व-पर (पहले और बाद) दोनों के स्थान में 'ए' (गुण एकादेश) हो जाता है।

उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः **उमा + ईशः = उमेशः**

उ प् अ + इन्द्रः
उप् ए न्द्रः
उपेन्द्रः

यहाँ 'उप' शब्द का अन्तिम वर्ण 'अ' है। उसके बाद 'इन्द्रः का 'इ' है। यहाँ दोनों (अ + इ) हट जाएँगे और दोनों के स्थान पर 'ए' हो जाएगा।

उम् आ + ईशः
उम् ए शः
उमेशः

अन्य उदाहरण –

महा + इन्द्रः = महेन्द्रः	(आ + इ = ए)
गण + ईशः = गणेशः	(अ + ई = ए)
उप + इन्द्रः = उपेन्द्रः	(अ + इ = ए)
सुर + ईशः = सुरेशः	(अ + ई = ए)
महा + ईशः = महेशः	(आ + ई = ए)
महा + ईश्वरः = महेश्वरः	(आ + ई = ए)
उमा + ईशः = उमेशः	(आ + ई = ए)
दिन + ईशः = दिनेशः	(अ + ई = ए)
तथा + इति = तथेति	(आ + इ = ए)

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए –

तवेदम्, दिनेशः, रमेशः, राजेशः, विमलेन्द्रः, सुरेश्वरः, नागेन्द्रः।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए –

सुर + इन्द्रः, मम + इच्छा, गज + इन्द्रः, त्वया + इदम्, नर + इन्द्रः, राज + इन्द्रः, सत्य + इन्द्रः।

उपनियम (ii) यदि अ या आ के बाद उ या उ आए तो पूर्व-पर दोनों के स्थान में 'ओ' (गुण एकादेश) हो जाता है। उदाहरण –

सूर्य + उदयः = सूर्योदयः | **महा + उत्सवः = महोत्सवः**

स् ऊ र् य् अ + उदयः सूर्य् ओ दयः सूर्योदयः	यहाँ 'सूर्य' शब्द का अन्तिम वर्ण 'अ' है। उसके बाद 'उदयः' का 'उ' है। यहाँ नियमानुसार दोनों (अ + उ) हट जाएँगे। दोनों के स्थान में 'ओ' हो जाएगा।	म अ ह् आ + उत्सवः मह् ओ त्सवः महोत्सवः

अन्य उदाहरण –

महा	+ ऊर्जा	=	महोर्जा	(आ + ऊ = ओ)
सूर्य	+ ऊष्मा	=	सूर्योष्मा	(अ + ऊ = ओ)
भाग्य	+ उदयः	=	भाग्योदयः	(अ + उ = ओ)
विद्या	+ उन्नतिः	=	विद्योन्नतिः	(आ + उ = ओ)
जल	+ ऊर्मिः	=	जलोर्मिः	(अ + ऊ = ओ)
गंगा	+ ऊर्मि	=	गंगोर्मिः	(आ + ऊ = ओ)
चन्द्र	+ उदयः	=	चन्द्रोदयः	(अ + उ = ओ)
गंगा	+ उदकम्	=	गंगोदकम्	(आ + उ = ओ)
महा	+ उत्सवः	=	महोत्सवः	(आ + उ = ओ)
हित	+ उपदेशः	=	हितोपदेशः	(अ + उ = ओ)

अभ्यास

1. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद कीजिए –

महोदयः, पुरुषोत्तमः, महोत्सवः, गुणोत्तमः, तवोन्नतिः, वनोत्सवः, महोदधिः।

2. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए –

पुत्र + उत्पत्तिः, मया + उक्तम्, सर्व + उदयः, राजा + उवाच, भारत + उदयः।

उपनियम (iii) यदि अ या आ के बाद ऋ या ॠ आए तो पूर्व-पर दोनों के स्थान में 'अर्' (गुण एकादेश) हो जाता है। उदाहरण –

वसन्त + ऋतुः = वसन्तर्तुः

व् अ स् अ न् त् अ + ऋतुः
वसन्त् अर् तुः
वसन्तर्तुः
वसन्तर्तुः

यहाँ 'वसन्त' शब्द का अन्तिम वर्ण 'अ' है। उसके बाद 'ऋतुः' का 'ऋ' है। नियमानुसार दोनों (अ + ऋ) हट जाएँगे। दोनों के स्थान में 'अर्' हो जाएगा।

जलतुम्बिका 'न्याय' से रेफ (र्) का ऊर्ध्व-गमन (ऊपर जाना) हो जाता है।

वर्षा + ऋतुः = वर्षर्तुः

वर्ष् आ + ऋतुः
वर्ष् अर् तुः
वर्षर्तुः
वर्षर्तुः

अन्य उदाहरण –

देव + ऋषिः = देवर्षिः	(अ + ऋ = अर्)
महा + ऋषिः = महर्षिः	(आ + ऋ = अर्)
ब्रह्म + ऋषिः = ब्रह्मर्षिः	(अ + ऋ = अर्)
ग्रीष्म + ऋतुः = ग्रीष्मर्तुः	(अ + ऋ = अर्)
सप्त + ऋषयः = सप्तर्षयः	(अ + ऋ = अर्)

उपनियम (iv) यदि अ या आ के बाद 'लृ' आए तो पूर्व-पर (पहले + बाद) दोनों के स्थान में अल् (गुण एकादेश) हो जाता है। उदाहरण –

तव + लृकारः = तवल्कारः

त् अ व् अ + लृकारः
तव् अल् कारः
तवल्कारः

यहाँ 'तव' शब्द का अन्तिम वर्ण 'अ' है। उसके बाद 'लृकारः' का 'लृ' है। नियमानुसार दोनों (अ + लृ) हट जाएँगे। दोनों के स्थान में 'अल्' हो जाएगा।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. 'दैत्यारिः' का सन्धि-विच्छेद है–
   (अ) दैत्य + अरिः (ब) दैत्या + रिः (स) दैत्य + आरिः (द) दैत् + यारिः।
2. 'विष्णूदयः' का सन्धि-विच्छेद है–
   (अ) विष्णु + उदयः (ब) विष्णू + दयः (स) विष्णू + उदयः (द) विष्ण + ऊदयः।
3. 'हिमालयः' का सन्धि-विच्छेद है–
   (अ) हिम + आलयः (ब) हिमा + लयः (स) हिम् + आलयः (द) हिमाल + यः।
4. 'विद्यार्थी' का सन्धि-विच्छेद है –
   (अ) विद्या + अर्थी (ब) विद्य + आर्थी (स) विद्या + र्थी (स) विद्य् + आर्थी।
5. 'कवीन्द्र' का सन्धि-विच्छेद है –
   (अ) कवि + इन्द्रः (ब) कवी + इन्द्रः (स) कवी + न्द्रः (द) क + वीन्द्रः।
6. 'गिरीशः' का सन्धि-विच्छेद है –
   (अ) गिरि + ईशः (ब) गिरी + ईशः (स) गिरी + शः (द) गिर + ईशः।
7. 'भानूदयः' का सन्धि-विच्छेद है –
   (अ) भानु + उदयः (ब) भानू + दयः (स) भान् + ऊदयः (द) भानू + ऊदयः।
8. 'उपेन्द्रः' का सन्धि-विच्छेद है –
   (अ) उप + इन्द्रः (ब) उपे + न्द्रः (स) उप + एन्द्रः (द) उ + पेन्द्रः।
9. 'महेशः' का सन्धि-विच्छेद है –
   (अ) महा + ईशः (ब) महे + शः (स) महा + एशः (द) मह् + एशः।
10. 'गणेशः' का सन्धि-विच्छेद है –
   (अ) गण + ईशः (ब) गणे + ईशः (स) गण + एशः (द) गण् + एशः।
11. 'महोत्सवः' का सन्धि-विच्छेद है –
   (अ) महा + उत्सवः (ब) महो + त्सवः (स) मह + उत्सवः (द) महोत्स + वः।
12. 'महोदयः' में सन्धि-विच्छेद है –
   (अ) महा + उदयः (ब) महो + यः (स) मह + उदयः (द) महोद + यः।
13. 'महर्षिः' का सन्धि-विच्छेद है –
   (अ) महा + ऋषिः (ब) मह + ऋषिः (स) महर् + र्षिः (द) मह् + र्षिः।
14. 'महेश्वरः' का सन्धि-विच्छेद है –
   (अ) महा + ईश्वरः (ब) मह + ईश्वरः (स) महे + श्वरः (द) मह् + एश्वरः।
15. 'गंगोदकम्' में सन्धि-विच्छेद कीजिए –
   (अ) गंगा + उदकम् (ब) गंग + उदकम् (स) गंग् + उदकम् द) गंगो + दकम्।

शब्द–रूप

अकारान्त शब्द

राम (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	रामः	रामौ	रामाः
द्वितीया	रामम्	रामौ	रामान्
तृतीया	रामेण	रामाभ्याम्	रामैः
चतुर्थी	रामाय	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
पंचमी	रामात्	रामाभ्याम्	रामेभ्यः
षष्ठी	रामस्य	रामयोः	रामाणाम्
सप्तमी	रामे	रामयोः	रामेषु
सम्बोधन	हे राम!	हे रामौ!	हे रामाः!

विशेष– बालक, छात्र, नृप, नर, पुत्र, गज, वानर, सर्प, वृक्ष, चन्द्र, जन, जनक, सूर्य, पाद, सिंह, दन्त, ईश्वर आदि अकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप राम के समान चलते हैं।

इकारान्त शब्द

हरि (पुल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरिः	हरी	हरयः
द्वितीया	हरिम्	हरी	हरीन्
तृतीया	हरिणा	हरिभ्याम्	हरिभिः
चतुर्थी	हरये	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
पंचमी	हरेः	हरिभ्याम्	हरिभ्यः
षष्ठी	हरेः	हर्योः	हरीणाम्
सप्तमी	हरौ	हर्योः	हरिषु
सम्बोधन	हे हरे!	हे हरी!	हे हरयः!

विशेष–कपि, मुनि, कवि, ऋषि, निधि, गिरि, रवि, अग्नि, मणि, जलधि, पयोधि, अरि, उदधि आदि इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'हरि' के समान चलते हैं।

उकारान्त शब्द

भानु (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	भानुः	भानू	भानवः
द्वितीया	भानुम्	भानू	भानून्
तृतीया	भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः
चतुर्थी	भानवे	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
पंचमी	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः
षष्ठी	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्
सप्तमी	भानौ	भान्वोः	भानुषु
सम्बोधन	हे भानो!	हे भानू!	हे भानवः!

विशेष—गुरु, शिशु, विष्णु, विधु, साधु, ऋतु, प्रभु, तरु, बाहु, इन्दु आदि उकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'भानु' के समान चलते हैं।

सर्वनाम शब्द

अस्मद् (मैं, हम)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्, मा	आवाम्, नौ	अस्मान्, नः
तृतीया	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
चतुर्थी	मह्यम्, मे	आवाभ्याम्, नौ	अस्मभ्यम्, नः
पंचमी	मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्
षष्ठी	मम, मे	आवयोः, नौ	अस्माकम्, नः
सप्तमी	मयि	आवयोः,	अस्मासु

धातुरूप

भू (होना) धातु

लट् लकार (वर्तमान)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवति	भवतः	भवन्ति
मध्यम पुरुष	भवसि	भवथः	भवथ
उत्तम पुरुष	भवामि	भवावः	भवामः

लोट् लकार (आज्ञा अर्थ)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवतु	भवताम्	भवन्तु
मध्यम पुरुष	भव	भवतम्	भवत
उत्तम पुरुष	भवानि	भवाव	भवाम

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अभवत्	अभवताम्	अभवन्
मध्यम पुरुष	अभवः	अभवतम्	अभवत
उत्तम पुरुष	अभवम्	अभवाव	अभवाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए अर्थ)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
मध्यम पुरुष	भवेः	भवेतम्	भवेत
उत्तम पुरुष	भवेयम्	भवेव	भवेम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भवियामः

गम् (जाना) धातु

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लोट् लकार (आज्ञा अर्थ)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छतु	गच्छताम्	गच्छन्तु
मध्यम पुरुष	गच्छ	गच्छतम्	गच्छत
उत्तम पुरुष	गच्छानि	गच्छाव	गच्छाम

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अगच्छत्	अगच्छताम्	अगच्छन्
मध्यम पुरुष	अगच्छः	अगच्छतम्	अगच्छत
उत्तम पुरुष	अगच्छम्	अगच्छाव	अगच्छाम

विधिलिङ् लकार (चाहिए अर्थ)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छेत्	गच्छेताम्	गच्छेयुः
मध्यम पुरुष	गच्छेः	गच्छेतम्	गच्छेत
उत्तम पुरुष	गच्छेयम्	गच्छेव	गच्छेम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

कृ (करना) धातु

लट् लकार (वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
मध्यम पुरुष	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उत्तम पुरुष	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लोट् लकार (आज्ञा अर्थ)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
मध्यम पुरुष	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उत्तम पुरुष	करवाणि	करवाव	करवाम

लङ् लकार (भूतकाल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अकरोत्	अकुरुताम्	अकुर्वन्
मध्यम पुरुष	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उत्तम पुरुष	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

विधिलिङ् लकार (चाहिए अर्थ)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	कुर्यात्	कुर्याताम्	कुर्युः
मध्यम पुरुष	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उत्तम पुरुष	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उत्तम पुरुष	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

संस्कृत अनुवाद

एक भाषा को दूसरी भाषा में बदलने की प्रक्रिया को अनुवाद कहते हैं। हिन्दी, अंग्रजी आदि भाषाओं को संस्कृत में बदलना संस्कृत अनुवाद कहलाता है।

संस्कृत में अनुवाद करने के लिए निम्नलिखित का ज्ञान होना आवश्यक है–

पुरुष परिचय

1. पुरुष – वे संज्ञा या सर्वनाम शब्द जो बात कहने वाले, सुनने वाले अथवा जिसके विषय में बात की जा रही है, के लिए प्रयोग किए जाते हैं, उन्हें पुरुष कहते हैं। पुरुष तीन होते हैं– प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष, उत्तम पुरुष। प्रत्येक पुरुष के तीन वचन होते हैं – एक वचन7, द्विवचन और बहुवचन।

(क) प्रथम पुरुष– जिसके विषय में बात की जाती है, वह प्रथम पुरुष कहा जाता है।

(ख) मध्यम पुरुष–जिससे प्रत्यक्ष रूप से बात की जाती है, वह मध्यम पुरुष कहलाता है।

(ग) उत्तम पुरुष–जो बात कहने वाला होता है, वह उत्तम पुरुष कहलाता है।

पुरुष चक्र

पुरुषवार कर्ता

प्रथम	**एकवचन**	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	सः (वह) पुँल्लिङ्ग	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब)
	सा (वह) स्त्रीलिङ्ग	ते (वे दोनों)	ताः (वे सब)
	रामः (राम) पुँल्लिङ्ग	रामौ (दो राम)	रामाः (बहुत से राम)
मध्यम पुरुष	त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)
उत्तम पुरुष	अहम् (मैं)	आवाम् (हम दोनों)	वयम् (हम सब)

वचन परिचय

संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों की संख्या का बोध कराने वाले शब्दों को वचन कहते हैं। संस्कृत में वचन तीन होते हैं–एकवचन, द्विवचन तथा बहुवचन।

1. एकवचन–एक वस्तु अथवा एक व्यक्ति का बोध कराने वाले शब्द में एक वचन होता है। जैसे – सिंहः, बालकः, सः आदि।

2. द्विवचन–दो वस्तुओं अथवा दो व्यक्तियों का बोध कराने वाले शब्दों में द्विवचन होता है। जैसे – सिंहौ, बालकौ, तौ आदि।

3. बहुवचन–दो से अधिक वस्तुओं या व्यक्तियों का बोध कराने के लिए जो शब्द प्रयुक्त होते हैं, उनमें बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे – सिहाः, बालकाः, रामाः, ते आदि।

लिङ्ग परिचय

संस्कृत भाषा में तीन लिङ्ग होते हैं – पुँल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग।

1. पुँल्लिङ्ग–जिन शब्दों से पुरुष जाति का बोध होता है, उन्हें पुँल्लिङ्ग कहते हैं। जैसे – बालकः, नरः, एकः, गजः, रामः, सः आदि।

2. स्त्रीलिङ्ग– जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध होता है, उन्हें स्त्रीलिङ्ग कहते हैं। जैसे – बालिका, कन्या, सा, रमा, वधू, सीता, लता, नदी आदि।

3. नपुंसकलिङ्ग–जिन संज्ञा शब्दों से पुरुष अथवा स्त्री जाति का बोध नहीं होता है, उन्हें नपुंसकलिङ्ग कहते हैं। जैसे– फलम्, जलम्, दुग्धम्, पुस्तकम्, मित्रम, पुष्पम, पत्रम् आदि।

कर्त्ता, क्रिया और कर्म

कर्ता– किसी कार्य को करने वाले या कार्य को सम्पादित करने वाले को कर्ता कहते हैं।

क्रिया– कर्ता द्वारा किए जाने वाले कार्य को क्रिया कहते हैं।

कर्म– कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जिसे सबसे अधिक प्राप्त करना चाहता है। अथवा क्रिया का जिस पर साक्षात (सीधा) प्रभाव (असर) पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं।

अनुवाद के नियम

यहाँ कर्तृवाच्य के सन्दर्भ में अनुवाद के नियमों की चर्चा की जायेगी।

नियम 1 –कर्ता के अनुसार क्रिया (धातु) का पुरुष और वचन होता है अर्थात् जिस पुरुष तथा जिस वचन का कर्ता होगा, क्रिया भी उसी पुरुष और उसी वचन की होगी। जैसे–सः पठति। (वह पढ़ता है)। यहाँ कर्ता (सः) प्रथम पुरुष, एकवचन का है, अतः क्रिया (पठति) भी प्र0 पु0, एक वचन की है।

नियम 2–तीनों लिङ्गों में धातु (क्रिया) का रूप वही रहता है।

नियम 3– कर्ता में प्रथमा विभक्ति होती है और कर्म में द्वितीया।

नियम 4 –संस्कृत में 'च' (और) का प्रयोग एक शब्द के बाद किया जाता है। जैसे – फल और फूल – फलं पुष्पं च। फलं च पुष्पं अशुद्ध है। इसी प्रकार रामः कृष्णः च (राम और कृष्ण) बालकः बालिका च (बालक और बालिका) प्रयोग किया जाता है।

कर्ता चक्र

पठ् (पढ़ना) धातु (लट् लकार-वर्तमान काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पु.	सः (वह)	तौ (वे दोनों)	ते (वे सब)	प्रथम पु.	पठति	पठतः	पठन्ति
	बालकः	बालकौ	बालकाः				
	रामः	रामौ	रामाः				
मध्यम पु0	त्वम् (तुम)	युवाम् (तुम दोनों)	यूयम् (तुम सब)	मध्यम पु0	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पु0	अहम् (मैं)	आवाम (हम दोनों)	वयम् (हब सब)	उत्तम पु0	पठामि	पठावः	पठामः

वह पढ़ता है।	सः पठति।
वे दोनों पढ़ते हैं।	तौ पठतः।
वे सब पढ़ते हैं।	ते पठन्ति।
तुम पढ़ते हो।	त्वम् पठसि।
तुम दोनों पढ़ते हो।	युवाम् पठथः।
तुम सब पढ़ते हो।	यूयम् पठथ।
मैं पढ़ता हूँ।	अहम् पठामि।
हम दोनों पढ़ते हैं।	आवाम् पठावः।
हम सब पढ़ते हैं।	वयम् पठामः।

पठ् (पढ़ना) धातु, लृट् लकार (भविष्यत् काल)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः पठिष्यति। (वह पढ़ेगा)	तौ पठिष्यतः। (वे दोनों पढ़ेंगे)	ते पठिष्यन्ति। (वे सब पढ़ेंगे)
मध्यम पुरुष	त्वम् पठिष्यसि। (तुम पढ़ोगे)	युवाम् पठिष्यथः। (तुम दोनों पढ़ोगे)	यूयम् पठिष्यथ। (तुम सब पढ़ोगे)
उत्तम पुरुष	अहम् पठिष्यामि। (मैं पढ़ूँगा)	आवाम् पठियावः। (हम दोनों पढ़ेंगे)	वयम् पठिष्यामः। (हम सब पढ़ेंगे)

पठ् (पढ़ना) धातु, लङ्लकार (भूतकाल)

प्रथम	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः अपठत् (वह पढ़ चुका है)	तौ अपठताम् (वे दोनों पढ़ चुके हैं)	ते अपठन् (वे सब पढ़ चुके हैं)
मध्यम पुरुष	त्वम् अपठः (तुम पढ़ चुके हो)	युवाम् अपठतम् (तुम दोनों पढ़ चुके हो)	यूयम् अपठत (तुम सब पढ़ चुके हो)
उत्तम पुरुष	अहम् अपठम् (मैं पढ़ चुका हूँ)	आवाम् अपठाव (हम दोनों पढ़ चुके हैं)	वयम् अपठाम (हम सब पढ़ चुके हैं)

पठ् (पढ़ना) धातु, लोट् लकार (आज्ञा अर्थ)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः पठतु (वह पढ़े)	तौ पठताम् (वे दोनों पढ़ें)	ते पठन्तु (वे सब पढ़ें)
मध्यम पुरुष	त्वम् पठ (तुम पढ़ो)	युवाम् पठतम् (तुम दोनों पढ़ो)	यूयम् पठत (तुम सब पढ़ो)
उत्तम पुरुष	अहम् पठानि (मैं पढ़ूँ)	आवाम् पठाव (हम दोनों पढ़ें)	वयम् पठाम (हम सब पढ़ें)

पठ् (पढ़ना) धातु, विधिलिङ् लकार (चाहिए अर्थ)

प्रथम	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	सः पठेत् (उसे पढ़ना चाहिए)	तौ पठेताम् (उन दोनों को पढ़ना चाहिए)	ते पठेयुः (उन सबको पढ़ना चाहिए)
मध्यम पुरुष	त्वम् पठेः (तुम्हें पढ़ना चाहिए)	युवाम् पठेतम् (तुम दोनों को पढ़ना चाहिए)	यूयम् पठेत (तुम सबको पढ़ना चाहिए)
उत्तम पुरुष	अहम् पठेयम् (मुझे पढ़ना चाहिए)	आवाम् पठेव (हम दोनों को पढ़ना चाहिएं)	वयम् पठेम (हम सबको पढ़ना चाहिए)

अभ्यास

प्रथम विभक्ति

1.	पुरुष खाता है।	पुरुषः खादति।
2.	बालिका बोलती है।	बालिका वदति।
3.	मयूर नाचता है।	मयूरः नृत्यति।
4.	छात्र खेलता है।	छात्रः क्रीडति।
5.	तुम दौड़ते हो।	त्वम् धावसि।
6.	मैं लिखता हूँ।	अहम् लिखामि।

द्वितीया विभक्ति

1.	वह पुस्तक पढ़ता है।	सः पुस्तकं पठति। (पुस्तक कर्म है, इसलिए द्वितीया विभक्ति, एक पुस्तक है, अतः एक वचन)
2.	तुम घर जाते हो।	त्वम् गृहं गच्छसि। (गृह कर्म है, इसलिए द्वितीया विभक्ति, एक घर है, अतः एक वचन)
3.	हम दोनों जल पीते हैं।	आवां जलं पिबावः।
4.	मैं लता देखता हूँ।	अहम् लतां पश्यामि।
5.	राम दूध पीता है।	रामः दुग्धं पिबति।
6.	मोहन फल खाता है।	मोहनः फलं खादति।
7.	रमा घर जाती है।	रमा गृहम् गच्छति।

तृतीया विभक्ति (सहायता के अर्थ में)

1. वह कलम से लिखता है। सः कलमेन लिखति।
2. किसान हल से जोतता है। कृषकः हलेन कर्षति।
3. बालक पुस्तक से पढ़ता है। बालकः पुस्तकेन पठति।

चतुर्थी विभक्ति

1. सम्प्रदान कारक (दान देना आदि में) चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे–
   (i) राजा ब्राह्मण को धन देता है। राजा विप्राय धनं ददाति।
   (ii) वह बालक को पुस्तक देता है। सः बालकाय पुस्तकं ददाति।
2. 'नमः' के योग में चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे–
   (i) गुरुजी को नमस्कार है। गुरवे नमः।
   (ii) गणेश जी को नमस्कार है। गणेशाय नमः।
   (iii) शंकर जी को नमकार है। शिवाय नमः।

पञ्चमी विभक्ति

1. अपादान कारक (अलग होने के अर्थ में) पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–
   (i) पेड़ से पत्ता गिरता है। वृक्षात् पत्रं पतति।
   (ii) गंगा हिमालय से निकलती है। गङ्गा हिमालयात् निर्गच्छति।
   (iii) राम प्रयाग से वन जाता है। रामः प्रयागात् वनं गच्छति।
   (iv) घोड़े से मनुष्य गिरता है। अश्वात् मनुष्यः पतति।

षष्ठी विभक्ति

1. सम्बन्ध के अर्थ में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे–
   (i) यह राम की पृस्तक है। इदं रामस्य पुस्तकम् अस्ति।
   (ii) वह कृष्ण का घर है। तत् कृष्णस्य गृहम् अस्ति।
   (iii) वह वृक्ष का पत्ता है। तत् वृक्षस्य पत्रम् अस्ति।
   (iv) यह गंगा का पानी है। इदं गंगायाः जलम् अस्ति।

सप्तमी विभक्ति

1. अधिकरण (आधार) कारक में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे–
   (i) वह विद्यालय में पढ़ता है। सः विद्यालये पठति।
   (ii) नगर में मनुष्य हैं। नगरे मनुष्याः सन्ति।
   (iii) घर में बालक हैं। गृहे बालकाः सन्ति।

■

काव्य सौंदर्य के तत्त्व

रस

साहित्य में रस का अभिप्राय आनंद है। काव्य को पढ़ने या नाटक देखने से जो विशेष प्रकार का आनंद प्राप्त होता है, उसे रस कहा गया है। यह आनंद राग द्वेष से मुक्त होता है। इसमें व्यक्तिगत सुख दुःख के भाव नहीं होते। यह व्यक्तिगत संकीर्णताओं से मुक्त होता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हृदय की मुक्तावस्था को रस दशा कहा है। हृदय की इस मुक्तावस्था में जीवन का व्यक्तिगत अनुभव और आनंद मनुष्य मात्र का अनुभव और आनंद बन जाता है।

रस के अवयव या अंग

नाट्यशास्त्र के रचयिता **भरतमुनि** ने कहा है – **"विभावानुभावव्यभिचारीसंयोगाद्रसनिष्पतिः"** अर्थात विभाव अनुभाव और व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है। व्यभिचारी का दूसरा नाम 'संचारी' भी है। इस सूत्र में 'संयोग' से तात्पर्य स्थायी भाव का विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से मिलना है तथा 'निष्पत्ति' शब्द का अर्थ रस की प्राप्ति है।

विभाव :

विभाव शब्द का अर्थ है – 'कारण', अर्थात् रसों को उदित और उद्दीप्त करने वाली सामग्री विभाव है। विभाव के प्रमुख दो अंग हैं। – 1. आलंबन विभाव, 2. उद्दीपन विभाव

1. **आलंबन विभाव** : जिसका आलंबन या सहारा पाकर स्थायी भाव जागते हैं, उसे आलंबन विभाव कहते हैं, जैसे– नायक, नायिका। आलंबन के भी दो भेद हैं– आश्रय और विषय।

   (i) आश्रय–जिसके मन में 'रति' आदि भाव उत्पन्न होते हैं, उसे आश्रय कहते हैं।

   (ii) विषय–जिसके लिए आश्रय के मन में भाव उत्पन्न हुआ है, वह विषय है।

   उदाहरण – पुष्पवाटिका में राम के मन में सीता को देखकर जो रति भाव जागृत होता है, उसमें राम आश्रय और सीता विषय है।

2. **उद्दीपन विभाव** : जिन वस्तुओं और परिस्थितियों के कारण स्थायी भाव उद्दीप्त होने लगे, उसे उद्दीपन विभाव कहते हैं। इसके भी दो भेद हैं।

   (i) बाह्य – प्रकृति वर्णन, चाँदनी रात, कोकिल कूजन, एकांत स्थल आदि।

   (ii) आलंबन की चेष्टाएं – जैसे – नायक–नायिका की चेष्टाएं।

3. **अनुभाव** : अनु का अर्थ है – 'बाद में'। विभाव का स्थायी भाव से मिलने के उपरांत जो भाव उत्पन्न होते हैं, उन्हें 'अनुभाव' कहा जाता है। ये अनुभाव उस व्यक्ति में उत्पन्न होते हैं, जो स्थायी भाव का आश्रय और विषय है। जैसे–पुष्प वाटिका में राम का सीता को देखकर चकित या अचंभित हो जाना तथा सीता का राम को एकटक देखते रह जाना। यहां चकित होना, एकटक देखना आदि अनुभाव है। इनकी संख्या चार है।

4. **संचारी भाव** : संचारी भाव 'स्थायी भावों' के सहायक हैं, जो अनुकूल परिस्थितियों में घटते–बढ़ते हैं। मन के चंचल विकारों को संचारी भाव कहते हैं। संचारी भाव आश्रय के मन में उत्पन्न होते हैं। संचारी भावों में संख्या तैतीस बताई गई है। उदाहरण के लिए, सीता को देखकर राम के मन में हर्षादि जो भाव उत्पन्न होंगे, उन्हें संचारी भाव कहेंगे।

5. **स्थायी भाव** : रस सिद्धान्त में स्थायी भाव से तात्पर्य 'प्रधान भाव' से है। रति, शोक, उत्साह आदि स्थायी भाव प्रत्येक मनुष्य में होते हैं, वे ही रस की अवस्था को प्राप्त करते हैं। स्थायी भावों की संख्या नौ मानी गई है। कुछ आचार्यों ने इनकी संख्या आठ या दस भी मानी है।

रस तथा उसके अवयव

रस	स्थायी	विभाव	अनुभाव	संचारी भाव
श्रृंगार हास्य करुण रौद्र वीर भयानक वीभत्स अद्भुत वत्सल शांत	रति हास शोक क्रोध उत्साह भय जुगुप्सा विस्मय वात्सल्य निर्वेद	1. आलंबन विभाव i. आश्रय ii. विषय 2. उद्‌दीपन विभाव i. बाह्य ii. आलंबन की चेष्टाएं	1. सात्विक, 2. कायिक, 3. वाचिक, 4. आहार्य (सात्विक के 8 भेद होते हैं) 1. स्तंभ, 2. स्वेद, 3. रोमांच, 4. स्वरभंग, 5. कंप, 6. विवर्णता, 7. अश्रु, 8. प्रलाप	संचारी भाव की संख्या **33** है – निर्वेद, गर्व, दैन्य, श्रम, मद, मोह, जड़ता, उग्रता, विबोध, स्वप्न, अपस्मार, आवेग, मरण, आलस्य, अमर्ष, निद्रा, अवहित्था, उत्सुकता, उन्माद, शंका, स्मृति, मति, व्याधि, संत्रास, लज्जा, हर्ष, असूया, विषाद, धृति, चपलता, ग्लानि, चिंता, विर्तक

शृंगार रस

'रति' नामक स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से मिलता है, तब शृंगार रस की उत्पत्ति होता है। प्रेम अथवा रति के सुख–दुःख की अनुभूतियों के आधार पर इसके (शृंगार रस) दो भेद किए जाते हैं।

(i) संयोग शृंगार, (ii) वियोग शृंगार

(i) संयोग शृंगार – कविता में नायक–नायिका के संयोग या मिलन का वर्णन 'संयोग शृंगार' कहलाता है। जैसे–

बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाई।
सौंह करे, भौहनि हँसे, दैन कहै, नटि जाई। (बिहारी)

(ii) वियोग या विप्रलंभ शृंगार – वियोग की अवस्था में नायक–नायिका के प्रेम का वर्णन वियोग शृंगार कहलाता है। जैसे–

निसि दिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहति पावस ऋतु हम पै, जब तैं स्याम सिधारे। (सूरदास)

वीर रस

'उत्साह' नामक स्थायी भाव जब विभाव, अनुभाव और संचारी भाव से मिलता है, तब वीर रस की उत्पत्ति होती है।

हे सारथे ! हैं द्रोण क्या, देवेन्द्र भी आ रहे अड़े,
है खेल क्षत्रिय बालकों का व्यूह भेदन कर लड़े।
मैं सत्य कहता हूँ सखे ! सुकुमार मत जानो मुझे,
यमराज से भी युद्ध को प्रस्तुत सदा मानो मुझे। (मैथिलीशरण गुप्त)

छंद

छंदशास्त्र के प्रणेता **आचार्य पिंगल** को माना जाता है। वर्णों या मात्राओं के नियमित संख्या के विन्यास से निर्मित 'बंध' को छंद कहते हैं। काव्य के प्रवाह को सुव्यस्थित, संगीत से युक्त, लय से युक्त करने का कार्य छंद करता है। सामान्यतः यति, गति, लय से समन्वित पद्य का रूप छंद है। छंद के द्वारा रचना बिखरने से बच जाती है।

छंद के घटक (तत्व)

1. **यति (विराम)** – यति का अर्थ है – रुकना। छंद के प्रवाह या लय को बनाये रखने के लिए जहां रुकना आवश्यक होता है, वहाँ रुकना ही यति है।

2. **गति** – गति यति का विलोम शब्द है। बिना रुके छंद का पाठ करने से जो गति या प्रवाह निर्मित होता है, उसी प्रवाह को गति कहते हैं।

3. **लय** – गति और यति के समुचित प्रयोग या समन्वय से छंद में जो गुण उत्पन्न होता है, उसे लय कहते हैं।

छंद के भेद –

मात्रा तथा वर्ण के आधार पर छंद के दो भेद हैं –

(1) **मात्रिक छंद** – मात्रा के आधार पर जो छंद बनते हैं उन्हें मात्रिक छंद कहते हैं, जैसे – दोहा, चौपाई आदि। मात्रिक छंद मात्राओं की गणना की जाती है।

(2) **वर्णिक छंद** – वर्णों के आधार पर जो छंद बनते हैं, उन्हें वर्णिक छंद कहते हैं, जैसे – कवित्त, सवैया आदि। वर्णिक छंदों में वर्णों की गणना की जाती है।

वैसे तो छंद दो ही प्रकार के होते हैं लेकिन छायावाद के दौर में महाप्राण निराला ने कविता को छंद के बंधन से मुक्त करने का विचार दिया तत्पश्चात मुक्त छंद की अवधारणा आई।

मात्रा

किसी भी वर्ण के उच्चारण में लगने वाला समय मात्रा कहलाता है। हृस्व वर्ण के उच्चारण में जो समय लगता है, वह एक मात्रा होती है। दीर्घ वर्ण के उच्चारण में लगने वाले समय की दो मात्रा होती है। जैसे – 'क' में एक 'का' में दो मात्रा।

लघु और गुरु –

छंद की भाषा में वर्णों को हृस्व और दीर्घ न कहकर 'लघु' और 'गुरु' कहते हैं। लघु के लिए (।) तथा दीर्घ के लिए (ऽ) संकेत से प्रकट होते हैं।

लघु, गुरु तथा मात्राओं की गणना के नियम –

लघु, गुरु तथा मात्रा के लिए निम्नलिखित नियम है –

1. अ, इ, उ, ऋ – ये स्वर लघु हैं तथा इसकी एक मात्रा होती है।
2. आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ – ये स्वर गुरु हैं, अतएव इसकी दो मात्राएँ मानी जाती हैं।
3. संयुक्ताक्षर के आरंभ में यदि आधा वर्ण हो, तो उसकी मात्रा नहीं गिनी जाती है। जैसे – व्यवहार में 'व्य' को एक मात्रा ही माना जाता है।
4. यदि किसी शब्द के बीच या अंत में संयुक्ताक्षर आता है तो संयुक्ताक्षर के पहले वाला वर्ण गुरु माना जाता है, जैसे – रक्त, भक्त। रक्त, भक्त में संयुक्ताक्षर है – 'क्त'। अतएव इसके पहले के वर्ण भ, र गुरु माने जाएंगे।

5. अनुस्वार और विसर्ग के पहले यदि लघु वर्ण हो, तो उसे गुरु माना जाएगा जैसे – अंत, बसंत। इन शब्दों में 'अ' और 'स' के बाद अनुस्वार आया है, इसीलिए अनुस्वार के पहले वर्ण को गुरु माना जायेगा।
6. किसी लघु वर्ण के बाद अनुस्वार के स्थान पर, यदि चंद्रबिंदु हो तो वह लघु वर्ण गुरु नहीं माना जाएगा। जैसे – 'हंस' में 'ह' के बाद अनुस्वार है, तो यह 'ह' तो गुरु माना जायेगा पर 'हँसी' में 'ह' के बाद चंद्रबिंदु है, तो यह गुरु नहीं माना जाएगा।
7. हलंत के पहले का लघु वर्ण भी गुरु माना जाएगा। जैसे – श्रीमान् में हलंत न् के पहले 'म' है, यह 'म' गुरु होगा। क्योंकि न् में स्वर नहीं है अतः न की मात्रा नहीं गिनी जा सकती।

गण –

तीन वर्णों के समूह को 'गण' कहा जाता है। छंदों में आठ प्रकार के गणों का प्रयोग किया जाता है। इन गणों को समझने के लिए छंदशास्त्र में एक सूत्र है–

''यमाताराजभानसलगम्''

इस सूत्र से आठ गणों का स्वरूप ज्ञात होता है यथा –

गण का नाम	उदाहरण	लघु गुरू का क्रम	मात्राएं	सार्थक उदाहरण
1. यगण	यमाता	। ऽऽ	5	यशोदा
2. मगण	मातारा	ऽऽऽ	6	मायावी
3. तगण	ताराज	ऽऽ।	5	तालाब
4. रगण	राजभा	ऽ।ऽ	5	रामजी
5. जगण	जभान	।ऽ।	4	गणेश
6. भगण	भानस	ऽ।।	4	भारत
7. नगण	नसल	।।।	3	नगद
8. सगण	सलगम्	।।ऽ	4	सरिता

छंद का विभाजन –

चरण (पाद) – छंद में प्रायः चार चरण होते हैं। इनको 'पद' या 'पाद' भी कहते हैं। दूसरे तथा चौथे चरण को सम चरण कहते हैं, पहले और तीसरे चरण को विषम चरण कहते हैं। कहीं–कहीं पर छः चरण भी मिलते हैं।

सम, अर्द्धसम तथा विषम छंद

(1) **सम छंद** – जिस छंद के चारों चरण में समान मात्रा होती है, उसे सम छंद कहते हैं, जैसे – चौपाई।

(2) **अर्द्धसम छंद** – जब किसी छंद के पहले और तीसरे में तथा दूसरे और चौथे में मात्राएं एक समान होती है, वहाँ अर्द्धसम छंद होता है, जैसे – दोहा, सोरठा।

(3) **विषम छंद** – जब किसी छंद के चारों या छः चरणों में मात्राएं अलग–अलग रहती है, तो वहां विषम छंद होता है, जैसे – छप्पय, कुण्डलियाँ।

अंत्यानुप्रास या तुक – किसी छंद के प्रत्येक चरण के अंत में एक सी ध्वनि निकलना अंत्यानुप्रास या 'तुक' कहलाता है।

चौपाई– यह सम मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं तथा प्रत्येक चरण में 16–16 मात्राएँ होती हैं। चरण के अंत में जगण (।ऽ।) और तगण (ऽऽ।) का आना वर्जित है।

उदाहरण–

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।
ऽ।। ।। ।। ।।। ।ऽऽ ।।। ।ऽ। ।।। ।।ऽऽ

अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रूप परिवारु।।
।।। ऽ।।। ऽ।। ऽऽ ।।। ।।। ।। ।। ।।ऽऽ

अन्य उदाहरण

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन। नयन अमिअ दृग दोष बिभंजन।।
तेहिं करि बिमल बिबेक बिलोचन। बरनउँ रामचरित भवमोचन।।

दोहा– यह अर्धसम मात्रिक छंद है। इस छंद के प्रथम एंव तृतीय चरण में 13.13 मात्राएँ होती है तथा दूसरे एवं चौथे चरण में 11.11 मात्राएँ होती हैं। दोहे के विषम चरणों (पहले व तीसरे) के प्रारंभ में जगण (।ऽ।) नहीं होना चाहिए। सम चरणों (दूसरे और चौथे) के अंत में दो वर्णों में पहला गुरु (ऽ) फिर अंतिम वर्ण लघु (।) होना चाहिए।

राम नाम मणि दीप धरु, जीह देहरी द्वार।
ऽ। ऽ। ।। ऽ। ।। ऽ। ऽ।ऽ ऽ।

तुलसी भीतर बाहिरहु, जो चाहसि उजियार।।
।।ऽ ऽ।। ऽ।।। ऽ ऽ।। ।।ऽ।

अन्य उदाहराण

(i) श्री गुरु चरन सरोज रज, निज मन मुकुर सुधार।
बरनौ रघुबर विमल जस, जो दायक फल चार।।

(ii) मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोई
जा तन की झाँई परै, स्याम हरित दुतिहोई।।

अलंकार

अलंकार शब्द का अर्थ है – आभूषण। यह दो शब्दों से मिलकर बना है– अलम् (भूषण) + कार (करने वाला) अर्थात् भूषण या शोभा बढ़ाने वाला। दूसरे काव्य में जो तत्त्व शोभा या सौंदर्य उत्पन्न करते है वे अलंकार कहलाते हैं। अलंकार सम्प्रदाय के प्रतिपादक **आचार्य दण्डी** ने अलंकार की परिभाषा इस प्रकार दी है **''काव्य शोभाकारान्धर्मान् अलंकारन् प्रचक्षते।''** काव्य की शोभा करने वाले धर्मों को अलंकार कहते हैं।

अलंकार दो प्रकार के होते हैं (i) शब्दालंकार (ii) अर्थालंकार।

1. **शब्दालंकार** – जब शब्दों के माध्यम से काव्य में चमत्कार उत्पन्न होता है, उसे शब्दालंकार कहते हैं। अनुप्रास, यमक और श्लेष शब्दालंकार हैं।

2. **अर्थालंकार** – जब अर्थ के माध्यम से काव्य में **रमणीयता** उत्पन्न होता है, वहाँ अर्थालंकार होता है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, अनन्वय, प्रतीक आदि अर्थालंकार है।

(i) अनुप्रास – जहाँ किसी कविता में किसी वर्ण की आवृत्ति बार–बार होती है। वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। उदाहरण –

चारू चंद्र की चंचल किरणें।
खेल रही हैं जल थल में।।

उपर्युक्त पंक्ति में 'च' वर्ण की बार बार आवृत्ति होने के कारण अनुप्रास अलंकार है। इसके अन्य उदाहरण हैं –

1. ''तरनि-तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।''

2. काली लहर कल्पना काली,
मोटी काल कोठरी काली।

3. चाँदी के चबूतरे पर बैठे चार चोर चबर-चबर चरबन चबात हैं।

प्रथम पद में 'त' एवं दूसरे पद में 'क' वर्ण एवं तीसरे उदाहरण में 'च' वर्ण की आवृत्ति कई बार होने के कारण अनुप्रास अलंकार है।

(ii) **यमक अलंकार** – एक ही शब्द को दो या दो से अधिक बार दोहराया जाए और उस आवृत्ति के अर्थ भिन्न–भिन्न हो, वहाँ यमक अलंकार होता है। उदाहरण –

कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय।
या खाए बौराय जग या पाये बौराय।।

इस पद में 'कनक' शब्द दो बार प्रयुक्त हुआ है। पहले 'कनक' का अर्थ स्वर्ण से है जबकि दूसरे 'कनक' का अर्थ धतूरा से है।

इसके अन्य उदाहरण हैं –

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर।
करका मनका डारि दे, मन का मनका फेर।।

यहाँ 'मनका' शब्द दो बार प्रयुक्त हुआ है पहले 'मनका' का अर्थ मोती से हैं, जबकि दूसरे का अर्थ 'मन' से है।

(iii) श्लेष अलंकार – श्लेष का अर्थ होता है – चिपका हुआ। जब एक शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ निकलते हो, तो वहां श्लेष अलंकार होता है।

उदाहरण–

चरन धरत चिंता करत चितवत चारहुँ ओर।
सुबरन को खोजत फिरत, कवि, व्यभिचारी, चोर।।

इस पद में सुबरन के तीन अर्थ हैं सुंदर वर्ण, संदर रंग वाली स्त्री तथा सोना। अतः इस पद में श्लेष अलंकार है। अन्य उदाहरण–

1. **रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।**
   पानी गये न ऊबरे, मोती मानुष चून।।

इस पद में पानी के तीन अर्थ हैं – जल, प्रतिष्ठा और चूना।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :

1. काव्य के पढ़ने, या नाटक देखन से जो आनंद प्राप्त होता है, कहा जाता है :
   (क) अलंकार (ख) छंद (ग) रस (घ) नीरस
2. रस के अवयव या अंग हैं :
   (क) 7 (ख) 4 (ग) 6 (घ) 8
3. स्थायी भावों की संख्या मानी गई है :
   (क) 13 (ख) 12 (ग) 9 (घ) 7
4. वीर रस का स्थायी भाव है :
   (क) क्रोध (ख) घृणा (ग) निर्वेद (घ) उत्साह
5. 'रौद्र रस' का स्थायी भाव है :
   (क) शांत (ख) क्रोध (ग) उत्साह (घ) विस्मय
6. 'सम' चरण कहलाता है :
   (क) दूसरा, चौथा (ख) पहला, तीसरा (ग) तीसरा, चौथा (घ) पहला, तीसरा
7. किस छंद के प्रत्येक चरण में 16–16 मात्राएँ होती हैं ?
   (क) दोहा (ख) सोरठा (ग) चौपाई (घ) रोला
8. श्री गुरु चरन, सरोज रज निज मन मुकुर सुधार।
   बरनऊँ रघुवर विमल जस, जो दायक फल चार।। – में प्रयुक्त छंद है :
   (क) सोरठा (ख) दोहा (ग) चौपाई (घ) रोला
9. शृंगार रस को कितने भागों में बाँटा गया है ?
   (क) 4 (ख) 3 (ग) 2 (घ) इनमें से कोई नहीं
10. 'हास्य रस' का स्थायी भाव है :
    (क) भय (ख) निर्वेद (ग) हास (घ) जुगुप्सा
11. शांत रस का स्थायी भाव है :
    (क) अशांत (ख) निर्वेद (ग) वेद (घ) शोक
12. 'निसि–दिन बरसत नैन हमारे में' कौन–सा रस है ?
    (क) संयोग श्रृंगार (ख) वियोग श्रृंगार (ग) वीर रस (घ) इनमें से कोई नहीं

13. दोहे के पहले एवं तीसरे चरण में मात्राओं की संख्या है :

(क) 11–11 (ख) 12–12 (ग) 13–13 (घ) 16–16

14. दोहे के दूसरे एवं चौथे चरण में मात्राएँ होती है :

(क) 13–13 (ख) 11–11 (ग) 16–16 (घ) 12–12

15. चौपाई के प्रत्येक चरण में मात्राएँ होती हैं :

(क) 16–16 (ख) 18–18 (ग) 13–13 (घ) 11–11

16. संचारी भावों की संख्या है :

(क) 11 (ख) 22 (ग) 33 (घ) 23

17. ''तरनि–तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाए।''— में प्रयुक्त अलंकार है :

(क) यमक (ख) श्लेष (ग) अनुप्रास (घ) रूपक

18. 'चारू चंद्र की चंचल किरणें' में निहित अलंकार है :

(क) श्लेष (ख) अनुप्रास (ग) रूपक (घ) यमक

19. रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।

पानी गये न ऊबरे, मोती मानुस चून।। – में प्रयुक्त अलंकार है :

(क) श्लेष (ख) उत्प्रेक्षा (ग) अनुप्रास (घ) यमक

20. जहाँ एक ही शब्द के अनेक बार भिन्न अर्थों में आवृत्ति हो वहाँ पर कौन–सा अलंकार होता है ?

(क) रूपक (ख) यमक (ग) श्लेष (घ) उत्प्रेक्षा

21. जहाँ किसी शब्द के एक बार प्रयुक्त होने पर उसके एक से अधिक अर्थ हों वह अलंकार है :

(क) श्लेष (ख) यमक (ग) रूपक (घ) उत्प्रेक्षा

22. 'छंदशास्त्र' के प्रणेता कहे जाते हैं –

(क) पाणिनी (ख) आचार्य पिंगल (ग) आचार्य दण्डी (घ) कालिदास

23. माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर

करका मनका डारि दे, मनका मनका फेर।। – में प्रयुक्त अलंकार है :

(क) यमक (ख) श्लेष (ग) रूपक (घ) उत्प्रेक्षा

24. जब कविता में एक शब्द कई बार प्रयुक्त किंतु उसके अर्थ अलग–अलग हो तो वहाँ अलंकार होगाः

(क) यमक (ख) श्लेष (ग) रूपक (घ) उत्प्रेक्षा

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. 'वीर रस' की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।
2. श्रृंगार रस की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।
3. यति एवं गति में अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. चौपाई छंद में कितने चरण होते हैं ?
5. अलंकार किसे कहते हैं ?
6. अनुप्रास अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।
7. यमक अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।
8. श्लेष अलंकार की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।
9. शब्दालंकार किस कहते हैं ?
10. अर्थालंकार किसे कहते हैं ?
11. 'छंदशास्त्र' के प्रणेता कौन हैं ?
12. यमक एवं श्लेष में अंतर स्पष्ट कीजिए।

■

हिंदी व्याकरण तथा शब्द रचना

वर्तनी एवं विराम चिह्न

वर्तनी

हम अपने विचारों का आदान–प्रदान दो प्रकार से करते हैं – एक बोलकर और दूसरा लिखकर। बोलने के लिए हम अपने मुख से निकली ध्वनियों का प्रयोग करते हैं और लिखने के लिए लिपि का प्रयोग करते हैं। इस प्रकार भाषा की दो अलग–अलग पद्धतियाँ हैं – (i) मौखिक और (ii) लिखित।

शब्द निर्माण में जब लिपि–चिह्नों को व्यवस्थित रूप में लिखा जाता है, उसे **वर्तनी** या **अक्षरी** कहते हैं। यह **हिज्जे** (Spelling) भी कहलाती है। वर्तनी का शाब्दिक अर्थ है – वर्त यानी अनुवर्तन करना अर्थात् पीछे–पीछे चलना। लेखन व्यवस्था में वर्तनी शब्द स्तर पर शब्दों का अनुवर्तन करती है।

वर्तनी के नियम –

1. खड़ी पाई वाले व्यंजनों के संयुक्त रूप परंपरागत तरीके से खड़ी पाई को हटाकर ही बनाए जाएँ, जैसे – ख्याति, व्यास, ध्वनि, लग्न, कच्चा, डिब्बा, सभ्य।
2. क, फ, के लिए व, प, के हुक के आधे भाग को हटाकर संयुक्ताक्षर बनाए जाएँ, जैसे – युक्त, पक्का, दफ्तर।
3. ङ, छ, ट, ठ, ड़, ढ और ह के संयुक्ताक्षर हल चिह्न लगाकर बनाए जाएँ, जैसे – वाङ्मय, उच्छ्वास, लट्टू। लेकिन 'द' के साथ अर्द्धस्वर य और व आने पर हलंत के स्थान पर संयुक्त व्यंजन बनाने के परंपरागत रूप का ही प्रयोग किया जाए, जैसे – विद्या, विद्यालय, द्विवेदी।
4. 'र' की स्थिति अलग–अलग प्रकार की है–
   (क) यदि 'र' (स्वर रहित र) पहले हो और बाद में कोई अन्य व्यंजन हो तो 'र्' उस व्यंजन के ऊपर 'ॅ' रूप में दिया जाता है। इसे 'रेफ' कहते हैं, जैसे – कर्म (क+र्+म), शीर्षक (शी+र्+ष+क) आदि।
   (ख) जिन व्यंजनों में खड़ी पाई हो तो पूरे को '्र' की तरह दिखाया जाता है, जैसे – क्रम (क्र+र+म), सम्राट, वज्र।

(ग) 'द' और 'ह' जैसे व्यंजनों के साथ 'र' का रूप 'द्र', 'ह्र' की तरह होगा, जैसे – द्रव्य, ह्रास।

(घ) 'ट', 'ठ', 'ड' आदि के साथ पूरा 'र' केवल '‸' के रूप में लिखा जाता है, जैसे– राष्ट्र, ट्रक, ड्रामा।

(ङ) 'श' में 'र' को जोड़ने पर 'श्र' बनता है किंतु उसके लिए 'श्र' का प्रयोग होता है, जैसे – श्री, श्रम, परिश्रम।

5. 'ष' का प्रयोग निम्न रूप में होता है,

(क) जब टवर्ग के पहले प्रायः 'ष' का प्रयोग होता है, जैसे – कष्ट, निष्ठा, षडानन, कृष्ण।

(ख) 'ऋ' के बाद भी प्रायः 'ष' होता है, जैसे – ऋषि, कृषि, वृषभ।

(ग) यदि 'श' और 'ष' एक साथ आए तो 'श' का प्रयोग पहले होगा जैसे – शेष, शोषण, शीर्षक।

6. (क) पंचमाक्षर ङ्, ञ्, ण्, न्, म् जब अपने वर्ण के व्यंजन से पहले जुड़ता है तब उसे अनुस्वार (ं)के रूप में दिया जाता है, जैसे – पन्त = पंत, मन्जूषा = मंजूषा, सन्त = संत, सम्पादक = संपादक, सम्बन्ध = संबंध।

(ख) यदि पंचमाक्षर के बाद किसी अन्य वर्ण का कोई वर्ण आए तो पंचमाक्षर अनुस्वार के रूप में परिवर्तित नहीं होगा, जैसे – वाङ्मय, अन्य, चिन्मय, साम्य, पुण्य।

(ग) पंचम वर्ण यदि द्वित्व रूप में (साथ–साथ) आए तो अनुस्वार में कोई परिवर्तन नहीं होगा, जैसे – सम्मत, अन्न, सम्मेलन आदि।

7. जिन शब्दों से पहले 'सम्' उपसर्ग लगता है, वहाँ 'म्' के स्थान पर अनुस्वार लगता है, जैसे – संयम (सम् + यम), संवाद (सम्+वाद) संसार (सम्+सार)।

8. अनुनासिक चिह्न व्यंजन नहीं है, स्वरों का ध्वनि गुण है। अनुनासिक स्वरों के उच्चारण में मुँह और नाक से हवा निकलती है, इसीलिए अनुनासिक में चंद्रबिंदु लगता है, जैसे– हँस, आँख, ऊँट। चंद्रबिंदु के प्रयोग के बिना प्रायः अर्थ में भ्रम की संभावना रहती है, जैसे – हंस–हँस, अंगना–अँगना आदि में।

9. एकवचन शब्द के अंत में यदि दीर्घ 'ई' या उसकी मात्रा ' ी ' हो तो उसमें बहुवचन प्रत्यय लगने से दीर्घ 'ई' या ' ी ' का 'इ' या ' ि' हो जाएगी, जैसे – लड़की – लड़कियाँ, कहानी – कहानियाँ।

10. तत्सम शब्दों के अंत में प्रयुक्त विसर्ग का प्रयोग अनिवार्य है, जैसे – अतः, पुनः, स्वतः, पूर्णतः।

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनुशरण	अनुसरण	इकठ्ठा	इकट्ठा
अनाधिकार	अनधिकार	उपरोक्त	उपर्युक्त
उज्वल	उज्ज्वल	अस्थान	स्थान
उपलक्ष	उपलक्ष्य	अरमूद	अमरूद
कलस	कलश	अनुकुल	अनुकूल
कालीदास	कालिदास	अनिष्ठ	अनिष्ट
कंकन	कंकण	अध्यन	अध्ययन
कियारी	क्यारी	अहिल्या	अहल्या
कोतुहल	कौतूहल	अगामी	आगामी
क्षत्र	छत्र	अमावश्या	अमावस्या
घनिष्ट	घनिष्ठ	आधीन	अधीन
चिन्ह	चिह्न	कैलास	कैलाश
बिमार	बीमार	कार्यक्रर्म	कार्यक्रम
मधू	मधु	जागृत	जाग्रत
शक्ती	शक्ति	ज्येष्ट	ज्येष्ठ
साधू	साधु	द्वारिका	द्वारका
हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप	पत्नि	पत्नी
पुज्य	पूज्य	पून्य	पुण्य
परिक्षा	परीक्षा	अर्च्यना	अर्चना
प्रशन	प्रश्न	अर्थात	अर्थात्
शुन्य	शून्य	आहवान	आह्वान
सुर्य	सूर्य	आजीवका	आजीविका
संसारिक	सांसारिक	ईर्षा	ईर्ष्या
उँचाई	ऊँचाई	पुजनिय	पूजनीय
पितांबर	पीतांबर	उद्योगीकरण	औद्योगीकरण
प्राप्ती	प्राप्ति	कवियित्री	कवयित्री
प्रभू	प्रभु	कुशाशन	कुशासन

श्रीमति	श्रीमती	गृहीत	ग्रहीत
शिशू	शिशु	चहारदीवारी	चारदीवारी
हानी	हानि	छमा	क्षमा
वीना	वीणा	द्वन्द	द्वन्द्व
बृजभाषा	ब्रजभाषा	नबाब	नवाब
महत्व	महत्त्व	नुपुर	नूपुर
मुनीगन	मुनिगण	प्रन्तु	परन्तु
राज्यमहल	राजमहल	पुस्प	पुष्प
रमायन	रामायण	विरहणी	विरहिणी
वांक्षनीय	वांछनीय	स्थाई	स्थायी

प्रत्यय संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
तत्व	तत्त्व	अध्यात्मक	आध्यात्मिक
तत्कालिक	तात्कालिक	एकत्रित	एकत्र
द्विवार्षिक	द्वैवार्षिक	धैर्यता	धैर्य
नैपुण्यता	नैपुण्य, निपुण्यता	असहनीय	असह्य
प्राप्ती	प्राप्ति	उत्तरदाई	उत्तरदायी
मैत्रता	मित्रता	ऐक्यता	ऐक्य, एकता
विद्यवान	विद्यमान	साम्यता	समता, साम्य
निरपराधी	निरपराध	प्रमाणिक	प्रामाणिक
राजनैतिक	राजनीतिक	वैधव्यता	वैधव्य
बाहुल्यता	बाहुल्य, बहुलता	व्यापित	व्याप्त
षष्ठम	षष्ठ	सप्ताहिक	साप्ताहिक

लिंग प्रत्यय संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
कृशागिनी	कृशांगी	गायकी	गायिका
गोपिनी	गोपी	पिशाचिनी	पिशाची
त्रिनयनी	त्रिनयना	भुजंगनी	भुजंगी

प्रेयसि	प्रेयसी	सुलोचनी	सुलोचना
विहंगिनी	विहंगी	शताब्दि	शताब्दी
वेतांगिनी	वेतांगी		

संधि संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
अत्याधिक	अत्यधिक	अद्यपि	अद्यापि
उच्छास	उच्छवास	अनाधिकारी	अनधिकारी
छत्र्छाया	छत्रच्छाया	जगरनाथ	जगन्नाथ
तदोपरान्त	तदुपरांत	भाष्कर	भास्कर
आविस्कार	आविष्कार	मनरथ	मनोरथ
सदोपदेश	सदुपदेश	स्वयम्बर	स्वयंवर
हस्ताक्षेप	हस्तक्षेप	सम्हार	संहार
दुस्कर	दुष्कर	नमष्कार	नमस्कार
निरोग	नीरोग	मनहर	मनोहर
मनोकामना	मनःकामना	विसाद	विषाद
सरवर	सरोवर	प्रतिछाया	प्रतिच्छाया

समास संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	**शुद्ध**	**अशुद्ध**	**शुद्ध**
अहोरात्रि	अहोरात्र	उच्चश्रवा	उच्चैःश्रवा
आत्मापुरुष	आत्मपुरुष	एकतारा	इकतारा
एकलौता	इकलौता	निदोर्षी	निर्दोष
निर्दयी	निर्दय	राजापथ	राजपथ
पक्षीगण	पक्षिगण	शशीभूषण	शशिभूषण
मन्त्रीवर	मन्त्रिवर	सतोगुण	सत्वगुण
योगीवर	योगिवर	सलज्जित	सलज्ज
निर्गुणी	निगुण	मनीषीगण	मनीषिगण
विद्यार्थीगण	विद्यार्थिगण		

हलन्त संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
भाग्यवान	भाग्यवान्	बुद्धिवान	बुद्धिमान्
विधिवत	विधिवत्	भविष्यत	भविष्यत्
श्रीमान	श्रीमान्	साक्षात	साक्षात्

चंद्रबिंदु और अनुस्वार संबंधी अशुद्धियाँ

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अंगना	अँगना	बंगला	बँगला
उंगली	उँगली	महंगा	महँगा
कंगना	कँगना	आंख	आँख
चांद	चाँद	उंचा	ऊँचा
डांट	डाँट	छटाक	छटाँक
दांत	दाँत	जाउंगा	जाऊँगा
मुंह	मुँह	सुंड़	सूँड़

विराम चिह्न

विराम का शाब्दिक अर्थ होता है, ठहराव। शब्दों और वाक्यों का परस्पर संबंध बताने तथा किसी विषय को भिन्न–भिन्न भागों में बाँटने और पढ़ने में ठहरने के लिए लेखों में जिन चिह्नों का उपयोग किया जाता है, उन्हें विराम चिह्न कहते हैं।

हिंदी में प्रयुक्त विराम-चिह्न–

1. पूर्णविराम (Full stop) (।)
2. अल्पविराम (comma) (,)
3. अर्द्धविराम (Semi Comma) (;)
4. योजक चिह्न (Hyphen) (–)
5. प्रश्नवाचक चिह्न (Sign of interrogation) (?)
6. विस्मयादिबोधक चिह्न (Sign of Exclamation) (!)
7. उद्धरण चिह्न (Inverted Comma) (' ') ('' '')
8. निर्देशक (Dash) (–)
9. कोष्ठक (Bracket) {( )}
10. त्रुटि विराम/हंसपद (Swan footprint) ( )

1. पूर्णविराम (Full stop) (।) – पूर्ण विराम का अर्थ है– पूरी तरह रुकना या ठहरना। पूर्ण विराम के चिह्न का प्रयोग साधारणतया प्रत्येक पूर्ण वाक्य के अंत में होता है, चाहे वाक्य लम्बा हो या छोटा हो। जैसे – यह शेर है। वह लकड़ी है। तुम खा रहे हो।

2. अल्पविराम (Comma) (,) – हिंदी में प्रयुक्त विराम चिह्नों में अल्पविराम का प्रयोग सबसे अधिक होता है। अल्पविराम का अर्थ है थोड़ी देर के लिए रुकना या ठहरना। वाक्य में दो से अधिक समान पदों, पदांशों अथवा वाक्यों में संयोजक अव्यय 'और' की आवश्यकता हो तो वहाँ अल्पविराम का प्रयोग होता है। जैसे राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न राजभवन में पधारे।

3. अर्द्धविराम (Semi Comma) (;) – अर्द्धविराम का प्रयोग स्पष्ट विराम वाले स्थलों में आता है और किसी वाक्य में कोई स्वतंत्र वाक्य होने पर उन्हें अलग–अलग रखने के लिए भी इसका प्रयोग किया गया है। इसमें अल्पविराम की अपेक्षा कुछ अधिक देर तक रुकना पड़ता है। जैसे – धन तो है नहीं, पुत्री; यह भी मैं तुम्हें सौंपकर चला जाता हूँ।

4. योजक चिह्न (Hyphen) (-) – योजक चिह्न (–) का प्रयोग स्पष्टता के लिए किया जाता है, इसका प्रयोग निम्न अवस्थाओं में होता है–

(क) योजक चिह्न का प्रयोग दो या दो से अधिक शब्दों का संबंध प्रकट करने के लिए उन शब्दों के बीच में लगाया जाता है। साधारण रूप में समास (तत्पुरुष एवं द्वन्द्व समास), संधि व रूप परिवर्तन के कारण एक नहीं हो पाते हैं, जैसे – वर्ण–भेद, वैभव–संपन्न, राम–लक्ष्मण, खेलना–कूदना आदि।

(ख) पुररुक्त अथवा युग्म रूप के शब्दों में भी योजक चिह्न का प्रयोग होता है, जैसे – द्वार–द्वार, बड़े–बड़े, धीरे–धीरे।

(ग) अक्षरों में लिखे जाने वाले संख्याओं और उसके अंशों के बीच में योजक चिह्न का प्रयोग होता है, जैसे – एक–तिहाई, त्रि–अक्षर

(घ) दो विपरीतार्थक शब्दों के मध्य योजक चिह्न लगाया जाता है, जैसे – माता–पिता, आकाश–पाताल, शुभ–अशुभ आदि।

(ङ) समानता सूचक सा, से, सी आदि के पूर्व हाइफन रखा जाए, जैसे – तुम–सा (होशियार), चाकू–सा (जुबान)

5. प्रश्नवाचक चिह्न (Sign of interrogation) (?) – प्रश्नवाचक चिह्न का प्रयोग भिन्न अवस्थाओं में होता है–

(क) जहाँ प्रश्न करने या पूछे जाने का बोध हो, जैसे क्या आप बनारस से आ रहे हैं ?

(ख) जहाँ स्थिति निश्चित न हो, जैसे – शायद आप पटना के रहने वाले हैं ?

(ग) व्यंग्योक्तियों में, जैसे – भ्रष्टाचार इस युग का सबसे बड़ा शिष्टाचार है न ? जहाँ घूँसखोरी का बाजार गर्म है, वहाँ ईमानदारी कैसे टिक सकती है ?

6. विस्मयादिबोधक चिह्न (Sign of Exclamation) (!) – इसका प्रयोग हर्ष, विषाद, विस्मय, घृणा, आश्चर्य, करुणा, भय इत्यादि भाव व्यक्त करने के लिए निम्नलिखित स्थितियों में होता है–

(क) आह्लाद सूचक शब्दों, पदों और वाक्यों के अंत में इसका प्रयोग होता है, जैसे– वाह ! तुम्हारे क्या कहने !

(ख) अपने से बड़े को सादर सम्बोधित करने में इस चिह्न का प्रयोग होता है, जैसे– हे राम ! तुम मेरा दुख दूर करो।

(ग) जहाँ अपने से छोटों के प्रति शुभकामनाएँ एवं सदभावनाएँ प्रकट की जायें, जैसे– भगवान् तुम्हारा भला करे ! यशस्वी बनो !

(घ) जहाँ मन की खुशी व्यक्त की जाए, जैसे– कैसा निखरा रूप है ! तुम्हारी जीत होकर रही, शाबाश!

7. उद्धरण चिह्न (Inverted Comma) (" ") उद्धरण के दो रूप है – इकहरा (' ') और दोहरा (" ")।

(क) पुस्तक, समाचार-पत्र, लेखक का उपनाम, लेख का शीर्षक इत्यादि उद्धृत करने के लिए इकहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है, जैसे–

'कामायनी' महाकाव्य है।?

(ख) जब हम किसी की कही हुई बात को उसी के शब्दों में लिखते हैं, तब दोहरे उद्धरण चिह्न का प्रयोग किया जाता है। जैसे–

स्वामी विवेकानंद ने कहा, "उठो, जागो और तब तक नहीं रूको, जब तक कि लक्ष्य न प्राप्त हो जाए।"

8. निर्देशक (Dash) (–)

(क) उद्धरण एवं भाव–प्रकाशन अथवा व्याख्यात्मक पदो ंके पहले अपूर्ण विराम के आगे 'निर्देशक' (–) लगाते हैं। यदि वाक्य की विचारधारा, गति, प्रवाह में सहसा किसी प्रकार से अवरोध पड़ जाए तो निर्देशक के चिह्न का प्रयोग होता है। जैसे –

दुनिया में नयापन–नूतनत्व–ऐसी चीज नहीं
जो गली–गली मारी–मारी फिरती हो।

(ख) किसी विषय के साथ संबंध और बातों की सूचना देने लिए भी इसका प्रयोग होता है, जैसे – साहित्य के दो अंग है – गद्य और पद्य।

(ग) यदि वाक्य में क्रिया के अनेक कर्ता हो और अंत में कोई शब्द उनका सामूहिक प्रतिनिधित्व करें तो उस शब्द से पूर्व निर्देशक का प्रयोग होता है। जैसे – लड़के, युवा, वृद्ध, शिक्षित, अशिक्षित– सभी तो आज आंदोलन में उपस्थित थे।

(घ) कथोपकथन, वार्तालाप, संवाद में नाम के पश्चात् भी इसका प्रयोग होता है। जैसे – कृष्ण–अर्जुन, आज क्या युद्ध करने को जी नहीं चाहता?

(ङ) किसी महान पुरुष, लेखक अथवा कवि का कोई अवतरण देने के पश्चात् इसका प्रयोग होता है। जैसे – जहाँ सुमति, तहाँ संपति ना ना – तुलसी

9. **कोष्ठक (Bracket) ( )** – किसी वाक्य में किसी शब्द विशेष अर्थात् पद – विशेष को सुस्पष्ट करने के लिए 'कोष्ठक' का प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त ऐसे स्थल पर जहाँ कुछ शब्द तथा वाक्य, मुख्य वाक्य से संबंधित नहीं होते हैं, किंतु उनका अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक्य में होना आवश्यक होता है। जैसे – देश के नेता उच्च पदों को पाकर फूले न धर्मराज (युधिष्ठर) सत्य और धर्म के संरक्षक थे।

10. **त्रुटि बोधक / हंसपद (Swan footprint) ( )** – जब किसी वाक्य में कोई शब्द अथवा अक्षर लिखने में छूट जाता है, तो छूटे हुए वाक्य के नीचे हंसपद चिह्न का प्रयोग कर छूटे हुए वाक्य को ऊपर लिख देते हैं।

जैसे –रूपाली ^कल आएगी।

अभ्यास

I. निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :

1. लिपि चिह्नों को व्यवस्थित रूप में लिखने को क्या कहा जाता है ?

(क) वर्तनी (ख) अक्षरी (ग) हिज्जे (घ) इनमें से सभी

2. निम्न में सही वर्तनी का चयन कीजिए :

(क) अनुसरण (ख) अनुषरण (ग) अनुसरण (घ) अनुसारण

(क) अभ्सस्थ (ख) अभ्यस्त (ग) अभ्यस्थ (घ) अभ्स्त

(क) अरमूद (ख) अमरूद (ग) अरमुद (घ) आरमूद

(क) अहल्या (ख) अहिल्या (ग) आहल्या (घ) आहिल्या

(क) अगायी (ख) अगयी (ग) आगामी (घ) अगमी

(क) ईर्षा (ख) ईर्ष्या (ग) ईरसा (घ) ईर्स्या

(क) कवयित्री (ख) कवियित्री (ग) कभीयत्री (घ) कवीयत्री

(क) छमा (ख) छामा (ग) क्षमा (घ) क्षामा

(क) नवाब (ख) नबाब (ग) नवाब (घ) नबाव

(क) पुष्प (ख) पुस्प (ग) पुश्प (घ) पुसप

(क) सन्ततूष्ठ (ख) सन्तुष्ट (ग) सन्तुस्ट (घ) सन्तुस्ठ

(क) उत्तरदाई (ख) उत्तराई (ग) उत्तरदायी (घ) उत्तरआई

(क) सष्ष्टी (ख) सृष्टि (ग) सृस्टी (घ) सृस्टि

3. 'विराम' का अर्थ है :
(क) ठहराव (ख) झुकाव (ग) चलना (घ) बढ़ना

4. वाक्य की गति जब समाप्त हो, तो वहाँ विराम होता है :
(क) अल्पविराम (ख) अर्धविराम (ग) पूर्णविराम (घ) अर्धविराम चिह्न

5. घर-द्वार, दाल-रोटी, दही-बडा में कौन-सा विराम चिह्न लगता है ?
(क) पूर्णविराम (ख) अल्पविराम (ग) योजक चिह्न (घ) प्रष्नवाचक चिह्न

6. हर्ष, विषाद, घृणा, विस्मय, आश्चर्य में किस विराम चिह्न का प्रयोग होता है ?
(क) उद्धरण (ख) योजक (ग) विस्मयादिबोधक (घ) समतामूलक

7. 'यशस्वी बनो' ! में कौन-सा विराम चिह्न है ?
(क) योजक चिह्न (ख) पूर्णविराम (ग) अर्धविराम (घ) विस्मयादिबोधक चिह्न

8. क्या आप बनारस से आ रहे हो ? में किस विराम चिह्न का प्रयोग है ?
(क) विस्मयादिबोधक (ब) उद्धरण
(ग) प्रश्नवाचक (घ) योजक

9. कैसा निखरा स्वर है ! में प्रयुक्त विराम चिह्न है :
(क) उद्धरण (ख) प्रश्नवाचक (ग) योजक (घ) विरस्मयादिबोधक

10. ऊपर-नीचे, लेन-देन में कौन-सा विराम चिह्न है ?
(क) प्रश्नवाचक (ख) उद्धरण (ग) योजक (घ) अर्धविराम

11. सीता आ‸गरा घूमने गयी में कौन सा विराम चिह्न है–
(क) हंसपद (ख) पूर्णविराम (ग) विस्मयादिक बोधक (घ) प्रश्नवाचक

■

शब्द रचना

तत्सम एवं तद्भव

तत्सम शब्दः– संस्कृत भाषा के मूलशब्द को 'तत्सम' कहते हैं। तत्सम का अर्थ है 'उसके समान' या 'ज्यों का त्यों।' (तत् = उसके (संस्कृत के) सम = समान) हिंदी में बहुत से शब्द जो सीधे संस्कृत से आये और वह उसी रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं, ऐसे शब्दों को तत्सम कहा गया। जैसे – आम्र, उष्ट्र, खर्पर, गोमल, शत, हरिद्रा आदि।

तद्भव शब्दः– तद्भव शब्द तत+भव से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ है विकसित या उससे उत्पन्न ऐसे शब्द जो संस्कृत एवं पालि से विकृत होकर हिन्दी में आये हैं, वे तद्भव कहलाते हैं, जैसे – आम, ऊँट, तीखा, घोड़ा आदि।

तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम	तद्भव
अग्नि	आग	अक्षर	आखर, अच्छर	अन्यत्र	अनत
अन्न	अनाज	अमावस्या	अमावस	अम्बा	अम्मा
अट्टालिका	अटारी	आश्रय	आसरा	ओष्ठ	ओठ
अँगुली	उँगुली	अश्रु	आँसू	अक्षि	आँख
आम्र	आम	आश्चर्य	अचरज	उलूक	उल्लू
उज्ज्वल	उजाला	उत्थान	उठाना	उष्ट्र	ऊँट
एकत्र	इकट्ठा	कृष्ण	किसन	कर्ण	कान
कृपा	किरपा	कूप	कुँआ	काक	कौआ
कुंभकार	कुम्हार	कोकिल	कोयल	कपाट	किवाड़
कमल	कंवल	कुपुत्र	कपूत	ग्रंथि	गाँठ
ग्राम	गाँव	गृह	घर	गर्दभ	गधा
गर्त	गड्ढा	धूम्र	धुँआ	चैत्र	चैत
चतुर्दश	चौदह	वत्स	बच्चा	शलाका	सलाई
तिक्त	तीखा	क्षीर	खीर	घोटक	घोड़ा
शत	सौ	भक्त	भगत	ग्राहक	गाहक
जिह्वा	जीभ	क्षेत्र	खेत	पुत्र	पूत

प्रिय	प्यारा	लोहकर	लोहार	महिषी	भैंस
लज्जा	लाज	सप्त	सात	वधू	बहू
वानर	बंदर	यमुना	जमुना	सूत्र	सूत
विवाह	ब्याह	स्वप्न	सपना	शांक	साग
स्वर	सुर	चर्मकार	चमार	घट	घड़ा
दुग्ध	दूध	नग्न	नंगा	छत्र	छाता
मृत्तिका	मिट्टी	मुख	मुँह	पुत्र	पूत
वार्ता	बात	वाष्प	भाप	सूर्य	सूरज
हृदय	हिरदय	सर्प	साँप	सूचिका	सूई
हस्ति	हाथी	प्रहर	पहर	शुष्क	सूखा
मित्र	मीत	मयूर	मोर	नृत्य	नाच
मृत्यु	मौत	दीपक	दीया	दुर्बल	दुबला
चक्र	चाक	धैर्य	धीरज	भगिनी	बहन
वर्षा	बरखा	छिद्र	छेद	धैर्य	धीरज
रत्न	रतन	दण्ड	दाड़	मक्षिका	मक्खी
गृह	घर	शिक्षा	सीख	पर्यक	पलंग
शर्करा	शक्कर	योगी	जोगी	भातृ	भाई
राज्ञी	रानी	श्वसुर	ससुर	वृद्ध	बूढ़ा
शिर	सिर	प्रिय	प्यारा	पत्र	पत्ता
भिक्षा	भीख	भ्रमर	भौंरा	हस्त	हाथ
मुष्टि	मुट्ठी	मस्तक	माथा	लक्ष	लाख
जीर्ण	झीना	नासिका	नाक	हास	हँसी
निद्रा	नींद	पृष्ठ	पीठ	रुक्ष	रुखा
क्षण	छन	जंघा	जाँघ	पिपासा	प्यासा
दष	दस	घृत	घी	पञ्च	पाँच
चंद्रिका	चाँदनी	त्वरित	तुरंत	नव	नया
बाहु	बाँह	दधि	दही	सौभाग्य	सुहाग
पुष्प	फूल				

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :

1. अग्नि शब्द का तद्भव है :
   (क) वायु (ख) आग (ग) अश्रु (घ) अग्र
2. 'चौदह' शब्द का तत्सम है :
   (क) द्वाद्वश (ख) चतुर्दश (ग) त्रयोदश (घ) एकादश
3. 'अमावस्या' का तद्भव है :
   (क) अमावस (ख) अमस्या (ग) अमौसी (घ) आमस
4. 'किसन' का तत्सम है :
   (क) कृष्ण (ख) श्याम (ग) किसान (घ) किस्न
5. 'आश्चर्य' का तद्भव शब्द है :
   (क) आचरण (ख) विचरण (ग) आचार्य (घ) अचरज
6. 'कान' का तत्सम शब्द है :
   (क) विकर्ण (ख) सकर्ण (ग) कर्ण (घ) प्राण
7. कोकिल का तद्भव रूप है :
   (क) कोयल (ख) कोमल (ग) कोकिला (घ) कोयला
8. 'गर्दभ' का तद्भव रूप है :
   (क) गदहा (ख) गधा (ग) गदा (घ) गदर्भ
9. पूत का तत्सम शब्द है :
   (क) पुत्री (ख) पुत्र (ग) लड़की (घ) आत्मज
10. वर्षा का तद्भव रूप है :
    (क) बरस (ख) बरसात (ग) हरसा (घ) बरखा

विलोम शब्द

जब कोई शब्द किसी शब्द का विपरीत अर्थ प्रकट करे, तो वह 'विलोम शब्द' कहलाता है।

शब्द	**विलोम**	**शब्द**	**विलोम**
अनाथ	सनाथ	आग्रह	अनाग्रह
अवनति	उन्नति	आधार	निराधार
अल्पज्ञ	बहुज्ञ, सर्वज्ञ	आसक्त	अनासक्त
अल्पायु	दीघार्यु	आजादी	गुलामी
अन्तर्मुखी	बहिर्मुखी	इहलोक	परलोक
अपेक्षा	उपेक्षा	अगम	सुगम
उत्कृष्ट	निकृष्ट	उपयोग	दुरुपयोग
अतिवृष्टि	अनावृष्टि	इच्छा	अनिच्छा
अनुकूल	प्रतिकूल	उत्साह	निरुत्साह
आशा	निराशा	उत्तम	अधम
आलोक	अंधकार	उच्च	निम्न
आय	व्यय	उदयाचल	अस्ताचल
अमर	मर्त्य	एड़ी	चोटी
ऐतिहासिक	अनैतिहासिक	अग्नि	जल
अंधकार	प्रकाश	उधार	नकद
अल्पसंख्यक	बहुसंख्यक	उग्र	सौम्य
आधुनिक	प्राचीन	एकत्र	विकीर्ण
आगामी	विगत	ऐश्वर्य	अनैश्वर्य
उत्थान	पतन	आचार	अनाचार
कीर्ति	अपकीर्ति	ज्योति	तम,तिमिर
कुरूप	सुंदर, सुरूप	कायर	निडर
जीवित	मृत	कटु	मधुर
जटिल	सरल	कृत्रिम	प्राकृत
ज्वार	भाटा	कर्मण्य	अकर्मण्य
ताप	शीत	कोप	कृपा

क्रूर	अक्रूर	कठोर	कोमल
तुच्छ	महान्	कनिष्ठ	ज्येष्ठ
देय	अदेय	कपटी	निष्कपट
दीर्घकाय	कृशकाय	क्रोध	क्षमा
तिमिर	प्रकाश	तरल	ठोस
खेद	प्रसन्नता, हर्ष	दूषित	स्वच्छ
गणतंत्र	राजतंत्र	गुप्त	प्रकट
आकाश	पाताल	तरल	ठोस
ध्वंस	निर्माण	नूतन	पुरातन
गौरव	लाघव	न्यून	अधिक
गृहस्थ	सन्यासी	निंदा	स्तुति
गुण	दोष	निर्मल	मलिन
गमन	आगमन	निरामिष	सामिष
घरेलू	बाहरी	निर्लज्ज	सलज्ज
निर्दोष	सदोष	छाँह	धूप
नगर	ग्राम	निर्दय	सदय
छली	निश्छल	निष्काम	सकाम
छूत	अछूत	जन्म	मृत्यु
निरक्षर	साक्षर	जागरण	निद्रा
बुद्धिमान	मूर्ख, बुद्धिहीन	पक्ष	विपक्ष
जय	पराजय	प्रमुख	सामान्य
जड़	चेतन	प्रलय	सृष्टि
प्रारम्भिक	अंतिम	प्रयोग	अनुप्रयोग
बंधन	मुक्ति	पाप	पुण्य
बलवान	बलहीन	परमार्थ	स्वार्थ
बाढ़	सूखा	पुरस्कार	दंड
भूत	भविष्य	परतंत्र	स्वतंत्र
योगी	भोगी	असभ्य	सभ्य
भौतिक	आध्यात्मिक	प्रधान	गौण
भद्र	अभद्र	प्राचीन	नवीन

मानव	दानव	पुष्ट	क्षीण
पूर्णता	अपूर्णता	महात्मा	दुरात्मा
मुनाफा	नुकसान	प्रत्यक्ष	अप्रत्यक्ष
व्यक्त	अव्यक्त	विशालकाय	क्षीणकाय
विस्तृत	संक्षिप्त	विपत्ति	सम्पत्ति
विधवा	सधवा	वक्र	सरल
विमुख	सम्मुख	सम	विषम
सगुण	निर्गुण	सजीव	निर्जीव
सबल	दुर्बल	सुकर्म	कुकर्म
संयोग	वियोग	सम्मान	अपमान
साकार	निराकार	सुगन्ध	दुर्गंध
विरोध	समर्थन	कपूत	सपूत
अनुज	अग्रज	कृतज्ञ	कृतघ्न
शकुन	अपशकुन	शोषक	पोषक
श्रीगणेश	इतिश्री	शांति	क्रांति
श्रद्धा	घृणा	शुष्क	सिक्त
हास	रुदन	हर्ष	विषाद
क्षम्य	अक्षम्य		

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :

1. अनाथ का विलोम है :
   (क) अनाथ (ख) सनाथ (ग) विनाथ (घ) आबाद
2. 'अल्पज्ञ' का विलोम है :
   (क) कृतघ्न (ख) बहुज्ञ (ग) कृतज्ञ (घ) ज्ञाता
3. 'अमावस्या' का विलोम है :
   (क) तपस्या (ख) अमावस (ग) प्रकाश (घ) पूर्णिमा
4. 'उत्थान' का विलोम है :
   (क) गमन (ख) रमन (ग) दमन (घ) पतन

5. 'आगामी' शब्द का विलोम है :
(क) दूरगामी (ख) विगत (ग) निरगामी (घ) गुलामी

6. 'गमन' का विलोम है :
(क) निर्गमन (ख) आगमन (ग) आचमन (घ) आसवन

7. 'छल' का विलोम है :
(क) उच्छल (ख) उज्ज्वल (ग) निष्छल (घ) बली

8. 'निर्दय' शब्द का विलोम है :
(क) अदय (ख) सदय (ग) निद्रा (घ) मुद्रा

9. 'प्रधान' का विलोम है :
(क) ध्यान (ख) मुख्य (ग) गौण (घ) सावधान

10. 'कृतज्ञ' का विलोम है :
(क) अज्ञ (ख) विज्ञ (ग) सर्वज्ञ (घ) कृतध्न

11. 'व्यक्त' का विलोम है :
(क) सुप्त (ख) विलुप्त (ग) व्यक्त (घ) अव्यक्त

12. 'वक्र' का विलोम है :
(क) चक्र (ख) तक्र (ग) सरल (घ) कठिन

13. 'आज्ञा' शब्द का विलोम है :
(क) दुराक्षा (ख) निराशा (ग) हताशा (घ) नाउम्मीद

14. 'शकुन' का विलोम है :
(क) शुभ (ख) सुकून (ग) अपशकुन (घ) अवगुन

15. 'आकाश' का विलोम है :
(क) बाघम्बर (ख) स्वयंवर (ग) सुखम्बर (घ) पाताल

16. 'मानव' का विलोम है :
(क) मनुष्य (ख) विरागी (ग) दानव (घ) साधू

17. 'विशालकाय' का विलोम है :
(क) कायायुक्त (ख) कायामुक्त (ग) क्षीणकाय (घ) दीर्घकाय

18. 'हर्ष' का विलोम है :
(क) वर्ष (ख) विषाद (ग) निषाद (घ) खुशी

पर्यायवाची शब्द

जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो, उन्हें 'पर्यायवाची शब्द' कहा जाता है। पर्यायवाची शब्द को 'समानार्थी शब्द या प्रतिशब्द' भी कहते हैं। कुछ प्रमुख शब्द के पर्यायवाची नीचे दिये जा रहे हैं–

अग्नि – आग, हुतासन, पावक, अनल, दहन, कृशानु
असुर – दनुज, दानव, राक्षस, दैत्य, निशाचर
अमृत – पीयूष, सुधा, अमिय, जीवनोदक
अश्व – वाजि, हय, घोटक, घोड़ा, सैंधव, तुरग
आँख – नेत्र, लोचन, नयन, चक्षु, दृग, अक्षि
आकाश – व्योम, गगन, अंबर, नभ, अंतरिक्ष, आसमान
आम – आम्र, रसाल, अमृतफल, सहकार, अतिसौरभ, पिकबंधु
इन्द्र – सुरपति, मधवा, पुरंदर, वासव, देवराज
कमल – सरोज, जलज, पंकज, अरविंद, पदम्, कंज
गणेश – लम्बोदर, एकदंत, मूषकवाहन, गजवदन, गजानन, मोदकप्रिय
गंगा – जाह्नवी, देवनदी, सुरसरिता, भगीरथी, मंदाकिनी
जल – नीर, सलिल, पानी, अंबु, तोय, वारि, पय
चंद्रमा – चंद्र, चाँद, हिमांशु, सुधांशु, राकेश, शशि, मृगांक
यमुना – सूर्यसुता, सूर्यतनया, कालिंदी, कृष्णा, अर्कजा
तालाब – सर, सरोवर, तडाग, पुष्कर, जलाशय
देवता – सुर, अमर, देव, आदित्य, गीर्वाण
नदी – सरिता, तटिनी, आपगा, निर्झरिणी, तरंगिणी
नौका – नाव, तरिणी, जलयान, जलपात्र, तरी, बेड़ा
पत्नी – भार्या, दारा, गृहिणी, बहू, वधू, कलत्र, प्राणप्रिया
पति – भर्ता, बल्लभ, स्वामी, आर्यपुत्र
हवा – वायु, समीर, मरुत, वात, बयार, प्रकंपन, पवन
पक्षी – विहग, खग, पखेरू, परिंदा, चिड़िया, द्विज, अंडज
पर्वत – भूधर, शैल, अचल, महीधर, गिरि, नग, पहाड़
पुत्र – तनय, सुत, बेटा, लड़का, आत्मज, तनुज

पुत्री – तनया, सुता, बेटी, आत्मजा, दुहिता, नंदिनी
पृथ्वी – भू, इला, भूमि, धरा, उर्वी, धरती, धरित्री
फूल – पुष्प, सुमन, कुसुम, प्रसून
बिजली – चपला, चंचला, विद्युत, तड़ित्, दामिनी
वृक्ष – तरु, द्रुम, पादप, विटप, अगम, पेड़ , गाछ
महादेव – शंभु, पशुपति, शिव, महेश्वर, शंकर, हर
रात्रि – निशा, रात, रैन, रजनी, यामिनी, विभावरी
राजा – नृप, भूप, महीप, महीपति, नरपति, नरेश
समुद्र – सागर, जलधि, पारावार, नीरनिधि, पयोनिधि
शेर – शार्दूल, व्याघ्र, मृगराज, मृगेन्द, सिंह, केहरि
सूर्य – मार्तंड, दिनकर, भानु, भास्कर, रवि, प्रभाकर
हाथी – गजेंद्र, कुंजर, गज
सर्प – अहि, भुजंग, विषधर, व्याल, फणी, नाग
सरस्वती – ब्राह्मी, भारती, वाक्, गिरा, शारदा, वीणापाणि
मछली – मत्स्य, झरव, मीन, जलजीवन, सफरी
किसान – कृषक, क्षेत्रक, क्षेत्रपति, खेतिहर, हलधर
अतिथि – मेहमान, आगंतुक, पाहुन, अभ्यागत
विष्णु – गरुणध्वज, अच्युत, चक्रपाणि, माधव, केशव, दामोदर, गोविंद, लक्ष्मीपति
द्रव्य – धन, वित्त, संपदा, दौलत, संपत्ति
दास – अनुचर, चाकर, सेवक, भृत्य, किंकर
घर – निकेतन, भवन, सदन, आयतन, आवास
कपड़ा – वस्त्र, पट, वसन, अंबर, चीर

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :

1. अग्नि का पर्यायवाची शब्द नहीं है :
   (क) आग (ख) पावक (ग) अनल (घ) अनिल
2. अमृत का पर्यायवाची शब्द है :
   (क) जीवन (ख) पावन (ग) अमिय (घ पिय

3. रसाल, अमृत फल, सहकार किस शब्द का पर्याय है ?
   (क) मीठा (ख) जामुन (ग) पपीता (घ आम
4. 'गणेश' शब्द का पर्यायवाची है :
   (क) आनन (ख) वदन (ग) नंदन (घ मोदकप्रिय
5. देवनदी, सुरसरिता, मंदाकिनी पर्यायवाची शब्द है :
   (क) यमुना के (ख) सरस्वती के (ग) गंगा के (घ सरयू के
6. सूर्यसुता, सूर्यतनया, कालिंदी किसे कहा जाता है ?
   (क) गंगा को (ख) यमुना को (ग) सरस्वती को (घ सरयू को
7. चपला, चंचला, विद्युत किस शब्द के पर्याय हैं ?
   (क) वर्षा (ख) बादल (ग) वायु (घ बिजली
8. 'समुद्र' शब्द का पर्याय नहीं है :
   (क) सागर (ख) जलधि (ग) पारावार (घ महीपति
9. दिनकर, भानु, भास्कर पर्याय है :
   (क) सूर्य के (ख) चंद्रमा के (ग) तारों के (घ हाथी के
10. शंभु, शिव, पशुपति आदि हैं :
    (क) विलोम (ख) पर्यायवाची (ग) उपसर्ग (घ प्रत्यय
11. सुर, अमर, देव कहलाते हैं :
    (क) विलोम (ख) अनुलोम (ग) पर्यायवाची (घ उपसर्ग
12. भवन, सदन, शब्द हैं :
    (क) विलोम के (ख) प्रतिलोम (ग) पर्यायवाची के (घ प्रत्यय के
13. पट, वसन का पर्यायवाची शब्द है :
    (क) आकाश का (ख) पाताल का (ग) वस्त्र का (घ लकड़ी का
14. अहि, भुजंग, विषधर कहा जाता है :
    (क) मेढक को (ख) कोयल को (ग) सर्प को (घ मयूर को
15. जिन शब्दों के अर्थ में समानता हो कहलाते हैं :
    (क) विलोम शब्द (ख) प्रतिलोम शब्द (ग) पर्यायवाची शब्द (घ उपसर्ग

■

समास

जब दो या दो से अधिक शब्दों के मेल से एक नया शब्द बनाते हैं और उनके बीच की विभक्तियों (कारक चिह्नों) अथवा संयोजक अव्ययों का लोप हो जाता है तो उसे समास कहते हैं।

अव्ययीभाव

जिस समास में पूर्व पद प्रधान होता है, वह अव्ययीभाव समास कहा जाता है। इस समास के दोनों पदों में से प्रथम पद अव्यय होता है, जबकि दूसरा पद (उत्तर पद) संज्ञा होती है। जैसे– प्रतिदिन, यथोचित, प्रत्येक आदि, इन समस्त पदों में क्रमशः पहला पद प्रति, यथा, प्रति अव्यय हैं इसीलिए इन्हें अव्ययीभाव समास कहते हैं।

उदाहरण –

समस्त पद	**समास–विग्रह**	**समस्त पद**	**समास–विग्रह**
यथाशक्ति	शक्ति के अनुसार	प्रतिदिन	प्रत्येक दिन
आजन्म	जन्म से लेकर	यथासमय	समयानुसार
आजीवन	जीवनपर्यंत/जीवनभर	अनुरूप	रूप के योग्य
दशानन	दस हैं जिसके आनन	राजपुत्र	राजा का पुत्र
घुड़सवार	घोड़े पर सवार	यशप्राप्त	यश को प्राप्त

तत्पुरुष समास

जिस समास में उत्तर पद प्रधान होता है उसे तत्पुरुष समास कहा जाता है। इस समास में प्रथम पद गौण (विशेष्य) तथा द्वितीय पद प्रधान (विशेषण) होता है। इसके छह भेद हैं –

1. **कर्म तत्पुरुष समास** – जिस तत्पुरुष समास में 'को' विभक्ति का लोप हो जाता है, उसे 'कर्म तत्पुरुष समास' कहते हैं। जैसे –

समस्त पद	**समास–विग्रह**	**समस्त पद**	**समास–विग्रह**
लोकार्पण	लोक को अर्पण	शरणागत	शरण को आगत
सुख प्राप्त	सुख को प्राप्त	ग्रामगत	ग्राम को गया हुआ

2. करण तत्पुरुष समास – जिस तत्पुरुष समास में विभक्ति 'से', 'के द्वारा' का लोप हो जाता है, उसे 'करण तत्पुरुष समास' कहते हैं। जैसे –

समस्त पद	**समास–विग्रह**	**समस्त पद**	**समास–विग्रह**
शोकाकुल	शोक से आकुल	ज्वरग्रस्त	ज्वर से ग्रसित
विद्याहीन	विद्या से हीन	बाणाहत	बाण से घायल

3. संप्रदान तत्पुरुष समास – जिस तत्पुरुष समास में विभक्ति 'के लिए' का लोप हो जाता है, उसे 'संप्रदान तत्पुरुष समास' कहते हैं। जैसे –

समस्त पद	**समास–विग्रह**	**समस्त पद**	**समास–विग्रह**
गुरुदक्षिणा	गुरु के लिए दक्षिणा	दानपात्र	दान के लिए पात्र
मार्गव्यय	मार्ग के लिए व्यय	धनकामना	धन के लिए कामना

4. अपादान तत्पुरुष समास – जिस तत्पुरुष समास में विभक्ति 'से' का लोप हो जाता है, उसे 'अपादान तत्पुरुष समास' कहते हैं। जैसे –

समस्त पद	**समास–विग्रह**	**समस्त पद**	**समास–विग्रह**
आकाश पतित	आकाश से गिरा हुआ	पथभ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
वृक्षपतित	वृक्ष से गिरा हुआ	कर्महीन	कर्म से हीन

5. संबंध तत्पुरुष समास – जिस तत्पुरुष समास में विभक्ति 'का', 'की', 'के' का लोप हो जाता है, उसे 'संबंध तत्पुरुष समास' कहते हैं। जैसे –

समस्त पद	**समास–विग्रह**	**समस्त पद**	**समास–विग्रह**
विद्यालय	विद्या का आलय	राजकुमार	राजा का कुमार
लक्ष्मीपति	लक्ष्मी का पति	देवालय	देव का आलय

6. अधिकरण तत्पुरुष समास – जिस तत्पुरुष समास में विभक्ति 'में', 'पर' का लोप हो जाता है, उसे 'अधिकरण तत्पुरुष समास' कहते हैं। जैसे –

समस्त पद	**समास–विग्रह**	**समस्त पद**	**समास–विग्रह**
पुरुषोत्तम	पुरुषों में उत्तम	कार्यकुशल	कार्य में कुशल
हृदयस्थित	हृदय में स्थित	कमलासन	कमल पर आसन

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :

1. लक्ष्मीपति
   (क) द्विगु (ख) तत्पुरुष (ग) अव्ययीभाव (घ) कर्मधारय
2. शोकाकुल
   (क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) कर्मधारय (घ) द्विगु
3. यथाशक्ति
   (क) अव्ययीभाव (ख) द्वंद्व (ग) द्विगु (घ) कर्मधारय
4. घुड़सवार
   (क) बहुव्रीहि (ख) द्वंद्व (ग) अव्ययीभाव (घ) कर्मधारय
5. यशप्राप्त
   (क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) कर्मधारय (घ) द्विगु
6. गुरुदक्षिणा
   (क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) द्वंद्व (घ) द्विगु
7. कमलासन
   (क) कर्मधारय (ख) तत्पुरुष (ग) अव्ययीभाव (घ) द्विगु
8. देवालय
   (क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष (ग) द्वंद्व (घ) द्विगु

■

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ

मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ–

मुहावरा वाक्य का वह अंश है जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण (अलग) अर्थ को प्रतीत कराता है, वह मुहावरा कहलाता है। अर्थात् जब किसी शब्द–समूह का सामान्य अर्थ न लेकर उसका लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है, तो उसे मुहावरा कहते हैं। (अभिधेयार्थ) मुहावरा का अर्थ है– अभ्यास या बातचीत।

'लोकोक्ति' शब्द 'लोक' और 'उक्ति' शब्दों के योग से बना है। लोक (संसार) में प्रचलित उक्ति को ही 'लोकोक्ति' या 'कहावत' कहा जाता है। कथन की पुष्टि अथवा उपदेश के लिए लोकोक्तियों का प्रयोग प्रभावी सिद्ध होता है। लोकोक्तियों में उनके व्यंजित अर्थ के साथ–साथ कोशगत अर्थ भी बना रहता है।

मुहावरों एवं लोकोक्तियों में अंतर–

मुहावरे	**लोकोक्ति**
1 मुहावरे अपना शाब्दिक/ कोशगत अर्थ छोड़कर नया अर्थ देते है।	1. लोकोक्तियाँ विशेष अर्थ देती है, लेकिन उनका कोशगत/शाब्दिक अर्थ भी बना रहता है।
2 मुहावरा वाक्य का अंश होता है। उसका क्रियारूप लिड़, वचन, कारक के अनुसार बदल जाता है।	2. लोकोक्तियाँ स्वयं में एक स्वतंत्र वाक्य होती है। प्रयोग में आने पर उनमें कोई परिवर्तन नही होता है।
3 मुहावरे के अंत में क्रियाकलाप अवश्य होता है।	3. लोकोक्ति के अंत में क्रियापद का होना आवश्यक नहीं है।

मुहावरे

1. **अक्ल पर परदा पड़ना**– (बुद्धि भ्रष्ट होना)। महेश को अपने भले–बुरे का ज्ञान नहीं रहा, क्योंकि उसकी अक्ल पर परदा पड़ा हुआ है।

2. **अक्ल के पीछे लाठी लिए फिरना**– (बुद्धि से काम न लेना)। रमेश हित और अहित का विचार नही करता, वह अक्ल के पीछे लाठी लिए फिरता है।
3. **अक्ल के घोड़े दौड़ाना**– (अनेक प्रकार से विचार करना)। मनुष्य ने बहुत अक्ल के घोड़े दौड़ाए किंतु वह परमात्मा की लीला का भेद नही पा सका।
4. **अक्ल–चकराना**– (कुछ समझ में न आना)। जब साधारण सी बात में तुम्हारी अक्ल चकरा जाती है, तब तुम गणित का अध्ययन कैसे करोगे।
5. **अक्ल मारी जाना**– (बुद्धि नष्ट होना)। दिन–रात चांडाल चौकड़ी में लगे रहते हो, क्या तुम्हारी अक्ल मारी गई है।
6. **अक्ल का दुश्मन**– (मुर्ख) इसे समझाने की कोई आवश्यकता नही है, जानते नहीं यह तो पूरा अक्ल का दुश्मन है।
7. **अगर–मगर करना**– (बहाना करना)। यदि तुमको काम नहीं करना हो तो साफ कहो। अगर–मगर करने से कुछ लाभ नहीं।
8. **अंग–अंग ढीला होना**– (बहुत ज्यादा थक जाना) आज सुबह से शाम तक इतना परिश्रम करना पड़ा कि सोहन का अंग–अंग ढीला हो गया।
9. **अंधे के हाथ बटेर लगना**– (बिना प्रयास बड़ी चीज पा लेना)। भोलू के विवाह का रहस्य यह है कि मानो अंधे के हाथ बटेर लग गयी है।
10. **अंधे की लकड़ी**– (एकमात्र सहारा)। सुरेश– यह किसका लड़का है? विद्या– यह मेरी अंधे की लकड़ी है।
11. **अन्न–जल पूरा हो जाना**– (मर जाना)। मनुष्य के जीवन का विश्वास नहीं, न जाने कब अन्न–जल पूरा हो जाए।
12. **अपना–सा मुहँ लेकर रह जाना**– (लज्जित होना, निरूत्तर होना)। नारायण को सबने रोका था कि तुम राम के साथ शास्त्रार्थ मत करो। उसने नहीं माना, शास्त्रार्थ किया और अपना सा मुँह लेकर रह गया।
13. **अपना उल्लू सीधा करना**– (स्वार्थ सिद्ध करना)। दूसरों की चाहे जितनी हानि हो जाय, गोलू अपना उल्लू सीधा करता रहता है।
14. **अपना ही राग अलापना**– (अपने ही मतलब की बात कहना)। तुम दूसरों का सुनना ही नहीं जानते, सदा अपना ही राग अलापते रहते हो।
15. **अपने पैरों पर खड़ा होना**– (स्वावलम्बी होना)। दूसरों पर निर्भर होकर जीवन यापन करना बुरा है। मनुष्य को अपने पैरों पर खड़ा होना चाहिए।

16. **अपने मियाँ मिट्ठू बनना**– (अपनी प्रशंसा करना, आत्मश्लाघा करना)। रानी अपने स्वादिष्ट व्यंजनों का बखान करती अपने ही मियाँ मिट्ठू बन रही थी।
17. **अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना**– (संकट मोल लेना)। रोहन को अपना भेद बताकर मैंने अपने पावों पर अपने आप कुल्हाड़ी मारी है।
18. **अपने मार्ग में काँटे बोना**– (अपने लिए हानिप्रद कार्य करना)। गुरु से विरोध करके तुम अपने मार्ग में काँटे बो रहे हो।
19. **अवसर–चूकना**– (मौका खो देना)। अवसर चूक जाने पर सिवाय पछाताने के और कोई लाभ नही।
20. **अरण्य-रोदन करना**– (व्यर्थ विलाप या भाषण करना)। निर्दयों के समक्ष अपना दुःख कहना अरण्य रोदन ही होता है।
21. **आँख भर आना**– (नेत्रों में आँसू आ जाना)। तीर्थराज आज पाँच साल के बाद घर लौटा है, उसे देखते ही उसकी माता की आँख भर आई।
22. **आँखे चार होना**– (प्रेम होना)। पुष्पवाटिका में राम और सीता की आँखे चार हो गयीं।
23. **आँखों में खून उतर आना**– (क्रोधित होना)। राहुल की बदमाशी को देखते ही मेरी आँखों में खून उतर आता है।
24. **आँखों में धूल झोंकना** – (प्रत्यक्ष धोखा देना)। पुलिस की आँखों में धूल झोंककर चोर भाग गया और पुलिस उसे ढूँढ़ती रह गयी।
25. **आग लगाकर पानी को दौड़ना**– (झगड़ा लगाकर शान्त करने का प्रयत्न करना)। संसार में ऐसे लोगों की कोई कमी नहीं हैं जो पहले आग लगाते हैं फिर पानी लेकर दौड़ते हैं।
26. **आग में पानी डालना**– (क्रोध शान्त करना)। यदि मैं आग में पानी न डालता तो वह इतना उत्तेजित हो गया था कि तुमको भस्म ही कर देता।
27. **आग लगाकर तमाशा देखना**– (झगड़ा कराकर प्रसन्न होना)। सोहन! क्या यह नीचता नहीं है कि तुम आग लगा कर तमाशा देखना चाहते हो?
28. **आग बबूला होना**– (अत्यंत क्रोधित होना)। शिव–धनुष टूटते ही परसुराम आग बबूला हो उठे।
29. **आटा गीला होना**– (मुसीबत बढ़ जाना)। मैं तो पहले से बेरोजगार था, बीमारी आ जाने से मेरा आटा गीला हो गया।

30. **आटे दाल का भाव मालूम होना**– (दुनियादारी का ज्ञान होना)। जब गृहस्थ जीवन में प्रवेश करोगे तब आटे–दाल का भाव मालूम हो जाएगा।

31. **आधा तीतर आधा बटेर**– (बेमेल चीजों का मिश्रण, गड़बड़ झाला) वह एक ही दूकान में कपड़े और किताबें बेचना चाहता था। मैंने उससे कहा कि आधा तीतर आधा बटेर होने पर बिक्री कम होगी।

32. **आसमान से तारे तोड़ना**– (असंभव कार्य करना)। प्रेमी ने प्रेमिका से कहा कि मैं तुम्हारे लिए आसमान के तारे भी तोड़ सकता हूँ।

33. **आसमान टूट पड़ना**– (अचानक बड़ी विपत्ति आ जाना)। अभी वह अपने पैरों पर खड़ा ही हो रहा था कि अचानक उस पर आसमान टूट पड़ा, उसे नौकरी से निकाल दिया गया।

34. **आसमान सिर पर उठाना**– (उत्पात मचाना, उपद्रव करना)। आजकल उस चांडाल चौकड़ी ने आसमान सिर पर उठा रखा है।

35. **आस्तीन का साँप**– (विश्वासधाती, कपटी मित्र)। मैनें तुमसे पहले ही कह दिया था कि संतोष आस्तीन का साँप है। अवसर पाते ही डस लेगा।

36. **आस्तीन के साँप पालना** – (विश्वासधाती को मित्र बनाना)। विश्वासधाती रोहन को अपने पास रखना आस्तीन में साँप पालना है।

37. **ईट से ईट बजाना**– (विध्वंस करना)। यह बात सही है कि तुम जहाँ कहीं भी जाओगे, ईट से ईंट बजा दोगे।

38. **ईद का चाँद होना**– (बहुत प्रतीक्षा के बाद मिलना)। मधुसूदन! तुम्हारे तो अब दर्शन ही नहीं होते। यार, तुम तो ईद के चाँद हो गये हो।

39. **उल्टी गंगा बहाना**– (विपरीत कार्य करना)। राजू कभी खेती देखने भी नहीं जाता था। एक दिन खेत में काम करते देख लोगों ने कहा कि आज तो उल्टी गंगा बह रही है।

40. **ओखली में सिर देना**– (जानबूझकर विपत्ति में पड़ना)। अब रोते क्यों हो? तुमने दुष्टों का साथ देकर ओखली में अपना सिर दे दिया है।

41. **काठ का उल्लू**– (बड़ा मूर्ख)। उसे कुछ समझ में नही आता, बिल्कुल काठ का उल्लू है।

42. **कान भरना**– (चुगली करना)। तुम्हारी वहाँ कौन सुनने वाला था? तुम्हारे विरुद्ध उस दुष्ट ने साहब के कान भर दिए होंगे।

43. **कोल्हू का बैल**– (नासमझ परंतु परिश्रमी)। अमित अधिक योग्यता नहीं रखता, लेकिन कोल्हू की बैल की तरह मेहनत करता है।

44. **खून खौलना**– (क्रोध आना)। उस चांडाल को देखकर मेरा खून खौल उठता है।

45. **गागर में सागर भरना**– (थोड़े में बहुत कुछ कह देना)। बिहारी ने अपने दोहों में गागर में सागर भर दिया है।

46. **गिरगिट की तरह रंग बदलना**– (एक रंग ढंग पर न रहना)। नेता लोग गिरगिट की तरह रंग बदलते रहते हैं।

47. **चिराग तले अंधेरा होना**– (अपना दोष अपने को न दिखाई देना)। प्रोफेसर साहब का लड़का हाईस्कूल में फेल हो गया, है न चिराग तले अंधेरा।

48. **चुल्लू भर पानी में डूब मरना**–(अत्यधिक लज्जित होना)। तुमने चोरी करना सीख लिया, तुम्हें तो चुल्लू भर पानी में डूब मरना चाहिए।

49. **चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना**– (भयभीत होना)। वन में सिंह की गर्जना सुनकर उसके चेहरे पर हवाइयाँ उडने लगी।

50. **जमीन आसमान एक करना**– (बहुत अधिक परिश्रम करना)। तुम्हारे लिए जमीन आसमान एक कर दिया, पर तुम्हारा पता न चला।

51. **टेढ़ी खीर होना**– (कठिन काम होना)। आप के लड़के को सीधा करना तो टेढ़ी खीर हो गया है।

52. **डूबते को तिनके का सहारा**– निराशा में आशा। वह कर्ज में डूबा हुआ था। सौ रुपये मिलने से डूबते को तिनके का सहारा मिल गया।

53. **थूक कर चाटना**– (कह कर मुकर जाना, प्रतिज्ञा भंग करना)। शाम को तुमने रुपये देने को कहा, सुबह इनकार कर गये। तुम्हारी थूक कर चाटने की प्रवृत्ति अच्छी नहीं।

54. **दाँत खट्टे करना**– (पराजित करना)। राणा प्रताप ने हल्दी घाटी के मैदान में मुगलों के दाँत खट्टे कर दिए।

55. **दाल में काला होना**– (संदेह होना)। मैं पहले ही समझ गया था कि दाल में कुछ काला है।

56. **दो नावों पर पैर रखना**– (दो कार्य एक साथ करना)। रमेश नौकरी और व्यवसाय दोनों एक साथ कर दो नाव पर पैर रखे हुए है।

57. **नाक कटना**– (बदनामी होना, इज्जत चली जाना)। उसके पास खाने को कुछ नही था और घर में एकाएक मेहमान आ गये, परंतु पड़ोसी की मदद से उसकी नाक कटने से बच गई।

58. **नाकों चने चबाना**– (परेशान करना)। वह अधिकारी बहुत सख्त है उसके साथ काम करने में तुम्हें नाकों चनें चबाना पड़ेगा।

59. **नौ दो ग्यारह होना**– (भाग जाना)। राम मोहन को मारकर नौ दो ग्यारह हो गया।
60. **पौ बारह होना**– (खूब लाभ होना)। अपने दादा जी से मिलने के कारण मोहन के पौ बारह हो गये हैं।
61. **फूँक फूँक कर कदम रखना**– (सावधानी से कार्य करना)। आज के वैज्ञानिक युग में हर व्यक्ति को फूँक फूँक कर कदम रखना चाहिए।
62. **बालू से तेल निकालना**– (असंभव को सम्भव कर देना)। उस कंजूस से दस हजार रुपये चंदा लेकर सचमुच राम ने बालू से तेल निकाल लिया।
63. **बहती गंगा में हाथ धोना**– (अवसर का लाभ उठाना)। आजकल बैंकों से छोटे–छोटे कार्यों के लिए ऋण मिल रहा है, तुम भी बहती गंगा में हाथ धो लो।
64. **भैंस के आगे बीन बजाना**– (मूर्ख को उपदेश देना)। निरक्षर व्यक्ति को व्याकरण की अशुद्धियाँ बताना भैंस के आगे बीन बजाना है।
65. **राई का पहाड़ बनाना**– (छोटी बात को बढ़ा–चढ़ा कर कहना)। कुछ लोग अतिशयोक्ति करने में इतने पटु होते हैं कि राई का पहाड़ बना देते हैं।
66. **रफू चक्कर होना**– (भाग जाना)। सोहन के साथ न जाओ, कोई झगड़ा हो गया तो वह तुमको छोड़ कर रफू चक्कर हो जाएगा।
67. **लकीर का फकीर होना**– (अंधविश्वासी होना, पुरानी प्रथा पर चलना)। गाँवों में अब भी अंधविश्वास इतना फैला हुआ है कि ज्यादातर लोग लकीर के फकीर है।
68. **लोहे के चने चबाना**– (कठिन कार्य करना, कठिनाई का सामना करना)। अर्जुन के न रहने पर पांडवों को चक्रव्यूह तोड़ने में लोहे के चने चबाने पड़े।
69. **सिर मुड़वाते ओले पड़ना**– (आरम्भ में ही संकट उपस्थित होना)। उसने जैसे ही स्वर्णकार का काम संभाला, सरकार ने स्वर्ण नियंत्रण नियम लागू कर दिया और उस पर सिर मुड़ाते ही ओले पड़ गये।
70. **सूर्य को दीपक दिखाना**– (महान व्यक्ति का तुच्छ प्रशंसा करना)। रविंद्रनाथ टैगोर को संसार जानता है, तुम सूर्य को दीपक क्यों दिखाते हो?
71. **हवाई किले बनाना**– (कल्पना की उड़ान भरना)। कुछ करके भी दिखाओगे कि सदैव हवाई किले ही बनाते रहोगे।

लोकोक्तियाँ(कहावतें)

1. **अपना हाथ जगन्नाथ**– (स्वयं का किया हुआ कार्य फलदायी होता है)।
प्रयोग– घर का काम नौकरों से करवाने की अपेक्षा स्वयं करना उत्तम है, अपना हाथ जगन्नाथ।
2. **अंत भला तो सब भला**– (परिणाम अच्छा होने पर सब अच्छा मान लिया जाता है)।
प्रयोग– सोहन ठीक से पढ़ाई नहीं कर रहा था, लेकिन हाईस्कूल अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हो गया। इस पर किसी ने कहा कि चलो भाई अंत भला तो सब भला।
3. **आसमान से गिरा खजूर में अटका**– (किसी कार्य के पूरा होते होते बाधा उत्पन्न हो जाना)।
प्रयोग– सोहन परीक्षा में किसी तरह उत्तीर्ण हो गया, परन्तु पूरी फीस जमा न होने से उसका परीक्षाफल रोक दिया गया। इस पर उसके मित्र ने कहा, 'भाई तुम तो आसमान से गिरे तो खजूर में अटके।'
4. **का वर्षा जब कृषि सुखाने**– (काम बिगड़ने पर सहायता व्यर्थ है)।
प्रयोग– सेवानिवृत्त होने के पश्चात् काफी समय तक उसे पेंशन नहीं मिली। उसका अंत समय निकट आया तो पेंशन स्वीकृत हो गई। इस पर उसने कहा कि 'का वर्षा जब कृषि सुखाने।'
5. **घी का लड्डू टेढ़ा भला**– (काम की वस्तु कम अच्छी रहने पर भी ठीक रहती है)।
प्रयोग– मनीशा के बेटे के काले रंग को देखकर सब भला बुरा कह रहे थे, तब उन्होंने कहा कि घी का लड्डू टेढ़ा मेढ़ा भला।
6. **चौबे गये छब्बे बनने दुब्बे बनकर आये** – (लाभ के चक्कर में हानि हो जाना)।
प्रयोग– उसने अधिक लाभ कमाने के लिए एक बहुत बड़ा ठेका लिया, परंतु उसे बहुत अधिक घाटा हो गया। उसकी स्थिति देखकर एक पड़ोसी ने कहा, चौबे गये थे छब्बे बनने दुब्बे बनकर आए।
7. **जंगल में मोर नाचा किसने देखा**– (गुणो का प्रर्दशन अनुपयुक्त स्थान पर करना)।
प्रयोग– गाँव में वापस लौटकर जब वह शहर में बनाये मंदिर की सुंदरता का वर्णन करने लगा तो किसी ने कहा जंगल में मोर नाचा किसने देखा।
8. **भई गति मोर छछूंदर केरी**– (असमंजस की स्थिति में होना)।
प्रयोग– करीम ने रहीम को उधार देकर स्वयं को भई गति मोर छछूंदर केरी की स्थिति में डाल लिया है।

9. **समरथ को नहि दोष गोसाईं**— (सबल का कोई दोष नहीं देखता है)।
प्रयोग— अमेरिका हिंद महासागर में अपना नौसैनिक अड्डा बना रहा है। इस संबंध में संयुक्त राष्ट्र संघ की भी परवाह नहीं थी। किसी ने ठीक ही कहा है कि समरथ को नहि दोष गोसाईं।

10. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता**— बड़ा काम एक आदमी से नहीं हो सकता।
प्रयोग— सभीलोग साथ दें, तभी आंदोलन में सफलता मिल सकती है, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता।

11. **अधजल गगरी छलकत जाय**— (छोटे आदमी दिखावा बहुत करते हैं)।
प्रयोग— पाँच बार हाईस्कूल में फेल हुए हैं और दिखाते हैं यों जैसे बड़े धुरंधर पंडित है, सच है अधजल गगरी छलकत जाय।

12. **अपनी अपनी डफली अपना अपना राग**— (एक मत न होना)।
प्रयोग— इस संस्था का शीघ्र ही नाश होगा, कोई नियम नहीं, कोई अध्यक्ष नहीं, सब मुखिया बनते हैं। यहाँ तो बस अपनी अपनी डफली अपना अपना राग।

13. **आँख के अंधे नाम नयनसुख**— (गुण के विपरीत होना)।
प्रयोग— लेखक बनें हैं, कलम पकड़ने की तमीज नहीं। सच है आँख के अंधे नाम नयनसुख।

14. **आगे नाथ न पाछे पगहा**— (कोई नाते रिश्तेदार न होना)।
प्रयोग— स्वामी जी का कौन खाने वाला बेटा है? उनके तो आगे नाथ न पाछे पगहा।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए :

1. **अपना हाथ जगन्नाथ**
   (क) स्वयं का किया हुआ कार्य फलदायी होता है
   (ख) दूसरे का किया हुआ कार्य फलदायी होता है
   (ग) स्वयं का किया हुआ कार्य फलदायी नहीं होता है
   (घ) एक गुण के साथ दूसरा गुण होना
2. **का वर्षा जब कृषि सुखाने**
   (क) काम बिगड़ने पर सहायता व्यर्थ है
   (ख) फसल अच्छी हो तो वर्षा की क्या आवश्यकता
   (ग) फसल सूख जाने पर वर्षा व्यर्थ है
   (घ) सहायता मिलने पर भी यदि काम बिगड़ जाए तो वह सहायता व्यर्थ है

3. अपने पैरों पर खड़ा होना
   (क) स्वावलंबी होना
   (ख) बेरोजगार होना
   (ग) अपने ही मतलब की बात कहना
   (घ) बहुत ज्यादा थक जाना
4. गंगा नहाना
   (क) कार्य से निवृत्त होना
   (ख) पीठ दिखाना
   (ग) बाल धूप में सफेद होना
   (घ) सिर चढ़ाना
5. ख्याली पुलाव पकाना
   (क) रंग जाना
   (ख) असंभव कल्पनाओं से आनंदित होना
   (ग) अक्ल के घोड़े दौड़ाना
   (घ) तीन–पाँच करना

■

पत्र लेखन

अपने विचारों, भावों, सूचनाओं और संदेशों को दूर–दराज तक पहुँचाने के लिए आमतौर पर पत्र का सहारा लिया जाता है। पत्र अनेक प्रकार के होते हैं। विषय, संदर्भ, व्यक्ति और स्थिति के अनुसार पत्रों को लिखने का तरीका भी भिन्न–भिन्न होता है। सुविधा के लिए पत्रों को दो वर्गों में रखा जा सकता है–

(1) अनौपचारिक, (2) औपचारिक

(1) अनौपचारिक पत्र–इस प्रकार के पत्रों में पत्र लिखने वाले और पाने वाले के बीच घनिष्ठ संबंध होता है। यह संबंध पारिवारिक तथा मित्रता का भी हो सकता है। इन पत्रों को व्यक्तिगत पत्र भी कहते हैं। इनका स्वरूप संबंधों के आधार पर निर्धारित होता है। इनकी भाषा–शैली प्रायः अनौपचारिक और आत्मीय होती है।

(2) औपचारिक पत्र–सरकारी, अर्द्धसरकारी और गैरसरकारी संदर्भों में औपचारिक स्तर पर भेजे जाने वाले पत्रों को औपचारिक पत्र कहते हैं। इनमें कार्यालयी, व्यावसायिक और सामान्य जीवन–व्यवहार के पत्रों को शामिल किया जा सकता है। औपचारिक पत्रों के अंतर्गत दो प्रकार के पत्र आते हैं–

(क) सरकारी, अर्द्धसरकारी और व्यावसायिक संदर्भों में लिखे जाने वाले पत्र–इस प्रकार के पत्रों की विषयवस्तु प्रशासन, कार्यालय और कारोबार से संबंधित होती है। इनकी भाषा–शैली एक निश्चित साँचे में ढली होती है और प्रारूप निश्चित होता है। सरकारी कार्यालयों, बैंकों और व्यावसायिक संस्थाओं द्वारा किया जाने वाला पत्र–व्यवहार इसके अंतर्गत आता है।

(ख) सामान्य जीवन व्यवहार तथा अन्य विशिष्ट संदर्भों में लिखे जाने वाले पत्र–इस प्रकार के पत्र परिचित एवं अपरिचित व्यक्तियों को तथा विविध क्षेत्रों से संबंधित अधिकारियों को लिखे जाते हैं। इनकी विषयवस्तु सामान्य जीवन की विभिन्न स्थितियों से संबंधित होती है। ये प्रायः सामान्य और औपचारिक भाषा–शैली में लिखे जाते हैं। इनके प्रारूप में प्रायः स्थिति और संदर्भ के अनुसार परिवर्तन हो सकता है। इनके अंतर्गत निमंत्रण–पत्र, बधाई–पत्र, शोक–पत्र, पूछताछ–पत्र, शिकायती–पत्र, समस्यामूलक–पत्र, संपादक के नाम पत्र आदि आते हैं।

औपचारिक पत्र

1. अपनी गली/मोहल्ले की नालियों की समुचित सफ़ाई के लिए नगर निगम के स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखिए।

परीक्षा भवन
प्रयागराज
दिनांक : 4 दिसंबर, 20XX

स्वास्थ्य अधिकारी
नगर निगम,
प्रयागराज।

विषय : मोहल्ले की सफाई हेतु।

महोदय,

आपका ध्यान अलोपी बाग से संलग्न बस्ती की गंदगी से उत्पन्न दयनीय स्थिति की ओर आकृष्ट किया जाता है। इस बस्ती में सफ़ाई-व्यवस्था इतनी निम्नतर और चिंताजनक है कि यहाँ के निवासियों के स्वास्थ्य के लिए खतरा उत्पन्न हो गया है। जगह-जगह सड़ते कूड़े-कचरे के ढेर और उन पर भिनभिनाती मक्खियाँ किसी भी महामारी को आमंत्रित कर सकती हैं। साथ ही कूड़े-कचरे के ढेर को बिखरने से भी रास्ता चलने वालों को भी अत्यधिक कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

अतः उक्त बस्ती की स्वास्थ्य-सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अविलंब कोई महत्त्वपूर्ण कदम उठाया जाए। अन्यथा स्थिति भयावह हो सकती है।

सधन्यवाद।

भवदीय,
मनोज कुमार

2. फीस माफी के लिए अपने प्रधानाचार्य को एक प्रार्थना पत्र लिखिए।

दिनांक : 9 जुलाई, 20XX

सेवा में,
प्रधानाचार्य
राजकीय बालिका इंटर कालेज,
जौनपुर।

विषय : फीस माफ करने के लिए।

महोदया,

सविनय निवेदन है कि मैं आपके विद्यालय में कक्षा 11-A की छात्रा हूँ। मैं एक गरीब परिवार से हूँ। मेरे पिता जी एक किसान हैं जिनकी आय बहुत कम है। मेरे अतिरिक्त मेरे पाँच भाई–बहनों की पढ़ाई का बोझ भी मेरे पिता जी पर है।

इस साल सूखा पढ़ने के कारण सारी फसल बर्बाद हो गयी है। जिसकी वजह से मेरे पिता जी काफी नुकसान हुआ है। इसलिए मैं अपनी फीस देने में असमर्थ हूँ।

अतः मेरी परिस्थिति को देखते हुए मेरी फीस माफ करने की कृपा करें। मैं आपकी सदैव आभारी रहूँगी।

धन्यवाद।

आपकी शिष्या
मंजू
कक्षा 11-A

अनौपचारिक पत्र

1. किसी पर्यटक स्थल का वर्णन करते हुए अपने मित्र को पत्र लिखिए कि वह भी कुछ दिनों के लिए आपके पास आ जाए।

परीक्षा भवन
प्रयागराज
दिनांक : 20 मार्च, 20XX

प्रिय मित्र दिनेश,

नमस्ते।

आशा करता हूँ तुम सकुशल होगे। कल ही तुम्हारा पत्र मिला। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो गई है तथा विद्यालय ग्रीष्मावकाश के उपलक्ष्य में 30 जून तक के लिए बंद हो गया है।

मेरी बहुत दिनों से यह अभिलाषा थी कि तुम्हें कुछ दिनों के लिए अपने पास बुलाएँ, परन्तु तुम्हारी परीक्षा एवं पढ़ाई का विचार कर ऐसा नहीं कर पा रहा था। अब तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो गई है और विद्यालय भी बंद हो गया है, अतः मैं तुम्हें अपने

घर आने का सप्रेम निमंत्रण प्रेषित करता हूँ।

यद्यपि मेरा घर छोटे से नगर में है, फिर भी इसकी कई विशेषताएँ हैं। इस नगर में अनेक दर्शनीय एवं पर्यटक स्थल हैं। इस नगर का एक-एक कोना अपने नैसर्गिक सौंदर्य से परिपूर्ण है।

मुझे पूरा विश्वास है कि तुम निश्चित रूप से मेरे निमंत्रण को स्वीकार करोगे। हम तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आने से पूर्व यहाँ पहुँचने की तिथि से अवगत कराना, जिससे मैं तुम्हें लेने स्टेशन पर आ सकूँ।

तुम्हारा मित्र

क0 ख0 ग0

2. अपने मित्र को अपने बड़े भाई के विवाह में सम्मिलित होने का निमंत्रण भेजिए।

परीक्षा भवन

प्रयागराज

दिनांक : 11 मार्च, 20XX

प्रिय मित्र नवीन,

नमस्कार।

तुम्हें यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि ईश्वर की असीम अनुकंपा से मेरे अग्रज श्री नीरज कुमार का शुभ विवाह वाराणसी निवासी श्री विनीत कुमार की पुत्री से दिनांक 25 मार्च, 20XX को होना सुनिश्चित हुआ है। वरयात्रा 25 मार्च को प्रातः दस बजे वाराणसी के लिए प्रस्थान करेगी। इस शुभ अवसर पर मैं तुम्हें सप्रेम आमंत्रित करते हुए आशा करता हूँ कि तुम अपनी उपस्थिति से विवाह समारोह की शोभा बढ़ाओगे।

शेष मिलने पर...

तुम्हारा मित्र

क0 ख0 ग0

■

अभ्यास

1. स्वास्थ्य केंद्र पर उपकरणों एवं औषधियों के अभाव के कारण रोगियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इस समस्या की ओर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करने के लिए किसी समाचार-पत्र के संपादक को पत्र लिखिए।
2. अपने छोटे भाई को मन लगाकर पढ़ने की सलाह देते हुए पत्र लिखिए।
3. अपनी माता जी की बीमारी पर चिंता व्यक्त करते हुए अपने पिता जी को एक पत्र लिखिए।
4. आपके विद्यालय में होने वाले वार्षिक उत्सव में आपको पुरस्कृत किया जाएगा। आप चाहते हैं कि आपकी माता जी भी इसे देखें। माता जी को बुलाने के लिए पत्र लिखिए।
5. अपनी विशेष रुचियों का परिचय देते हुए अपने प्रिय-मित्र को पत्र लिखिए।
6. अपने जन्म-दिन पर मित्र द्वारा भेजे गए उपहार के लिए धन्यवाद-पत्र लिखिए।
7. आप पर्यटन के लिए चेन्नई गए थे। वहाँ एक स्थानीय छात्र की सहायता से आपका पयर्टन यादगार हो गया। उसे एक धन्यवाद-पत्र लिखिए।
8. आपके विद्यालय के पुस्तकालय में हिंदी की पत्र-पत्रिकाएँ नहीं मँगाई जातीं। इसकी शिकायत करते हुए प्रधानाचार्य को एक पत्र लिखिए।
9. अपने क्षेत्र में पार्क विकसित कराने के लिए नगर निगम के मुख्य उद्यान-निरीक्षक को पत्र लिखिए।
10. वाद-विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने पर अपने चचेरे भाई को बधाई देते हुए पत्र लिखिए।

■